श्रीपार्श्वनाथायनमः

॥ ज्ञानप्रदीपक ॥

यह ग्रंथ लोग हितार्थ

श्री श्री साधुजी माहाराज श्री श्री १००८ श्री श्री पूज्य श्री श्री
कानजी ऋप महाराजके समुदायके मुनीराज श्री श्री १००८
श्री श्री एवंता ऋपजी महाराज तस्य शिष्य श्री
श्री १००८ श्री श्री तिलोक ऋपजी महाराजकृत.

सो

अहमदनगर रहिवासी

पितलिया भगवानदासजी तत् पुत्रचंदनमलनें अपनी माता
रंभाबाई उनकि आज्ञासें धर्मबुद्धिके वास्ते

मुंबई मध्यें

गंगाविष्णु-खेमराज इनके " श्रीवेंकटेश्वर" छापखानेमे छपाकर प्रसिद्धकिया.
संवत् १९४७ शाके १८१२ सन १८९० ईसवी

॥ अथ प्रस्तावना ॥



सर्वज्ञ स्वजन साधर्मिक मनुष्यासु एहविनतीछे के प्रथमहीज आपणा लोकमे नानपणेसे टावराने ससा रतरफनी कमाणी कर्वानो उद्यमसीपावे लिपवो तथा पढवो पिणधर्ममार्गमे जाणपणो करावे नही पीछे तरुणपणामे काइक सगतथी उलखणाहोवेतें वपतेपण बुद्धीमदपडिजाय सीपवारो उद्यमघणोकरे पणअक्षरचढेनही तिणसुं धर्मार्थ काम एतीनां माहिलो एकहीअर्थसजेनही पिणइणतरेसु विचारणोजोइजेके मनुष्यभवदशद्दष्टातेकरीदुर्लभछे तेहीज आपणे पायोछेतो धर्मकरवानी बुद्धिजिणतरेसु वृद्धिथाय तिणतरेसुकरवि नवतत्वादि जीवाजीवउलखवा शास्त्रसुणवा पोसापडिक्कमणाकरवा धर्मनी वृद्धिकरणदेवा‌ते एहीज ज्ञानप्रदीपक नामे ग्रंथछपावी प्रसिद्धकर्योछे तेग्रथमांही अनेकजातिना तवन सझाय छदपद स्तुति थोकडा सामायिक पडिक्कमणादि बहुजरचनाछे पिणवाच्याथी मालमपडे ज्ञानरुपी उजवालो करेछे एहग्रथघणोज मनुष्याने उपयोगीछे घणीज धर्मनी उलखणारहस्ये तेवारेते सर्वज्ञस्वजनोने एहीजअर्जछेके एह पुस्तकबहुत्वउत्तमछे घणेजपरिश्रमसेशुद्धथयोछे तेमाहीपणअशुद्धहोयतो विद्वज्जन हमारे उपरकृपादृष्टि मेहरवानगीकरीने शुद्धकर्वी हमारेसे कोइठिकाणे काना मात अक्षर अनुस्वार पड्यो होयतो क्षमाकरजो ॥ *

ए पुस्तकछापीयोसंवत १९४७ का मीती श्रावण शुद्ध २

अनुक्रमणिका

॥ १ ॥

अनुक्रमाणिका

इति अनुक्रमणिका समाप्तः

॥ श्रीः ॥

॥ श्रीपरमेश्वराय नमः ॥

॥ श्रीनवकारमंत्रलषीएछइऐंश्री ॥

॥ णमो अरिहंताणं ॥ णमो सिद्धाणं ॥ णमो आयरियाणं ॥
॥ णमो उवझायाणं ॥ णमो लोए सव्वसाहूणं ॥ एसो पंच
॥ णमुक्कारो ॥ सव्वपावप्पणासणो ॥ मंगलाणंच सव्वेसिं ॥ पढमं
॥ हवइ मंगलं ॥ इतिश्रीनवकार ॥ १ ॥

॥ नवकारनो अर्थ लिष्यते ॥

णमो केहता नमस्कारहोजो, अरिहंताणं के० कर्मरूपसत्रुने हणणनार, जेणे चारघनघाती कर्मटाल्या तथा जेनाथी कोई छनोनथी, अने ते चोत्रीस अतीशयकरी

॥ इति अनुक्रमाणिका समाप्तः ॥

॥ तिखुत्तारी पाटीको अर्थ छे ॥

तिखुत्तो के० तीनवार आयाहिणं के० बेहाथ जोडीने जीमणा कानसूं मांवा का नताई पयाहिणं के० प्रदक्षणा करिने, वंदामि के० गुणग्रामकरुंछु, नमंसामि के० मस्तक नमायने नमस्कार करुंछुं, सक्कारेमि के० सत्कार देवुंछुं सम्माणेमि के० सन्मान देवुंछु कल्लाणं के० कल्याणकारी, मंगलं के० मंगलकारी, देवयं के० धर्मदेव समान, चेइयं के० ज्ञानवंतते छकायका जीवने सुखदायक, पज्जुवासामि के० मन वचन कायासूं करने सेवाकरुंछुं, मत्थएण वंदामि के० मस्तके करीं नमस्कार करुंछुं

॥ अथइरियावहिपाटीकोअर्थछे ॥

इच्छा कारेण केहतां तुमारी इछापूर्वक संदेसह कहेतां आज्ञाकरोतो भगवन् केहेतां महाभाग्य ज्ञानवत इरियावहियं केहेतां चालवाना मार्गमाहे जीवबाधा दीक सपापक्रिया तेहथकि पडिक्कमामि केहेतां निवर्तुंछूं पछेगुरुकहे पडिक्कमेह के० निवर्त्तो पाप टालो. पछे शिष्यकहे, इच्छ केहता प्रमाणछे इच्छामि कहेतां इच्छूछूं पडिक्कमिउ केहेता पापकर्मसूं निवर्तणवास्ते इरिया कहेता रस्तामाहें वहियाए

तथा ३५ स प्रकारनि वाणीयेकरी विराजमांन एहवा अरिहंतने वांडु **सिद्धाणं** के॰ सर्वे कार्यसाध्या, आठकर्म षपावि मुक्तपोता तथा एकतिसगुणेकरिसहित एहवा जे सिद्ध तेहनें, वांदिइं **आयरियाणं** के॰ जे पांचआचारनेपाले, बिजाप्राणिने पलावे तथा छत्तीस गुणेकरिसहितछे एवा आचारजजीने, वांदूंछुं **उवझायाणं** के॰ जे शुद्ध सूत्रार्थभणे, भणावे तथा पचिस गुणेकरीसहित एहवा श्री उपाध्यायजीने वांदूंछुं **लोए** के॰ लोकअढीद्वीपनामनुष्यक्षेत्रने विषे **सव्वसाहूणं** के॰ सर्व साधूने, जे ज्ञानदर्शनचारित्र तपना साधनार तथा सत्तावीस गुणेकरीसहितछे, वली **एसो** के॰ अरिहंतादिक संबंधी **पंचणमुक्कारो** के॰ पाचनमस्कारछे, ते केवाछे, **सव्वपाव** के॰ ज्ञानावरणादिक सर्वपाप तेहना, **प्पणासणो** के॰ विनासकर्णहारछे, **मंगलाणंच** के॰ सर्वमंगलिकमांहे, **सव्वेसिं** के॰सर्वमे **पढमं** के॰ मुख्य, **हवइ** के॰ छे, **मंगलं** के॰ कल्याणकारक.

॥ अथ तिखुत्तारी पाटी लिख्यते ॥

॥ तिखुत्तो आयाहिणं पायाहिणं वंदामि नमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि मत्थएणवंदामि ॥ १ ॥ इति ॥ २ ॥

॥ तिखुत्तारी पाटीको अर्थ छे ॥

तिखुत्तो के० तीनवार आयाहिणं के० बेहाथ जोडीने जीमणा कानसूं माथा का नताई पयाहिणं के० प्रदक्षणा करिने, वंदामि के० गुणग्रामकरुंछुं, नमंसामि के० मस्तक नमायने नमस्कार करुंछुं, सक्कारेमि के० सत्कार देवुंछुं सम्माणेमि के० सन्मान देवुंछुं कल्लाणं के० कल्याणकारी, मंगलं के० मंगलकारी, देवयं के० धर्मदेव समान, चेइयं के० ज्ञानवंतते छकायका जीवने सुखदायक, पज्जुवासामि के० मन वचन कायासूं करने सेवाकरुंछुं, मत्थएण वंदामि के० मस्तके करी नमस्कार करुंछुं

॥ अथइरियावहिपाटीकोअर्थछे ॥

इच्छा कारेण केहतां तुमारी इछापूर्वक संदेसह कहेतां आज्ञाकरोतो भगवन् केहेता महाभाग्य ज्ञानवत इरियावहियं केहेतां चालवाना मार्गमाहे जीवबाधादीक सपापक्रिया तेहथकि पडिक्कमामि केहेतां निवर्तुंछू पछेगुरुकहे पडिक्कमेह के० निवर्त्तो पाप टालो. पछे शिष्यकहे, इच्छ केहता प्रमाणछे इच्छामि कहेतां इच्छूछुं पडिक्कमिउ केहेता पापकर्मसूं निवर्तणवास्ते इरिया कहेता रस्तामाहे वहियाए

कहेतां जावता **विराहणाए** कहेतां दुःखदिनो होए **गमणागमणे** कहेता जावतां ने आवता **पाण** केहेता प्राणी **क्कमणे** कहेता पगेंकरी चाप्या होए. **बीय** कहेतां बीजने **क्कमणे** कहेतां ० चांप्या होए **हरिय** कहेतां हिरवी वनस्पती वगेरे **क्कमणे** कहेतां चापी होए, **उसा** केहेतां सूक्ष्म अपकाय आकाशथी पडेते **उत्तिंग** कहेतां. कीडीआनाजाला प्रमुपजीव **पणग** कहेता पाचवर्णी नील फूलण **दग** कहेतां पाणी **मट्टी** कहेता काचीमाटी **मक्कडा** कहेता कोलिआवडा **संताणा** कहेता मर्कटनां संतान **संकमणे** केता ए सर्वनें पगेकरी पीड्या तथा मसल्या **जे** के० जेकोइ, **मे** केहेतां मेपोते **जीवा** के० जीवने **विराहिया** के० दुःखदीनो होए **एगेंदिया** केह० जेने सरीररूप एकज इंद्री होए ते पृथ्वी पाणी अग्नि वायु वनस्पतीना जीव **बेइंदिया** के० शरीर तथा मुख दोए इंद्रीवालाजे शंष शीप गंमोला अलसीया एवा जेने पग न होए ते बेद्री **तेइंदिया** के० तीनइंद्रीवाला शरीर मुख नाक होय ते कुंथुवा जूं, लीप, माकण, कीमी **चउरिंदिया** केहे० च्यार इंद्री सरीर मुख नाक ने आख होए ते माखी मछर मास विछु भमरो टीड जे उडनारा छे अगर आठप

ग ळे जेने **पंचिंदिया** केहे० पाचइंद्रीवाला शरीर मुख नाक आख ने कान होय ते जलचर थलचर खेचर ए तिर्यंच तथा मनुष्य देवता नारकी सर्व संसारी जीव ते **अ-भिहया** के० सामा आवता हण्या होए **वत्तिया** केता एक ढीगले करिया तथा धू, लमे ढाक्याहोए **लेसिया** केहता भोमीमे घस्या तथा लगारेक मसल्या होय, **संघाइया** केहेतां माहोमाहे शरीरने मेलविने एकठा मेलव्या होए **संघट्टिया** केहेतां थोडो स्पर्श करवेकारि दुहव्या होए **परियाविया** केहेतां सर्व प्रकारें ताव्या पीडा उपजावी होए **किलामिया** केहेता गाढो दुःख उपजाव्यो मृतकप्राए किधा होय**उद्दविया** के० त्रास देने हाले चाले सके नही एवा किधा **ठाणाउ** के०एकस्थानकथी उपाडी ने **ठाणं** के० बिजा ठिकाणे **संकामिया** के० मूक्याहोय, **जीवियाउ** के० जीवतथकी **ववरोविया** के० मारियाहोय नाशकीधो, **तस्स** केहेता तेसंबंधी अतिचार लाग्या ते **मिच्छामिदुक्कडं** केहेता पाप मुजने निष्फल थाजो. इति

॥ अथतस्सउत्तरीपाटीकोअर्थलि ॥

तस्स के० तेने **उत्तरी** केहेता विशेषेंकरीशुद्ध **करणेणं** के० करवासारूं **पा**

यत्तिच के॰ प्रायश्चित्त पापनि आलोवणा, करणेणं के० करवासारुं विसोहि के॰ विशुद्ध, निर्मल करणेणं के॰ करावासारूं विशल्ली के॰ १ माया २ नियाण ३ मिथ्यात् एतीन सल्परहित करणेणं के॰ करवासरूं पावाणं के॰ संसारहेतुना पाप कम्माणं के॰ कर्मने निग्घायणं के॰ टालवाने ठाए के॰ अर्थे ठामिकरेमि के॰ एकठामे रहीनकरुंछु काउस्सग्गं के॰ कायाने हलाववी नहीं ते अन्नत्त के॰ आगेकह्यामुजब काया हले तेहनो आगार माफीगे उस्सासिएणं के॰ उंचोस्वासलेवाथी निस्ससिएणं के॰ नीचो स्वासमूकवाथी खासिएणं के॰ खासी खोखला थकि छीएणं के॰ छीकआयाथकी जंभाइएणं के॰ जानलि अगर बगासूं लेवाथकि उड्डुएणं डकारआव्या थकि वायनिसग्गेणं के॰ वायु निकलता थका भमलिए के॰ अकस्मात् चक्री आवाथकि पित्तमुच्छाए के॰ पित्तनाकोपसूं मूर्छाआव्याथका सुहुमेहिं के॰ सूक्ष्म थोडोक अंगसंचालेहिं के॰ शरिरहलावाथी सुहुमेहिं के॰ थोडो खेलसंचालेहिं के॰ श्लेष्म तथा मुखनां थूंकना चालवाथकि कफगीलवाथकि सुहुमेहिं के॰ सूक्ष्मथोडी दिट्ठिसंचालेहिं के॰

चक्षुदृष्टीहलाववाथी **एवमाईएहिं** के० एआदिकरीने बीजा **आगारेहिं** के० सर्प भीत पडतिज्ञपै अग्नी लागीहोय, राजारो कोप मंजारी प्रमुष हिंसक जीव अनेरा जीवनपरेहल घालि ने बेढाइतरादीकाने कावसगपाडेतो भग नहीं आगार लेताथका **अभग्गो** के० भांगेनही खंम्ति होवेनही **अविराहिउ** के० हानी पोचे नहीं **ऊज्ज** के० होजो **मे** के० म्हारो **काउस्सग्गो** के० काया स्थिरराखवि **जाव** के० ज्यांसुधी **अरिहंताणं भगवंताणं** के० अरीहंतभगवानने **नमुक्कारेणं** के० नमस्कारकरूं त्या सुधीं **नपारेमि** के० पारूंनही ध्यानसंपूर्णनकरूं **ताव** के० त्यासुधीं **कायं** के० म्हारीकायाने शरीरने **ठाणेणं** के० एकठिकाणे स्थीरपणे राखिने **मोणेणं** के० अबोलो रहीने **झाणेणं** के० एकाग्रध्यान तेणेकरीने **अप्पाणं** के० म्हारीकायातेप्रते **वोसिरामि** के० ऊं तजुंछु आ पाटीकहीनें काउसग्ग करणो इरियावहीकीपाटी मनमाहे कहणी नवकार कहीनें पछी काउसग्ग पारिए

॥ अथ लोगस्सकी पाटीको अर्थ छे ॥

लोगस्स के० पंचास्तिकायप्रमुष लोकनेविषे, **उज्जोयगरे** के० उद्योतना करणहार

धम्म के० धर्म तिथयरे के० च्यारतीर्थना करणार, जिणे के० रागद्देषनाजितणार एह्व
वा, अरिहंते के० अरिहंतने, कित्तइस्सं के० कीर्तिकरुंछुं चउवीसंपि के० रुषन्ना
दिक चोविस परमेश्वर तथा अन्यनी, केवली के० केवलज्ञानीतीर्थंकरना नाम कहेछे
उसन्न के० श्रीरुषन्नदेवस्वामी, मजियच के० श्रीअजितनाथप्रत्यें वंदे के० वादु
छुं संन्नव के० श्रीसंन्नवनाथप्रत्ये मन्निणंदणं के० श्रीअन्निनंदननाथप्रत्यें च
के० वली सुमइं के० श्रीसुमतिनाथने च के० वली पउमप्पहं के० श्री पद्मप्रभु
स्वामीप्रत्ये सुपासं के० श्रीसुपार्श्वनाथजीने जिणंके० रागद्देषना जितणार च
० वली चंदप्पहं के० श्रीचंद्रप्रभुजीने वंदे के० वादुछुं सुविहिं के० श्रीसुविधि
नुळी पुप्फदंते के० श्रीपुष्पदंतजीप्रत्ये सीयल के० श्रीशीतल
ोश्रेयासनाथजीनेवासुपुज्ज के० श्रीवासुपूज्यस्वामीप्रत्यें चके०
नाथजीने मणंतं के० श्रीअनंतनाथजीने च के०वली जि
एहवा धम्मं के० श्रीधर्म नाथजीने संतिं के० श्रीशातिना ॥ ४ ॥
के० वादुछुं कुंथु के० श्रीकुंथुनाथजीने अरं के० श्रीअर

नाथजीनें च के॰ वलि **मल्लिं** के॰ श्रीमल्लिनाथजीने वंदे के॰ वांदुछुं **मुनिसुव्वयं** के॰ श्री मुनीसुव्रतस्वामीप्रत्यें **नमिजिणं** के॰ श्रीनमिजिनने **च** के॰ वली **वंदामि** के॰ नमस्कारकरूछुं **रिठ्ठनेमिं** के॰ श्रीअरिष्टनेमिप्रत्ये **पासं** के॰ श्रीपार्श्वनाथस्वामी प्रत्यें **तह** के॰तथा **वद्धमाणं** के॰ श्रीवर्द्धमानस्वामिप्रत्ये च के॰वली **एवं**के॰ एप्रकार **मए** के॰ महारे जीवे **जे** **अभिथुआ** के॰ नामपूर्वकस्तव्याछे **ते** चोविस परमेश्वर केहवाछे **विहुय** के॰ टाल्याछे **रयमला** के॰ कर्मरूपी रज तथा मल **प हीणं** के॰ अतिशयकरीने क्षयकरयोछे **जरमरणा** के॰ जरा तथा मरणनें जेणे क्ष यकरयाछे **चउवीसंपि**के॰ चोविसतीर्थंकर तथा अन्य **जिणवरा** के॰ जिनवर **ति थ्थयरा** के॰ तीर्थंकर ते, **मे** के॰ महाराउपर **पसीयंतु** के॰ प्रसन्नहोवो, **कित्तिय** के॰ सुन्नवर्णजोगेकरी कीर्तितछे, **वंदिय** के॰ वदवायोग्यछे, **महिया** के॰ पूज्य छे. इंद्रादिकपूजेछे एहवा **जे** के॰ जेतीर्थंकर **ए** के॰ एप्रत्यक्ष **लोगस्स** के॰ लो कर्नेअढीद्वीपविषे **उत्तमा** के॰ उत्तम एहवा **सिद्धा** के॰ सिद्धभगवंतथया तुमे मुजने **आरुग्ग** के॰ द्रव्य तथा भाव रागरहित **बोहिलाभं** के॰ श्री जिनधर्मनी

समगतप्राप्तिनो लाभ थवानेअर्थे **समाहिवर** के० प्रधान समाधि **उत्तमं** के० उत्कृष्टीऊंची हणपे **दिंतु** के० देवो **चंदेसु** के० चंद्रमाथीअधीक० **निम्मलयरा** के० अत्यंत निर्मलछे **आइच्चेसु** के० सूर्यसमुदायथकी पण **अहियं** के० अधिक **पयासयरा** के० प्रकाशनाकरणहार **सागरवर** के० प्रधान छेलो स्वयंभूरमण नामा समुद्र तेनीपेरें **गंभिरा** के० गुणेकरी गम्भीरछे **सिद्धा** के० एहवा जे सिद्ध ते **सिद्धि** के० मुक्तितें **मम** के० मुजने **दिसंतु** के० देवो.

करेमिभंतेतनोअर्थ

करेमि के० हुं करूंछुं हेपुज्य **सामाइयं** के० समतापरिणामरूप सामायिकने **सावज्जं** के० पाप तेणें करीसहित एहवा **जोगं** के० मनवचन कायाना योग्य तेप्रते **पच्चरकामि** के० पचखूछुं निषेधकरूछु **जाव** के० ज्यासुधी **नियमं** केहे० सामायिक व्रतना नियमने **पज्जुवासामि** के० हुं सेवुंछुं रहुंत्यासुधी **विहं** के० दोयकर्णसुं कर्णो करावणो **तिविहेणं** के० तीनजोगसूं **नकरेमि** के० हुंकरूंनही **नकारवेमि** के० हुंउजापासें नकरावुं **मणसा** के० मनेकरी **वयसा** के० वचनेकरी **कायसा** के० कायाएकरि **तस्स** के० ते

सावद्य व्यापाररूपपापने भंते के० हेभगवत पडिक्कमामि के० निवर्तुंछु निंदामि के० हु आत्मानिसाषे निंडुंछुं गरिहामी के० गुरून साखें ऊं विशेषे निंडुंछुं अप्पाणं के० मारी आत्माने तेडष्ट क्रिया थकि वोसिरामि केतां वोंसिरावुछु वसिसे करीत्पजुछुं.

नमुत्थुणंनोअर्थछे

नमुत्थुणं कहे० नमस्कारहोवो अरिहंताण के० श्री अरिहंतदेवने भगवताणं के० भगवतने आइगराण के० धर्मना आदिना करनारने तित्थयराणं के० तीर्थना स्थापणार एटले साधु साधवी श्रावक श्राविका अने एचारजातना तीर्थना स्थापणार सयसंबुद्धाणं के० पोतेबोध सम्यक् प्रकारे तत्वना जाणथया पुरिसुत्तमाणं के० पुरुसमाहे उत्तम पुरिससीहाणं के० पुरुषमाहे सिंहसमान पुरिसवरपुंडरीयाणं के० पुरुषमाहे पुन्डरीक कमल समान पुरिस के० पुरुषमाहे वर के० प्रधान गंधहत्थीणं के० गंधहस्ती समानछे लोगुत्तमाणं के० लोक माहे उत्तमछे लोगनाहाणं के० लोक नाथछे लोगहियाणं के० लोकना हितकारीछे लोगपईवाणं के० लोकने विषे दीपक समानछे लोगपज्जोयगराणं केहेता० लोकमांहे उद्योतना करणार अभयदयाणं के० अभयदा

ननां देणार चक्खुदयाणं के० ज्ञानरूप चक्षुना देणार मग्गदयाणं के० मोक्षमार्गनां देणार सरणदयाणं के० सरणना देणार जीवदयाणं के० सजमजीवितव्यनादेनार बोहिदयाणं के० समकितरूप बोधना देणार धम्मदयाणं के० धर्मना देणार धम्मदेसियाणं के० धर्मना उपदेशना देणार धम्मनायगाणं के० धर्मना नायक धम्मसारहीणं के० धर्मरूप रथना सारथी धम्म के० धर्म विषे वर के० प्रधान चाउरंत के० चार गतीना अंत कर्वा माटे चक्कवट्टीणं के० चक्रवर्ति समानछे दिवो के० बेटसमान ताणं के० दु:खनां निवारण करनार सरण के० आधार गइ के० चार गतिमाहे पइट्ठा के० पम्ताजीवने अप्पडिहय के० नही हणाणो एवूं वर के० प्रधान नाण के० ज्ञान दंसण के० केवल दर्शण एटले देषवूं धराणं के० धरणार विअट्ट के० गयूंछे छउ माणं के० छद्मस्थ पणुं एटले कर्मरूपी आवरण जिणाणं के० राग द्वेषने जीत्याछे जावियाणं के० बिजाने रागद्वेषथकी जिताव्याछे तिन्नाणं के० संसार रूपी समुद्रतर्याछे तारयाणं के० बिजाने संसार समुद्रथी तारेछे बुद्धाणं के० पोते तत्वज्ञानने समज्या बोहियाणं के० बिजाने तत्वज्ञान समजावणार मुत्ताणं के० पोतेचातुर्गतिक विपाक वि

चित्र कर्म थकि मुकाणा तथा **मोयगाणं** के॰ बीजा जन्य प्राणीने कर्मथकि मुकाव णाछे **सव्वन्नूणं** के॰ सर्व ज्ञानीछे **सव्वदरिसीणं** के॰ सर्वपदार्थना देखणारछे **सिव** के॰ सर्व उपद्रव रहित **मयल** के॰ अचल **मरूए** के॰ रोग रहीत **मणंत** के॰ मर्ण रहित **मरकय** के॰ सर्वकाल निश्चल **मव्वाबाह** के॰ बाधा पीडारहित **मपुणराविति** के॰ जे गती थकि फीरी संसारने विषे अवतार लेवोनथी एवि **सिद्धीगइ** के॰ सिद्धिगतीछे **नामधेयं** के॰ जे एवुं नाम **ठाणं** के॰ एवुं स्थानक **संपत्ताणं** के॰ मोक्ष नगर प्रत्यें पाम्याछे एवा अरिहत जणी **नमो** के॰ नमस्कारहोजो **जिणाणं** के॰ कर्मरूपी सत्रुने जितणार तथा श्री

नवमासामायकव्रतनोअर्थछे

पंचअइयारा के॰ पाच अतीचारछे ते **जाणियव्वा** के॰ जाणवा **नसमायरीयव्वा** के॰ आचरवानहि **तंजहा** के॰ जेमछे तेम **तेआलोउं** के॰ ते कहुंछुं **मणडुप्पणिहाणे** के॰ मने माठो वरत्युहोय **वयडुप्पणिहाणे** के॰ वचनमाठु वर्त्युहोए **कायडुप्पणिहाणे** के॰ कायामाठी प्रवर्तिहोए **सामाइयस्सइ** के॰ सामायकने **अकरणयाए**

के॰ बराबर कीधि केनहि तेनी बराबर खबर नरहीहोय **सामाइयस्स** के॰ सामायक ने **अणावुच्चियस्सइकरणयाए** के॰ पुरी थयाविना पारीहोय तो दशमनरा दशवच नरा बारेकायारा ३२ दोषमाहेलो दोस लागो होएतो सामायकमे राजकथा देसकथा अस्त्रीकथा न्मातकथा चारकथा माहेलीविकथा कीधीहोय **तस्स** के॰ तेनुं **मि॰** के खोटो किधो ते निःफलथाओ **समायक सम्मकायेणं** केहे॰ सामायक कायाए बराबर रीति **फासियं** के॰ स्पर्शकरीयो अंगीकारकरीयो **पालियं** के॰ तेवोजपाल्यो **सोहियं** के॰ सुध्धकर्यो **तिरियं** के॰ पारउतार्यो **कित्तयं** के॰ कितीं कीधी **आराहियं** के॰ आराधना किधी **आणाए** के॰ वीतरागदेवनी आज्ञाने **अणुपालियं** के॰ पालिनभवइ के॰ नहोय **तस्समिच्छामिदुक्कडं** के॰ खोटा कीधानुं फल निष्फल थावो इतिसामाय कसंपूर्णश्री॥

॥ अथ सामायकनी विधी लिख्यते ॥

प्रथम श्रीसीमंधर स्वामीजीनी आज्ञा लेईने एक नवकार गुणीने इरिया व हीनीपाटी न्भणवी पछी तस्सोत्तरीनी पाटी न्भणवि न्भणीने कावस्सग्ग करवो का

वसग्ग मांहि इरिया वहीया थकीतें जीवियाउं ववरोविया तस्समिछामि ड
क्कडं सुधीनो पाठ मनमां बोलिने एक नवकार मनमां कहीने काउसग्ग पा
रवो पछि प्रगट लोगस्सकी पाटी कहीने सामायकनी आगन्या लेईने करे
मि भंतेनीपाटी जावनियम सुधी कहिने सामायकनी आगन्या लेईनें आगल
मूहूर्त घालणो हुवे तिके घालणो पछी पज्जुवासामि थकी अप्पाणं वोसि
रामि सुधी पाठ कहीने सामायक पचखवी पछे डावो गोढो उभो करीने
दोयवार नमुत्थुण नी पाटी केहवि दुजा नमुत्थुणंना छेहडे ठाणं संपाविउ का
मस्स नमो जिणाणं एम कहेवोः अने सामायक पारति वेलां इरियावही तस्स
उत्तरी नी पाटी भणीने काउस्सग्ग करवो काउस्सग्ग मांहि इरियावहीनी
पाटी कहीने एक नवकार गुणीने काउस्सग्ग पारवा पछी लोगस्स भणी न
मोत्थुणं दोयवार उपर लिख्या मुजब कहीने नवमा सामायकनी पाटी अणुपा
लियं न भवई तस्स मिछामि दुक्कडं सूधी कहीने तीन नवकार गुणीने सा
मायक पारवी ०

॥श्री॥

॥ इति श्री सामायक अर्थ विधि संपूर्णं ॥

॥ श्री जिनायनमः ॥

॥ अथ श्री प्रति क्रमण अर्थ विधी सहित प्रारंभेछे ॥

विधी प्रथम० चोविस स्तव कीजे उन्नो रहीजे तिखुत्तो गुणीजे देव गुरू तथा वम्रा साधर्मिभाईनी पडिक्कमणो ठायवानी आज्ञालईने इच्छामिणं भंते नी पाटी कहीजे इच्छामिणं भंते तुझेहिं अभ्नणं नायसमाणे देवसि पडिक्कमणुं गणुमि देवसि ग्या न दंसण चारित्त तप अतिचार चिंतवणार्थ करेमि कावस्सग्गं १ इति ॥श्री॥

॥ अर्थछे ॥

इच्छामिणं के० ईच्छुं भंते के हेभगवन् तुझेहिं के० तुमारी अभ्नणुं नायसमाणे के० अज्ञा मागीने देवसि के० दिवस संबंधी पडिक्कमणुं के० पापनु निवारण करण वास्ते गणुमि के० एकठीकाणे बेठुं देवसि के० दिवस संबंधी ग्यान के० ज्ञान दंसण के० दर्शन समगत चारित के० चारित्र कर्मरूपी शत्रुको नाशाकरणो तप के० तपस्यासंबंधि अतिचार के० वृतभागवाने तयारथवूंते चिंतवणार्थ के० चिंत

वणा कर्णवासते **करेमि** के॰ हुकहुछु **काउस्सग्गं** के॰ कायाकी स्थीरता ॥ १ ॥
पछी नवकार कहीजे तिखुत्तारा पाटसूं पेला आवश्यकनी आगन्या मागीने करे
मि भंतेनी पाटी कहीजे पछि इच्छामि ठामीनी॰ पाटी भणीजे. ।श्री।
अर्थ‍छे **इच्छामि** के॰ हुंइछुछुं **ठामि** के॰ एकठिकाणे रहीने **काउस्सग्ग** के॰ काया
कि स्थीरता **जो** के॰ जे मे के॰ माहारा जीवें **देवसिउ** के॰, दिवस सबंधि अइया
रो के॰ अतीचार **कउ** के॰ कीधाहोए **काइ उ** के॰ काया संबंधि **वाइउ** के॰ व
चन सबधि **माणसिउ** के॰ मनसंबंधि **उस्सुतो** के॰ सूत्र विरोधपरूपणा किधीहोय
उम्मग्गो के॰ जिनमार्ग उल्लंघीने उजो मार्ग पकड्योहोए **अकप्पो** के॰ नभोगवा
नी वस्तु भोगवी होए **अकरणिज्जो** के॰ कर्वा जोग्य नही एवो कार्य करियो होए **दु**
झाउ के॰ आर्त रौद्र ध्यान ध्याया होय **दुव्विचिंतिउ** के॰ दुष्ट असुभ कार्यनी म
नमा चिंतवणा कीधी होय **अणायारो** के॰ ए नव अनाचार आचरवानही **नाणे** के॰
ज्ञानने विषे **तह** के॰ तिम हीज **दंसणे** के॰ समकितने विषे **चरित्ताचरित्ते** के॰
काइएक चारित्र ने काइएक नही चारित्र एवो जे श्रावकनो चारित्र तेने विषे **सुए**

के० सूत्र सिद्धांतने विषे सामाइए के० समतारूप सामायकने विषे तिन्हं गुत्तीणं के० मनगुप्ति वचनगुप्ति कायगुप्ति ए तीन गुप्ती न पाल्या थका चउन्हंकसायाणं के० क्रोध मान माया नें लोभ ए च्यारकसाय करिया थका पंचन्हमणुव्वयाणं के० १ प्राणातिपात २ मृषावाद ३ अदत्तादान ४ मैथुन ५ परिग्रह ए पाच प्रकारना विरमण अणुव्रतने विषे तिन्हं गुणव्वयाणं के० छठो सातमो ने आठमो एतीन प्रकारका गुणव्रत माहेथी चउण्हंसिरकावयाणं के० चार प्रकारका सिक्षा व्रत नवमो दशमो इग्यारमो ने बारमोए माहेथी बारसविहस्स के० ए बारे प्रकारकाव्रत सावगधम्मस्स के० श्रावक संबंधि जे धर्म तिण माहेसुं महारा जीवें जं खंडियं के० जे देशथकि भंग कीधो जंविराहियं के० जे सर्वथकि भंग किधो तस्स के० तेहेनुं मिछामि के० मुजने निफलथायो डुक्कडं के० पाप ० २० संलेहणारा ० अपच्छिम मरणंतिय संलेहणा झुसणां आराहणा पंच अइ यारा जाणियव्वान समाय रियव्वा तंजहा ते आलोउं इहलोगेसंसप्पउगे परलोगे संसप्पउगे जीविया संसप्पउगे मारणा संसप्पउगे काम भोगा संसप्पउ

गे १८ पाप स्थानक १ प्राणातिपात २ मृषावाद ३ अदत्तादान ४ मैथुन ५ परिग्रह ६ क्रोध ७ मान ८ माया ए लोभ १० राग ११ द्वेष १२ कलह १३ अभ्याख्यान १४ पैशुन्य १५ परिवाद १६ रति अरति १७ माया मोसो १८ मिथ्या दंसणशल्ल एवं १८ पापस्थानक माहिंसुं माहारे जीवें जे कोई मने वचने कायाये करीसेव्युं होए सेवराव्युं होय सेवतां प्रत्ये भलो जाण्यो होय एम एए अतिचार १८ पापस्थानक कहीने पछी इच्छामिगामिनी पाटी जं विराहियं सुधी कहीने नवकार भणीने काउस्सग्ग पारीजे इति प्रथम सामायक आवसक संपूर्णम्०

॥ श्री ॥

विधी पछी तिखुत्तारा पाठसु दुंजा आवसकनि आज्ञामागीने प्रगट १ एक लोगस्स नी पाटीकहीजे इति दुजो चउविसत्था आवसक संपूर्ण पछी तिखुत्तारा पाठसूं तीजा आवशकनी आगन्या मागीने दोयवार इच्छामिखमासमणा रीपाटी कहीजे पाटी माहे प्रथम जिहां निसीहियाए सब्द आवे तिहा उभागोभाकरी हाथ जोडीने बेसीजे तथा६आवर्त कीजे ते आप्रमाणे प्रथम अहोकायंकाय ए सब्द उच्चारतामुखे ति

न आवर्त हुवे ठे ते कहेठे दोनु हाथ लांबाकरि हाथनी दश आंगुलि जोमीउपर लगाव ता मुषसुं अ अक्षरकहे पठे तेमज दश आंगुली आपरा मस्तकने लगाम्ता हो अक्षरकहे ए दोनु अक्षर कहेता २ एक आवर्त ज्ञवो इणहीज रीतिसुं का ने यं अक्षर उचारता २ डुजाआवर्त हुओ अने कानेय अक्षर उचारतां २ तीजो आवर्त ज्ञवो पठी जत्तानेजवणिज्जंचभे सब्द उचारतां ३ आवर्त ज्ञवेठे ते कहेठे प्रथम ज अक्षर मंदस्वरसु ता अक्षर मध्यमस्वरसूं ने भे अक्षर उंचास्वरसुं उपरकिरीतिसुं मस्तके हाथ लगाम्ता कहे एवं ३ अक्षरकेह्तां ० आवर्त तथा जवणि एतिन अक्षर त्रिविध सादसुं उपर मुजब उचारता डुजो आवर्त तथा ज्जंभे ए पण ३ तीन अक्षर पूर्वनीरीते केहता तीजो आवर्त एवं ६ आवर्त प्रत्येक पाटीमाहे करीजेः तथा तितीस न्नयराए सब्द आवे तीहां पाछे उभो रहीजे इणविधे दोयवार खमासमणा री पाटी संपूर्ण कहीजे

॥ श्री ॥

॥ ते पाटी आपमाणेठे तेना अर्थठे ॥

इच्छामि के० इच्छुं खमासमणो के० हे क्षमावंत साधु तुमने वंदिउं के० वांडुं

वादवाने **जावणिज्जाए** कें॰ जावतशक्ती सहित **निसीहियाए** के॰ असुन्न जोगना नीषेधो सरीरे करी **अणुजाणह** कहेतां॰ आज्ञा देवो मे के॰ मुजने **मिउग्गहं** के॰ मर्यादा माहे प्रवेश करणकि **निसिही** के॰ असुन्न जोगने निषेध करीने **अहोकायं** के॰ तुमाराचर्ण प्रत्ये **काय** के॰ माहारा हात तथा मस्तके करी **संफासं** के॰ स्पर्श करूछु **खमणिज्जो** के॰ खमवा जोग ठे ते खमजो **भे** के॰ हे पूज्य तुमने **किलामो** के॰ तुमारा चरण स्पर्शता जे काइ आपनुं खेद उपजाव्यो होए ते खमजो **अप्पकिलं ताणं** के॰ तुमारी किलामना गईठे **बहुसुभेणं** के॰ वणाक्षेमकुशळें करीने **भे** के॰ हेपुज्य तुमारो **दिवसो** के॰ दिवस **वइक्कंतो** के॰ निराबाधपणे गयो **जत्ता** के॰ तप संजमरूप यात्रा **भे** के॰ हे करुणांसमुद्र तुमारी अव्या बाध पणे वर्ते ठे **जवणिज्जं च भे** के॰ वली इंद्रीयोये **करी** पीमीत नही एवूं तुमारो शरीर ठे **खामेमि** कहेता ह्रुं खमावुछु **खमासमणो** के॰ क्षमावंत साधु **देवसियं** के॰ दिवस संबंधी **वइक्कम्म** के॰ विराधनारूप मारा अपराध ते प्रतें **आवसियाए** के॰ आवस्य करणी करता जे अतिचार लागो होए तेथकी **पडिक्कमामि** के॰ ह्रुं निवर्त्तुंछुं **खमासमणाणं** के॰ क्ष

मावंत साधुनी देवसियाए के॰ ते दिवशने विषे थइ एवी जे आसायणाए के॰ आ
सातना खंम्नां तीत्तीसन्नयराए के॰ तेतीस आसातना माहेत्री अनेरी कोई एक प
ण आसातनाये करीने जंकिंचिमिछाए के॰ जे काई खोटो कीधो होए मणडुक्कडा
ए के॰ मन संबंधि जे डुष्कृत पाप तेणे करीने वयडुक्कडाए के॰ वचन संबंधी जे
डुष्कृत पाप तेणें करी कायडुक्कडाए के॰काया संबंधी जे डुष्कृत पाप तेणे करी कोहा
ए के॰क्रोधरूप आसातनाये करी माणाए के॰ मानरूप आसातनायें करी मायाए के॰
कपट रूप आसातनाये करी लोहाए के॰ लोभ रूप आसातनाये करी सव्वकालियाए
के॰ अतीत अनागत ने वर्तमान एव सर्व कालने विषे सव्वमिछोवयराए के॰ सर्व कू
ड कपट क्रियारूप आसातनाये करीने सव्वधम्माइक्कमणाए के॰ सर्व धर्मनि जे क
रणी तेणें उल्लंघवा रूप आसातनायें करीने आसायणाए के॰ ए सर्व प्रकारनी आ
सातनाये करी जो के॰ जे मे के॰ मारे जीवे देवसिउ के॰ दिवस संबंधी अइयारो
के॰ अतिचार दोष कउ के॰ करिया होए सेव्यो होय तस्स के॰ ते अतिचार प्रत्ये
खमासमणो के॰ हे क्षमा श्रमण तुमारा समीपें पडिक्कमामि के॰ हुं प्रतिक्रमुछुं

मिच्छामि डुक्कडं देवुछुं निंदामि के० डुष्ट कर्म कारी आत्माने हुं निंडुंं गरिहामि के० गुरुनी साखें ऊ विशेषेःनिंडुं अप्पाणं के० डुष्ट आत्मा प्रत्यें वोसिरामि के० ऊं तजुंछुं वोसिरावुंछुं० इति० ॥

विधि इति तिजो वंदना आवसक संपूर्ण पछी तिखुत्तारा पाठसुं चौथा आवसकनी आगन्या मागीजे प्रथम काउस्सग्ग माहे ए ए अतिचार कह्याते आगमे तिविहे नी पाटी थकि इच्छामिगामि नी पाटी सुधीं प्रगटपणे कहेवाः जिण माहे प्रत्येक पाटी तथा थूतके० जेम तस्सामिच्छामि डुक्कडं कहेवो पछे तस्स सव्वस्स नी पाटी कहिजे ते कहेछे तस्स सव्वस्स देव सियस्स अइयारस्स डुब्भासियं डुच्चिंतियं आलवंते पाडिक्कमामि ४ अर्थः तस्स के० ते पूर्वे चिंतिया जे ससव्वस्स के० सर्व देवसियस्स के० दिवस संबधी अइयारस्स के० अतिचार डुब्भासियं के० उपयोग रहित अनिष्ट भाषा बोलवा थकि थयो जे डुच्चिंतियं के० डुष्ट कार्य मनमा चिंतववा थकि थयो जे आलवंते के० आउवीने प्रगटपणे कहीने ते थकि पडिक्कमामि के० हूं निवर्तुंछु

विधीः पछे नीचे बेसीने जीमणो गोडो उंचो करिने नवकार करेमिभंते नीपाटी

काहिजे० तथा चत्तारी मंगलं नीपाटी कहीजे ते पाटी कहेछे: अर्थः चत्तारि के० चार मंगलं के० मंगलिकछे ते मांहि एक तो अरिहंता के० जेणे रागादिक अतरंग वेरीने हण्याते श्री अरिहंत मंगलं के० मंगलिकछै डुजा सिद्धा के० अष्ट कर्मने क्षय करीने सिद्धपदने पाम्याछे ते श्रीसिद्ध मंगलं के० मगलिक छे तीजा, साहू के० जे सम्यग ज्ञानेकरी शिव सुपना साधक जेसाधूते मंगलं के० मगलिक छे चोथा केवलि के० श्री केवलि भगवंतनो पण्णत्तो के० परुप्यो एवोजे श्रुत चारीत्र रुप धम्मो के० धर्म ते मंगलं के० मंगलीकछे० चत्तारि केता चार लोगोतमा के० लोक माहेउत्तमछे १ अरिहंता के० श्री अरिहतछेते लोगुत्तमा के० लोकमाहे उत्तमछे २ सिद्धा के० सिद्धछेते लोगुत्तमा के० लोकमाहे उत्तमछे ३ साहू के० साधुछे ते लोगुत्तमा के० लोकमाहे उत्तमछे केवलिपण्णत्तो के० केवलिनो परुप्योते धम्मो के० धर्म लोगुतमा के० लोकमाहे उत्तमछे चत्तारि के० चार सरणं के० सरण प्रत्ये पवज्जामि के० अंगीकार करुंछुं १ अरिहंता सरणं के० श्री अरिहंत सरणने पवज्जामि के० अंगीकार करुंछुं २ सिद्धासरणं के० श्री सिद्धा शरणने पवज्जामि के० अंगीकार करुंछुं ३ साहूसर

र्णं के० साधुशरण प्रत्यें पवज्जामि के० अंगीकार करुंछुं ४ केवलि के० श्री केवलि
ये पण्णतं के० भाख्यो एवो जे धम्मं के० धर्म तेना सरणं के० शर्ण प्रत्ते पवज्जामि
के० अंगीकार करुंछु आगला शब्दको अर्थ सुलक्ष छे जिणसु लख्योनही ६ अरिहं
ताजी को सरणो सिधाजीको सरणो साधुजीको सरणो केवलि परुप्यो दयाधर्मको स
र्णो चारसरणा दुखहरणा ओरनडुजो कोय जे भाविशर्णो आदरे तो अखय अमर गति
होए ॥ विधि पछे इगमिणमी तथा इरियावही नी पाटी कहीने तिखुतारा पाठ
सु व्रतअतिचार जेलाकेहवानी आज्ञा मागीजे ते नीचे लिखेछे प्रथम आगमेतिविहेनी
पाटी कहीजे ते आपरिमाणे अर्थने आगमे के० सूत्रज्ञानरूपसूत्र सिद्धात तिविहे के०
तीन प्रकारका छे पनते के० कह्या तजहा के० ते कहेछे० सुतागमे के० सुत्र आ
गम अत्थागमे के० अर्थ आगम सुत्रना अर्थ करवाते तडुभयागमे के० ते सूत्र
तथातेनो अर्थ एदोय आगम जेहने होए ते तीजो आगम एवाश्रीज्ञानने विषे जे
कोइ अतिचार लागो होयते आलोउं के० ते कहुछु जंवाइद्धं के० सूत्र आघो पाछो
भण्या होय वच्चामेलिय के० उपयोग रहीत सूत्र वारं वार भण्यो होय हिणक्खरं के०

ओछो अक्षर भण्यो होय अच्चरकरं के० अधीकअक्षर भण्यो होय पयहीणं के० पद ओछु भण्यो होय विनयहीणं के० विनय रहित भण्यो होय जोगहीणं के० मन वचन कायाना योग ठाम राख्याविना भण्यो होयते घोसहीणं के० सुध्दउचार रहित भण्यो होय सुठदिंन्न के० रुडज्ञान अविनितने दीधुहोय डुठुपडिछियं के० अविनीत पणे ज्ञान लिधुं होय अकालेकाउसझाओ के० चार संध्याकाल च्यार महोछव च्यार महापडिवइ एवं १२ अकाल ते कालमा सज्झाय कीधी होय कालेनकउसझाओ के० खरीवखते ते टाणे सझायन किधी होय असझायेसझायं के० दशउदारीक सरीरनी दश अंतरीख आकासना २० असझाइमे सूत्रभण्या होए सझाइयेनसझायं के० सझायकर्वा जोग्य जगाये स्थांन सझाय कीधी होय तस्समिछामिडुक्कडं के ० ते डुस्कृत पाप निस्फलथावो ६ ॥ पछी दंसणसमाकित नी पाटी कहीजे ते कहेछे श्री ॥

दंसण समकित परमत्र संथवोवा सुदिठ परमत्र सेवणा वावि वावन कूदंसण वज्जणा समत सद्दहणा एहवा समकित ना समणो वासएणं समतस्स पंच अईआरा पायाला जाणियवा नसमायरियवा तंजहा ते आलोऊं संका कंखा विति

गिछा परपासंडपरसंसा परपासंड संथवो एवं पांच अतिचार मध्ये जेह अतिचा
रलागो होए तो तस्समिछामि डुकडं ७ इति || श्री ||
अर्थदंसण के॰ सद्दहणा आस्ता समकित के॰ समकित खरा धर्म नो आचर्ण परम
त्थ के॰ उतकृष्टो एहज मोटो अर्थ संथवोवा के॰ पारिचय कर्वो तेनो समागम करवो
सुदिठ के॰ नलिइष्टीथी परमत्थ के॰ सुत्रना अर्थनी सेवणा के॰सेवना कर्वि वावि के॰
अथवा वावन के॰ समकित पामिने पछि तेथी खसी जायते कूदंसण के॰ कुडुज्ञान जे
नु एटले मुलथी समकित जेने न होय वंजणा के॰ तेने वर्जवो त्याग करवो समत
के॰ एसमकित वतनि सद्दहणा के॰ सर्दणा श्रधा एहवासमकितनासमणोवासए
णं के॰ एवा समकितवंत श्रावकने समत्तस्स के॰ समकितने विषे कांइ अतिचार ला
गो होयते आलोर्ड के॰ ते कहुतु आलोर्डतुं संका के॰ जिनवचन तणो संदेह कीधोहो
ए कंखा के॰ मिथ्यात्व मतनी इछा किनि होए सज्ञ मार्ग नला जाएयाहोए वितिगिछा
कहे॰ धर्म कर्णिना फलमाहि संदेह आएयो होए धर्म करीयानु फल होशे के॰ वा॰
नही एवोसंदेह धरियो होए साधु साधवीना मलिन वस्त्र देखी डुगुछा किनीहोए परपा

संडपरसंसा के० मिथ्यात्वीनी प्रभावना देखी प्रसंसा किनीं होए परपासंडसंथवो के० मिथ्यात्वना परूपक नो परिचय कीधोहोय एवं पाच अति चार माहेथी जे अतीचार लागो होय तो तस्स के० ते संबंधी मिच्छामि के० मुजने निष्फल थावो डुक्कडं के० डुष्कत पाप ७ इति पछी १२ वारे व्रतआतिचार कहीजे ते कहेछे ॥ श्री ॥ अर्थसहित पहिलु के० पहिलो अणुव्रत के० साधुना पंच महाव्रतनी अपेक्षाए छोटो व्रत थूलाउ के० मोहोटा पाणा के० प्राणी जीव मात्रनी वायाउ के० हिंसा थकि वेरमणं के० निर्वर्तुं तस्सजीव के० त्रसजीव हालता चालता जीव बेइंदिय के० दो यइंद्रिय वाला तेइंदिय के० तिन्नि इंद्रिय वाला चउरिंदिय के० च्यार इंद्रिय वाला पंचेंदिय के० पाच इंद्रिय वाला जीवः जाणी के० जाणी करी ने प्रीछी के० उलख्या थका विण अपराधी के० नीरापराधी जीवने आकुटी के० उदेरी संकल्पी के० संल्प करीने सलेसी के० द्वेसा सहित हंणवानिमिते के० हणवानि बुधीयेकरीने हणवाना पचखांण के० हिंसा करवांनी बंधी जावजीवाए के० जासुधी जीवुं त्यांसुधी डुविहं के० दोय करण तिविहेणं के० तीन जोगसु नकरेमि के० करूंनहीं नकारवेमि के०

डुजापासे करावुंनहीं मणसा के॰ मने करी वयसा के॰ वचने करी कायसा के॰ कायें करी एवापेलाथुल के॰ एवापिहि ला मोटा प्राणातिपात के॰ -जीवनींहीस्याथकि विरमणं के॰ नीवर्तवाना व्रतना के॰ व्रतना तेआलोउ के॰ तें जिमहे तिम कहुं बंधे के॰ जीवने गाढे बंधणे बाध्यो होय वहे के॰ गाढा घाव घ्याल्या होए गविछेए के॰ सरीरना अवयव छेदा होय अइभारे के॰ अति भार भरियो होए भतपाण वुछेए के॰ अन्नपाणी भोगवता अतरायदीनो होए तस्सामिछामिडक्कडं के॰ ते अतीचार रुपडुष्कृत पाप मुजने निष्फल थावो ८ इति ॥ श्री ॥

अर्थ बिजो अणुव्रतथुलाउ के॰ मोटो मुसावायाउ के॰ मृषावाद थकि जुठु बोलवाथी विमणं के॰ ञनिवर्तुंबु कन्नालिय के॰ कन्या तथा वर संबधी जुट गोवालिय के॰ गाय भेसादि संबधी ढोर ते संबंधी जुट भोमालियं के॰ जमीनना काममाहे जुट थापणमोसो के॰ कोईनि स्थापण ओलवावि मोटकी कूडीसाख के॰ मोटी खोटी साक्ष भरवि इत्यादिक के॰ इत्यादिक करीने • मोटकू जूट के॰ मोटो जूट बोलवानी के॰ बोलवाना पच्चखाण के तेसंबधित्याग जावज्जीवाए के॰ जावज्जीवलगे

डविहं तिविणं नकरेमि नकारवेमी मणसा वयसा कायसा एहवाबिजा थूल मृषा वाद वेरमण व्रततेने विषेजे कोई आतिचार लागोहोय ते आलोउं सहस्सा भखाणे के० सहसात्कार कोइ प्रते कूडुं आल दीनो होय रहस्सा भरवाणे केता० कोईनी रहस्य छानिवात प्रगट कीनीहोय सदार मंतभए के० पोतानी स्त्रीना मर्म प्रकाश्याहोय मोसोवएसे के० जूटा मृखा उपदेश दीधाहोए कूडलेहकरणे के० खोटा लेख लिख्या होयकरियाहोय तस्स मिन्छामिडक्कडं के० तेपापमुजने निफलथावो ए इति ॥

अर्थ त्रीजो अणुव्रत के० तीजो छठो व्रत थूलाउ के० मोहटुं अदीन्नादाणाउ के० अणदीधेलुं लेवाथकी चोरी करवा थकी विरमणं के० निवर्तुंछुं खातरखणी के० खात खामो खोदीने गांठडी गेडी के० कोईनि गाठडी छोडीने तालुंपरकूचियेंकरी के० कोइनी कुलुप बीजी किल्ली सुंउघाडीने पडीवस्तधणी याती जाणी के० कोइनी पडेली वस्तनोकोई धणीछे एमजाणया छतातेलवी इत्यादिक मोटकूं के० ए आदी बीजा मोटकां अदत्तादांन के० अणदीधेलु लेवाना पच्चखाण के० त्याग जावज्जीवाए के० जावज्जीवसुधी डविहं तिविहेणं नकरेमि नकारवेमि मणसावयसा कायसा

एहवा त्रीजाथूल अदत्तादान वेरमण व्रतने विपेजे कोइ अतिचार लागोहोय ते आलोउं केता॰ तेजीमध्ये तीम कहुंछु तेन्नाहडे केचोरीनी वस्त लीनी होय तक्कर पउगे के॰ चोरने द्रव्य उपगर्ण वगेरे को सहाय दीनी होय विरुध रज्जाइकम्मे के॰ राज्य विरूद्ध कीधोहोए राजानो दाणभागे तथा राजा मनाइ करेला गुन्हा करई ते कूडतोले के॰ खोटा तोला किना होय कूडमाणे के॰ खोटा मापा कीना होय तं पडी रुवग ववहारे के॰ माहि भेल संभेल कीनी होय सरसी दिखायने निरसी आपी होय तो तस्स मिछामिदुक्कडं के॰ ते पाप मुजने निष्फल थावो ११ इति ॥

अथ चोथुं अणुव्रत के॰ चोथो ठाव्र थुलाउ के॰ मोटा मेहुणाउ के॰ मैथुनथकी वेरमणं के नीवर्तुं सदार के॰ स्त्री थीज संतोसिए के॰ संतोस राषवो अवसेसं के॰ ते सिवाय बीजा कोइनी साथे मेहुण के॰ मैथुनकर्वानी पच्चखाण के॰ त्याग वंधी एपुर्षने अनेस्त्रीने सभ्नतार के॰ पोताना भर्तार थीज संतोसिए के॰ संतोस राखवो अवसेसं के॰ तेसिवाय बीजा कोइनी साथे मेहुणनो के॰ मैथुन कर्वानी पच्चखाण के॰ वधी अनेजे स्त्री पुर्षने मुलथाकि कायाए करी मेहुणं सेववानो पच्चखाणहोय

ते मैथुन करवानी बंधी होय तेहने देवता मनुष्य तिर्यंच संबंधि मेहुणनो के० मै
थुन करवाना पञ्चखाण के० त्याग जावज्जीवाए के० जहांसुधीं जीवे त्यांसुधी दे
वतासंबंधि के० तेमा देवतानी साथे डविहं तिविहेणं नकरेमि नकारवमि मण
सा वयसा कायसा मनुष्य तिर्यंच संबंधी मेहुणनो के० मैथुनकरवानो पञ्चखा-
ण के० त्याग जावज्जीवाए के० ज्यांसुधीं जीवो त्या सुधीं देवतासंबंधी के० तेमा दे-
वतानी साथे डविहं तिविहेणं नकरेमि नकारवेमि मणसावयसाकायसा मनुष्य
तिर्यंच संबंधि के० माणस तथा पसु वगेरेनीसाथे एगविहं के० एककर्ण एगवीहे
णं कहेता एकजोगे नकरेमि कहेता ए कामकरुंनहीं कायसा के० कायएकरी एह-
वा चोथा थूल मेहुण विरमण व्रतना के० मोहोटा मैथुन त्याग करवाना व्रतने वि-
षे जे कोई अतिचार लागो होय ते आलोउं के० तकउलु इत्तरिय के० ना-
हानि उमरनीं परिगहीय के० पोतानी परणेली स्त्रीसाथे गमणे के० गमन किधो होय
अपरिगाहियगमणे के० परणेली नहोय ते कुमारिका अथवा वेश्यादिक तेनीसाथे मै-
थुन सेव्योहोए अनंगकिडा के० परस्त्रीनी साथे सुइमोरा टाल कामचेष्टा हास्य कुतूहल

किनाहोय परविवाह करणे के० पोताना छोरु टालीने यस वेलाने अर्थे परना विवाह नाडुं मेलव्युं होय कामभोगेसु के० कामभोगने विषें तीवाभिलासा के० तीव्र प्रणामे अत्यंत अभीलाखाराखीहोय तस्समिछामि डुक्कडं के० ते खोटुं कीधेलु पाप निष्फल थाजो ११ इति ॥ श्री ॥

अर्थ पंचमुं अणुव्रतके० उणुछोव्रत थूलाउ के० मोटुं परिग्गहाउ के० परिग्रह दो लत वेरमणं के० तजवा विरनु ते आगल कह्या प्रमाणें जेटलुं मानकर्युं होय ते शि वाय खेत्त के० खेत्रादिक उघाडी जमीन वत्थुनो के० घरादीक ढांकि जमिननी यथापरीमाण केहेता जेप्रमाणे मर्यादा कीधीछे हीरण के० रुपा सोवननो के० सोनानी यथा परिमाण के० जेप्रमाणे मर्यादा कीधीछे धण के० मोहरबंध नाणुं धांनतुं के० साहादिक धांनकी यथापरिमाण के० जे प्रमाणे मर्यादा कीधीछे डुपद के० बेपगा मनुष्यादिकेंचउपदनो के० चोपगा ढोरादिकनी यथा परिमाण के० जे प्रमाणे मर्यादा कीधीछे कुवइ धातनो के० सर्वघरनी वस्तु ते घरवखरादीकनी यथापरीमाण के० जे प्रमाणे मर्यादा कीधीछे एयथापरीमाणकीधोछे के० एप्रमाणे जेवी

मर्यादा कीधीछे तेउपरांत के॰ तिणउपरात एटले अधको पोतानोकारि के॰ आपरोक री परिग्रह राखवाना पच्चखाण के० बंधी जावजीवाए के॰ ज्यासुधीं जीवुं त्यासु धीं एगविहंतिविहेणं नकरेमी मनसावयसा कायसा एवा पांचमाथूल परिग्रह परि माण वेरमण व्रतने विषेजे कोइ अतिचार लागोहाय ते आलोंऊंखेत्तवत्तुप्पमाणा इक्कमे के॰ सुधामी जमीन तथा ढाकिजमीननु प्रमाण अतिक्रम्या होए हिरण सो- वनप्पमाणाइक्कमे के॰ रुपो तथा सोनानी मर्यादा ऊल्लंघीहोय धणधानप्पमाणाइ क्कमे के॰ रोकम्नाणुं तथा दाणानी मर्यादा उल्लंघी होय डुप्पयचउप्पय प्पमा- णाइक्कमे के० बेपगा चोपगानी मर्यादा उल्लंघी होए कुवियप्पमाणाइक्कमे के॰ घर- वखरानी मर्यादा उल्लंघी होय तस्समिच्छामिदुक्कडं के॰ ते खोटुं किधेलुं निष्फल थाजो १२ इति ॥ श्री॥

अर्थछठुंदिशिव्रत के॰छठो दिशानुं मान बाधवानो व्रत उर्द्धदिशिनु के॰ उंचिदीसानुंय थापरीमाण के० जेप्रमाणेमर्यादाकीधीछेअधोदिशिनु के॰ निची दीशानी यथापरिमा ण के॰ जे प्रमाणे मर्यादा कीधीछे तिरियदिशिनु के॰ त्रींछीजमीन एटले उत्तर दक्षिण

पूर्वअनेपश्चिम दिशानुयथा परिमाण के॰ जे परमाणे मर्यादा कीधीछे एयथापरिमाणकी धीये के॰एप्रमाणे मर्यादा कीधीछे तेउपरांत के॰ ते सिवाय सइन्नाइ के॰ पोतानिमर जिथी कायाइजइने के॰ पोतानीकायाये करीने पंचआश्रवसेववाना के॰पांच आश्र वपाप न्नोगवाना करवाना पच्चखाण के॰ त्याग जावज्जीवाएडविहंतिविहेणंनकरेमि नकारवेमिमनसा वयसा कायसा एहवा छगादिशि वेरमणव्रतने के॰ मानउपरांत दिशाने तजी दिशानाव्रतने विषेजेकोईअतीचारलागो होय ते आलोउं उर्द्धदिसिप्प माणाइकम्मे के॰ उची दिशानुं प्रमाण अतिक्रम्युं होय मर्यादा उलंघी होए अधोदि सिप्पमाणाइकमे के॰ नीची दिशानी मर्जादा उलघी होय तिरियदिसिप्पमाणाइ कमे के॰ नीछी दिशानी मर्यादा उलंघी होए खेत्तवुड्ढी के॰ खेत्र जमीननी वृद्धि एटले एक दिशा घटाडीने बीजी दिशा वधारी होय सइअंतरद्धाए के॰ संदेह पड्याछता आ गल चाल्योहोय तस्सामिछामिडुकडं के॰ ते खोटुंकीधेलुं नीष्फल थाजो इति श्री॥१३॥ अर्थसातमो व्रतउपन्नोग के॰ जे वस्तु एकजवार न्नोगवायते अनादिक तेनी विधीप्र मुष परिन्नोगविहं के॰ उपन्नोग जे वस्तु वारंवार न्नोगवामां आवे ते यस्त्र आन्नरणनी

पच्चखायमाणे के० बंधी मर्यादा करीं उल्लणियविहं के० डील लुहिवानो वस्त्र ते अं
गोछानि वीधी दंतणविहं के० दातणनीविधी फलविहं के० वृक्षनाफल प्रमुखनी मर्या
दा अभ्भंगणविहं के० तेलप्रमुषशरीरे चोपडवानी वस्तुनीविधी उवट्ठणविहं के० मरद
न करवानी वस्तु तेपीठीप्रमुखनी मर्यादा मज्जणविहं के० न्हावानो पाणी प्रमुषनो उ
नमान वत्थविहं के० वस्त्रनीविधी विलेवणविहं के० चदनादिक तिलक चर्चवानी मा
न मर्यादा पुष्फविहं के० चंपादिकना फूल प्रमुषनो मान आभरणविहं के० गहणानी
विधी धुपविहं के० धूप करवानी विधी पेज्जविहं के० पीवानी वस्तु ते वासिधनाग्र प्र
मुखनो मान भरकणविहं के० सुंषडी प्रमुखनी मर्यादा उदनविहं के० मोठ प्रमुषनी
दालनो मान सूपविहं के० सालचावल प्रमुषनो मान विगयविहं के० घृत तेल दुध द
हीं गोल आदीकनो मान सागविहं के० निलापत्र शागप्रमुषनी विधी माहुरविहं के०
वेलना फलप्रमुषनी विधी जिमणविहं के० जिमवानि विधी के० फलाणुं जिमवुं पाणि
विहं के० पीवेते पाणी प्रमुषनो मान मुषवासविहं के० सोपारी लवंगादिकनी विधी
पाहनिविहं के० पगे पंहेरवानी पगरखी प्रमुषनो मांन वाहनविहं के० अश्व आदिक

वाहननी विधी **सयणविहं** के० सेज्यापलग आदि सुवानि विधी **सच्चित्तविहं** के० खावा आसरी सचित्त नो मान **दव्वविहं** के० पूर्वेकह्याए तेथी अनेरा द्रव्यरह्या तेहनोमान **इत्यादिकनुंयथापरिमाणकीधुंछे** के० ए तथा एगिवाग वस्तुनी जे जेप्रमाण मर्यादा की धीछे एटले फलाणि वस्तु माहे आज आटली खावी केवा अथवा पीवी तथा फलाणी वस्तु आज भोगववीमारे केनही इत्यादी **तेउपरांत** के० जे वस्तुनी हदकीधीछे तेउपरांत **उवभोग** के०जे वस्तु एकवार भोगववामा आवी ते **परिभोग** के०जे वस्तु वारंवार भोगवा माआवे ते **भोगनिमित्ते** के० भोगवानी मरजीकरी **भोगववापच्चरकाण** के० भोगववानीबधी **जावज्जीवाए** के० ज्या सुधी जीवुं त्यासुधीं **एगविहंतिविहेणंनकरेमिमणसावयसाकायसाएहवा सातमा उवभोग परिभोगव्वविहे** के० दोय प्रकारे **पन्नत्ते** के० परुप्या **तंजहा** के० तेकहेछे **भोयणाउय** के० भोजननो एक भेद **कम्मउय** के० व्यापार संबंधीनो बीजो भेद **भोयणाउसमणोवासएणं** के० श्रावकने भोजननेविषे जे कोइ अतिचारलागोहोय ते **आलोउं** के०तेजिमछेतिम कहेछे **सचित्ताहारे** के० साचित्तवस्तु खावि एटले वनस्पति आदीककाचूखाय **सचित्तपडीबधाहारे** के० सचेतनी

साथे लागेली वस्तु एटले वनस्पति लींबडानो गुंदइत्यादिक सचित्त सहित खाय
अप्पोलिउसहि न्नरकणिया के॰ जेवस्तुमा जीवना प्रदेस रहिगया होय ते तत्काल
नावाट्या आसरी प्रमुख दूप्पोलिउ सहिन्नरकणिया के॰ कांइक काचिने पाकि
रहि होय ते पुरो अग्नी प्रमुष शस्त्रनथी प्रणम्यो अने न्नोगवे तुच्छोसहिन्नरक
णिया के॰ खावो थोडो नांषवोघणो इसीवस्तु सीताफल सेलडी प्रमुषए पाचप्र
कारनी वस्तु खादी होय ते अतीचारलागे कम्मंऊण के॰ व्यापारना ठेकाणां समणो
वासएणं के॰ श्रावकने पन्नरसकम्मादाणाई के॰ पनरे प्रकारे कर्म आववाना ठिकाणा
नेविषेजेकोई अतिचार लागोहोयते आलोउं के॰ तेकहुंछुं इंगालकम्मे के॰ अग्नी नाव्यापा
रकीधो होय लोहारादीकवणकम्मे केवननां झाड वृक्ष कपावि व्यापारकीधोहोयसाडीकम्मे
॰गाडागादिककरायने वेचवो दारुप्रमुखनो सोंड कवौंते न्नाडीकम्मे के॰ गाडां घरादिकऊंट
खनांन्नाडानो व्यापार किधाहोय फोडीकम्मे के॰ प्रथिवनां पेट फोडाववांकुवा
वी व्यापार करवो ते ए पाचकुकर्म श्रावकनेअत्यंतपणेवर्जवा दंतवाणि
[illegible] के॰ लाखनो व्यापार करवोते रसवाणिक्रे

के॰मदीरादीक रसनो व्यापार कर्वो ते केसवाणिज्जे के॰ चमरी गाय प्रमुषना केसनो व्यापार करवो ते विखवाणिज्जे के॰ विष जेरनो व्यापार किधोहोय ते ए पांच कुवाणिज्य श्रावकने वर्जवा जंत्रपीलणकम्मेके घाणीनो व्यापार एटले तीलादिक पीलायने वेच्या होयते निल्लंछणकम्मे के॰ बलदादीकने खसी करवानो व्यापार एटले ते दवग्गिदावणयाके दवदेवानो व्यापार तिहा खेती प्रमुष करे ते सरके सरोवर द्रह के॰ द्रह कुंन्ततलायके तलाव परिसोसणयाके पाणी सोष करवानो व्यापार तिहा खेतीप्रमुषकरेते असइजणपोसणया के॰ कुर्कट स्वान मजारादीक जीवने आपरी आजीविकाकरणनेवास्ते पोते असती जण पोष कहिये तथा असति एटले कुसती वेश्यादिकने पोषे तेनो कुशील अणाचारनो पइसो आपलेवो ते असी जनपोस कहिये ए पांच सामान्य कर्म निश्चेवर्जवा तस्समिच्छामिदुक्कडं के॰ ते खोटुंकीधेलुं पाप निष्फलथाजो इति॥१४॥श्री॥ अर्थ आठमोवत अनर्थादंडनो के॰ आठमो व्रतअर्थ कार्य विनाकर्म बंधनो कारण तेहनो विरमणं के॰ निवर्तावबुं ते चउव्विहे के॰ च्यार प्रकारे आणट्ठादंडे के॰ अनर्थादंड पन्नत्ते के॰ परूप्याछे कह्या तंजहा के॰ ते जिमछे तिम कहेछे अवज्झाणाइच

रियं के० खोटो ध्यानधरवुं मागी चिंतवणां करवि **पमायाचरियं** के० प्रमादकर्वो प्र
मादेकरी घीतेलादीकना ठामउघाडा राषवा **हिंसपयाणं** के० हिंस्या थाय एवा सस्त्र आ
पवा **पावकम्मोवएसं** के० पापकर्मनो उपदेश कर्वो अर्थ विनाते एहवा **अनर्था-
दंड सेववापच्चरवांण जावज्जीवाए डविहं तिविहेणं नकरेमि नकारवेमि मणसा
वयसा कायसा** एहवा आत्मा अनर्थादंड विरमणा व्रतने विषे जे कोइ **अति
चार लागो होय ते आलोउं** के० कहेछे **कंदप्पे** के० काम वधे एहवी वातांकिधी होय
कुकुइए के० भाम्नी परे कुचेष्टा कीधी होय **मोहरिए** के० जेमतीम बोल्यो होय गा-
लदीधी होय **संजुताहिगरणे** के० उखल मुसलादिक अधिकरण एकठी करी मुक्या हो
य ते **उवभोगपरिभोगअइरत्ते** के० उपभोग परिभोगमा अतिरक्तहे भोगविलासमा
बहु मचीरहे **तस्समिच्छामिदुक्कडं** के० ते खोटुं कीधेलुं निष्फलथाजो १५ इति श्री॥
अर्थः नवमो सामायिकव्रत के० सुमतारूपी सामायकनो व्रत **सावज्ज जोगनो** के०
पापना कामथि **विरमणं** के० निवर्तवुं **जावनियम** के० ज्यां सुधीं मर्यादा कीधीछे त्यां
सुधीं **पज्जुवासामि** के० सुभजोगने सेवे **डविहं तिविहेणं नकरोमि नकारवेमि म-**

णसा वयसा कायसा एहवी सद्दहणा के॰ श्रद्धा रूची परुपणा फरसणाए करिए त्यारे सुद्ध एहवा नवमा सामायिक व्रतने विषे जे कोइ अतिचार लागो होय ते-आलोउ के॰ तेकहेछे मणदुप्पणिहाणे के॰ सामायक कीधीठे तेमां मनमाठुं वर्त्युं होय वयदुप्पणिहाणे के॰ वचनमाठु वर्त्युं होय कायदुप्पणिहाणे के॰ काया माठी प्रवर्तावीहोय सामाइयस्ससइ के॰ सामायकने अकरणियाए के॰ बराबर किधुं के॰ नही तेनी खबर नरहिहोय सामाइयस्स के॰ सामायकने अणवट्ठियस्स अकयाए के॰ पुरूं थयाविना पारीयो होय तस्समिछामि दुक्कडं के॰ खोटु कीधेलुं निष्फल थाजो इति ॥ १६ ॥

॥ श्री ॥

अर्थ दशमो देशावगासिकव्रत के॰ दिशानोकर्वानु व्रत एटले बाधेली हद्द पर्यंत जावुं आवूं उपरात जावानो नियम कर्वुंते दिनप्रते प्रभातथकीप्रारंभीने के॰ दिनदिनप्रत प्रभातथी मांडीनें पूर्वादिक के॰ पूर्वदिशा आदी बिजि ब्रदिशे जेताले भूमिका के॰ धरती मोकलिरापीछे के॰ एटले सवारमा उठिने मान कर्वुंके आजमारे दरेक दिशाए आटला गाउ उपरांत जावुं नही तेउपरांत के॰ बाधेली हद्द उपरात सइच्चाइ के॰ पोता

नां मरजीथी कायाइजइनेपांचआश्रवं के० जीव हिंसादिकथी पांचमुं परिग्रहए पां
च आश्रव सेववानापचखाण के० करवानिविधी जावअहोरत्तं के० दिवसनेरात्र सु-
धी डुविहं तिविहेणं नकरेमि नकारवेमि मणसा वयसा कायसा जेतलिभूमका मो
कली राखीछे तेमांहिजे इव्यादिकनी मर्यादा कीधीछे के० मोकलि राखेली धरती-
मां पण जें बंधीकीधी होय के० आज एटला पदार्थ उपयोगमां लाववाते उपरांत ते
एटले हद्द उपरात उवन्नोग क० एकवार न्नोगवाय एवीवस्तु परिन्नोग के० वारंवार
न्नोगवाय एहवी वस्तु न्नोगनिमित्ते के० न्नोगनीइगई न्नोगवानापच्चखाण के० न्नो
गवानी बंधी जावअहोरत्तं के० जां एकदिवस रात्रसुधी एगविहेणं के० एक करणें ति-
विहेणं के० त्रनजोगे नकरेमि के० डुकरुंनही मणसा वयसा कायसा एहवा दश-
मादेशावगाशिक व्रतने विषे जे कोइ अतीचार लागो होय ते अलोउं के० कज्जुं
आणवणप्पउगे के० मंगाववानो उपयोगकीधो होय बीजा पासे वस्तु मंगावि
होय पेसण प्पउगे के० चाकरनो उपयोग चाकर मोकलिने वस्त मंगावि होय
सद्दाणुवाए के० सादनोउपाय साद करीने हद्द उपरांतथी बोलाव्यो होए रु-

वाणुवाए के॰ पोतानुंरुप देखामीने कोइने बोलावे बहियापुग्गलपखेवे के॰ नी-
मेली भुमीकाथी बाहीर रहेला पुरषने कांकरादीक नाखी बोलावे तस्स मिच्छामि दु
क्कडं के॰ ते खोटुं कीधेलुं निष्फल थाजो ॥ १७ ॥ इति ॥ श्री ॥
अर्थ इग्यारमो पोषधव्रत के॰ पाप रहित थई संवरे करी आत्माने पोषवो तेनुं
व्रत असणं के अन्न पाणं के॰ पाणी खाइमं के॰ मेवानी जात साइमं के॰ मुखवा
स सोपारी लवंग प्रमुख खावानो पच्चखाण के॰ निषेधुं अबंभनो पच्चखाण के॰
अब्रह्म चर्यनीबंधी अमुक के॰ जे आभ्रणं सुधें वतात्मान उतरे ते उपरात मणि
के॰ हिरा प्रमुख सुवर्णनो पच्चखाण के॰ सुवर्ण प्रमुखनो आभरण राखवानी बंधी
मालावन्नग के॰ गुलाब आदिक मालानी विलेपणनो के॰ विलेपन करवानी पच्च-
खाण के॰ बंधी सत्थ के॰ शस्त्र हथीयार मुसलादिक के॰ आउधनी लाकडी साबेला
वगेरे सावज्ज जोगनो पच्चखाण के॰ पाप कामकरवानी बंधी जावअहोरत्तं के॰
जावत रात दिवस सुधीं पज्जुवासामि के॰ ए प्रमाणे आचरीस दुविहेणं तिविहेणं
नकरेमि नकारवेमि मणसा वयसा कायसा एहवि सद्दहणा के॰ एकरवानी श्र-

था थाय परूपणा करीए के० वातकरिए तेवारे फरसनाए करी सुद्धा के० ते व
खत शक्ति मुजब सुद्ध होजो एहवा इग्यारमासमपडिपुन्न के० सम प्रतिपूर्ण स-
मता भावे संपूर्ण आदी अंतलगे पोषधव्रतने के० धर्म ध्याने तथा संवरे करी आ-
रमाने पोषवाना व्रतने विषेजे कोइ अतीचार लागोहोय ते आलोउं के० तेजिमहे
तीम कहुंछुं अपडिलेहियं के० बरावर तपासीने जोयां नहोय दुप्पडिलेहियं के०
मागीरीने जोया होय सिज्जासंथारए के० पाट प्रमुख सेजा तथा पथारीने अप्पम-
ज्जीयं के० पुंज्युं नहोय दुप्पमज्जियं के० ते पुंज्युं होए तो माठी रीते पुज्यु होय
सेज्जा संथारए के० सेजा पथारीने अप्पडिलेहियं के० तपासिने जोइन होय दु-
प्पडिलेहियं के० माठी रीते जोइ होय उच्चारपासवण भूमि के० वडीनीत लघु
नीत परठवानी भूमीकाने अप्पमज्जियं के० पुंज्युं नहोय दुप्पमज्जियं के० माठीरीते
पुंज्युं होय उच्चार पासवण भूमि के० वडीनीत लघू नीत परठवानी भूमका पोस
हस्स के० पोसो कीधोछे तेमा सम्मं के० प्रमादकरे अणाणु पालणया के० पो-
तानी क्रिया आघी पाछी कीधी होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं के० ते कीधेला पाप-

नुं फल निष्फल थाजो जावताआवशही आवसही न कीधी होय आवता निसही निसही न कीधीहोय थोडी जगा पुजी होय घणी जागा परठी होय परठने तीनवार मोसरे मोसरे नकीधो होय परठावता धरतीरा धणीरी आज्ञा नमांगी होय पोसामे निंद्रा विकथा प्रमाद सेव्यो होय **तस्स मिछामि डुकडं** १८ इति ॥ श्री ॥

अर्थ **बारमो अतिथि** के॰ जेनो तिथी नथी साधु आहार लेवा आवे ए काइ मुकर नहीं एहवा साधुने वास्ते **संविभागव्रत** के॰ भाग करवो एटले आहार करती वखते चितवणा करवी केजे साधु पधारे तो एमाहेथी आपु **समणेनिग्रंथे** के॰ साधु निग्रंथने **फासु** के॰ निर्दोष अचित **एसणिझेणं** के॰ दोष रहित **असणं** के॰ **अन्न पाणं** के॰ पाणी **खाइमं** के॰ मेवा सुखडी प्रमुख **साइमेणं** के॰ मुखवास **वत्त्र** के॰ वस्त्र **पडिग्गह** के॰ पात्र **कंबलं** कांबली **पायपुन्नणेणं** के॰ पुन्नणो वेसे पाथरीने तथा रजोहरणो **पाढियारु** के॰ आपीने पाछी लेवाय तेवी वस्तु ते कहेछे **पीढ** के॰ बाजोट **फलग** के॰ पाटीयो **सेझा** के॰पाठ स्थानक **संथारएणं** के॰ तृणा प्रमुपनी पथारी **वसह** के॰ एक वस्तु ते औषध **भेसज्जेणं** के॰ घणी वस्तु थी थएल गोली वगैरे

पडिलाभेमाणे के० प्रतिलाभ करता थका आपता थका विहरामि के० विचरीश एहवि सद्दहणा के० श्रद्धा परूपणा के० उपदेश फरसनाइकरी सुद्ध के० फरसनाइकरी सुद्धकरे एहवा बारमा अतिथि संविभागव्रतने विषेजे कोइ अतीचार लागोहोय ते आलोउं के० तेकहुं सचित निरकेवणया के० उपयोग विना अचित वस्तु सचित माहे मेलिहोय साधुनी गोचरीनी वेला सचित पेहिणया के० अचित वस्तु एकरी सचेत ढाकी होय कालाइकम्मे के० वस्तु विणठी होइ ते काल ने अतिक्रमे ते आहार आपे ते अतिचार घणादिन थया सुंखडी प्रमुषने अथवा जीमवानी वेला मनोरथ नकरे परवएस के० पोते सुते थके पेलाकने दान दीरायो होय मच्छरियाए के० दान देइने अहंकार कीधो होय तस्समिच्छामि डुक्कडं के० ते खोटो कीधेलुं डुष्कृत याजो निष्फल थावो १.९ इतिपछी संलेषणा को पाठ कहीजे ते कहेछे अरथ अपच्छिम के० काइ काम करवुं रह्यो नथी मारणंतिय के० पच्छित मरणने अंते संलेहणा के० आहार कषाय पातला कीधाछे जूसणा के० आत्माने झुसीने आराहणा के० आराधना करीने पोषधसाला के० संथारो क

रीए ते थानक **पुंजीने** के॰ पुंजी पडिलेहीने **उच्चार** के॰ वडिनित **पासवण** के॰
लघुनीत **भूमिका** के॰ जाग्या **पडीलेहीने** के॰ नजरे जोइदेषीने **गमणागमणे** के॰
जाता आवता कोइ जिव चंपाणो होय ते **पडिकम्मिने** के॰ प्रायश्चित लइने इरिया
वही पडीकमे **दर्भादिकसंथारो** के॰ डाभ वगेरे नो संथारो **संथरीने** के॰ पाथरीने द
र्भादिकसंथारो के॰ डाभनी पथारी उपर **डरुहिने** के॰ बेसीने **पुर्वतथाउत्तरदिशा**
के॰ पूर्वके उतर दिशा तरफ **पलपंकादिक** के॰ पालपी आदी जिम सक्ति हुवे ति
म **आसणबेसीने** के॰ आसण वेसीने पछी **करयल** के॰ वेहाथ **संपरगहियं** के॰
जोडीने **सिरसावत्तयं** के॰ मस्तके आवर्तन करी **मत्थएअंजलिकट्टु** के॰ माथा उपर
वेहाथ जोडीता राखी **एवंवयासी** के॰ एमकहे **नमोत्थुणं** के॰ नमस्कार होजो **अरि**
हंताणं के॰ ज्ञानवंत तीर्थंकरने वरतमान अढी द्वीपने विषे प्रवर्तता हुवे तेने **भगवं**
ताणं के॰ भगवंतते **जावसंपत्ताणं** के॰ ते ठेठमुक्ति त्या सुधीनो पाठ जे सामायकने
अते छे तेटलो कहवो **एम अनंता सिद्धने नमस्कार करीने पोताना धर्माचार्यने**
नमस्कारकरीने साधु प्रमुषचारु तीर्थखमाविने के॰ साधु साधवी श्रावक श्रावि

काए चारतीर्थ खमाविने **सव्वजीवरासखमाविने पूर्वेजेव्रत आदरयाते ते आलोइ** के० संभारीने **पडिक्कामि** के० प्रायश्चित लेइने निंदि आत्मानी साखेचुक सारु निंदा करीने **नीसल्लथइने** के० सत्तरहित थईने **सव्वंपाणाइवायं** के० सर्व प्रकारे जीव हिंसा कर्वानी **पच्चखामि** के० बंधी करीने **सव्वं मुसावायं** के० सर्व प्रकारनु जुटुं बोलवानी **सव्वं अदिन्नादाणं** के० सर्व प्रकारनु अणदं धुं लेवानी **सव्वं मेहुणं** के० सर्वथा मैथुन नी **सव्वं परिग्गहं** के० सर्वथा दोलत राषवानी **सव्वं कोहं** के० सर्व क्रोध आदी जा **वमिछादंसणसल्लं** के० जावत मिथ्यादरसण सल्ल एम १८ पापस्थानक **सव्वं अकरणीज्जं** के० सर्व नहीकरवा जोगते **पच्चखामि** के० बंधी करीने **जावज्जीवाए** के० जावजीव सुधी **तिविहं** के० तीन करणे करी **त्तिविहेणं** के० तीन जोगे करी **नकरेमि** के० हुं पापकरुंनही **नकारवेमि** के० बीजापाशे करावु नही **करंतंनाणुजाणइ** के० कोइपाप करेते रुडुं जाणुं नही **मणसा** के० मनेकरी **वयसा** के० वचने करी **कायसा** के० काया ए करी **एमअढारेपापस्थानक पचखीने** के० पापना मूल बंधी करीने **सव्वं** के० सर्व **असणं** के० अन्न **पाणं** के० पाणी **खाइमं** के० मेवो **साइमं**

के॰मुपवास **चउविहंपिआहारं पच्चखामि** के॰नीरागारी करतां चारप्रकारनो आहार पचखीनें सागारी करे तो जेहवो जोइए ते हवो आगारराखे **जावज्जीवाए** के॰ जीवु तासुधि **एमच्यारे आहार पच्चखीने जं** के॰ जे **पीयं** के॰ प्रीय **इमं सरीरं** के॰ आ मारु शरीर **इठ्ठं** के॰ इष्टकारी **कंतं** के॰ क्राति वंत **पियं** के॰ प्रीतकारी इंद्रीयने हर्ष नो कर्णहार ते प्रीय **मणुन्नं** के॰ मनने सोहाय मानछे **मणामं** के॰ मनने सदाइ अ-त्यंतवालो लागे **धिज्जं** के॰ धीरज देणार **विसासियं** के॰ विस्वासनो उप जावण हार **समयं** के॰ मान वा जोग **अणुमयं** के॰ विशेषे मानवा जोग्य **बहुमयं** के॰ घणो वार मानवा जोग्य **भंडकरंड समाणे** के॰ गहेणाना आभरणना माबडा समान र-यण **करंडगभूयं** के॰ रतनना करंडीया सरीखो **माणं सियं** के॰ रषेमने टाढ वाय एतले सीतलागे **माणं उन्हं** के॰ रषे मोने तापलागे **माणं खूहा** के॰ रखेमने भूखलागे **माणं पीवासा** के॰ रखे मोने तृषा लागे **माणं बाला** के॰ रषे सर्पादि करडे **माणं चोरा** के॰ रषे चोर नोभयउपजे **माणं दंसा** के॰ रखे मोने दास करडे **माणं मसगा** के॰ रसे मछर करडे **माणं वाहियं** के॰रखे मोने व्याधीउपजे **पित्तियं** के॰पीतजागे सं-

मीमं के॰ रखे श्लेष्म उपजे सन्निवाइयं के॰ सानपात त्रीदोस थाय विविहारोगायं-
का के॰ रखे विवध प्रकार नो रोग उत्पन्न थाय परिसहोवसग्गा के॰ परीसह उपस-
र्ग बावीस जातना तथा देवतादीकनीडरांमणी फासा फुसंति के॰ एवीरीतना स्पर्श
निरव्या करतो हतो पीयणं के॰ एवुं सरीर वाहालुंते चरमेहिं के॰ छेला उसास नि-
सासेहिं के॰ स्वासो स्वास सुधी वोसिरामी के॰ तजुंतुं जीवनां संबंध आश्री तिकटु
क॰ एम कहीने एमसरिरवोसिरावीने के॰ एम शरीरनो संबंध तजी देइने कालं अ
णवकंखमाणे के॰ कालने अण वाछतोगको जीव वानी आशा तथा मरण नो भय
नराष तो विहरंति के॰ विचरे एह वीसद्दहणा परूपणाकरीए के॰ एहवी श्रद्धा प
रूपणा करीए तिवारे फरशनाए करी सुद्धी के॰ त्यारे शक्ति प्रमाणे सुद्धि थाजो ए
हवा अपछिम मारणां तिय के॰ नथी करवो आहार पछे संलेखणा करइ एहवो मर
ण समय संलेहणा के॰ आत्माने माठा कामथी डुर करवाना जूसणा के॰ क्रमां आ
राहणाना के॰ आराधना करवाने विषे ज कोइ अतीचार लागो होयते आलोउं के॰
जिमछे तेम कहुंतुं इहलोगा संसप्पउगे के॰ इहलोकने विषे सुखनी इछा करेके उचक्रव

तींथाउं परलोगा संसप्पउगे परलोकने वीषे सुषनी इछा करे के॰ जं देवता थाउ जीविया संसउप्पगे के॰ जीवितव्यनी इछाकरे केजं जाजुं जीवूंतो ठीक मरणा संसप्पउगे के॰ मरणनी इछा करेके डुःखपामुछु माटे जटमरीजउं तो ठीक कामभोगा संसप्पउगे के॰ इहलोक परलोकना काम भोगनी वंछना करे तस्स मिछामि डुक्कडं के॰ ते खोटुं कीधेलो निष्फल थाजो १॰ इति ॥ श्री ॥
एम समकित पूर्वक बारेव्रत संलेषणा सहित एहने विषे जे कोइ अतिक्रम के॰ करेलि बंधीमां दोषनाचार प्रकारछे तेमां अतिक्रम एटले बंधी कीधेलि वस्तु करवानुं मनकर्वु व्यतिक्रम के॰ ते वस्तु तरफ करवाचाल्यो ते दोष अतिचार के॰ ते वस्तु हाथ मालिए ते दोस अतिचार के॰ ते वस्तु भोगवे ते व्रतभंग जाणवो जाणतां अजाणत्तां मन वचन कायाइकरी सेव्यो होय सेवराव्यो होय सेवतां प्रत्यें अनुमोद्यो होय ते अनंता सिद्ध केवलिनी साखे मिछामि दुक्कडं २१ इति ॥ श्री ॥
एमकहीने १८ पापस्थानक कहीजे अठारे पापस्थानकते कहेछे १ प्राणातिपात के॰ जीवनींहीसा २ मृषावाद के॰ जूट बोलवो ३ अदत्तादान के॰ चोरि करवि

नहिं ४ मैथून के० मैथुन सेववो ५ परिग्रह के० दोतलनी वाळा ६ क्रोध के० रीस ७ मान के० अहंकार ८ माया के० कपट ए लोभ के० लोभराखे ते १० राग के० प्रीती ११ द्वेष के० अरुचिभाव १२ कलह के० कलेश १३ अभ्याख्यान के० खोटो आल देवुं १४ पैसुन्य के० पारकी चाडी करवी १५ परपरीवाद के० अनेरा ना अवगुणवाद बोलवा १६ रतिअरति के० सुखदुख आवे हर्ष शोक करवो १७ मायामोसो के० कपट सहित जूट बोलवूं १८ मिथ्यादंसणसल के० खोटी श्रद्धा तथा सल राखवो ते एवंप्रकारे पापस्थानक सेव्या होय सेवाया होय सेवतांप्रत्यें अनुमोद्या होयते अनंता सिद्ध केवलिनी साखे मिच्छामि डुक्कडं २२ इति ॥श्री॥ विधि पछी इगामिगामि नींपाटी कहीजे अगाताइ जीमणो गोमो उंचो रापीने बेसीने पछी श्रावकने उन्नो होयकर बेहाथ जोमीने तस्सधम्मस्स नींपाटी कहीजे ते कहेछे अर्थ तस्सधम्मस्स केवलिपन्नतस्स के० केवली भाषित एवा श्रावक धर्मने अभूठितमि के० जसारीरीते पालन करवाने उठ्योछुं आराहणाए के० आराधनानेमाटे विरतमि के० हुं विरम्योछुं एटले नीवर्त्योछुं विराहणाए के० ते धर्मनि विराधना थ

की तिविहेणं के० त्रिविधे करी एटले मन वचन अनेकायाये करी पांडकतो के० भ्र
तिक्रात थको एटले अतिचारपाप थकी निवर्त्यो थको वंदामि के० हुं वांदु हुं जिणे
॥ श्री ॥
चउवीसं कें० चोविश जिन प्रत्ये २३ इति ॥
विधि पछी इछामिखमासमणा री पाटी दोय वार विधि पूर्वक कहीजे पछी गरु
म्र आसण धरती मस्तक लगा वने पांचपदानीवंदणा के० करीजे ते कहेछे १ प
हिले पद जघन्य वीस तिर्थ करजी उत्कृष्टा एकसो सित्तर देवाधिदेवजी ते मांहि
वर्तमानकाले बीस विहरमानजी माहाविदेहखेत्रमाहि विचरेछे एक हजार आठ
लक्षणनां धरणहार चोतीस अतिशय पेंती सगुण वाणी करीबिराजमान चोसठ
इन्द्रना वंदनीक पूजनीक अठारे दोष थकि रहित बारे गुणे करी सहित अनं
तोज्ञान अनंतोदर्शन अनंतोबल अनंतो सुख दिव्यध्वनि भ्रामंडल फटिक सिं
हासण असोक वृक्ष कुसुम वृष्टि देव डुंडुभि छत्र धरे चामर विंजे जगन्य तो दो-
य क्रोड केवलि उत्कृष्टा नव क्रोड केवलि केवल ज्ञान केवल दर्शनरा धरहणार
सर्व द्रव्य क्षेत्र काल भावना जाणणहार॥सवैया॥ नमुश्री अरिहंत करमाको की-

यो अंत ज्वा सो केवल वंत करुणा भंडारी हे अतीसे चोतीसधार पेतीस वा-
णी लचार समजावे नरनार पर उपगारीहे ॥ शरीर सुंदराकार मुरजसो ऊल
कार गुण हे अनंत सार दोष परिहारीहे केतेहे तिलोकरीख मनवच कायक
री लुरी २ वारंवार वंदणा हमारीहे १ एसा रिहंत भगवंत दीन दयाल
महाराजको अविनय आसातना देवसि संबंधी कीधी होय तोहाथजोडी मान
मोडी काय संकोडी वारंवार खमावुंछुं मत्रएण वंदामि नमस्कार करुंछुं १००-
८ वार तिखुत्तो आयाहिणं पयाहिणं वंदामि नमंसामि सक्कारेमि सम्माणे-
मि कल्लाणं मंगलं देवयं चेश्यं पज्जुवासामि आपमंगलिकगे उत्तमगो हे स्वा-
मिनाथ आपको इणभवे परभवे भवे भवे सदाकाल सरणो होजो ॥ २४ ॥
प्रथम पद संपूर्ण ॥ श्री ॥
॥ २ ॥ बीजे पद अनंत भेदे अनंतासिद्धगे आठकर्म खपावीने मोक्ष पहुंताछे
तीर्थसिद्धा अतिर्थ सिद्धा तिर्थंकर सिद्धा अत्तिर्थंकर सिद्धा स्वयं बुध सिद्धा
प्रत्येक बुध सिद्धा बुध बोधिसिद्धा स्त्रीलिंग सिद्धा पुरसलिंग सिद्धा नपुंसकलिं-

ग सिद्धा स्वलिंग सिद्धा अन्य लिंग सिद्धा गृहस्थ लिंग सिद्धा एकसिद्धा अने-
क सिद्धा जठे जन्मनही जरानही मरण नही भय नही रोग नही सोग नही
दुष नही दालिद्र नही कर्म नही काया नही मोह नही माया नही चाकर
नही ठाकर नही भूक नही तृषा नही जोतमेजोत बिराजमान सकलकारज
सिद्ध करीने चवदे प्रकारे पनरे भेदे अनंता सिद्ध भगवंत ज्या अनंत सुखामे
तलालीन अनत ज्ञान अनंत दर्शन क्षायक समकित निराबाध अटल अवगा
हणा अमुर्तिं अगुरुलघु अनंत वीर्य आठगुणेकरी सहित ॥सवैया॥ सकल करम
टाल वसकरलीयो काल मुगतिमे रहियामाल आतमाकुं तारीहे देखत सकल
भाव ज्याहे जगत राव सदाही खायक भाव भय अवकारि हे अचल अटलरू
पआवे नवि भवकूप अनुप सरूप जेप एसी सिद्ध धारीहे केतहे तिलोक रिख व
तावो एवास प्रभु सदाही ठगंते सूर वंदणा हमारीहे १ एसासिद्ध भगवंतजी
माहाराज आपको आविनय आसातना कीधी होयतो देवसि संबधी हात जो
डी मानमोडी काय संकोची वारंवार खमावुंछुं मत्थएण वंदामि नमस्कार करुंछुं

१००८ वारंवार 'तिखुत्तोजावत भवभव सर्णों होजो ॥ २९ ॥ ॥ इति बिजोपद संपूर्ण ॥

॥ श्री ॥

॥ ३ ॥ तीजे पद आचारजजी छत्तीस गुणेकरी बिराजमान पांचमाहाव्रतपाले पांच आचार पाले इंडी जीते च्यार कसाय टाले नव वाडः सूद्ध ब्रह्मचर्यना पालणहार पांचे सुमते सुमता तीने गुप्ते गुप्ता आठ संपदा सहित॥ सवैया॥गुणहेछतीस पूर धरत धर्म उर मारतकरमकुर सुमति विचारिहे सुद्धसो आचारवंत सुंदरहे रूपकंत भणिआ सबी सिद्धांत वाचणी सुप्पारीहे आधीक मधुरवेण कोए नही लोपेकेण सकल जीवांका सेण कीरत अपारी हे केतहे तिलोकरीख हितकारि देत्त सीख एसा आचारज ताकुं बंदणा हमारिहे १ एसा आचारज न्यायपक्षि भद्रिक परणामी परमपुज्य कल्पनीक अचित वस्तका ग्रहणहार सचित्तका त्यागी माहागुणी गुणका अनुरागी सोभागी एहवा श्री आचारजजी माहाराज आपकोअविनय आसातना देवसि संबंधी कीधी होय तो हाथ जोडी मांनमोडी काया संकोडी वारंवार खमावूछुं मत्थएण बंदामि नमस्कार करूं

छुं १००८वार तिखूतो जावत भवोभव सरणोहोजो॥२६॥इति तिजो पदसंपूर्ण॥
श्री॥४॥ चोथेपदउपाध्यायजी पचीसगुणेकरीसहितछेते पचीसगुणकहवाछे इग्यारा
अंगना भणणहार श्रीआचारंगजी सुयगडांगजी ठाणायंगजी समवायंगजी भगवतिजी ज्ञाताधर्मक
थाजी उपासगदशाजी अंतगडदसाजी अणुतरोववाइजी प्रश्नव्याकर्णजी विपाकसुत्र ए
इग्याराअंगनो अर्थपाठसपूर्ण जाणेअने १४ पूर्वउत्पादपूर्व अग्राणीयपूर्व आत्मप्रवाद
अस्तिनास्तिप्रवाद ज्ञानप्रवादसत्यप्रवाद आत्मप्रवाद कर्मप्रवाद वियाप्रवाद पच्चखाण
प्रवाद प्राणप्रवाद अवंध्यप्रवाद क्रियाविसाल लोकबिंदुसारपूर्व इग्याराअंग चवदेपूर्व
एमूल २५ गुणेकरी विराजमान तथाउत्तर १२ उपांगभणेते उवाइ रायप्रसेणी जिवाभिग
म पन्नवणा जंबुदीपपन्नती चंदपन्नत्ति सुरजपन्नती नीरावलिया कप्पवमसीया पुष्फिया
पुप्पचुलीया बन्हीदसा ४ मुलसूत्र उत्राध्ययन दसवैकालीक नंदीसुत्र अनूयोगद्वार ४
छेदग्रंथ दशाश्रुतस्कंध वृहतकल्प व्यवहार निशीथ वतीसमो आवसगआददेइ अनेकग्रं
थकेन्याय सातनय निश्चय व्यवहार चारप्रमाण आदिस्वमत्त तथा अन्यमत्तकाजाण म
नुष्य देवता विवादमे छलवासमर्थनहीं जीणनहीं पणजीणसरीखा केवलिनाहिपण केव
लिसरिखा॥सवैया॥ पठतइग्याराअंग कर्मासुकरेजंग पाखंडीकोमानभंग करणउसियारी

हे चवदापूर्वधार जाणतआगमसार भवीकेसुखकार भ्रमतानिवारीहे पढावेभवीकजन थीरकरदेतमन तपकरीतावेतन ममतानिवारीहे ॥ कहेतहेतिलोकरीख ग्यानभानुपरतिख एसेउपाध्यायताकु वंदणाहमारीहे १ एसा श्रीउपाध्यायजी माहाराज मिथ्यात्यरूप अंधकारनामेटणहार समकितरूप उद्योतनाकरणहार धर्मथकीडिगताप्राणीने थीरकरे सारण वारणधारण इत्यादिक अनेकगुणसहितछे जेएहवा उपाध्यायजी महाराज आपकोअवयवीने आसातना देवसीसंबंधी कीधीहोयतो हाथजोमी मानमोमी कायासंकोडी वारंवार खमावुंछुं मत्थएणवंदामि नमस्कारकरुंछु १००८ तिखुतो जावतभवोभव सर्णों होजो ॥ २७ ॥ इति चोथोपदसपूर्णश्री ॥ ५ ॥ पांचमेपद पोतानाधर्म आचारजजी आछेकाणे आपआपकागुरु माहाराजको नामलेणो आददेइने जघन्य दोयहजार कोम्र साधु साधवि उत्कृष्टा नवहजारक्रोम्र साधुसाधवी अढाईद्वीप पनरेखेत्रमे जेवंताविचरेछे तेसाधुजी केहेवाछे पांचमाहाव्रतका पालणहार पांचइंद्रीका जीतणहार चारकसायना टालणहार भावसंचे कर्णसंचे जोगसंचे खिम्यावंता वैराग्यवंता मनसमाधारणिया वयसमा धारणिया कायसमा धारणिया नाणसंपन्ना दंसणसंपन्ना चारीत्रसंपन्ना वेदनीसमा अहियासनिया मारणातीसमा अहियासनिया एहवा सतावीस गुणेकरि सहीत बारेभेद तप

स्याकाकरणहार सत्तरेभेदे संजमना पालणहार तेत्तीस असातनाका टालणहार बयालिस दोषटालिने आहार पाणीका लेवणहार सेंतालीस दोषटालीने भोगवणहार बावनअणा चारके टालणहार तेभीया आवेनहीं नेथीयार्जामेनही सचित्तकात्यागी अचित्तकाभोगी बावीसपरीसाके जीतणहार अनेकलब्धिका धरणहार लोचकोकरेणा अणावाणो चाल णो इत्यादिक कालकलेसका करणहार मोहममतारहीत ॥ सवैया ॥ आदरीसंजमभार करणीकरेअपार सुमत्तिगुपतिधार बिकथा निवारीहे। जयणाकरे छयकाय सावद्यनबोले वाय बूझाइकसायलाय किरिया भंभारीहे। ग्यानभणे आठो जाम लेवेभगवतनाम धर्म कोकरेकाम ममताके मारीहे। केहेतहे तिलोकरिष कर्मकोटालेविष एसामुनीराजताकुं वंदणाहमारीहे १ एवाश्रीमुनीराज माहाराजआपको अविनय आतासना देवसीसंबंधी कीधीहोयतो हाथजोमी मानमोमी कायासंकोमी वारंवार खमावुंछु मछएण वंदामि नम स्कारकरुंछुं १०० ८वार तिखुत्तोजावत सदाकाल सणाँहोजो। १८। इतिपाचमोपदसंपूर्ण॥

॥ अथपडिक्कमणानिविधि लिख्यते ॥ पछी उभो थइ आयरिय उवझाय कहीजेते कहेछे

अर्थ—पचाचार सपन्न अथवा छत्रीस गुणें विराजमान, अर्थ दानना दातार, तेने आयरिय के.आचार्य कहीये तथासमीप रह्या अने अध्या जे शिष्यादिक तेने सूत्रना भणावनार अथवा पची

स गुणे विराजमान, तेने उवज्झाए के. उपाध्याय कहीये, तथा ग्रहण शिक्षा अने आसेवना शिक्षाने योग्य, होयतेने सीसे के. शिष्य कहीये, तथा श्रद्धा अने परूपणादिक गुणे करीने जे आपणा सरिखा होय, एवा सरखा धर्मना पालनार, तेने साहम्मिए के. साधर्मिक कहीये, तथा जे एक आचार्यनो शिष्य संतान परिवार, तेने कुल के. कुलघर कहीयें, तथा घणा आचार्यना शिष्य संतान परिवार- तेने गणे के. गण एटले समुदाय कहीये. अ के अ ते वली कहेवाने अर्थे छे एसर्वनी उपरमे के महारे जीवे जे के. जे केइ के. कोइ पण कसाया के. क्रोधादिक कषाय कीधा होय, ए कारणे सवे के सर्व, ते आचार्यादिक प्रत्ये तिविहेण के. त्रिविधे करी एटले मन, वचन अने कायायेकरी खामेमि के. हु खामु छु ॥ १ ॥ सव्वस्स समण संघस्स भगवओ के, सर्व श्रमण संघरूप भगवतना कीधा जे अपराध, अंजलिं करिय सीसे के. मस्तकनी उपर बे हाथ प्रत्यें करीने एटले स्थापीने नमरीभूत थइने सव्वं खमावइत्ता के. ते सर्व अपराध प्रत्ये खमावीने, वली एम कहे के खमामि सव्वस्स अहयंपि के. ते सर्वना करेला अपराध प्रत्यें हु पण खमुंछु, एटले सम्यक् प्रकारे सहन करुं ॥ २ ॥ सवस्स जीव रासिस्स के. एकेंद्रियादिक सर्व जीवनी राशि एटले समूह तेनो कीधो जे में अपराध, ते भावउ भावथी सव्वं खमावइत्ता के. सर्व अपराध प्रत्ये खमावीने, वली एम कहेके ते सर्व जीवोनी उपर समभाव ते रूप धम्म के. धर्म, तेने विषे निहिय के. निधिन करयु

छे एटले स्थाप्युं छे भावथकी आरोपण करयु छे, नियचित्तो के निजचित्त एटले पोतानु मन जेणे एहवो अहयपि के. हु पण सव्वस्स कें. सर्व जीव राशिना कीधा जे अपराध, ते अपराध प्रत्ये खमामि के. सयु ३ ॥ ३ ॥ इते ॥ २९ ॥ पछी अढाइ द्वीप कहीजे ते कहेछे.

अढाइ द्वीप माहि,तथा अडाइ द्वीप बाहेर, श्रावक, श्राविका दान देवे. शील पाले तपस्या करे, भावना भावे, सम्बर करे, सामायक करे पोसा करे, पडिक्कमणा करे, तीन मनोर्थ चवदे नेम चितवे, एक व्रत धारी, जाव बारेव्रतधारी भगवंतकी आज्ञा माहि विचरे हमाराथकीमोटाने हाथ जोड,पगे लाग,खमावुं, छेटाने वारवारखमाउं तुं ३० इति नाप॥विधिः—पछी चोराशीलाखजीवायोनि पछी खामे मिसबजीवेसवेजीवा कहीजे ते केहेछे: सातलाख पृथ्वीकाय,सातलाख अप्पकाय,सातलाख तेउकाय,सातलाख वाउकाय, दश लाख प्रत्येक वनस्पति काय, चउदे लाख साधारण वनस्पति काय, बे लाख बेंद्रिय. बे लाख तेंद्रिय, बे लाख चौरिंद्रिय, चार लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यंच पंचेंद्रिय, चौदे लाख मनुष्य, एव चोराशी लाख जीवायोनिमांहे माहारे जीवे जे कोइ जीव हण्यो होय, हणाव्यो होय, हणता प्रत्ये अनुमोद्यो होय, ते सर्वे मने, वचने कायाये करी १८ २४ १२० आठारेलाख चोवीस हजार एकसोवीस प्रकारे तस्स मिच्छामि डुक्कड ॥ ३१ ॥ इति ॥ एनो अर्थ सुगम छे माटे लिख्योनथी

अर्थः—खामेमि सव्वजीवे के. सर्व जीवो प्रत्ये हुं खमावुं छुं एटले अनंत भवोने विषे पण अज्ञान मोहावृतत्वे करीने जीवोने जे पीडा कीधी होय, ते खमावुं छुं अने सव्वेजीवा के. ते सर्व जीवोपण मे के महारा अपराध प्रत्ये, खमंतु क. खमो, माफ करो, ए क्षमनक्षमापनमां कारन कहेछेके सवभूएसु के सर्व भूतोनेविषे मे क.महारे मित्ती के.मैत्रीभाव छे, केणइ कें. कोइजीवनीसाथे मज्झं के महारे वेर के, वैरभाव न के. नथी॥ १ ॥ एवं के. एम आलोइअ के. पाप आलो च्यु प्रकाश कीधु निंदिय के. आत्म साखें निंदु,गरहिअ के.गर्हुं दुगंछिअं के दुगच्यु अत्यंत खोटुं जाण्युं ते माटे सम्मं के. सम्यक् प्रकारे ए सम्यक् पद सर्व पदोनी साथे पूर्वमा योजवू तिवि हेण के त्रिविधे करी एटले मन, वचन अने कायायें करीने पडिक्कंतो के,अतिचारादिक पापथकी प्रतिक्रांत थको पाछो फरतो थको एटले पापने पडिक्कमतो थको एवो जे अहं के,हु,ते चउव्वीसंजिणे के, चोवीश जिन प्रत्ये वंदामि के, हु वादु छु ॥ ३२ ॥

विधिः— पछी " आगारपाप स्थानक " कहीजे इति समायक, चोविसठो वदणा,पडिकमणोचारआवसग्गपूरा पांचमा आवसग्गनीआज्ञा लीजे पछी देवद्सी प्रा यश्चित ' कही जे ते कहेछे ॥३३॥ अर्थ.—देवसी के,दिवस संबंधि , प्रायाश्चित के,पाप विशुना अर्थ के, शुद्ध करवामाटे करेमि के. करु छुं हुं, काउसग्ग के, काउसग्ग (स्थिरकाया,) ॥३३॥

विधिः-पछी "नमो अरिहंताणं थी जाव सव्व साहुणं" सुधी कहीजे, पछी, 'करेमि भंते सामाइयं थी जाव अप्पाण वोसिरामि" पछी "इच्छामिठामि काउसग्ग जाव तस्स मिच्छामि दुक्कडं" पछी तस्सउत्तारि करणेणं जाव अप्पणं वोसिरामि" सुधीकहीने पछी काउसग्ग करवो तेमा मनमा देवसी, रायसी ४ "लोगस्स" नो ध्यान कीजे पखी १२ "लोगस्स नो ध्यान कीजे चोमासी २० "लोगस्स" नो, संवत्सरी ४० लोगस्स" नो ध्यान कीजेनमो अरिहंताणं कही काउसग्ग पारिजे पछी काउसग्ग मांहि आर्त्त ध्यान, रुद्रध्यान, ध्यायो होय, धर्मध्यान शुकल ध्यान न ध्यायो होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं इम कहीजे पछी एक लोगस्स कहीजे पछी पूर्वनीपरे "इच्छामि खमासमणो जाव अप्पाण वोसिरामि" दोयवार कहीजे,इति सामा चोवि वंद पडि,काउएपाच अवसग्ग पूरा थया तेछठा आवसगना कामी इम कही पछी गुरुमुनिराज पासे तथा वडा पासे इणारो जोग न हुवे तो अपने मेळे पच्चखाण धारणा प्रमाणे करीये ते कहेछे—गंठी,मंठी, नवकारसी, अद्ध पोरसी, पोरसी,आप आपनी धारणा प्रमाणे तिविहंपि, चउव्विहंपि, आहारं, असणं, पाणं,खाइमं साइमं अन्नत्थणा भोगेण, सहस्सागारेणं महात्तरा गारेणं, सव्व समाहि वत्तिआगारेणं, वोसिरे॥२॥इति३ ४

विधिः—सामा. चोवि. वंद. पडि. काउ. ने छठा पच्चखाण ए छ आवसग्ग

माहि जाणतां अजाणतां जे काइ दोष लाग्यो होय अक्षर घडतो वता आगा पाछो कह्यो होय तस्स मिच्छामि डुकडं; मिथ्यात्वनुं पडिक्कमणो, अव्रतनुं पडि क्कमणो कषायनुं पडिक्कमणो, प्रमादनुं पडिक्कमणो, अशुभ जोगनुं पडिक्कमणो, ए ५ पडिक्कमणा माहिलो पडिक्कमणो नही कीनो होय तस्स मिच्छामि डुकडं गयाकालनुं पडिक्कमणो, वर्तमान कालनु संवर' आवता कालना पचखाण तेने विषे जे दोष लागो होय ते तस्स मिच्छामि दुकडं ॥ २५ ॥ थइ थुइ मगलं ॥ निचे वेसीने डावो गोडो उभो करीने वे वार नमोथुणं कहीजे गुरूने वादीने श्रावक लोकासूं खमत खामणा करणी देवसी पडिक्कमणा माहि मिछामि दुकडं आवे जिहा देवसी संबधि मिछामि दुकडं दीजे रायसीमे, रायसी संबंधि' पखीमे देवसी पखी सबंधि, चोमासीमे देवसी चोमासी संबंधि, संवत्सरीमे देवसी संवत्सरी संबधि मिछामि डुकडं इम कहीजे॥इति पडिक्कमण विधी कही वाकी अंतर विधी वडेराथी जाणवी॥अथ श्रावक विधीनो आचार लिख्यते॥श्रावकने चवदे नेमनी मरजादा करणी॥छकायनीमर जादाकरणी परभाते साजरा पाछां चीतारणा ॥ मरजादा कीधी जीणने कम द्रव लागा ते नफा खाते समझणा ॥ भुलने जादा लागा होय तो ॥ मिछामी दुकडं देवो ॥ एक करणने एकजोगसुं पछ खाण नित करणो ॥

॥ चवदे नेमरा नांम कहेछे ॥

१ सचीत ते ॥ कांचो पाणी ॥ कोरो दाणो ॥ काची लीलोती ॥ प्रमुख अनेक चीज जाणवी ॥ एनी मरजादा करणी ॥

२ द्रव्येत ॥ मुखमे जितनी चीज घाले ॥ तेनी मरजादा करणी ॥

३ वीगे ते ॥ दुध ॥ दही ॥ घृत ॥ तेल ॥ खाड ॥ गुल ॥ सरब मीठाईनी जात ॥ तेनी मरजादा करणी ॥

४ पनीते ॥ पगरखी ॥ तलीया ॥ मौजा ॥ पावडीया ॥ तेनी मरजादा करणी ॥

५ तबोलते ॥ लुंग ॥ इलायची ॥ पान ॥ सोपारी ॥ एनी मरजादा करणी ॥

६ वथते ॥ वस्त्र पेहरणा ओढणा तेनी मरजादा करणी ॥

७ कुसमते ॥ सुंगणेमे आवे जीतनी चीज तेनी मरजादा करणी

८ वाहणते ॥ गाडो ॥ रथ ॥ तागो ॥ वगी ॥ घोडा ॥ जात ॥ असवारीमे कांमआवे ॥ तेनी मरजादा करणी ॥

९ सयणते ॥ गादी ॥ पीलंग, मांचो, खुरसी, अथवा उपरपीलंग बीछावनेको जात ॥ तेनी मरजादा करणी

१० विलेपण ते॥ केशर कुकु तेल पीठी सरीरने विलेपण ज्ञेवे तेनी मरजादा करणी ॥

११ अबंभ्नते ॥ कुसीलनी मरजादा करणी ॥

१२ दिसते ॥ पुरब दीस ॥ पश्चम दीस ॥ दिखण दीस॥ उत्तर दिस ॥ उंची दिस॥ नीची दिस ॥ ये छ दिसने जावणेकीसारी मरजादा करणी ॥ अथवा कागद देवणरी मरजादा करणी ॥

१३ नाह्वावणते ॥ स्नानरी ॥ मरजादा करणी ॥

१४ भ्नंतसुंते ॥ आहार पाणी करणेरी मरजादा करणी ॥

॥ ६ कायना नांम कहेछे

१ प्रथवी कायते ॥ मुरद ॥ माटी ॥ खमी ॥ गेरू ॥ इत्यादीक ॥ प्रथवी कायनी ॥ मरजादा करणी ॥

२ अप कायते ॥ कुंवानो पाणी ॥ नंदीनोपाणी ॥ नलरो पाणी ॥ तलावरो पाणी

॥ झरणानो पाणी ॥ अथवा इतना घरको पाणी नपीवणो तेनी मरजादा करणी ॥

३ तेउ कायते ॥ अग्नी ॥ जितना चुलानो आरंभ नलगावणो तेनी मरजादा करणी

४ वाउ कायते ॥ पंखीसु ॥ कपडासु ॥ विंजणासुं तथा पंखासु ॥ हातसुं ॥ इणांसुं अथवा अणेंरी चीजसुं हवा खाणेकी मरजादा करणी ॥

५ वनस्पती कायते ॥ हारी लीलोतीनी मरजादा करणी ॥

६ तस कायते ॥ हालता चालता जीवाने विन अपराधे मारणेको त्याग तथा सरवथा तथा तसजीवने मारणरा त्याग करणा ॥

॥ ए ३ असी १ मसी २ पसी ३ ॥ असी केहेता सस्त्र छुरी कटारी ढाल तरवार वंडुक चाकु कतरनी सुइ वकनी आम्कीता:छी इलो पुरपो कोसंणी मुसल वघल घटी खलवतो इत्यादीक आद देईने ॥ अनेक जातना सस्त्रछे: ईणमाहेसुंजीवना- रापणाङवे ठतना ठपरतरा त्यागकरणा १ मसी केहता कलम कागद गपलकागद सीरकारी बीनजबोपार आद देइने अनेक जातनी वस्तुछै इणमाहेसु आपने जीत ना रापणाङवे ठतना ठपरंतरा त्यागकरणा २ खसी केहता परसनीरो काम हल नांगर

पेतपवार कुलव आददेइ अनेक जातना जमीननो तथा पेतीनो काम कर्णो आपने जीतना रापणाजुवे उतना उपरंतरा त्यागकरणा जो

ए चवदेनेम छकायना श्रावकने नीत प्रते नेम करणा चाइजे ॥ ए करणासुं नफो घणो हुवेछे ॥ सारा दीनमे ॥ राई जीतनो पाप लागे ने मेरू जीतनो पाप टल जोवछे ॥ ए चवदे नेमरी जो मरजादा करसी तो उतकृष्टी रसाण आवेतो तीर्थंकर गोत्र बाधे ॥ नरक तीरजंचनी गतीने बंदकरे ॥ साख सुत्र आव सगनी छे ॥ सपुर्ण ॥

अथ समायक लेवानी पाटी लिख्यते

करेमी भंते पमायं ॥ सावजं जोगं पचखामी ॥ जाव नेम पजुवा सामी ॥ डविहेणं तीविहेण नकरेमी नकारवेमी मनसा वायसा कायसा ॥ तसभंते पमिक्कमामि ॥ निंदामि गरिहामी ॥ अप्पाणं वोसरामी ॥ १ ॥

अथ समायक पाछी पारवानी बिधि

एहवा नवमा समायक बरतरे विषे जे कोई अतीचार लागो होय ते आलोउं ॥ समायक माहे ॥ मन बचन कायाना जोग ॥ समायक माहे मोजुर्त्त घालणो जुवे तरे

उपरलीपाटीमे जावनेमकछोठे जिणजायगा जितनामुहूर्तघालणाहवे उतरामुहूर्तवा लदेणापाडवाध्यान ॥ प्रवर्त्तीया होय समायकमे समता न किनी होय ॥ अणपुगी पारी होय ॥ दस मनका ॥ दस बचनका ॥ बारे कायाका ॥ बत्तीस दोख माहेलो दोख लागो होय ॥ तस्स मिछामि दुक्कडं ॥ समायकमे राज कथा ॥ देसकथा ॥ अस्त्री कथा ॥ भात कथा ॥ चार कथा ॥ माहेली बीगथा किनी होय ॥ तस मिछामी दुकडं ॥ समायकना पच्चखाण ॥ फासीयं पाडीयं चइव ॥ सोहीयं तीरय तहा किटीय ॥ आराहीयं चइव ॥ तस मिछामी दुकडं ॥ इत्तो कहीने तीन नवकार मंत्र कहीवा ॥ पछे समायक ठीकाने करणी ॥

॥ समायक करवानी बिधि लिख्यते ॥

जमी पुंजकर पीछे आसण बिछायकर आपने पास सचीत नरखणा आसण उपरे बेसणो ॥ मुपती लगायकर ॥ श्रीमिंदर सामीजीकी अथवा गुरू महाराजकी समायक लेणेकी अग्या मागणी ॥ पीछे तीन नवकार मंत्र गुणीने ॥ पछे चोवीसथारी पाटी आवती हुवे तो गुणने पीछे समायक पचखणी कदास चोवीसथारी पाटी नहीं आवती हुवेतो तीन नवकार मंत्र गुणने समायक पचखणी ॥

दसमो पोसो पचखणेकी बिधि लिख्यते

दसमो पोसो किणने कहीजे ॥ उपवासकरे जीको वणी इतनी चीज लगावे ॥ उपवासमे ऊनो पांणी पीवे तंमाखु सुंगे ॥ अमल खावे इतनी चीजां खायकर उपवासकरे तीणने दसमो पोसो कहेछे दशमो पोसो पचखणेको पाटलिष्यते ॥

पेली चोवीसथो करणो पछे पोसो पचखनो दसमो दिसा वीगासी व्रत दीन प्रते प्रभात थकी प्रारंभीने पुरवादीक छ दिसनी मरजादा कीधीछे ॥ जेतली भुमका मोकली राखीछे ते आगे आपणी इछासुं जाईनेपांच आश्रव सेववाना पचखाण जाव अहोरतं डुवीहेणं तीवीहेणं ॥ नकरेमी नकारवेमी मणसा वयसा कायसा ॥ ते माहे द्रव्यादिक नेमरी मरजादा कीधीछे तीणसुं इधका भोग भोगवणरा पचपाण जाव नेम पजुवा सामी ॥ एक बीहेणं ॥ एक वीहेणंनकरेमी मनसा वायसा कायसा ॥ तस भंते पडीकंमामी ॥ नीदामी गरिहामी ॥ अपांणवोसरामी ॥ए॥ दसमो पोसोःपचखणेको पाट संपुर्ण ॥

॥ दसमो पोसो पाळो पारणेकी बीधी ॥

पोसो पारवानो चोवीसथो करणो ॥ ऊजो चोवीसथो पलेवण किनो जिणारो करणो ॥ आपने पास जितना कपडा ऊवेते सगलाको पलेवण करणो पोसामे बोहत्तर हाथसे कपडा जादा रखणा नही ॥

दसमो पोसो पारवानो पाट लीख्यते

एहवा दसमा दिसा वीगासी व्रतरे वीपे जेकोई अतीचार लागो ऊवेतो आलोउं नमी भुमका बाहेरथकी वस्तु अणाई ऊवे ॥मोकलाई ऊवे ॥ सबंध करी रूप दीखायो ऊवे ॥ पुदगल नाखी आपो जणायो ऊवे तो तस मिछामि दुकडं ॥ पोसामे सेज्या संथारो नजोयो होय ॥ माठीतरे जोयो होय ॥ न पुज्यो होय ॥ माठीतरे पुंज्यो होय ॥ उचार पास विण भूमका ॥ नजोई होय ॥ माठीतरे जोई होय ॥ ने पुंजी होय ॥ माठीतरे पुंजी होय ॥ जावता आवसी आवसी नकह्यो होय ॥ आवता निसही निसही नकह्यो होय ॥ थोडी जायगा पुंजीयो होय ॥ घणी जागा परठीयो होय ॥परठने तिन वगत मोसरे मोसरै नकह्यो होय ॥ वरतीरा धणीरी अग्या नमांगी होयतो पोसामे नींद्रा वीगतां प्र

माद सेवीयो होय ॥ तो तस मीछामी डुकडं॥ पोसामे ॥ अस्त्री कथा ॥ राज कथा ॥ देस कथा ॥ भात कथा ॥ ए च्यार कथा माहेली वीगथा कीनी होय तो तस मीछामी डुकड ॥ पोसाना पचखाण ॥ फासीयं पारिय चवइ ॥ सोहीयं तीरीयं तहा कीटीयं ॥ अराहीयं भवीजीणंच ॥ न भवो जीणंच तस मीछामी डुकडं ॥ पछे तीन नवकार मंत्र गुणना ॥ ए दसमो पोसो पारवानी वीधीछे ॥

इग्यारमो पोसो लेणेकी बीधी ॥

इग्यारमो पोसो इणरीतसुं हुवे॥ उपवासमे च्यार आहाररा त्याग करणा स्नान दांतण करणा नहीं ॥ चंदण केसर सरीरके लगावणा नहीं ॥ काजल सुरमा आंखमे घालणा नहीं॥इतनी वीधी उपवासके दिन टालनी॥उपवास चोविहार करणा॥ इग्यारमो पोसो पचखणेकी बीधी ॥ सचीत बस्तु आपणे पास रखणा नही ॥ कपडा वोहोत्तर हातसे जादा रखणा नही ॥ जमी पुंजकर आसण बीछायकर बेसणा ॥ मुपती बाधकर ॥ पिछे सगले कपडेका पलेवण करणा श्री मिंदरजी महाराजकी अथवा गुरू देव महाराजकी अग्या मागणी ॥ पेहेली तीन नवकार मंत्र गुणना ॥ पीछे चोवीसथा दोय करके ॥ कदा

च चोवीसथो नही कीणिकुं आवेतो ॥ उसराका पाससुं चोविसथो कराय लेणो पीछे पो
सा पचखणा॥

इग्यारमा पोसा पचखणेका पाट लिख्यते ॥

इग्यारमा पोपद व्रत ॥ असण ॥ पाण ॥ खायमं ॥ सायमं ॥ ना पचखाण ॥ अबम्भना पचखाण ॥ मणी सोवनरा पचखाण ॥ माला वण वीलेपणना पचखाण सत मुसलादि करु सावज्ज जोगना पचखाण ॥ जाव अहोरत्तं पज्जुवा सामी ॥ दुवीहेणं तीवीहेण ॥ न करेमी नकारवेमी ॥ मणसा कायसा ॥ तस्सभ्नते पडीकंमामी ॥ नींदामी गरिहामी॥ अप्पाण वोसीरामी ॥ ए इग्यारमो पोसो पचखणेको पाठछे॥

इग्यारमा पोसा पारवाना पाट लिख्यते ॥

एहवा इग्यारमा पोपद व्रतरे वीपे जेकोई अतीचार लागो हुवेतो आलोव॥सेज्या संथारो नजोयो होय॥माठीतरे जोयो होय॥ नपुज्यो हुवे ॥माठीतरे पुंज्यो हुवे ॥उच्चार पासवण भूमीका नजोइ हुवे ॥ माठीतरे जोइ हुवे ॥नपुंजी हुवे ॥ माठीतरपुंजी हुवे ॥ आवता आव सहि आवसहि न कह्यो हुवे ॥ आवता निसिहि निसिहिनकह्यो हुवे ॥ थोमी

जायगा पुंज्यो ड़वे ॥ घणी जागा ॥ परठीयो ड़वे ॥ परठने तीन वगत मोसरै २ न कह्यो होय ॥ पोसामे नींद्रा विगया प्रमाद सेवीयो ड़वेतो ॥ खुल्ला आदमीने आवो जावो कह्यो ड़वेतो॥तसमीछांमी डुकम्॥पोसामे राज कथा॥ देस कथा॥स्त्री कथा॥भात कथा ॥च्यार कथा माहे ली विगथा पोसामे कीनी होय तस मीछामी डुकम् ॥ पोसाना पचखाण ॥ फासीयं पारीयं चइव ॥ सोहीयं तीरयं तहा किट्टियं ॥ अराहीयं भवीजीन नभवी जी एंच तस मीछामी डुकडं ॥ ए इग्यारमा पोसा पारवाना पाठ्ठे ॥

॥ पोरसीका पचखांण लिख्यते ॥

उगे सुरे पोरसीयं पचखामी ॥ चउव्विहंपी ॥ आहारं असणं पाण खायमं ॥ सायमं अनथणा भोगेणं ॥ सहस्सा गारेणं ॥ पच्छन्न कालेणं दिसा मोहेणं ॥ साड़ु वयणेणं सव्वा संमांइ वत्तिया गारेणं वोसरामी ॥

॥ एका सणारा पचखांण लिख्यते॥

सुरे उगे एकासणं पचखांमी ॥ डुवीहेणं तीविहेणं ॥ चउवीहेणं ॥ आहारं असणं ॥पाणं खायमं सायमं ॥ अनथणा भोगेणं ॥ सहस्सा गारेणं ॥ सागारी अगारेणं ॥ अउटण

पसारेणं ॥ गुरु अबु गणेणं ॥ महतरा गारेण सव्व समाहि॥ वत्तीया गारेणं वोसरामी ॥

॥ उपवासका पचखांण लिख्यते ॥

सुरे उगे अवधत्त पचखांमी ॥ तीवीहेणं ॥चउवीहेणं ॥ आहारं ॥ असणं पाणं खायमं सायम॥अनथणा भोगेणं॥सहस्सा गारेण । महत्तरा गारेणं॥सव्व समाई॥वत्तीयागारेणंवो सरामी ॥ अणहरा पंचखांण लिष्यते ॥ सुरेउगे अहारात्नत्तं पचरकामी तिवीहं पिचव व्विहंपिआहारं असणं पाणं खायम सायमं अनत्थणा भोगेणं सहस्सागारेणं महत्तरागारे ण सव्वसमाइवतीयागारेणं वोसरामि समायकमे तथा दसमा पोसमे तथा इग्यारमा पो सामे ए कामा ॥ वीना मुपतीसे करेगातो ॥ इग्यारे इग्यारे समाईका उसके माथे दंड होताहै ॥ इस कारणसे ए ती न कामा मुपतीसे करणा ए सास्त्रजीरी साक्षछे ए तीन कामा श्रावकने एक धोतीकी लाग खुली राखणी कलपे॥ जो एक धोतीकी लाग नही पोले गातो उसके उपरे इग्यारे समाइका दंम कह्याछे॥

अथ समाइकके बतीस दोपके नांम लिख्यते

दस मनके दोपके नांम ॥ १ ॥ औसर विना समाई करे ॥ २ ॥ जस करितके अ

रथे समाई करै ॥ एह लोकरा लाजरे अर्थे समाई करे ॥ ४ ॥ गरज अहंकाररे अरथे समाई करे ॥ ५ ॥ भयके अथवा डरतो डरतो समाई करे ॥ ६ ॥ समाईमे संसो रहे ॥ ७ ॥ समाइमे निहाणो करे ॥ ८ ॥ रीस करे ॥ ९ ॥ बिनो हिन करे ॥ १०॥ बेठी यानी परे समाई करे ॥ ए दस मनके दोष ॥

दसवचनके दोषके नांम ॥१॥ कुडवचनबोले ॥ २॥ अणबीमास्यो बोले ॥ ३ ॥ राग करीने गीत गावे ॥ ४ ॥ उतावलो उतावलो घणो बोले ॥ ५ ॥ कलह करे ॥ ६ ॥ च्यार बीकथा करे ॥ ७ ॥ हासी करे ॥ ८ ॥ उतावलो उतावलो अक्षर पद गुणे ॥ ९ ॥ अजुगती भाषा बोले ॥ १० ॥ इन्नतीने आवो पधारो कहे ॥ ए दस वचनकेदोष ॥

बारे कायाके दोषके नांम ॥ १ ॥ ढांसणी मारीने बेसे ॥ २ ॥ अथिर आसण बेसे ॥ ३ ॥ विषय सहीत द्रष्टी जोवे ॥ ४ ॥ समाइकमे घरका कारज करे ॥ ५ ॥ बिना कारण ओटो लेवे ॥ ६ ॥ सरीर संकोचीने बेसे ॥ ७ क्रोध करीने अंगमोडे ॥ ८ ॥ आलस आणे ॥ ९ ॥ कडका मोडे ॥ १० ॥ सरिररो मेल उतारे ॥ ११ ॥ विना पुंज्या खाज खिणे ॥ १२ ॥ विना कारण समायकमे बियावच करावे ॥ ए बारा कायाकेदो

प ॥ एकंदर बत्तीस दोष ज्ञये ये बत्तीस दोष टाली सुध समाई करेगा तीणके नफा बो होत घणा होताहै ॥ एक समाइका नफा इण मुजब ॥ ब्याणुं क्रोड पल्ल गुणसठ लाख पल्ल पचीस हजार पल्लनउसे पल्ल पचास पल्ल ॥ एक पल्लरा आठ भाग कीजे जीणके तीजे भाग इतरो आउखो इतनो खय करे ॥ ओ एक समाइरो फल बतायोहै ॥

अथ पोसारा आगरा दोष लिख्यते ॥

॥ १ ॥ सरीरकी सोभा नष कडावे मंजन करावे ॥ २ ॥ कुसील सेवे ॥ ३ ॥ सरस आहारकरे ॥ ४ ॥ वस्त्र धुवावे ॥ ५ ॥ आभुषण पहीरे ॥ ६ ॥ सरस सरस चीजको भोजन जादा करे ॥ ए ठ उपवास करे उसके पेले दी न टालणा ॥ ७ ॥ खुलेकी ब्यावच करे ॥ ८ ॥ सरीरकी सुश्रुषा करे ॥ ९ ॥ मेल उता रे ॥ १० ॥ नीद्रा घणी लेवे ॥ ११ ॥ बीन पुंज्या खाज खीणे ॥ १२ ॥ च्यार वीगयां करे ॥ १३ ॥ पारकी नींदा करे ॥ १४ ॥ संसारकी चरचा करे ॥ १५ ॥ अंग उपंग नीर खे डीटी वीखेसुं ॥ १६ ॥ संसारका नातो करे ॥ १७ ॥ डुसरासुं खुले मुंमे बाता करे ॥ १८ ॥ पोसामे भयकरे ॥ ए अठारा दोष टालेगा उसका सुद्ध पोसो होताहै॥

॥ श्रावकके इकीस गुण लिख्यते॥

॥ १ ॥ श्रावकजी नव पदारथने पचास कोरियारा जांण कार हुवे ॥ २॥ धरमरी करणीमे कोईरो साज बंछे नही ॥ ३ ॥ धरमथकी कोईरो चलायो चले नही ॥ ४ ॥ जीन धरममे संका कंखा बीतीगछा आणे नही ॥ ५ ॥ लदी अठा ॥ गीरी अठा ॥ वीनी अठा ॥ पुछी अठा ॥ जे सुत्ररो अरथरो ग्यांन धारीयो तीणरो नीरणो करे॥ प्रमाद करे नही ॥ ६ ॥ श्रावकजीरी हाडने हाम्री मींजी धरममे रंगायमान रेवे ॥ ७ ॥ हारो आवखो अथीरछे जीन धरम सारछे इसी चींतवणा करे ॥ ८ ॥ श्रावकजी फटिक रतन जीसा नीरमला हुवे ॥ कुम्र कपट राखे नही ॥ ९ ॥ श्रावकजी घरका हार सवा पोहोर दिनचढे जठाताई उघाडा राखे दांन सारूं ॥ १० ॥ श्रावकजी एक मासमे ७ पोसाकरे ॥ आठमका दोय पोसा ॥ चवदसका दोय पोसा ॥ पखीका दोय पोसा ॥ ११ ॥ श्रावकजी राजाका अंतें उरमे जावे ॥ राजारा भंडारमे जावे ॥ सहूकारकी दुकानमे जावेतो अप्रतीत उपजे नही॥ १२॥ श्रावकजी आगे व्रत पचखाण लीयाथां सो नीरमला पाले ॥ दोष लगावे नही ॥ १३ ॥ चवदे प्रकारका दान सुझतो मुनीराजने देवे ॥ १४ ॥ श्राव

कजी धरमका उपदेस देवे ॥ १५ ॥ श्रावकजी तीन मनोरथ सदाइ चीतवे ॥ १६ ॥ च्यार तीरथरा गुण ग्राम करे ॥ अन्य तीर्थीरा गुण ग्राम करे नही ॥ १७ ॥ श्रावकजी नवा सुत्र सीध्यात सुणे ॥ १८ ॥ श्रावकजी कोइ नवो आदमी धरम पायो हवे जीणने साज देवे ॥ ग्यान सिपावे ॥ १९ ॥ श्रावकजी दोई बखत कालो काल पडीकमणा करे ॥ २० ॥ श्रावकजी सर्व जीवसुं हीत पणो राखे ॥ वेर विरोध सरव जीवसे राखे नही ॥ २१ ॥ व्रती सक्ति तपस्या करे ॥ ग्यान सिखणेको उद्यम करे ॥

॥ बिस बोलकरी तीर्थंकर गोत्र बांधे ॥

॥ १ ॥ अरिहंतजीका गुणग्राम करतोथकोजिव ॥ करमारी कोड सपावे ॥ उतकृष्टी रसाण आवे तीर्थंकरगोत्र बाधे ॥

॥ २ ॥ सिधजीका गुणग्राम करेतो ॥करमारी कोड खपावे ॥ उतकृष्टी रसाण आवे तो तीर्थंकरगोत्र बाधे ॥

॥ ३ ॥ सुत्र सिधंतना गुणग्राम करतोथको ॥ करमारीकोड खपावे॥ उत्कृष्टी रसाणं आवेतो तीर्थंकरगोत्र बाधे ॥

॥ श्रावकके इकीस गुण लिख्यते॥

॥ १ ॥ श्रावकजी नव पदारथने पचास कोरीयारा जाण कार हुवे ॥ २ ॥ धरमरी करणीमे कोईरो साज बंछे नही ॥ ३ ॥ धरमथकी कोईरो चलायो चले नही ॥ ४ ॥ जीन धरममे संका कंखा वीतीगछा आणे नही ॥ ५ ॥ लदी अठा ॥ गीरी अठा ॥ वीनी अठा ॥ पुछी अठा ॥ जे सुत्ररो अरथरो ग्यान धारीयो तीणरो नीरणो करे ॥ प्रमाद करे नही ॥ ६ ॥ श्रावकजीरी हाडने हाडरी मींजी धरममे रंगायमान रेवे ॥ ७ ॥ ह्लारो आउखो अथीरछे जीन धरम सारछे इसी चींतवणा करे ॥ ८ ॥ श्रावकजी फटिक रतन जीसा नीरमला हुवे ॥ कुरु कपट राखे नही ॥ ९ ॥ श्रावकजी घरका द्वार सवा पोहोर दिनचढे जठाताई उघाडा राखे दान सारूं ॥ १० ॥ श्रावकजी एक मासमे ७ पोसाकरे ॥ आठमका दोय पोसा ॥ चवदसका दोय पोसा ॥ पखीका दोय पोसा ॥ ११ ॥ श्रावकजी राजाका अंतेउरमे जावे ॥ राजारा भंडारमे जावे ॥ सहुकारकी दुकानमे जावेतो अप्रतीत उपजे नही॥१२॥श्रावकजी आगे व्रत पचखाण लीयाथां सो नीरमला पाले ॥ दोष लगावे नही ॥ १३ ॥ चवदे प्रकारका दांन सुझतो मुनीराजने देवे ॥ १४ ॥ श्राव

कजी धरमका उपदेस देवे ॥ १५ ॥ श्रावकजी तीन मनोरथ सदाइ चीतवे ॥ १६ ॥
च्यार तीरथरा गुण ग्राम करे ॥ अन्य तीर्थीरा गुण ग्राम करे नही ॥ १७ ॥ श्रावकजी
नवा सुत्र सीध्दात सुणे ॥ १८ ॥ श्रावकजी कोइ नवो आदमी धरम पायो ऊवे जीण
ने साज देवे ॥ ग्यान सिपावे ॥ १९ ॥ श्रावकजी दोई वखत कालो काल पडीकमणा
करे ॥ २० ॥ श्रावकजी सर्व जीवसुं हीत पणो राखे ॥ वेर विरोध सरव जीवसे राखे
नही ॥ २१ ॥ छती सक्ति तपस्या करे ॥ ग्यान सिखणेको उद्यम करे ॥

॥ बिस बोलकरी तीर्थंकर गोत्र बांधे ॥

॥ १ ॥ अरिहंतजीका गुणग्राम करतोथको जिव ॥ करमारी कोड खपावे ॥ उतकृ
ष्टी रसांण आवे तीर्थंकरगोत्र बाधे ॥

॥ २ ॥ सिधजीका गुणग्राम करतो ॥ करमारी कोड खपावे ॥ उतकृष्टी रसांण आवे
तो तीर्थंकरगोत्र बाधे ॥

॥ ३ ॥ सुत्र सिधंतना गुणग्राम करतोथको ॥ करमारीकोड खपावे ॥ उत्कृष्टी रसाणं
आवेतो तीर्थंकरगोत्र बाधे ॥

॥४॥ गुरुमहाराज गुणग्राम करेतो करमारीकोड खपावे उत्कृष्टी रसांण आवेतो ती-थंकरगोत्र बांधे ॥

॥ ५ ॥ थिवरजीना गुणग्राम करेतो ॥ करमारीकोड खपावे उत्कृष्टी रसांण आवे-तो तीर्थंकरगोत्र बांधे ॥

॥ ६ ॥ बज्रसुरतीजीना गुणग्राम करेतो ॥ करमारीकोड खपावे ॥ उत्कृष्टी रसांण आवेतो तीर्थंकरगोत्र बांधे ॥

॥७॥ तपसीजीना गुणग्रांम करेतो ॥ करमारीकोड खपावे ॥ उत्कृष्टी रसाण आवे-तो तीर्थंकरगोत्र बांधे ॥ ८ ॥ ग्यान उपरे उपयोगदेतो थकोजीव करमांरीकोड षपावे उ-त्कृष्टी रसाण आवेतो तीर्थंकरगोत्र बांधे

॥ ९ ॥ समगत सुधपालेतो करमारी कोड खपावे ॥ उतकृष्टी रसाण आवेतो ती-थंकरगोत्र बांधे ॥

॥ १० ॥ विनय करतोथको जीव करमारीकोड खपावे उतकृष्टी रसांण आवेतो ती-थंकरगोत्र बांधे ॥

॥ ११ ॥ दोयवेळा पडीकमणो करेतो करमारीकोम खपावे उतरुष्टी रसांण आवे तो तीर्थंकरगोत्र बांधे ॥

॥ १२ ॥ वरत पचखाण सुद्धनीरमला पाळेतो करमारी कोम खपावे ॥ उतरुष्टी रसाण आवेतो ॥ ती० ॥ ॥

॥ १३ ॥ धरमध्यान, सुकलध्यान ध्यावेतो ॥ अर्त्तध्यांन, रूद्रध्यान वरज,तोथ को करमारीकोम खपावे ॥ उत० ॥ तीर्थंकर ० ॥

॥ १४ ॥ तपस्या बारेभेदे करतोथको करमारीकोड खपावे ॥ उत ० ॥ तीर्थं० ॥

॥ १५ ॥ मुनी राजने सुपात्रदान देतो थको॥ करमारीकोड खपावे ॥ उत० ॥ तीर्थं० ॥

॥ १६ ॥ व्यावच दस प्रकाररी करतोथको॥ करमारीकोम खपावे ॥ उत०॥ तीर्थंकर०॥

॥ १७ ॥ सरव जीवाने साता उपजावतोथको जीव ॥ करमारी कोम खपावे ॥ ॥ उत० ॥ तीर्थंकर० ॥

॥ १८ ॥ अपुरव ग्यांन भणतोथको ॥ करमारी कोम खपावे उतरुष्टीरसाण आवेतो तीर्थंकरगोत्र बांधे ॥

रजो हरणो अंकुस जीम राखे ॥ ५ ॥ ग्रही कपमा ऊंचा करीने वांदे ॥ ६ ॥ चपल पणे वांदे ॥ ७ ॥ माछलानी परे उलट पलट होवेने वांदे ॥ ८ ॥ मनमे गुण ढांकी अव गुणी होय वादे ॥ ९ ॥ कपटी जीवसुं वांदे ॥ १० ॥ मरतो वांदे ॥ ११ ॥ जे मुझने अमुकोमांन देसे ॥ १२ ॥ साख करी वादे ॥ १३ ॥ गर्व करी वांदे ॥ १४ ॥ इसलोकने हिनकारी वादे ॥ १५ ॥ चोरनींपरे वादे ॥ १६ ॥ प्रतंग्यां देते वांदे ॥ १७ ॥ सास ता वांदे ॥ १८ ॥ वीस्वास उपजाया देते वांदे ॥ १९ बचन होलतो वांदे ॥ २० ॥ वि कथा करतो वांदे ॥ २१ ॥ दीष्टी तीरछी राखतो वांदे ॥ कोइ साधु देखे कोइ न देखे तो वांदे ॥ २३ ॥ क्या करीये वांदीया वीना छुटतानथी ॥ २४ ॥ एकने घाट वाधे एक ने जादा रीतसुं वांदे ॥ २५ ॥ गुरुतो नाचे आसणने वंदणा करणे चेलो ऊंचे आ सण बेठो वांदे ॥ २६ ॥ बेठो बेठो वांदे ॥ २७ ॥ हसतो हसतो वांदे ॥ २८ ॥ रजो हरणा आगा पाछा करतो वांदे ॥ २९ ॥ असमाधीयो होयने वांदे ॥ ३० ॥ गुरु काव सगमे बेठाने वांदे ॥ ३१ ॥ पेली समादी साता पुछे पछे वांदे ॥ ३२ ॥ गुरु महाराज रसते चालताने ऊभा राखी वांदे ॥

अथ बीस असमाधीना थांनक कहेछे

परमाधी किणने कहिजे जैसें आदमीनें वारवार मंदगी आयासुं उसके सरीर को वलपराक्रमकोनासकरे ॥इणद्रष्टांते ॥वीसबोल असमाधी सेवनासे संजम मांदाहो जातेहै॥ सो मुगतके सुखोका नासकरदेतेंहै जीसकुं असमाधी कहीजे ॥ तेवोलकहेछे ॥

॥ १ ॥ साधु मुनीराज उतावलो उतावलो चालेतो असमाधी लागे ॥ २ ॥ दिनरा त्री जोयने चाले नही २ रातरावीना पुंज्या चालेतो असमाधी ॥ ३ ॥ पुंजे कीहांईने चाले कीहाइतो असमाधी लागे ॥ ४ ॥ गुरूके सांमो बोलेतो असमाधी लागे ॥ ५ ॥ चऊसुरती मुनीराजकी घात चितवेतो असमाधी लागे ॥ ६ ॥ वडासाधुजी महाराज के सामे बोलेतो असमाधी लागे ॥ ७ ॥ साधु मुनीराज अधीक पाट वाजोट भोगवे तो असमाधी लागे ॥ ८ ॥ साधु वारवार क्रोधकरेतो असमाधी लागे ॥ ९ ॥ साधुजी दुसराका अवगुण बोलेतो असमाधी लागे ॥ १० ॥ साधुजी नीश्चेकारीभाषा बोलेते असमाधी लागे ॥ ११ ॥ साधु कलहोकरेतो असमाधी लागे ॥ १२ ॥ जुनोकलहो यादकरे तो असमाधी लागे ॥ १३ ॥ अकाले सझायकरेतो असमाधी ॥ १४ ॥ साधु

मुनीराज सचीतरजसुं हातपग लरडीया होय विनापुंज्या उठेबेसे चालेतो असमाधी यो ॥ १५ ॥ साधुजी पेहेर रात्र गयापीछे उतावलो उतावलो बोलेतो असमाधीयो लागे ॥ १६ ॥ च्यारतीरथमे कलहो कज्यो बधावेतो ॥ अ० ॥ १७ ॥ अपना आतमाने असमाध उपजावेतो ॥ अ० ॥ १८ ॥ परायाने दुःखदेवेतो असमाधीलागे ॥ १९ ॥ साधुजी दिनउगासुं लेइने सुरजअस्त हुवे जठाताईं खाणेकी इम राखेतो असमाधीयो ॥ २० ॥ साधु मुनीराज आहारपाणीकी गवेषणा नकरेतो ॥ सचीतरा संघटासुं आहारलेवेतो असमाधीयो लागे ॥ ॥

॥ इकवीस सबलादोष कहेछे ॥

सबलादोष कीणने कहीजे ॥ जैसे निबलाआदमीके उपर सबलबोज आयपडेतो उण आदमीका नास होजाताहै इणदृष्टांते ॥ साधुमुनीराज ए इकीसबोल सेवेतो संजमकानासहोजाताहै पीछे उण साधुजीकु मुक्तिका सुख मीलतां नही है ॥ दुरगतीका दुखमीलता हैं ॥

॥ १ हस्तकरमकरेतो सबलादोष लागे ॥ २ ॥ मैथुनकुसील सेवेतो सबलादोष

॥ ३ ॥ रात्रीभोजन करेतो सबलादोष ॥ ४ ॥ आधाकरमीआहार साधुरे अरथे की-
नो भोगवेतो साधुजीने सबलादोष लागे ॥ ५ ॥ राजपींड आहार भोगवेतो सबलादो-
ष ॥ ए ७ प्रकारका आहार भोगवेतो सबलादोष लागे ॥ तेनानाम ॥

१ उदेसी २ क्रीये ३ पांमीचे ४ अछीजे ५ अणसीठे ६ अभोयेरे ॥ ७ ॥
बारबार ॥ पछखाणलेईने भांगेतो सबलादोष ॥ ८ ॥ ६महीनामे डुसरा टोलामे जा
वेतो सबलादोष ॥ ९ ॥ एक महीनामे तीननदी लगावेतो सबलादोष ॥ १० ॥ एक
मासमे तीन मायारा थानक भोगवेतो सबलादोष ॥ ११ ॥ जीसधणीका मकानमें उ
तरीया उसधणीका घरको आहार भोगवे डुसराकी अभ्यालेवेतो सबलादोष लागे ॥
॥ १२ ॥ साधु जाणने प्राणातीपात सेवेतो सबलादोष ॥ १३ ॥ जाणीने झुटबोलेतो
सबलादोष ॥ १४ ॥ जांणने चोरीकरेतो सबलादोष ॥ १५ ॥ सचीत उपरे उठेबेठेतो
सबलादोष ॥ १६ ॥ सचीत माटी उपरे बैसेतो सबलादोष ॥ १७ ॥ जीवांसहीत
पाट बाजोट भोगवेतो सबलादोष ॥ १८ ॥ दसप्रकारकी लीलोती सचीत भोगवेतो
सबलादोष ॥ १९ ॥ एकवरसमे दसनंदी लगावेतो सबलादोष ॥ २० ॥ एक वरसमे

दस मायारा थांनक सेवेतो सबलादोष लागे ॥ ११ ॥ साधु मुनीराज ग्रस्तोके सचीत से हातपग खरड्यांहै उसके हातसे आहारपाणी लेवेतो सबलादोष लागे ॥

॥ अथ बावन अनाचार लिख्यते ॥

बावन अनाचार साधु मुनीराजने सेवना नहीं ॥ जे जिको साधु सेवेगातो उणने साधु नकहिजे ॥ अनाचारी साधु कहीजे ॥ तेअनाचार कहेछे ॥

॥ १ उदेसीकआहार सेवेतो अनाचारलागे ॥ २ ॥ मोललीयोडी वस्तु वस्त्रपात्र थांनक अहारपाणी आददेने सर्वत्रचीज भोगवेतो अनाचारलागे ॥ ३ ॥ नित च्यारप्रकारके आहारपाणी एकघरसे लेवेतो ॥ ४ ॥ सांमी वस्तु मंगायने लेवेतो ॥ ५ ॥ रात्रीभोजन करेतो ॥ ६ ॥ देसथकीस्नान कीणने कहीजे ॥ हात सुनी तलकधोवे अथवा गोडाताई पगधोवे अथवा वस्त्र पाणी मे भीजोयकर सरीर सारा पुंछे तेणे देसथकीस्नान कहीजे ॥ ते देशथकीस्नान करेतो अथवा अघोलीरुप स्नान करेतो साधुने अनाचार लागे ॥ ७ ॥ गंध कपुरादीक सरीरके लगावे अथवा सुंगेतो ॥ ८ ॥ फुल प्रमुख माला पेहेरेतो ॥ ९ ॥बिंजणासुं अथवा पंखासु वायरालेवेतो अनाचारला

गे ॥ १० ॥ आंख्यारा औषद प्रमुख दवाई आपने पासराखेतो ॥ ११ ॥ ग्रस्तीका
भाजन थालीकचोरा प्रमुखमाहे जीमेतो ॥ १२ ॥ राजपींडआहार भोगवेतो ॥ १३ ॥
दानसालाके नीमत्त सत्नुकारके नीमत्त ब्राह्मणके नीमत्त, भीक्षारीके नीमत्त अंतसमारे
वगत पुन्यनीमत्ते काढीयोभ ॥ इतने जातका आहार भोगवेतो ॥ १४ ॥ दांतण करेतो
॥ १५ ॥ तेलादीकनो मर्दन करेतो ॥ १६ ॥ ग्रस्तीने सुखसाता पुछेतो साधुजीने अना
चारलागे ॥ १७ ॥ तेलमे, पाणीमे काचमे मुंमो देखेतो ॥ १८ ॥ चोपड, गंजीफा स
तरूंज, रमेतो ॥ १९ ॥ जुंवारमेतो अनाचार ॥ २० ॥ माथे छत्रधरावे अथवा साधु
मुनीराज मकानसे बाहेर नीकले जरा माथे वस्त्र लेवेतो अनाचार ॥ २१ ॥ बेदगीरी
करेतो अनाचार ॥ २२ ॥ कपमारी चामडारी पगरखी पेरेतो ॥ २३ ॥ अग्नीनो आरंभ
करेतो ॥ २४ ॥ सेज्यातरनो आहार भोगवे तथा जीणधणीरा मकानमे उतरीया उण
धणीका वरको आहारपाणी लेवेतो ॥ २५॥ ढोलियो पीलग खुरसी उपरे बेसेतो ॥२६
॥ ग्रस्तीके घरेबेसेतो ॥ २७ ॥ पीठोगवटणा करेतो ॥ २८ ॥ ग्रस्तीनी वैयावच करेतो
॥ २९ ॥ आपरीजात जणायनें आहारपाणी भोगवेतो ॥ ३० ॥ मीश्रआहार पा

णी कीणनें कहीजे ॥ जैसे आंबरस कीधाने एक मोरत पेलीलेवे तो मीश्र कहीजे केला पीण मीश्रछे ऐसे अनेक चीज मीश्रहे ॥ मीश्र उणकु कहीजेकें काईकच्चा नेकाईपक्का फल ए मीश्र आहार भोगेतो साधुनें अनाचार लागे ॥ ३१ ॥ साधुमुनीराज आपनें सरीरमें रोगअबाधा उपज्यां अस्तीको सरणोबंछेतो अनाचार लागे ॥ ३२ ॥ कच्चामुला भोगवेतो अनाचार ॥ ३३ ॥ काचो आद्रक भोगवेतो अनाचार ॥ ३४ ॥ सेलडीना खंड उसना खंड भोगवेतो ॥ ३५ ॥ कंद सुरणादीक भोगवेतो ॥ ३६ ॥ मुल भखादीक भोगवेतो अनाचार ॥ ३७ ॥ फलखरबुजारागीर मतीरारागीरतथा काचीकांकडी कांचापका आंबाएसे अनेकफल भोगवेतो अनाचार ॥ ३८ ॥ विजादीक भोगवेतो अनाचार ॥ ३९ सुंचललुण सचीतभोगवेतो ॥ ४० ॥ सींदालुण लचीत भोगवेतो ॥ ४१ ॥ रोमज परबतरो लुण सचीत भोगवेतो ॥ ४२ ॥ समुंद्रनोलुणसचीत भोगवेतो अनाचार लागे ॥ ४३ ॥ कालोलुण सचीत भोगवेतो ॥ ४४ ॥ धुलसुं नीकल्योरो लुण सचीत भोगवेतो ॥ ४५ ॥ बस्त्र सरीरने धुपदेवेतो अनाचार लागे ॥ ४६ साधुजी वलनीमते वमन करेतो अनाचार ॥ ४७ ॥ गलाहेठला केस समारेतो अनाचार

॥ ४८ ॥ सुखसाता नीमते वीरेच लेवेतो अनाचार ॥ ४९ ॥ आंखमे अंजन करावेतो अनाचार ॥ ५० ॥ दातण करेतो अनाचार ॥ ५१ ॥ साधु मुनीराज तेल फुलेल लगावे तो अनाचार लागे ॥ ५२ ॥ साधुमुनीराज सरीरनी शुश्रुषा करेतो अनाचार लागे

ए बावन अनाचारछे सो साधु मुनीराजने टालना ॥ जो टालेगा जीणकुं साधुकही जे ॥ साख सुत्र दसमी कालक अध्यय तीसरा ॥ श्री ॥ ॥ श्री ॥

संख्या	श्रावकेनाम	नगरनाम	राजानाम	गुरुनाम	जातनाम	स्त्रीनाम	चलनधन	दृष्यांधन	परविस्तरी	गायसंख्या	श्रावकपणो	उपसर्गनाम	संथारो	देवलोक	विमाननाम	स्थितीयाप	भवमुक्तील	माहाविदेह	स्वर्ग	अध्ययन
१	आणंद १	वाणीज्य	जितसत्रु	महावीर	गाथापति	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]		[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१	[illegible]	[illegible]	१
२	कामदेव २	चंपा	जितसत्रु	महावीर	गाथापति	भद्रा [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१	[illegible]	[illegible]	२
३	चुलनीपिता	वणारसी	जितसत्रु	महावीर	गाथापति	सामा [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१	[illegible]	[illegible]	३
४	सुरादेव	वणारसी	जितसत्रु	महावीर	गाथापति	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१	[illegible]	[illegible]	४

संख्या	श्रावकनाम	नगरनाम	राजानाम	गुरुनाम	ज्ञातनाम	स्त्रीनाम	निधानधन	वृद्धिधन	प्रवृद्धिधने	गायसंख्या	श्रावकपणपालण	उपसर्गनाम	संथारो	देवलोक	विमाननाम	स्थितिपल्य	भवसंख्या	मोक्षक्षेत्र	सूत्र	अध्ययन
५	चोलवती	आलभिया	जितशत्रु	महावीर	गाथापति	बहुला नामे	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	धन कायवा	१ मास	पेलो	अरुणश्रेष्ठ	४ पल्य	१	महाविदेह	उपासगा	५
६	कुंडकोलिक	कंपिलपुर	जितशत्रु	महावीर	गाथापति	पूषा नामे	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२० वरस		१ मास	पेलो	अरुणध्वज	४ पल्य	१	महाविदेह	उपासगा	६
७	सद्दालपुत्र	पोलासपुर	जितशत्रु	महावीर	गाथापति	अग्निमित्रा	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२० वरस	आगमिलिआ	१ मास	पेलो	अरुणभव	४ पल्य	१	महाविदेह	उपासगा	७
८	महाशतक	राजग्रही	श्रेणिक राजा	महावीर	गाथापति	रेवती नामे	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२० वरस	०)	१ मास	पेलो	अरुणावतंसक	४ पल्य	१	महाविदेह	उपासगा	८
९	नंदिनीपिता	सावथी	जितशत्रु	महावीर	गाथापति	असणी नामे	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२० वरस	०)	१ मास	पेलो	अरुणगव	४ पल्य	१	महाविदेह	उपासगा	९
१०	लेतिकापिता	सावथी	जितशत्रु	महावीर	गाथापति	फाल्गुनी नामे	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२० वरस	०)	१ मास	पेलो	अरुणकील	४ पल्य	१	महाविदेह	उपासगा	१०

॥इतिश्री सूत्र उपासगदसा सारांश जाणि सद्दणीम्॥ ॥सं० १९४६ वर्षे माघशुक्लत्रयोदश्यां १३॥ अमरदत्त

॥ र्द० ॥ अथ श्रीश्री १००८ श्रीसोभाग मलजी माहाराज कत पदवी द्वार लिष्यते नाम द्वार १ अर्थ द्वार २ अवगाहणा द्वार ३ उवजण द्वार ४ आगतद्वार ५ गतद्वार ६ पावण द्वार ७ सेवण द्वार ८ काल द्वार ९ डंमक द्वार १० गुणठाणा द्वार ११ वेदद्वार १२ षेत्र द्वार १३ लोक द्वार १४ लींग द्वार १५ अवगाहणामेपदवी १७ नाम द्वार केहेछे १ सातएकेंद्रीरतनना नाम कहेछे ॥ चक्ररतन १ छत्ररतन २ चरमरतन १ डंडरतन ४ मणीरतन ५ षम्गरतन ६ कागणीरतन ७ सातपचेंद्रीरतनना नाम कहेछै सेन्यापती १ गाथापती २ वढेइ ३ प्रोहित ४ अस्वरतन ५ गजरतन ६ श्रीदेवी ७ नवमोटीपदवीना नाम कहेछै तीर्थंकर १ चक्रवरती २ वलदेव ३ बासुदेव ४ केवली ५ साधुनी ६ श्रावगनी ७ समदृष्टिनी ८ मंडलीकनी ९॥नामद्वार संपूर्ण॥अर्थ द्वार के०॥ चक्ररतन कोणने कहिजे छ षंडमे-आणमनावे १ छत्ररतनकी ४८ कोसमे छत्रकरे २ चरमरतनकी ० पाणी उपर नावानीपरे पार उतारे ४८ कोसमे चोतरोकरे ३ डंडरतनकी० उंची नीची भोमसमीकरे तमसगुफापंड प्रपातगुफा एहना वारणा उघाडे ४ मणीरतनकी० ४८ कोसमे उजवालोकरे ५ कागणीरतनकी० ४९ मांडला तमसगुफा पंडप्रपात गुफामे

करे ऋषभ कूटऊपरनाम लीषे ६ षम्गरतनकी० वेरीरामाथो ल्यावे ७ सेन्यापतीकी०
च्यार प्रकाररी सेन्याम्नेलीकरे १ गाथापतीकी २४ जातरोधांन नीपजावे १८ म्रारवना
सपती नीपजावे २ वड्डरतनकी० दोयघम्मीमे ४२ भोम्या मेहलनिपजावे नगरीवसावे
३ प्रोहीरतनकी० मोरतदेवे सांतीकामकरे गाव साजाकरे ४ अस्वरतनकी० असवारी
ने काम आवे ५ गजरतनकी० अस्वारीने काम आवे ६ श्रीदेवीकी० चक्रवरत्तनेभोग
आवे संपुर्ण ॥ अवगाहणा द्वारकहेछे॥ चक्रवरतनेपइमाने आकारे लांबो चोमो
वाम प्रमाणे १ छत्र २ चमर ३ डंम्फरतनएवं तीनरतन २ हाथरा लांवा चवमा
४ मणीरतन ४ आंगुल लावोदोय आगुल पोहलो ५ कागणीरतन ४ आंगु
ल लावो पोहलो ६ तला ८ पुगा १२ हास ते धारालोहारनी अहिरणने
आकारे ६ षम्गरतन ५० आंगुललावो १६ आगुलचोमो आधी आंगुलरो जामोछे ४
आगुलरीमुठछे ७ सेन्यापती १ गाथापती २ वदेइ ३ प्रोहीत एच्याररतन चक्रवृ
तप्रमाणे ४ कमलापतीनामेघोमो १०८ आंगुल लावो ८० अंगूलउंचोछे ९९ अंगुल
रीपरिधछे ३२ आंगुलरोमुंमोछे ४ आगुला राकानछे २० आगुलनीसातलछे ४ आंगुल

नागोमा १६ आगुलनींपीमी ४ आगुलनागीरिया एवं ७० असी आगुलउन्चोठे: ५ गजरतन चक्रबृतसुडुणोतंचो ६ श्रीदेवी चक्रबृतसु ४ आगुलकमती ७ अवगाहणाद्वार संपूर्ण ॥उपजण डुवार केहेछै॥ चक्ररतन १ छत्र ०२ चमर ०३ भंमरंतन ४ ए ४ अवधसालामेउपजे षम्गरतन ५ मणी ६ कागणी ७ ए ३ लीक्ष्मीना भंमारमे उपजे सेन्यापती १ गाथापती २ वद्दइ १ प्रोहीत ४ ए ४ रतननिजनगरमे उपजे अस्वरतन ५ गजरतन ६ एदोयवेताढ्य परमतनि मुलमे उपजे श्रीदेवीवोद्याधरनीसेनामे उपजे ७॥ उपजण द्वार सपूर्ण॥ आगतद्वाराकहेछै॥पेलीनारकीना नीकल्या १६ पदवीपामे ७ एकेंद्रीरतनटल्या १ वीजी नारकीना नीकल्या १५ पामे १६ मांसु चक्र बृत टल्या २ तीजीनरकसुं नीकल्यो १३ पदवीपांमे १५ मासु बलदेव १ वासुदेव २ एटली ३ चोथी नारकीसु नीकल्यो १२ पदवी पामे १३ मासु १ एक तीर्थंकर टल्या ४ पाचमी नारकीना नीकल्या ११ पदवीपामे १२ मांसु १ केवलिरीटली ५ छट्ठिनारकीनानिकल्पा १० पदवीपामे ११ मासू १ साधुरी पदवी टली ६ सातमी नारकीना नीकल्या ३ पदवी पांमे हाथी १ घोमो २ आवृतीसमदृष्टी ३ ॥ ७ भवणपती १ वाणमत्रा

१ जोतषी ३ एतीननो नीकल्यो २१ पदवी पामे २३ मांसु दोयटली १ तो तीर्थंकर
१ वासुदेव एटली॥ ८॥ १५परमाधामीना पहिला कलमपीना नीकल्या १ ८पदवी पामे २३
मासु ५ उतम पुरस टल्या १० ॥ २ कलमेपीना नीकल्या ११ पदवीपामे १८ मांथि
७ एकेंद्री रतन वरज्या १० पेलाबीजादेवलोकना नीकल्यो २३ पदवीपामे ११ तीजा
देवलोकसु लेने आठमादेवलोकताइरो नीकल्यो १६ पदवीपामे ७ एकेंद्री रतन टल्या
१२ नवमादेवलोकसुं लेने ९ ग्रैवेगतांइरा नीकल्या १४ पदवीपामें १६ मांसु हाथी
१ घोमा २ ए२ टली १पाचअनुत्तरवीमानथी नीकल्या ८ पदवीपामे ते ९ मोटकी
पदवीमांसु १ वासुदेवरी पदवी टली १४ प्रथवी पांणी वनस्पती सनीतीरजंच सनी
मनुष्य नो नीकल्यो ११ पदवी पामे १ तीर्थंकर २ चक्रवरत बलदेव ३ वासुदेव ४ ए
४ टली ११ तेउ १ वाउनो नीकल्यो ए पदवीपावे ७ एकेंद्री रतन हाथी १ घोमो २
ए ए पामे १६ बेद्री तेद्री चोइंद्री असनी तीर्यंच असनी मनुष्यना नीकल्या पदवी १८
पामे ५ उतमपुरस टल्या १७ सीद्धामेपदवी १ समदष्टीनीपावे १८ ॥ आगतद्वार सं
पुर्ण ॥गतिद्वारकहेछे॥ पेलीनारकी सुंलेने चोर्थी नारकी तांइ ११ पदवीको धणीजाय ७

एकेंद्री रतन चक्रवर्त्त १ वासुदेव २ मंम्लीक ३ समदृष्टि ४ एवं ११ पांचेठ्ठी नारकी
मे ९ पदवीरो धणीजाय ११ मासु हाथी १ घोमो २ ए २ टल्या सातमीं नारकीमे
सातपदवीरो धणी जाय ९ मासुं श्रीदेवी १ समदृष्टि २ ए २ टल्या ञ्चवणपती वाण
मीत्रा जोत्तषी इणमे १० पदवीकोधणी जाय सातपंचेंद्री रतनमासु एकश्रीदेवी टली ६
तो पंचेंद्री रतन साधु १ मंम्लीक २ श्रावग ३ समदृष्टि ४ एवं १० पदवी कोधनी जाय
पर मुलगुण विराधकजाय पहेलोडजे देवलोकमाहे १० पदवीरोधणीजायपरंउत्तरगुणवी
राधक साधुश्रावकजायआराधकपिणजाय ५ एतीजादेवलोकसु लेने आठमा देवलोक
ताई एहि १० पदवीको धणी जाय परं अराधकजाय ६ नवमा देवलोकसुं लेइने
१२ मादेवलोकमे ८ पदवीको धणी जाय एही १० पदवीमासु हाथी १ घोमो २
ए २ टल्या ७ ए गीरीवेग ५ अनुत्तरविमानमे २ पदवीकोधणीजाय साधु समदृष्टी
८ ॥ ५ थावर असनी मनुषमे १४ पदवीनोधणीजाय ७ एकेंद्रीरतन ६ पचेंद्रीरत
न १ श्रीदेवीटली मंम्लीकराजा एवं १४ ॥ ९ ॥ ३ वीकलेंद्री गरन्नज तीर्जंच मनुष्य
असनीतीरजंचमे १५ पदवीको धणीजाय सात एकेंद्रीरतन ६ पंचेंद्रीरतन मंम्लीक

राजासमदृष्टीए १५ पदवींकोधणीजाय १० ॥ गतिद्वारसंपुर्ण ॥ पदवीपावणद्वारकहेछे
तीर्थंकरमे ६ पदवीपावे मंम्लीकराजानी १ चक्रवर्त्तनी २ तीर्थंकरनी ३ साधुनी ४
समदृष्टिनी ५ केवलीनी ६ १ चक्रवर्त्तमेएहीज ६ पदवीपावे २ बलदेवमे ५ पदवीपा
वे मंम्लीकनी १ बलदेवनी २ साधुनी ३ समदृष्टिनी ४ केवलीनी ५ एवं ५ पावे ३
वासुदेवमे ३ पदवीपावे मंडलीकनी १ वासुदेव २ समदीष्टनी ३ एवं ३ ॥ ४ केवली
मे ८ पदवीपावे एकवासुदेवनी ट ली ५ साधुमे ८ पदवीपावे १ वासुदेवनीटली ८
पावे ६ श्रावकमे ३ पदवीपावे १ श्रावकनी १ समदीष्टिनी १ मंम्लीकनी ३ एवं ३
७ मंडलीकमे ६ पदवीपावे १ मंडलीकनी २ साधुनी श्रावकनी ४ समदीष्टिनी ५ के
वलीनी ६ वासुदेवनी एवं ६ पावे ॥ ८ ॥ समदृष्टिमे १५ पदवीपावे ९ मोटकीं ६
पंचेन्द्रीरतन १ श्रीदेवी टली ९ ॥ पदवीपावणद्वारसंपुर्ण॥सेवणद्वारकहछै॥७ एकेंद्रीरतन
७ पंचेंद्रीरतन एवं १४ रतननी एकएक हजार देवता सेवाकरे १ तीर्थंकरनी ६४ इंद्र
सेवाकरे असंख्यातादेवतासेवाकरे २ चक्रवर्त्तनी २ हजारतो दोयभूजाना १४ रतनना
१४ हजार एवं१६ सोले हजार देवता सेवाकरे ३ बलदेवने ४ हजार देवता सेवाकरे

४ वासुदेवने ८ हजार देवता सेवाकरे ५ केवलीनी अनेकदेवता सेवाकरे ६ साधुने
श्रावक समदीष्टी ए२ नी एक एक देवता सेवाकरे॥७ सेवणद्वारसंपुर्ण॥कालद्वार कहेहै॥
पहलोआरो ४ कोडाकोडसागररो दुजो ३ कोडाकोडसागरनो एदोय आरामेपदवीपा
वे १ समदीष्टिनी १ तीजोआरो दोय कोडाकोड सागरनो पदवी २१ पावे बलदेवनी
वासुदेवनी एरटली २ ॥ ४ ॥ आरो १ कोडाकोडसागरनो जीणमे ४२ हजार बरस
कमती पदवीपावे २३ ॥ ३ ॥ ५ आरोमे ५ पदवी पावे ४ छठाआरामे पदवीनथी
५ एतोसरपणी कालकह्यो ६ अब उत्त०सरपणी काल कहहै पेलाआरामे पदवी नथी
२ आरामेपदवी पावे १ समदीष्टिनी ३ आरामापदवी २१ पावे ४ आरामा पदवी
२३ पावे ५ आरामे ५ पदवीपावे ६ ॥ ६ ॥ आरामे १ पदवी पावे समदीष्टीनी॥६॥
॥ कालद्वारसंपुर्ण ॥ मंडक द्वारकहेहै॥एक मंडक नारकीनो १३ मंडक देवत्तारा एवं १४
मे एकपदवी समदीष्टिनी पावे १ ॥ प्रथवी कायमे पदवीपावे सात एकेंद्रीरतन सात २
॥ ४ थावरअसनी मनुष्यमे पदवी नथी ३ ॥ ३ ॥ वीकलेंद्रीअसंनी तीर्जंच अपरज्याप
०तामे पदवी १ पावे समदीष्टिनी सनीत्तीर्यंचमे पदवी ४ पावे हाथी १ घोडा २

श्रावक ३ समदीष्टि एवं ४ ॥ ५ ॥ अटीद्वीपनी बारला तीर्यंचमे २ पदवी पावे १ श्रा
वक २ समदृष्टि एवं २ पावे ६ असनीमें पदवी ८ पावे सातता एकेंद्रीरतन एकसम
दृष्टि एवं ८ पावे ७ सनीमाहे १६ पदवीपावे ७ एकेंद्रीरतन टल्या ८ मनुष्यमे १६
पदवी पावे ७ एकेंद्री रतन टल्या ए॥ दंम्क द्वारसंपूर्ण॥गुणठांणाद्वारकहेछे॥ पेलीगुणठा
णामे १४ पदवीपावे ७ एकेंद्रीरतन ६ पंचेंद्रीरतन १ श्रीदेवी टली मंडलीकराजा एवं
१४ छे ॥ १ डुजेगुणठांणे १ पदवी पावे समदीष्टिनी २ तीजागुणठांणे २ पदवीपावे
१ श्रीदेवी २ मडलीक एवं २ पावे ३ ॥ ४ गुणठांणे ६ पदवीपावे तीर्थंकर १ चक्रवृ
त २ बलदेवनी ३ वासुदेवनी ४ समदृष्टिनी ५ मंम्लीकनी एपावे ६ ॥ ५ गुणठां
णे ३ पदवीपावे १ समदीष्टिनी २ श्रावकनी ३ मंडलीकनी एपावे ५ ॥ ६ गुणठांणा
सु लेने १० मा गुणठाणातांई पदवी २ पावे साधुनी १ समदृष्टिनी ए २ पावे ६॥
११ मा १२ मा गुणठाणामे १ पदवी पावे ॥ ७ ॥ १३ ॥ मा ॥ १४ ॥ मा गुणठा
णा ३ पदवी पावे १ तीर्थंकरनी २ केवलीनी ३ साधुनी ए ३ पावे ८ ॥ गुणठाणाद्वा
रसंपूर्ण ॥ वेदद्वारकहेछे ॥ अस्त्रीवेदमापदवी ४ पावे १ श्रीदेवी १ श्रावकनी २ साधुनी

४ समदृष्टि ए ४ पावे ॥ १ मनुष्यणीमे ६ पावे १ श्रीदेवी २ साध ३ श्रावक ४ सम
दृष्टि ५ तीर्थंकर ६ केवली ए ६ पावे २ ॥ समचेपुरषवेदमा पदवी १३ पावे ७ एके
द्रीरतन ८ श्रीदेवी ९ तीर्थंकर १० केवली ए १० टली ॥ ३ समचेमनुष्यदेवमे पदवी
११ पावे ४ पंचेंद्री रतन ९ मोटकी मासु तीर्थंकर १ केवली २ ए २ टली ॥ ४ मनु
ष्यपुरषमा पदवी १३ पावे ॥ तीर्थं० केव० २ ए २ बधी ११ तेहीज एव १३ पावे
॥ ५ ॥ जन्मनपुंसकमे २ पावे १ श्रावक २ समदृष्टि ए ॥ ६ ॥ कृतनपुसकमे ४ पावे
१ श्रा० २ सा० ३ सम० ४ के० ए ४ पावे ॥ ७ ॥ अवेदीमा ४ पावे १ सम० सा०
ती० के० ए ४ पावे ॥ ८ ॥ मरेपदवी २७ सए २२ पदवी सहितमरे ॥ ९ ॥ अमर
१ वजेदेवनीइणपदवीमिमरेनही १० पुरषवेदमा १ नपुंसगवेदमाए २ नानीकल्यापद
वी २३ पावे ॥ ११ ॥ अस्त्रीवेदनानीकल्यापदवी १९ पावे ४ टल्या ॥ ती० १ च०
२ व० ३ वा० ४ टल्या ॥ १२ वेदडुवारसंपुर्ण ॥ षेत्रडुवारकहेछे भर्तषेत्रमाजगन्य १
पदवीपावे समदृष्टिनी १ मजमभर्तषेत्रमे ८ पदवीपावे चक्रवरतटल्यो ॥ २ ॥ भरतषे
त्रमेउत्तकष्टी २१ पदवीपावे १ बलदेव २ वासुदेवए २ टली ॥ ३ ॥ लोकडुवारकहेछै
८

उंचालोकमां ५ पदवीपावे १ के० २ सा० ३ श्रा० ४ सम० ५ मंग० ए ५ पावे १ नीचालोकमे २३ पावे ॥ २ ॥ त्रीगलोकमे २३ ॥ पावे ॥ ३ ॥ लिंगद्वारकहेहै ॥ स्वलींगमांहे ४ पावे १ तीर्थं २ सा० ३ सम० ३ केव० ए ४ पावे ॥ १ ॥ अन्यलींगिमां ४ पावे १ सम० २ श्रावक ३ सा० ४ केव० ए ४ पावे २ ग्रहलिंगिमे १३ पावे १ सेन्या० २ गाथा० ३ वढ्ढइ ४ प्रोय ५ श्रीदेवी० ६ चक्र० ७ बल० ८ वासु० ९ केव १० सा० ११ श्राव० १२ सम० १३ मंग्लीक ए १३ पावे ॥ ३ ॥ अवगाहणामे पदवीपावे ॥ ते द्वारकहेहै ॥ मनुष्यमे जगन्यअवगाहणामे पदवी १ पावे समदृष्टि ॥ १ ॥ मजमअवगाहणामे १४ पावे १ सन्या० २ गाथा ३ वढ्ढइ ४ प्रो० ५ श्रीदेवी ६ तीर्थंकर ७ चक्र० ८ बल० ९ वासु० १० केव० ११ सा० १२ श्राव० १३ सम १४ मंगलीक ए १४ पावे ॥ २ ॥ उत्कृष्टी अवगाहणा माहे २ पावे १ केव० २ सम० ए २ पावे ॥ ३ ॥ ८ कर्मनावेदगामे २१ पावे १ तीर्थंकर २ केवली ए २ टली ॥ ४ ॥ सातकर्मनावेदगामे २ पावे १ साधनी २ समदृष्टिनी ए २ पावे ॥ ५ ॥ इतीपदवीद्वारसंपूर्ण ॥

अथश्री तीनलोकरो ३ थोकमो लिख्यते ॥पांचसे तेसट बोल उपर ॥ उंचा लोकरी थोक
मो लिष्यते ॥ उचालोकमे जीवना भेद १९२ पावे ते कीसा ४६ तिर्यचना भेद कहे
छे प्रथवि कायना ४ भेद सुक्ष्मने बादर येना अप्रज्यापा ॥ प्रज्यापा अपकायना ४
भेद सुक्ष्म ने बादर अप्रज्यापाप्रज्यापा तेउकायना ४ भेद सुक्ष्मना अप्रज्यापा प्रज्या
पा बाउकायना ४ भेद सुक्ष्मने बादर येना अप्रज्यापा प्रज्यापा वनसपतिरा ६ भेद सु
क्ष्म साधारण प्रत्येक येना अप्रज्यापा प्रज्यापा बेद्रीना २ भेद तेंद्रीना २ भेद चोद्री
ना २ भेद येना अप्रज्यापा प्रज्यापा पंचेंद्रीना ५ भेद जलचर थलचर षेचर उरपर भुज
पर ये ५ सन्नी ए ५ असनी ए १० ना अप्रज्यापा प्रज्यापा एवं २० एवं सर्वमिलीने
४६ भेद तीर्यचना जाणवा देवताना ७६ भेद ३ कलमषी १२ देवलोक ९ लोकांतीक
९ ग्रैवेग ५ अनुत्तरविमान ए ३८ ना अप्रज्यापा प्रज्यापा एवं ७६ भेद जांणवा गाथा
जीव गइ इंदिय काए, जोए बेये कसाय लेस्साय, समत्त नाण दंसण, संजम उवउगे आ
हारे, भासग परत्त पजत्ता, सुहमे सनीभव ठिचरमेय ॥ १ ॥ माहादंमएचेव

	ती दे संख्या				ती दे संख्या				ती दे संख्या		
१ समचेजीवमे	४६	७६	१२२	७ देवता	०	७६	७६	१३ तेयंदीया	२	०	२
२ नारगीमे	०	०	०	८ देंवी	०	६	६	१४ चोरदीया	२	०	२
३ तीरजचमे	४६	०	४६	९ सीधांमे	०	०	०	१५ पचेंदीया	२०	७६	९६
४ त्रीजंचणी	१०	०	१०	१० सयंदीया	४९	७६	१२२	१६ असनीपं	१०	०	१०
५ मनुक्ष	०	०	०	११ एकेदीया	२०	०	२०	१७ संनीपंच	१०	७६	८६
६ नुक्षणी	७	०	०	१२ वेयदीया	२	०	२	१८ सुतंईद्री	१०	७६	९६

		२	३	सत्ता			१	२	स					
१९	वक्रकडी	२२	३६	७८	३२	तेउकाय	२	०	२	४५	ववहारजाषा	१२	३८	५१
२०	डी	२४	३६	१००	३३	वाउकाय	४	०	४	४६	वचनयोग	१३	३८	५१
२१	[illegible]	२३	३६	१०२	३४	वणस्पतीकाय	६	०	६	४७	उदारिकमिश्र	२७	०	२०
२२	कर डी	४६	७	१२२	३५	त्रसकाय	३६	३६	१०२	४८	उदारिकजो	४६	०	४६
२३	लोदीया	०	०	०	३६	अपकाय	०	०	०	४९	वैक्रेजोग	६	७६	८२
२४	श्रोतेंडी	२६	०	२६	३७	सजोगी	४६	३६	१२२	५०	वैक्रेमिश्र	६	६२	६८
२५	चक्षुइंद्रिय	२४	०	२४	३८	सत्यम	५	८	४३	५१	उत्तरवैक्रिय	६	२	३०
२६	घ्राणेंद्रिय	२२	०	२२	३९	असत्यमन	५	३८	४३	५२	आहारिकमे	०	०	०
२७	रसेंद्रीजल	२०	०	२०	४०	मिश्रमनजोग	५	३८	४३	५३	कार्मणजोग	२३	३८	६१
२८	फर्सेंद्रीय	०	०	०	४१	ववहारमन	५	३८	४३	५४	अजोगी	०	०	०
२९	सकायी	४६	७६	१२२	४२	सत्यजाषा	५	३८	४३	५५	सवेदी	४६	७६	१२२
३०	[illegible] काय	४	०	४	४३	असत्यजाषा	५	३८	४३	५	[illegible]	१०	७६	८६
३१	अपकाय	४	०	४	४४	मिश्रजाषा	५	३८	४३	५७	अस्त्रीवेदी	१०	६	१६

		ती	दे	सं.			ती	दे	सं.			ती	दे	सं.
५७	सनपुंसगवेदी	४६	०	४६	६९	कापोतले	४६	०	४६	८२	एकान्तसमदृष्टि	१०	०	०
५८	नपुंसकएक	३६	०	३६	७०	तेजुलेसी	१२	६	१८	८३	एकान्तमिथ्याद्द	३०	६	३६
५९	अवेदी	०	०	०	७१	पद्मलेसी	१०	२६	३६	८४	समदृष्टि	१०	६६	७६
६०	सकसाइ	४६	७६	१२२	७२	शुक्ललेसी	१०	४४	५४	८५	मतनाणी	१८	७०	८८
६१	क्रोधकसाइ	४६	७६	१२२	७३	अलेसी	०	०	०	८६	श्रुतनाणी	१८	७०	८८
६२	मानकसाइ	४६	७६	१२२	७४	समदृष्टि	१८	७०	८८	८७	अवधनाणी	५	७०	७५
६३	मायाकसाइ	४६	७६	१२२	७५	मिथ्यादृष्टि	४६	६६	११२	८८	मनपर्येवनाणी	०	०	०
६४	लोभकसाइ	४६	७६	१२२	७६	मिश्रदृष्टि	५	२१	२६	८९	केवलनाणी	०	०	०
६५	अकसाइ	०	०	०	७७	सास्वादन	१८	४२	६०	९०	सनाणी	४६	६६	११२
६६	सलेसी	४६	७६	१२२	७८	उपसम	१०	४२	५२	९१	अनाणी	४६	६६	११२
६७	कृष्णलेसी	४६	०	४६	७९	क्षयोपसम	१०	७०	८०	९२	मतअनाणी	४६	६६	११२
६८	नीललेसी	४६	०	४६	८०	वेदकसम	५	२१	२६	९३	श्रुतअनाणी	४६	६६	११२
					८१	क्षायक	२	७०	७२	९४	विभंगअनाणी	५	६६	७१

९५	चक्षुदर्शन	११	३८	४९	१०८	मनोगारवक्त	४६	३६	१२२	१२१	सन्नीअसन्नीमे	५	०	५
९६	अचक्षुदर्शी	४६	७६	१२२	१०९	आहारिक	४६	७६	१२२	१२२	नवि	४६	७६	१२२
९७	अवधदर्शन	५	७६	२१	११०	अणाहारिक	२३	३८	६१	१२३	अनबी	४६	६६	११२
९८	केवलदर्शी	०	०	०	१११	नासग	१३	३८	५१	१२४	चरम	४६	७६	१२२
९९	सजती	०	०	०	११२	अनासग	३३	३८	७१	१२५	सासता	४१	३८	७९
१००	समाइकाचित्र	०	०	०	११३	पर्ज्ञ	४६	७६	१२२	१२६	अचरम	४६	६६	११२
१०१	सूक्ष्मसंपरा०	०	०	०	११४	अपर्ज्ञ	४६	६६	११२	१२७	असासता	५	३८	४३
१०२	यथाख्यात०	०	०	०	११५	पर्याप्ता	२३	३६	६१	१२८	गर्भेज	१०	०	१०
१०३	छेदोपस्थाप०	०	०	०	११६	अपर्याप्ता	२३	३६	६१	१२९	नोगर्भेज	३६	७६	११२
१०४	परिहारविशुद्धिकचरित्र	०	०	०	११७	सूक्ष्म	१०	०	१०	१३०	अमरे	०	३८	३८
१०५	सजतासज	५	०	५	११८	बादर	३६	७६	११२	१३१	मरे	४६	३८	८
१०६	असजती	४६	७६	१२२	११९	सन्नीसमवे	१०	७६	८६	१३२	सन्नीएक	५	७६	८१
१०७	सागारव	४६	७६	१२२	१२०	असन्नीसमवे	४१	०	४१	१३३	असन्नीएक	३६	०	३६

		ती	दे	स०			ती	दे	स०			ती	दे	स०
५७	सनपुंसगवेदी	४६	०	४६	६९	कापोतले	४६	०	४६	८२	एकान्तमदृष्टि	१९	०	०
५८	नउसलएक	३६	०	३६	७०	तेजुलेसी	१३	६	१९	८३	एकान्तमिथ्यादृ	३०	६	३६
५९	अवेदी	०	०	०	७१	पद्मलेसी	१०	२६	३६	८४	समदृष्टि	१०	६६	७६
६०	सकसाइ	४६	७६	१२२	७२	सुक्कलेसी	२०	४४	५४	८५	मतनाणी	१८	७०	८८
६१	क्रोधकसाइ	४६	७६	१२२	७३	अलेसी	०	०	०	८६	श्रुतनाणी	१८	७०	८८
६२	मानकसाइ	४६	७६	१२२	७४	समदृष्टि	१८	७०	८८	८७	अवधनाणी	५	७०	७५
६३	मायाकसाइ	४६	७६	१२२	७५	मिथ्यादृष्टि	४६	६६	११२	८८	मनपर्येवनाणी	०	०	०
६४	लोभकसाइ	४६	७६	१२२	७६	मिश्रदृष्टि	५	२१	२६	८९	कीवलनाणी	०	०	०
६५	अकसाइ	०	०	०	७७	सास्वादन	१८	४२	६०	९०	सनाणी	४६	६६	११२
६६	सलेसी	४६	७६	१२२	७८	उपसम	१०	४२	५२	९१	अनाणी	४६	६६	११२
६७	कृष्णलेसी	४६	०	४६	७९	क्षयोपसम	१०	७०	८०	९२	मतअनाणी	४६	६६	११२
६८	नीललेसी	४६	०	४६	८०	वेदकसम	५	२१	२६	९३	श्रुतअनाणी	४६	६६	११२
					८१	क्षायक	२	७०	७२	९४	विभंगअनाणी	५	६६	७२

९५	चक्षुदर्शन	११	३८	४९	१०८	मणागारवक	४६	३६	१२२	१२१	सन्नीअसन्नीमे	५	०	५
९६	अचक्षुदर्शी	४६	७६	१२२	१०९	आहारिक	४६	७६	१२२	१२२	भवि	४६	७६	१२२
९७	अवधदर्शन	५	७६	२१	११०	अणाहारिक	२३	३८	६१	१२३	अभवी	४६	६६	११२
९८	केवलदर्शी	०	०	०	१११	भासग	१३	३८	५१	१२४	चरम	४६	७६	१२२
९९	सजती	०	०	०	११२	अभासग	३२	३८	३१	१२५	सासता	४१	३८	७९
१००	समाइकचरित्र	०	०	०	११३	पर्जा	४६	७६	११२	१२६	अचरम	४६	६६	११२
१०१	सुक्ष्मसंपरा०	०	०	०	११४	अपर्जा	४६	६६	११२	१२७	असासता	५	३८	४३
१०२	यथाख्यात०	०	०	०	११५	पर्याप्ता	२३	३६	६१	१२८	गर्भेजा	१०	०	१०
१०३	छेदोपस्थाप०	०	०	०	११६	अपर्याप्ता	२३	३६	६१	१२९	नोगर्भेजा	३६	७६	११२
१०४	परिहारविशुद्धिचारित्र	०	०	०	११७	सूक्ष्म	१०	०	१०	१३०	अमरे	०	३८	३८
१०५	सजतासज	५	०	५	११८	बादर	३६	७६	११२	१३१	मरे	४६	३८	१
१०६	असजती	४६	७६	१२२	११९	सन्नीसमवे	१०	७६	८६	१३२	सन्नीएक	५	७६	८१
१०७	सा गारव	४६	७६	१२२	१२०	असन्नीसमवे	४१	०	४२	१३३	असन्नीएक	३६	०	३६

॥इतिथोकडोसम्पूर्णम्॥ ॥श्रीरस्तु॥ ॥अथत्रिलोकनोथोकडो स्वामीजीमहाराज श्रीश्री १०८श्रीश्रीसौभाग्यमलजीकृतलिख्यते ॥ ॥त्रिलोकमेजीवनाभेद ५६३ पावे तेकिसा तिर्यंचरा ४८भेद मनुष्यरा ३०३भेद देवतारा१९८भेद एव ५६३ तिर्यंचरा ४८भेदकहेछे पृथ्वीकायरो ४ सूक्ष्मनेबादर अपर्याप्ता पर्याप्ता अपकायना ४ तेउकायना ४ वाउकायना ४ भेद पृथ्वीकायनीपरे जाणवो वनस्पतीकायना ६ सूक्ष्म साधारण प्रत्येक एनाअपर्याप्ता पर्याप्ता एव२ विकलेंद्रीना अपर्याप्ता पर्याप्ता एवं ६ पचेंद्रीना३ भेद १ जलचर २ थलचर ३ खेचर जलचरना४भेद सन्नी असन्नी अपर्याप्ता पर्याप्ता थलचरना२भेद चोपद उरपर भुजपर चोपदना४ भेद सन्नी असन्नी अपर्याप्ता पर्याप्ता एव४भेद उरपरना४ भुजपरना ४ भेद खेचरना ४ भेद एव२० ४८ भेद तिर्यंचनाजाणवा मनुष्यना ३०३ भेद तेकिसा १५ कर्मभूमी ३० अकर्मभूमी ५६ अतरद्वीपा एव १०१ एना अपर्याप्ता पर्याप्ता एव ॥२०२॥१०१॥ समूर्छिम एव ३०३ भेदजाणवा १९८ जातनादेवता तेकिसा १० जातनावाणव्यतर १० तिर्यग्भका १० ज्योतिषी एव ९९ना अपर्याप्ता पर्याप्ता एवं १९८ जाणवा एवसर्वेमिलीने ५६३ भेदथया ॥

		ति	म०	दे	सरवा
१	सम्चेजीव	४८	३०३	१९८	५६३
२	नारकीमे	०	०	०	०
३	तिर्यंचमे	४८	०	०	४८

		ति	म	दे	स			ति	म	दे	स			ति	म	दे	स
४	तिर्यंचणीमे	१०	०	०	२०	१७	असन्नीमे	१०	१०१	०	१११	३०	पृथ्वीकाय	४	०	०	४
५	मनुष्यमे	०	३०३	०	३०३	१८	श्रोत्रेंद्री	२०	३०३	३२	३५५	३१	अपकाय	४	०	०	४
६	मनुष्यणीमे	०	२०२	०	२०२	१९	चक्षुइंद्री	२२	३०२	३२	३५६	३२	तेउकाय	४	०	०	४
७	देवतामे	०	०	३२	३२	२०	घ्राणेंद्री	२४	३०३	३२	३५९	३३	वाउकाय	४	०	०	४
८	देविमे	०	०	३२	३२	२१	रसेंद्री	२६	३०३	३२	४०१	३४	वनस्पती॰	६	०	०	६
९	सिद्धामे	०	०	०	०	२२	फरसेंद्री	४८	३०३	३२	४२२	३५	त्रसकाय	२६	३०३	३२	४०१
१०	सइंद्रियामे	४८	३०३	३२	४२३	२३	अणेंद्रिया	०	१५	०	१५	३६	अकाय	०	०	०	०
११	एकेंद्रिया	२२	०	०	२२	२४	श्रोत्रेंद्रीअ	२८	१५	०	४३	३७	सयोगी	४८	३०३	३२	४२३
१२	बेइंद्रिया	२	०	०	२	२५	चक्षुइंद्रीअ	२६	१५	०	४१	३८	सत्यमनयो॰	५	१०१	३६	१४२
१३	तेइंद्रिया	२	०	०	२	२६	घ्राणेंद्रीअ	२४	१५	०	३९	३९	असत्यमन॰	५	१०१	३६	१४२
१४	चउरिंद्रिया	२	०	०	२	२७	रसेंद्रीअ	२२	१५	०	३७	४०	मिश्रमनयो॰	५	१०१	३६	१४२
१५	पंचेंद्रिया	२०	३०३	३२	३५५	२८	फरसेंद्रीय	०	१५	०	१५	४१	असत्यामृषमन॰	५	१०१	३६	१४२
१६	सन्नीमे	१०	२०२	३२	२०४	२९	सकाय	४८	३०३	३२	४२३	४२	सत्यभाषा	५	१०१	३६	१४२

४३	असत्यमाषा	५	१०	३६	१४२	५६	पुरुषवेदीमे	१०	२०२	७२	२८४	६९	नीललेस्यामे	४८	३०३	५२	४०३
४४	मिश्रभाषा	५	१०१	३६	१४२	५७	अस्त्रीवेदीमे	१०	२०२	७२	२८४	७०	कापोतलेस्या	४८	३०३	५२	४०३
४५	व्यवहारभाष	१३	१०१	३६	१५०	५८	नपुंसकवेदी	४८	१३१	०	१७९	७१	तेजुलेस्यामे	१३	२०२	७२	२८७
४६	वचन जोग	१३	१०१	३६	१५०	५९	नपुंसकएक	२८	१०१	०	१२९	७२	पद्मलेस्यामे	१०	३०	०	४०
४७	उदारीक	४८	३०	०	३५१	६०	अवेदी	०	१५	०	१५	७३	सुक्ललेस्या	१०	३०	०	४०
४८	उदारिकमि	३०	२१७	०	२४७	६१	सकसाइ	४८	३ ३	७२	४२३	७४	अलेसीमे	०	१५	०	१५
४९	वैक्रियमे	६	१५	७२	९३	६२	क्रोधकषाइ	४८	३०३	७२	४२३	७५	समदृष्टिमे	२८	८०	७२	१८०
५०	वैक्रियमिश्र	६	१५	७२	९३	६३	मानकषाइ	४८	३०३	७२	४२३	७६	मिथ्यादृष्टि	४८	३०३	७२	४२३
५१	उत्तरवैक्रिय	६	१५	३६	५७	६४	मायाकषाइ	४८	३०३	७२	४२३	७७	मिश्रदृष्टि	५	१५	३६	५६
५२	आहारिक	०	१५	०	१५	६५	लोभकषाइ	४८	३०३	७२	४२३	७८	सास्वादानसम	१८	३०	७२	१२०
५३	कार्मण	२४	१०२	३६	[illegible]	६६	अकसाइ	०	१५	०	१५	७९	उपसमसमग०	१०	३	७२	११२
५४	अजोगी	०	१५	[illegible]	१५	६७	सलेसीमे	४८	३०३	७२	४२३	८०	श्रुतअनाणी	४८	३०३	७२	४२३
५५	सवेदीमे	४८	३०३	७२	४२३	६८	कृष्णलेस्यामे	४८	३०३	५२	४०३	८१	विभंगअना	५	१५	७२	९२

८२	सायकसमगत	२	९००	७२	१६४	९९	विनंगअना	५	१५	३२	९२	१०८	अनासगमे	३।	२१७	३६	८८
८३	एकलामिथ्याद्दष्टि	३	२१२	०	२४३	९६	चक्षुद .	११	१०१	३६	१४८	१०९	परित्त	४८	३०३	७२	४२३
८४	समद्दष्टि व्याह	१८	९००	७२	१८०	९७	अचक्षुद .	८	३०३	७२	४२३	११०	अपरित्त	४८	३०३	७२	४२३
८५	सनाणी ने	१८	९००	७२	१८०	९८	अव ेद	५	३०	७२	१०७	१११	व ।मा	२४	१०१	३६	१६१
८६	मतनाणीमे	१८	९००	७२	१८०	९९	केवलद !	०	१५	०	११	११२	अपयोत्ता	२४	३०	३	२६२
८७	स्रुतनाणीमे	१८	९००	७२	१८०	१००	सयती	०	१५	०	१५	११३	सूक्षम	१०	०	०	१०
८८	अवधनाणीमे	५	३०	७२	१०७	१०१	सजतासज	०	२०	०	२०	११४	बादर	३८	३०३	७२	४२३
८९	मनपर्यवनाणी	०	१५	०	१५	१०२	असयती	४८	३०	७२	२३	११५	सन्नी	१०	२०२	७२	२८४
९०	के० लनाणी	०	१५	०	१५	१०३	सागारवक्ष	४८	३०	७२	४२३	११६	असन्नी	४३	१७२	२६	२४१
९१	अनाणीसमचे	४८	३०३	७२	४२३	१०४	अणागारव	४८	३०	७२	४२३	११७	सन्नीएक	५	१३१	४६	१८२
९२	मतअनाणी	४८	३०३	७२	४२३	१०५	आहारिक	४८	३	७२	४२३	११८	असन्नीएक	३८	१०१	०	१३९
९३						१०६	अणाहारिक	२४	३१	३६	२९७	११९	नोसन्नी नोअसन्नी	५	७१	२६	१०२
९४	तअनाणी	४८	३०३	७२	४२३	१०७	नासगमे	१२	१०१	३६	१५०	१२०	चरी	४८	७३	७२	४२३

१२१	अनवि	४८	३०३	७२	४२३
१२२	चरम	४८	३०३	७२	४२३
१२३	अचरम	४८	३०३	३६	४२३
१२४	सास्वता	४३	१०१	३६	१८०
१२५	असास्वता	५	२०२	३६	२४२
१२६	अमरे	०	८६	३६	१२२
१२७	मरे	४८	२१७	३६	३०१
१२८	समाइचारि	०	१५	०	१५
१२९	छेदोपस्था पनीचारित्र	०	१९	०	१९
१३०	परिहारविशु द्धिचारित्र	०	१०	०	१०
१३१	सूक्ष्मसंपरा यचारित्र	०	२०	०	२०
१३२	यथाख्यात चारित्र	०	१०	०	१०

॥इतिसंपूर्णो॥ लि॥अमरदत्त॥ श्री॥

॥अथश्रीनीवालोकनोथोकडो॥स्वामीजीमाहाराजश्रीश्री १०८श्रीश्री सौभागमलजीमाहाराजकृतलिख्यते॥ ॥नीवालोकमे जीवांना ११५ भेद नरकगतिना १४ भेद तिर्यंचगतिना ४८ भेद मनुष्यना ३ भेद देवताना ५० भेद ॥नरकगतिना १४ भेदकहेछे॥ ॥

नाम				॥गोत्र॥			
१	घम्मा	५	रिठा	१	रत्नप्रभा	५	धूमप्रभा
२	वंसा	६	मघा	२	सक्करप्रभा	६	तमप्रभा
३	सेला	७	माघवई	३	वालुप्रभा	७	तमतमाप्रभा
४	अंजणा			४	पंकप्रभा		

॥ए ७ ना अपर्याप्ता पर्याप्ता एवं१४ भेद नरकगतीना जाणवा तिर्यंचना ४८ भेदछे ते त्रिवालोकराथोकडामेकह्या तिके जाणवा ॥ मनुष्यना ३ भेद सन्निरो मनुष्य अपर्याप्तो पर्याप्तो असन्नीमनुष्यरो अपर्याप्तो ए ३ भेद देवताना ५० भेदछे तेकहेछे पनरे जातना परमाधामीना१०

॥१०॥ जात भवनपतीकादेवे ॥				॥११॥ जात परमाधामीकादेवे ॥						१	समुच्चेजीवमे	४८	३	५०	११५
१	असुरकुमार	६	दीपकुमार	१	अंबे	६	विरुद्दे	११	कुंभे	२	नारकीमे	१४	०	०	०	१४
२	नागकुमार	७	उदधीकुमार	२	अंबरसे	७	काले	१२	वालु	३	तिर्यंचमे	०	४८	०	०	४८
३	सुवर्णकुमार	८	दिसाकुमार	३	सामे	८	महाकाले	१३	वैतरणी	४	तिर्यंचनीमे	०	१०	०	०	१०
४	विद्युतकुमार	९	पवनकुमार	४	सबले	९	असीपत्ते	१४	खरस्वरे	५	मनुष्यमे	०	०	३	०	३
५	अग्निकुमार	१०	थणितकुमार	५	रुद्दे	१०	धणु	१५	महाघोसे	६	मनुष्यणीमे	०	०	२	०	२
॥एवं २५ एना अपर्याप्ता पर्याप्ता ॥ एवं ५० भेदजाणवा ॥							॥श्रीजिनायनमः॥			७	देवतामे	०	०	०	५०	५०

८	देवीमे	०	०	०	५०	५०	१४	चौरिंद्रियामे	०	२	०	०	२	२०	घ्राणेंद्री	१४	२४	३	५०	९१
९	सिद्धामे	०	०	०	०	०	१५	पचेंद्रियामे	१४	२०	३	५०	८७	२१	रसेंद्री	१४	२६	३	५०	९३
१०	सइंद्रियामे	१४	४८	३	५०	११५	१६	सन्नीमे	१४	१०	२	५०	७६	२२	फरसेंद्री	१४	४८	३	५०	११५
११	एकेंद्रियामे	२२	२२	०	०	२२	१७	असन्नीमे	०	११	०	०	११	२३	अणेंद्रिय	०	०	१	०	१
१२	बेयंद्रियामे	०	२	०	०	२	१८	श्रोतेंद्रीने	१४	२०	३	५०	८७	२४	श्रुतेंद्रीअ	०	२८	१	०	२९
१३	तेइंद्रियामे	०	२	०	०	२	१९	चक्षुइंद्री	१४	२२	३	५०	८९	२५	चक्षुइंद्रीअ	०	२६	१	०	२७

नीवानीक० ॥५५॥

२६	घ्राणेंद्रीअ	०	२४	१	०	२५	३९	असत्यमनयो	७	५	१	२५	३८	५२	आहारिक	०	०	१	०	१
२७	रसेंद्रीअ०	०	२२	१	०	२३	४०	मिश्रमनयोग	७	५	१	२५	३८	५३	कार्मण	७	२४	३	२५	५९
२८	फरसेंद्रीअ	०	०	१	०	१	४१	व्यवहारमनयो	७	५	१	२५	३८	५४	अजोगी	०	०	१	०	१
२९	सकाया	१४	४८	३	५०	११५	४२	सत्यभाषा	७	५	१	२५	३८	५५	सवेदी	१४	४८	३	५	११५
३०	पृथ्वीकाय	०	४	०	०	४	४३	असत्यभाषा	७	५	१	२५	३८	५६	पुरुषवेदी	०	१०	२	५	६२
३१	अपकाय	०	४	०	०	४	४४	मिश्रभाषा	७	५	१	२५	३८	५७	अस्त्री	०	१०	२	५०	६२
३२	तेउकाय	०	४	०	०	४	४५	व्यवहारभाषा	७	१३	१	२५	४६	५८	नपुंसक	१४	५८	३	०	६५
३३	वाउकाय	०	४	०	०	४	४६	वचनजोग	७	१३	१	२५	४६	५९	एकनपु	१४	३८	१	०	५३
३४	वनस्पती	०	६	०	०	६	४७	उदारिक	०	४८	३	०	५१	६०	अवेदी	०	०	१	०	१
३५	त्रसकाय	१४	२६	३	५०	९३	४८	उदारिकमिश्र	०	३०	३	०	३३	६१	सकषाइ	१४	४८	३	५०	११५
३६	अपकाय	०	०	०	०	०	४९	वैक्रिय०	१४	६	१	५०	७१	६२	क्रोधकषा	१४	४८	३	५०	११५
३७	सयोगी	१४	४८	३	५०	११५	५०	वैक्रियमिश्र	१४	६	१	५०	७१	६३	मानकषा	१४	४८	३	५०	११५
३८	सतमनयो	७	५	१	२५	३८	५१	आहारवैक्रिय	७	६	१	२५	३९	६४	मायाकषा	१४	४८	३	५०	११५

योकाने ॥५५॥

६५	लोभकषा	१४	४८	३	५०	११५	७८	सास्वादनसम	१३	१८	२	२०	५३	९१	केवलनाणी	०	०	१	०	०
६६	अकषाइ	०	०	१	०	१	७९	उपसमसमग	१	१७	२	२०	३३	९२	अनाणी	१४	४८	३	५०	११५
६७	सलेसी	१४	४८	३	५०	११५	८०	वेदकसमगत	७	५	१	१०	२३	९३	मतअनाणी	१४	४८	३	५०	११५
६८	कृष्णलेसी	६	४८	३	५०	१०७	८१	क्षायकसमगत	८	२	२	२०	३२	९४	श्रुतअनाणी	१४	४८	३	५०	११५
६९	नीललेसी	६	४८	३	५०	१०७	८२	एकत्वमिथ्यात	१	३०	१	३०	६२	९५	विभंगअना॰	१४	५	१	५०	७०
७०	कापोतले॰	६	४८	३	५०	१०७	८३	क्षयोपशम	१३	१०	२	२०	४५	९६	चक्षुदर्शण	७	११	१	२१	४४
७१	तेउलेसी	७	४३	२	५०	६५	८४	समदृष्टिएक	०	०	०	०	०	९७	अचक्षुदर्शण	१४	४८	३	५०	११५
७२	पद्मलेसी	०	१०	२	०	१२	८५	समदृष्टिमिथ्या	१३	१८	२	२०	५३	९८	अवधिदर्शण	१४	५	२	५०	७१
७३	सुक्कलेसी	१	१०	२	०	१२	८६	मतिनाणी	१३	१८	२	२०	५३	९९	केवलदर्शण	०	१	१	०	१
७४	अलेसी	०	०	१	०	१	८७	श्रुतनाणी	१३	१८	२	२०	५३	१००	सजतीचारित्र	०	०	१	०	१
७५	समदृष्टि	१३	१८	२	२०	५३	८८	समाणी	१३	१८	२	२०	५३	१०१	सजतासयती	०	५	१	०	६
७६	मिथ्यादृष्टि	१४	४८	३	५०	११५	८९	अवधनाणी	७	१५	२	१५	३९	१०२	असयती	१४	४८	३	५०	११५
७७	मिश्रदृष्टि	७	५	१	१०	२३	९०	मनपर्यवनाणी	१	०	१	०	१	१०३	सागारवक्त	१४	४८	३	५०	११५

१०४	पजाप्तारअकृता	१४	४८	३	५०	११५	११७	सन्नीएक	१३	५	२	२५	४४
१०५	अपतिकमे	१४	४८	३	५०	११५	११८	असन्नीएक	०	३८	१	०	३९
१०६	अपरातीकमे	७	२४	३	२५	५७	११९	सन्नीअस नीजेला	१	५	१	२५	३२
१०७	जारागमे	७	२३	१	२५	४६	१२०	नवीमे	१४	४८	३	५०	११५
१०८	अनारागमे	७	३५	३	२५	७०	१२१	अनवीमे	१४	४८	३	५०	११५
१०९	परित	१४	४८	३	५०	११५	१२२	सासता	७	४३	१	२५	२९
११०	अपरित	१४	४८	३	५०	११५	१२३	असासता	७	५	२	२५	३९
१११	पर्यासा	७	२४	१	२५	५७	१२४	अमरे	७	०	०	२५	३२
११२	अपर्यासा	७	२४	२	२५	५८	१२५	मरे	७	४८	३	२५	८३
११३	सस्न	०	१०	०	०	१०	१२६	गर्भेजा	०	१०	२	०	१२
११४	वादर	१४	३८	३	५०	१०५	१२७	नोगर्भेजा	१४	३८	२	५०	११३
११५	सन्नीमे	१४	१०	२	५०	७६	॥इतिश्रीनीवालोकरीथोकडोसमाप्त॥						
११६	असन्नीमे	१	४३	२	२५	७१	समत१९५६माघशुक्ल७सम्पूर्णवारे						

॥लिपीछात।मार
वाड श्रीजोधपु
रका रेवासी वोडा
गुमानिरामजी त
नुजन अमरदत्त।
श्रीजोधपुरमे छि
गुदीरामोहलामे
छनः॥अहमदा
वाद छि देवसारेपा
डे॥ जैनधर्मका उ
त्तक ४५ आगम
रखे टीका जोवही
जेसोसर्वमिलेगा॥

॥ सामीजी श्रीश्री १००८ श्रीश्री सोभाग मल जी माहाराजकृत रुपी अरुपीरो थोकमो लीष्यते १८पापथानक ८ कर्म १मन १ वचन जोग १ कार्मण सरीर ए २९ मे १६ बोल पावेते किसा ५ वरण २ गंध ५रस ४ फरस १ ठनो २ गढो ३ चीग-टो ४ लुपो ए २९ चोपरसि जांणवा ॥ हिवे जीवसं जुक्तपुद्गल अठफरसी कहेछै ४ सरीर ६ द्रलेस्या १ घणोदधी १ घणवाय १ तणवाय १ कायारो जोग ए १४ बोलमें वीसबोल पावे तै कहेछैः ५वरण ५रस २ गंध ८ फरस एवीसबोल पावेहिवे जीवरहित पुदगलना भेद २ पावे अनंत प्रदेसी सीथवंध १ सुषम २ बादरहिवे अनंतप्रदेसी सु-क्ष्मबंध ते कीसा ५ वरण ५ रस २ गध ४ परस ठनो ऊंनो लुपो चीगटो ए १६ बोल हीवे अनंतप्रदेसी बादर पंध ते कीसा २० बोल उपर मंभीयाते हीवे पंधना प्रदेसमेबोल जगन्यपावे ५ बोलउतकृष्टा २० बोल पावे हीवे एक प्रदेसीया प्रमाणु वालापुदगलमे पावे १ वरण १ रस २ बोल सित्तराते कीसा चींगढो लुपो तथा २ बोल उसणारा लुपो चींगटो॥रुपी पुदगलना बोल संपूर्ण॥हीवे अरुपीना बोल कहेछैः॥जीवनोजगुणना बोल जीवनीकलंक १ जीवास्तीकाय संसारी २ जीवसि

धनाहिवे संसारी जीवना भेद कहेछै ६ भावलेस्या प्रवर्त्तमान ३ दष्टिसरदहणारुप १२उ
पीयोग जाणवा रुप ४ संगन्या १४ दंमकमाहे संगन्या समभाववर्तेजीवना प्रणमा
१८ पापसुं निवर्त्तवो ४ बोलकहेछै १ उगाण कहतां उभाथायवो २ कर्मकहतां गमण
कीरीयाकवीं ३ बलते कहता सरीरनो प्राक्रम ४ वीर्यकहतां जीवनो उछावहीमत करे
वीर्यना दोयभेद १ सकर्णते संसारी जीवमे पावे २ अकर्णते सिद्धामे पावे पुरसाकार
ते कहता अभीमानकरने सगलाना कामकरे ४ बुद्धिना नाम १ उतपातीया २ वीनीया
३ कमीया ४ परणामीया ४ मति बोलकहे उग्रकहेता हेलोपामेते सुणे २ इहां कहता
हेलोकीणने दीनोचींत्तवे ३ उवाइ कहता ओलख्यो हेओ फलाणानेदीनो ४ धारणा
समाचार-सुणीने हीये धारलीना ४ बोल अरुपी अजीव १ धरमास्ती २ अधरमास्ती
३ अका सास्ती ४ कालास्तीए ८ जीवसंजुक्त पुदगल २८ चोपरसी १४ अठपरसी
१पुदगल चोपरसी अथवा अठपरसी जीवरहित पुदगलमे १६ सुक्षम १० वादरमे
एकप्रमाणुमे जगन्य ५ बोल पावे उतकष्टा २० बोल पावे इति ॥ अरुपीना १६ बोल
एवं सर्वमीलिने रुपी अरुपीनो थोकमो संपुर्ण ॥ १ ॥ हीवे निर्जरा तत्व कहेछै निर्जरा

का १२ न्नेद ६ प्रकारे बाह्यतप ६ प्रकारे अभ्यंतर तप ६ प्रकारे बाह्यतप जिणरा न्ने द कहेछे अणसणरा २ न्नेद१ इतरि०य२आवका०हीय इतरियका ६ न्नेद१ सेणीतप२ परतरतप ३ धनतप ४ वर्गतप ५ वर्गावर्गतप ६ प्रकीर्णतप श्रेणितपका चउदेन्नेद १ उपवासकरे २ बेले ३ तेलो ४ चोलो ५ पाच ६ उकरे ७ सातकरे ८ अर्धमासखम ण ९ मास १०दो मास ११ तिन मास १२चार मास १३ पाच मास १४ छमास करे प्रतरतपका १६ सोला कोठा न्नरे ॥ घणतपका ॥ ६४ ॥ वर्गतपका ४०९६ कोठा न्नरे वर्गावर्गतपका १६७७ ७२१६ कोठान्नरे ६ प्रकीर्णतप तसे इंछाप्रमाणे तप

१	२	३	४
२	३	४	१
३	४	१	२
४	१	२	३

१	२	३	४	५	६	७	८
२	३	४	५	६	७	८	१
३	४	५	६	७	८	१	२
४	५	६	७	८	१	२	३
५	६	७	८	१	२	३	४
६	७	८	१	२	३	४	५
७	८	१	२	३	४	५	६
८	१	२	३	४	५	६	७

करे एकावली कनकावली मुक्तावली रत्नावली प्रमुख जाणवा सर्व १ए आवकॉहि एका तिनन्नेद १ न्नत्तपच्चषाण २ इंगितमर्ण ३ पाउगमर्ण ४ न्नत्तपच्चषाणका ५ न्ने द १ सेहरमेंकरे २ सेरबारे करे ३ कारणसे ४ विनाकारणसे ५ पराक्रमसहितकरे २ अंगीतमर्णका ६ न्नेद पाचतो पेलि कह्या तेहीज १ दिशाकि मर्जादा करे पाउग मणका ७ न्नेद पांचतो तेहिज १ वृक्षकीमालकी परे रहे एवं १७ सर्वन्नेद १६ थया अणो दरिका २ न्नेद द्रव्यउणोदरी २ न्नाव द्रव्यउणोदरीका ३ न्नेद १ उपगरणअणो दरीका २ न्नत्तपचखाण अणोदरी ३ विवत सयणा सण अणोदरी उपगर्ण अणोदरी का ३ न्नेद १ एगेवछे २ एगेपाये ३ सुकतो न्नोगवे न्नत्तपचखाणका पुरुषका ३१ क वल ॥ अस्त्रीका २८ कवल नपुंसकमे २४ ६ न्नेद ८ कवलका आहारकरे पीणअणो दरी १२ कवलडोढन्नागआवे अमाइ न्नागकी अणोदरी १६ कवल अहार आदि अ णोदरी २४ क० अहार पाव अणोदरी १ कवल अहार उत्कृष्टअणोदरी ३१ क०अ हार जगन्य अणोंदरिन्नाव अणोदरीका ८ न्नेद १ अप्पकोहे २ अप्पमाणे ३ अप्पमा ए ४ अप्पलोहे ५ अप्पसद्द ६ अपकंके ७ अप्पकलहे ८ अप्पतुमतुंमे इनिअणो

दरी १७ भेद ॥ एवं ५३ भेद थया भिख्याचरीका ४ भेद १ द्रव्य २ क्षेत्र ३ काल ४ भाव द्रव्यका १६ भेद १ उख्वितचरीए २ निषितचरीए ३ उखित्तनिखित्तचरीए निखी त्तउखित्तचरीए ५ वट्टिज्जमाण चरिए ६ साहरिज्ज माण चरिए ७ उवणाए चरिए ८ अव णिए चरीए ९ उवणिय अवणिए चरिए १० अवणिए उवणिए चरिए ११ संसठच रिए १२ असंसठचरिए १३ तजाए संसठचरिए १४ अन्नाएचरिए १५ मोणचरीए १६ दिठ लाभिए १७ अदिठ लाभिए १८ भिरक लाभिए १९ अभिरक लाभिए २० पुठ लाभिए २१ अपुठ लाभिए २२ अन्न गीलाए २३ उव निहिए २४ परि मित पिंडवाइ २५ सुद्धेसणीए २६ संघादत्तिय ॥ एवं ७१ ॥ खेत्रथकिका ८ भेद १ पेटाकीपरे २ अर्धपेटीपेरे ३ गोमुत्रनीपरे ४ पतंगनीपरे ५ संखावृत्तमेले ६ शंखावृत वहिरले ७ जावतालेतो आवता न ले ८ आवतो लेवेतो जावता न ले कालका ४ भेद पेला पोरकोतिजेपोरे भोगवे २ डुजापोरको ३ चोथे पोरे भोगवे ३ तिजापोर को २ पोर भोगवे ४ चोथा पैरको चोथे पोरे भोगवे ॥ ९१ ॥ भावथकीका अनेक भेद भिख्याचरिएका ३१भेदछैः ॥ ९ ॥रस परीत्यागका १४ भेद १ णीवाए २ पणि

यरसपरिचाए ३ आयंबिलिय ४ आयमसिथभोइ ५ अरसअहारे ६ विरसअहारे ७ अंतअहारे ८ पंतअहारे ९ लुहअहारे १० तुछ अहारे ११ अरसजीवी १२ विरसजीवी १३ अंतजीवी १४ पंतजीवी १५ लुहजीवी १६ तुछजीवी ॥ १०६ ॥ कायकिलेसका ॥१९॥ १ काउसग्गकरे २ काउसग्ग विना उभारहे ३ उकडु आसणकरे ३ ४ पम्मावहे ५ पविरासण करे ६ पालटीमामीवेठै ७ लगम आसणकरे ८ दंमासणकरे ९ गोधुम आसणकरे १० अंबपुजासणकरे ११ धुपकीआतापनालेवे १२ ठंमपमे १३ वस्त्र नराषे १४ पाजपणेनही १५ थुकेनही १६ मेलउतारे नही १७ सरीर सोभाभांजे १८ लोचनकरे १९ सोवेनही ॥ एवं १९५ ॥ पमीसंलीनियाके ४ भेद १ इंद्रीपमी संलीनया ४ भेद २ कषाए पमीसंलीनया ३ जोग पमीसंलीनया ४ विवित सयण सण पमीसंलीनया ५ इंद्री पमीसंलीनया ५ भेद १ श्रुतेंद्री २ चक्षुइंद्री ३ घ्रानेंद्री ४ रसेंद्री ५ फर्शेंद्रीए ५ इंद्रीकी २३ विषे उदेरे नहीउदे आया समताराषे २ कसायपमीसंलीनयाका ४ भेद १ क्रोध २ मान ३ माया ४ लोभ ए ४ कसायके उदेरणाकरे नही उदेआया निफलकरे ३ जोग पमिसंलिनया ३ भेद मन वचन काया असुभ प्रवर्त्तावेनही ४ विवि

तसयणासण सेनणया अस्त्रि पसु पंम्ग रहित थानक भोगवे ॥ १३८ भेदथया ६ प्र
कारे अभ्यंतर तप १प्रायछित्तका ५० भेद तथा ५४ भेद १० बोलकरी दोपलगावे १
कंदर्पको पिम्रो दोपलगावे २ प्रमादथी ३ अजाणे ४ भुपतृखा पिम्त्या ५ आपदाथी
दोपलगावे लिणरा ४ भेद १ द्रव्यथकी अहार न मिलेतो ७ पेत्रथकी अटवीमे दोपल
गावे ३कालथी कालपम्त्या दोपलगावे४ भावथकी वेदनीसु दोपलगावे ६ संकापम्ने ७
सहसातसु ८ भयकरी ९ द्वेपकरी १० परिक्षानिमित्त दोपलगावे १० बोले करी अलावे
तो दोपलगावे १ गुरुने कंपाविने आलोवे २ प्रमाणपुछिने ३ देख्यो २ आलोवे ४ सुप
म २ आलोवे ५ बाहार २ आलोवे ६ गणगणाटकरतो आलोवे ७ लोकसुणता आ
लोवे ८ घणामीनपमे आलोवे ९ प्रायछित्तकाअजणपणे आलोवे १० प्रायछित्तावा
लोकुवेजिणारेपासेआलोवे ॥ १० ॥ बोलकरीआलेवेतो सुद्धाआलोवे १ जातवंत २
कुलवंत ३ विनेवंत ४ग्यानवंत ५ दरशणवंत ६ चरित्रवंत ७ खिम्यावंत ८ वैराग्यवत
९जितेंद्री १० अपछात्ताइ ॥ १० ॥ बोलकरी सहितहोए तिणनेआगे आलोवे १ आ
चारवंत २ विवहारवंत ३ प्रायछितना जाण ४अवायदंशी ४लल्पामुकावीने आलोवणाक

रावे ५ सुधकरावासमर्थहोय ६ आलोंवणा प्रकासेनही ७ परोकरी प्रायछतदेइ ८ घणा
आगे आलोवे ९ पापथीम्हरे १० प्रियधर्मीदृढधर्मी १० प्रकारेप्रायछित १ सुद्धआलोवे
१ सुद्धपडिकम्मणोकरे ३ सुद्धआलोवे सुद्धपमिक मणो ३ विगेका त्यागकरे ५ काउसग
६ तपकरे ७ छेदकरे ८ दीष्पादेवे ९ अणुठ पारिहे १० परंचियारिहे ५० तथाविनेका॥
॥७॥ १ ग्यानविने ७ दर्शनविने ३ चारित्रविने ४ मन ५ वचनविने ६ कायविने ७ लो
क व्यवहारविने ग्यानविनेका ५ भेद १ मती २ शु ३ अवधि ४ मनपर्यव ५ केवल ए
व ५ दरशणविनेका २ भेद १ सुसुसणया विए २ अणचासायण विणए सुसुणया विन
यका १० भेद १ गुरुआवे उठपमाहोय २ आसणविछाइदे ३ आसंणआमंतरे ४ सत
कारदेवेवस्त्रनीमीमंत्रना करवी ५ समाणेइवा ६ वंदनाकरे ७ हाथजोमे ८ अ वेतो
सामोलेने जावे ९ रह्यानिसेवाकरे १० जावेतो पोचावाजाए॥ अणचासायणविनेका
१५ भेद १० अरिहंतकी असतना नकरे २ अरिहंत पन्नंतस्सधम्मस्स ३ आयरियाणं
४उवझाय्यण ५ थेराण ६ कुलस्स ७ गणस्स ८ संघस ९ सकिरिया १० संभोग ११
मत १२ सुर्त १३ अवधि १४ मनपर्यव १५ केवलए १५ असातनाढाले १५ बहुमा

नदेए १५ गुणाग्रामए पनरेतरी ४५न्नेद चारित्रविनेका ५न्नेद सामायक २ छेदोपस्थापनी
३ परिहार विसुद्ध सुक्ष्मसंपराय ४जथाक्षात इतिचारित्र विनए सर्व ६५॥१मनविनेका२
न्नेद१प्रशस्तविनेका २अप्रसस्त मनविनेकाअप्रसस्तविनेका १२जेमने १सावजे २सकी
रिय ३ सकक्कसे ४ कडुए ५ निठुरे ६ फरूसे ७ अणण्हए करे ८ छेदकरे ए न्नेदंकरे
१० परितापणकरे ११उद्दवणकरे १२ भुर्ड वघाते तहप्पगारे मननोपधारे जाए १२
न्नेद अप्रसस्तविनेका १२ न्नेद प्रसस्तका सुलट लेपवणा एवं २४ एवं२४ न्नेद व
चन विनेका सर्व ४८ न्नेद कायविनेका २ न्नेद १ प्रसस्त २ अप्रसस्तका एविनेए अ
प्रसस्तका एविने ७ न्नेद १ अणाउत्तगमणे २ अणाउतंगगणे ३अणाउत निसिदणे
४ अणाउतंत्रुएदणे ५ अनाउतग मणे ६ अणाउत उल्लघणे ७ अणाउत सवेदिय काए
जोगजुंजण या सेत अपसछकाए विणएएवं ७ न्नेद प्रसस्तकाएका सुलटा जाणवा
ए १४ न्नेदकाए विनेका लोके विचारविनेका ७ न्नेद १ अन्नासवत्तियं२ परछंदाणुवत्ति
य ३ कयहे उ ४ कयपमीकिरिया ५ अत्तंगवेसणाया ६ देशकालणाया ७ सवछेसु अ
प्पडिलेणया सेतंलोकोवयारविणए १३४ न्नेदविनएकेद्दे एवं १८८ वियावचका १० ॥

विउसगका३ भेद१ संसार विउसग २कर्म विउसग्ग ३कसाएविउसग्ग कसाएविउसग्गका ४ भेद १ क्रोध मान माया लोभ ए ४ संसार विउसगका ४ नर्क २ तिर्यंच ३मनुक्ष ३ देवता कर्मविउसग्गका ८ भेद १ ग्यानावर्णि २ दर्शनावर्णि ३ वेदनी ४ मोहणी ५ आउषो ६ नाम ७ गोत्र ८ अतराए २६६ एवं सर्वमीलीने ३५४ भेद ईतीसपुर्णः॥ ॥ श्रीवितरागायनमः ॥ अथ अरिहंत जिनस्तवनं ॥ छंद चालमे ॥ १ ॥ प्रणमुजे मुनिंद्र जिनेंद्र भणी, जससेवेनरेंद्र सुरेंद्र फणी ॥ किर्ति अनंत संतसामीतणी ॥ त्रीजलोकमे साहीब आपधणी ॥१॥ गृहवासतजीप्रभु सुमतीकरी ॥ तपरूप ऊंतासणी कर्मधरी ॥ सुध भाव धमणकरमेलहरी ॥ प्रभू केवल कमलावेगवरी ॥ २ ॥ जेजेदिपे अतिसाचेतिसकरी ॥ निरोग्य महादिव्य देहधरी ॥ संघेणसंठाण परथम पावै ॥ जलमेल कलंक जो नही थावै ॥ ३ ॥ निरलेप निदोष शरिररहे ॥ तनक्राति ज्योत प्रकासपहे ॥ शिर अंगर झुट आकारदीशै ॥निध्वकजलकुंचियकेशशिसे ॥ ३ ॥ दाम्मिम फुलतपणीजकेस भूमी ॥ सचीत पूनपुरण नाहि कुमी ॥ निलामंदिपै अर्द्धचंद्रटीकौ ॥ उडुपाति पुरणसो मुखनिको ॥ ५ ॥ परमाणुपेत सर्वणसोहे ॥ भमुहलणोनिध्व मनमोहे ॥ नयनाबुज वि

कस्नर स्वेतन्नला ॥ उतंगदिरवनासा सरला ॥ ६ ॥ अधरारुण विद्रुमरंगदीपे ॥ दंतश्रे
णी धवल शशितिजजोपे ॥ रसनारनत अमृत जलवरसे ॥ दाढीमूछका सुदर केसद्रसे
॥ ७ ॥ गोरवाभुजंजस पुष्टवली ॥ फणीजीमप्रभुवाहादीपेन्नली ॥ अत्रिद्रसकोमल सु
न्नपाणी ॥ पुष्टागुली ताम्ररंगनखजाणी ॥ ८ ॥ रविशशिदिकरेखाकरमाहि ॥ सब एक
सहश्र अष्टदरसाई ॥ उतरता पासाजस उदरी ॥ गगावृत विकश्वरनान्नीश्वरी ॥ ९ ॥
सीह कटी वृतकारसही ॥ सुंडादंड उरूपिंडिसोन्नरहि ॥ कूमसम पुष्टचरण दोई ॥
आगुलीनखमे कछुकोड नही ॥ १० ॥ पगथलीमे पद्मकमल सोहे ॥ प्रभू निरखत सू
रनर मनमोहे ॥ प्रभू आतेजादिनकरका ॥ मर्यादिक केसनख जिनवरका ॥ ११ ॥ लोहि
माश उजगउखिरकरी ॥केतकी ज्ञीमखाशा शुगंधन्नरी ॥ आहार निहार अदिष्टसदा ॥
नही देखीसके चर्मदिष्टि कदा ॥१२ ॥ धर्मचक्रत्रिछत्रगगने चाले ॥देवशक्ती खगश्वेत
चमरढले ॥पादपीठका सिहासणनभमाहि ॥रतनफिटकतेनि छिवछाई ॥१३॥सहश्र हजा
परिवारकरी ॥ साइंद्र ध्वजा लहकंतकरी ॥छेरित आसोक तरुसमवते ॥ अंधकार न्नामं
मडलनिवरते ॥१४ ॥ समभूम होवे प्रभूजिहा विचरे ॥ कटककी आणीया उलटकरे ॥

जोजनलगेछे रितसुखकारि ॥ अचेत वायु रजपतिपरिहारि ॥ १५ ॥ वरसे जलमंडल
रंजजमे ॥ वरसे फुलका पुंजअनेकगमे ॥ दुरगंधटले सुभवासरमे ॥ अर्धमागधी भा
खाल्लोकगमे ॥ १६ वारे परखदामधधर्मकहे ॥ निरजर भापासब अरथगहे ॥ वेरभाव
नजागेसिघअजा ॥ वादिजन वादकरंत भजा ॥ १७ ॥ ईतहोवे नही सोकोसलगे ॥
मरिमारिसो सविडुरभगे ॥ स्वपरचक्रीसा डुखदेत नही ॥ सोकोस डुकालन आवेकही ॥
॥ १८ ॥ अधिक अणगमतो नहीवरसे ॥ थोडोपणनही भुजनतरसे ॥ १९ ॥ आत
कजीरण सवदलजावे ॥ तुतनवेद नहीसंतावै ॥ प्रभूचोतिस अतिसेकरिछाजे ॥ वाणिपे
तिस जिमघनवाजै ॥ २० ॥ चोसट ईंद्रजिन भक्तिकरे॥ सुरतरसेवामनहरपधरे ॥ पा
खंडमत खंभण मानभणी ॥ त्रिगडोरचेकरवामहेमाघणी ॥ २१ ॥ परमथम परकारतो
रुपातणो ॥ कंचन कवसीसापीत भणो॥रणमणी रत्नमे चंगकह्यो पावडिदशासहल पर
माणकह्यो ॥ २२ ॥ डुजोगढ सोवनके माहि ॥ रतन कवसीसाछ्वहार ॥ रतनगढति
जो प्रवरघणो ॥ कवसीसा मणीके माहिभणो ॥ २३ ॥ पावमीया च्यारुहि गोलतणी ॥
पाचशहजार रसाजवणी ॥भितिया तिनुहिकोटगिणी॥अर्धसहस्रधनुप उत्तंगभणी॥२४॥

धनु५तेतीस ठतिस अगुलि ॥ उपरवली ग्रथकारपुली ॥ पावमीया उचाचवमा पणै ॥ एरू श्एणीके परमाणवणै॥२५॥ लंबातो धनुपपचाससही ॥पीठकामध्यै भागै सोभर ही ॥ आयामवीपंभ ठतीस तणी ॥ दोयसे धनुप उचा२भणी ॥२६ ॥ कोट २ कोभ्रंत सोतेरे॥जोजनमूल परकासकरे॥पिटकापर फिटक रतनकेरो॥सिंघासणसोहे अधिवेरो॥ २७॥तिणउपर विराजी धम्मंकहे ॥बारेहीपुर्पदाजिजीकहे ॥आविक आविका देशविरति धणी॥कल्पवासीक देव इसाण अणी॥ २८॥ विमाणिक सुसाधु समणी॥एतीनुहि अ ग्निकुणभणी ॥विंतरजोतपी ओर भुवनपति॥नेरत कुणबेठतदेवअणी ॥२९॥देववलि ती नुही देवतणी ॥ वायव कुणबेठत सेवाभणी ॥ ३० ॥ इण विध बेठी उपदेश सुणे ॥ सुध भावथकी अधमेल धुणे ॥ एकजोजनलगे अमृत धारा ॥ वेराग पणे गृहे वृतसारा ३१गृह गण उगे ठित दिशचाीर ॥ एकदिश प्रगटे रवीह देहधारे ॥ प्रभावे जग नंदन केशसारी ॥ धन १ जिनधन महेतारी ॥ ३२ ॥ जे रवि शशि मेरू उपमा लिधुं ॥ गुण केह नसकु मुजसति बिंडं ॥ जिन गुणसर्वैमहिमा पावे॥सुर गुरु सरस्वति स्वय गुण गावै ॥३३ ॥ प्रभू नोसमरण जो करे भावपके ॥ अरि करि हरि जोरन लागसैके ॥ जलजल

ए जलोदर रोग हटे॥वध बंधण परवस डुखकटे ॥ ३४ ॥ रिध सिद्ध नरपुर नंमार घणो ॥ परताप ते प्रभूजी नामतणौ ॥परथम पद मंगल अतही न्नारी ॥तिलोकरिष कहे सेवा दो चरणारी ॥ ३५ ॥ संवत ऊगणीसे संवछरमिसे ॥ एछंद स्तवनाकरि जगिसै ॥ सुध न्नाव न्नणे गुणे नरनारी ॥ ते पावे न्नवजल निधि पारी ॥ ३६ ॥ ए ॥ कलशः ॥ इम देव अरिहंत सेवकीरत ॥ करिएय कवित चावसुं ॥ तरिये न्नवजल डुख सागर ॥ बेठकर जिम नावसुं ॥तुमनाम मंगल टले वदंगल ॥ करुणा मुजपर किजीयै ॥ चरण सरणकी सेव साहिब ॥ अचल पदवी दीजीयै ॥ प्रभूजी अवतो मेरकरी जीयै ॥ ॥ १ ॥ अथ सिद्धमाहाराज स्तुति ॥ छद ॥ २ ॥ प्रसिद्ध सिद्ध सीवकंत संत श्रेष्टदेवहो ॥ जहक दीस कुलपाय खेव नीरलेवहो ॥ कलंक वंधु मुक्क अकांक रची घनमंवरं॥ रुपाकरो दयानिधि सिधिवृद्धिसुखकरं १॥अरूप रूप स्व अनूप भूप धूअ खंम्हो ॥ अफंम नंम गंम छंमकेव लि प्रचंम्हो ॥ अनंत ग्यान रूपतोय पापमेल संहरं ॥ रुपा०॥२॥प्रमाद क्रोध मांन माथ० लोन्न सोंसोनही ॥ अनंतकाल स्थित लहै अनंत सुखराशही ॥ अष्ट महा गुण मूल त्वंसयं सुसंवरं ॥ रुपा० ॥ ३ ॥ विकार खार दुरटाल राग द्वेष संहस्चा ॥ अगाध जोन्न

चोघसो धर्मपोतथी तिरचा॥ प्रतेक येक् मेक आप व्यापहो गुणागरं ॥ कृपा० ॥ ४ ॥ अ
लेपरेख रुप नाहि पाप फंद बंधसो ॥ आहार भारं हास त्रासनास कांम धंधसो ॥अनंग
ज्ञांन संग रंग भोग भाव भंगुरं ॥ कृपा० ॥ ५ ॥ अलोक लोकदंच क्षेत्र काल भाव जाण
हो॥त्रिलोक नाथ तात भ्रात मंद्रचंद्र भांणहो॥विमास किया रोग सोग भोग भावं गुरं ॥
कृपा० ६ जपंत जाप आग नाग सिंघ चोर सोहटै॥कटंत बंध द्रव्य भाव रोग डख जेमिटै॥
विषै कषायलाय जाए आए सुखसास्वता॥कृपा ॥ ७॥ तिलोक रिप हस्त जोम करत नित्य
वंदना। निरोग बोध लाभ वाग कर्मांनि कंदन॥नहि जसु माहि उर आपसो विसंभरं॥ कृ
पा ॥ ८ ॥ नित्यमेव सिद्धाष्टकं पठतिएमनो हरं। विज्ञानमुक्ति सुष द्रव्यभावहोत ना
घरं॥ नान्पत्र देवलोकमय सिद्धस्थानतु परं ॥ कृपा० ॥ ९ ॥ ॥डहा॥ अजर अमर
अविकारहो॥ सिद्ध निरंजण देव ॥कोंकर पर कूरणा करौ ॥ दिजो अविचल सेव ॥१॥
इति सिद्धाष्टकस्तोत्र॥ ॥ अथ अचार्य स्तोत्रः ॥ छंद मरहटीमे लिष्पते ॥ जेज्ञान मह
ता समगतधंता ॥ चारितर तपधार॥उत्कृष्टी करणी भवजल तरणी॥पंचम वीर्य अचार॥
स्वपाले पलावे पापहटावै॥उपदेशे नर नार॥गणिवर पद तिजे नित्य नमिजे॥कीजै सफल

जमार ॥१॥ सर्वहिंस्या टालै दयासोपाले ॥निरवद्य बोलेसो बिचार। दत व्रत ब्रह्मचारि॥
परिग्रहधारि॥ पंचजाम सुध धार ॥ श्रुतचक्षुना सारसना फसे इंद्री सो जितणहार ग ०॥
॥ २ ॥ पसुपंडगनारी थानक टारी नारकथापरिहार ॥ अंग निरखवो वारे आसण टारे
करे नहि अधिको अहार ॥ ॥ गणी ० ॥ ३ ॥ अंग सोभाटाले वाम्ए पाले ॥ क्रोधन क
रे लिगार ॥ अभिमान तजंताकपट तजंता ॥ समतादिसवमार ॥ कषाय एहच्यारि महा
डुखकारी भरमावै शंसार ॥ गणी ० ॥४॥ करमका फंदा पूर निकंदा ॥ वालेद्रजी विहार
निरवद्य मूखवाणी ॥ लेसुध अनपांणी ॥ पोपवेशलिसटार॥ जयणाकरि लेवे विधसु पठवे
सुमतीया सुखकार ॥ गणी ५ मन वचन कायागुप्तिवेजमाया ॥ गुणछत्रीस उदार ॥ सु
घकीरिया धारि ज्ञान भंमारि करता परउपगार ॥ उपदेश सुणावै धर्मवतावेतारे भविनर
नार॥गणि०॥६॥वररुप दीपंता महाबलवंता वाणी अमृतधार ॥ अक्षर सुधबोलै सातुनय
खोलै मोलै नही लगार॥ विद्यानिध्यान युगपर धांन गुणगण रत्नाकार गणि ० ॥ ७ ॥
कूपकु नहीताणे सब मतजाणे अन्यमतकों परिहार ॥ शीतल शशिजिपे रवीजीमदिपे
साथेबहु अणगार॥ पाखंड हटावे जे नहीपावै पाले संजम पार गणि ० ॥ ८ ॥ अचार

ज नाणी गुणनिध खाणी आचारज सुखकार॥ सुमरण सुखकारि महिमा भारि अरिकरि
भय परिहार॥ दूखेजावे दूरे संकट चूरे पूरण रहे भंमार गणि ० ॥ ए ॥ आचारज स्वामी
अंतर जामी सीधपदके दातार॥गुणीवर गुणगावै पारनपावै रसनारअेहजार॥अलप गुण
गाया मनसमलाया तिलोक रिपकरे नमस्कार गणि ० ॥ १० ॥ संवतऊगणीसे वर्पजो
तीसे वेशाप पुनम शशीवार ॥ जोजपसीभावै सोद्दि सुपपावे ॥ छंद मरहृद्दा धार
प्राते उठ वंदे डुरित निकंदे रिद्धसिद्ध जयश्कार॥ इति आचार्य छंद समाप्तं ॥
॥ अथ उपाध्याय स्तवन छंदलिष्यतै॥संसार सागर डुख आगर जाणै नागरधिरये॥
तत्र कालत्यागै दूरभागे सुरसागे विरये ॥ मुनिराज पात्रो गृहै दिक्षा ग्यानशिक्षा आपये
॥चउथेपद उवझाय सुखकर किजैनित प्रतेजापए१आचारंगअंग सुयगडागे ठाणायंग सु
खकारए॥चउथो समवायंगजिको भगवइ गिनातासारए॥उपासग अतगड अंग अष्टम अ
नुत्रो ववाईथापए च ० ॥ २ ॥ प्रश्णव्याकर्ण भण्यापुरण अंगविपाकरसालए गुरुदेव
पासै अर्थधारव्या चउदे दूषणटालए॥ग्याराअंग संगोपंग सिख्याअतिमति चितचापए३
च ० उत्पात अनिविर्य तृतिय अस्तिण्यान सजाणीये ॥आत्मप्रवाद अरू कर्मपूर्व प्रत्या

ख्यांन वखांणीये ॥ विद्या अबंध प्रवादपूरव धारंततो नहीधापए॥ ४ ॥ च० प्रांणवि
साल कीरीया पूरव लोकविंड सारए चतुर्दश अंग पूर्व अंगग्यारा पाठ अर्थ
सूधारए ॥ अनेमान तजकहे वेणचारु नही कर्म कुमीया थापए च० ॥ ५ ॥ नवि
क जनजो प्रश्न पूछे नवपदारथ नावए ॥ सुक्ष्मबादर दर्व षट्नो पूछे कोई प्रस्तावए॥तबदे
तउत्तर सोधसुतर देजिनागम ठापए च ७ ६॥ ग्यांनदाता धर्म्मराता बोले निरवद्य वेणए॥
मिथ्यातषंडण जैन मंडण पालेजिनवर केणए॥गणीपदनै जोगसोहै नामकर्मअतापए॥ च
॥ ७॥महाव्रतपालै दोषटालै चालै इरजा सोधए॥कम्मरुपी शत्रुघातक परमसुराजोधए॥
मन वचन काया कर्णतीनु करतनहीसो पापए च० ॥ ८ ॥ उपाध्याय नकी कीरत यु
क्ती ग्यान गरजीवंतए॥मिथ्यात जावै बोध आवै थावै सिव पुर कंतए॥जैनमारग तरण अ
वर एसर्वकलापए० ॥ १०॥ जिननही जिनराज महाराज सरखा वैण शात सुख कारए
॥देश जिन पदमांहे बिचरै करतो परउपगारए॥मीथ्यात्व अंधा कर्मकंदा ग्यान असिकर
कापए च०॥१०॥नवप्राणी रौ संसो टारे बहुसुत्री विस्तारए॥उत्तराध्येन इग्यारमामेकह्यो
वरणवजहारए॥ तिलोकरिख कर जोडवदे सदापुन्य परतापए ॥ ११ ॥ इतिश्री ॥ ४ ॥

॥अथ साधू स्तोत्र छंद॥कामनी मोहमाहे एदेशी॥साधु निग्रंथनै वंदणा किजीए॥मांन
वकोभवसफलकरीजीए॥धनजै संत गुणवंत सोभागीया॥ भोग किंपाक साजाण केत्या
गीया॥१पचमहावृति सुमति पालता॥चार कषाय दावानलटालता॥भावसच्च मुनी वंडुमे
नितए॥करणसचै जोगसचे सुकितए॥२॥ धनजै क्रिम्या वैराग्यमे राचिया॥ द्रबठे नवप
दारथ जाचिया॥मन वचन काया समधारता॥ज्ञान दर्शण चरणा सुध सारता॥ ३ ॥ स
मभावेकरी वेदनी समता॥मरण आयाथकी जेकरे समत॥गुणसतावीस संजम जैधरै॥रा
ग अने द्वेषजे किंचित नहीकरे ॥ ४ ॥ तिनहि सलसो मूल निकंदिया॥ मोहणीकर्म्मसु
ते नही फंदीया॥नहीकरे विकथा धर्मसुंध्यावता॥शुक्ल ध्यान धर कर्म खपावता ५ दया
छ कायकि पालता जे मुनी॥कीयामे मदसो नहीकरे महागुणी॥ वाम्मुनि धर्म्मपालै
अखंमए॥सकल मिथ्यात को छंन्यो अफंमए ६ बावीसपरिसह जितीयाते सही॥ बावन
प्राण रक्षक विचरेमही॥बावन्न अन्नाचिरणटालता । चोरासी उपमा जुक्त वेचालता ७
एक श्चउथादि पठमासी करे॥ एकावली रत्नावली आदरे॥गुणरत्नसमंछर धारता॥प्रति
मादिक संलेषणा जुहारता ८ तप उणोदरीछे अतिमोटको॥भिक्षाचरी रसत्याग नहीछो

टको॥कायकिलेसने पडि संलीनता॥षट्तपधारके तन करे क्षिनता॥ए प्रायछितविनो।
वैयावच जेकरे॥सझाय ध्यांनविउ सगआदरे॥प्रब्लषट्तपसाधे अणगारए ॥ टाले सहि
जिके कर्मको खारए १० चंद्रज्यो सोमद्रष्टी करि दिपता ॥तप तेजे रवी कीरणते जीप
ता॥सागरजेम गंभिर कहिजीए॥कुंजरजेम धिरजतात्या जीए ११ लबधिपाया न्नली प्रग
ट तपस्या फली ॥खेलोसहीजल्लोसही प्रसिध प्रगटी न्नली ॥विपोसहिकेई अमोसाहिप
तिया ॥सच्चोसही कोठ बुधिकेइ मातिया १२ बिजबुधि वलिपदानुसारिया ॥ एकेक मु
निवरवैक्रीय धारिया॥चारणविज्जाहरामुनी राजीया ॥रिजु विपुलमतिसंसय न्नांजीया १३
एकेक मतिश्रुति अवधिधणी ॥मनपरयवकेवल सोन्ना घणी॥केवली दोयकोमी सुख कार
ए॥नवकोमी उतकष्ट विचारए १४ जघन्य दोय सहश्र कोमीजती॥सहश्र प्रतेक उतकष्ट
पदेसंजती ॥ आग्याजिणंदकी पालता जेसदा ॥ धनजे जन्मै सकल गेमैश्र
दा १५ डुरित टले मुनि न्नावसु जंपता॥तम दलितहोवे जिमरवि तपता॥कर्मशत्रु जिके
कर्त्त निकंदणा॥रिष तिलोक करे तसवंदणा १६ संवत उगणीसे तीस मझारए॥जेष्ठ
आदि उद्सुरज वारए॥कामनी मोहना छंदमे जांनीए॥सुखवेली जन पुष्कर मांनीए १७

कलसः ॥इम ऋद्वि वृद्वि समृसुद्धिकार जपोमुनिवर न्नाव ॥ धर्मदेव महंत प्रणमुं धुण्पा
सुगुरु प्रसायसु॥इमजाणी सेवो प्राणी सुसाधु मनखंतए॥तेलहे शीवपद रुप निश्चे निरन्ने
सीवसुख संतए १८॥ इतिश्री ॥ ॥ अथ परमेष्टीछंद लिष्पते ॥ छंदअर्द्ध नाराय मे-
छे॥ त्रिलोक्य संत श्रेष्टिकं नमामि परमेष्टीकं॥न्नजे न्नजे उदंगलं न्नवामि सदा मंगलं
१ सर्वांग अग सुंदरं मारंत मार डुर्द्दरं॥सहश्र अष्ट लंछनं समस्त सुधस्वछनं २ तिह्नजे
चतुष्टकं हणंत कर्म्मडुष्टकं॥तपश्चर्यासु पुष्टकं धरंत ध्यान अष्टकं ३ सुज्ञान पुर्णधारकं
अज्ञान न्नर्मवारकं॥सुअष्ट प्रतिहारकं न्नवीकजन्म तारिकं ४प्रमादवादिखंम्तिं। अनंत गु
णमंडितं॥असुन्नयोग दंम्ति नमामि परमपिम्तिं५सुन्नानु कोटी न्नास्करं न्नवाब्धी तारकंप
रंविकारद्रष्टिमोचनं नमामि संति ञोचनं६ सर्वत्र पाप खंम्ण सुजैनधर्म मंम्ण अनंतसुप
दायकं नमामि संघनायकं७ विशेष्ट गुण अष्टकं समस्त सत्रु निष्टकं॥अरुप रुप रासकंसदेव
स्थिर वासकं ८ अनंतसुख संस्थितं रहत सद्मनिर्म्मितं॥न्नवोघ सर्व वारिकं नमामि नि-
र्विकारकं ९ अष्टप्रति हारविराजितं छत्रीस गुण सोन्नीतं॥सुसंपदाष्टक माचकं नमामिनी
त्य वाचकं ॥ १० ॥ प्रमाणनेय संश्रुतं पचीस गुण संयुतं॥सुज्ञान अन्यदायणं नमामि

उपाध्यायणं ॥ ११ ॥ तजंत जक्क जालणं प्रमाण रक्क पालणं॥वर्जंत पापकारणं गर्जंत धम्मधारणं ॥ १२ ॥ तजंत काम क्रोधकं लजंत सो विरोधकं॥वित्राग आण सोधकं नमामि संत जोधकं ॥ १३ ॥ अज्ञानता प्रहारणं अखील सुखकारणं॥हणंत मोहफेणतं नमामीजीनवाणतं ॥ १४ ॥ मिथ्यांध्कार भंजनं ददासि ज्ञान अंजनं ॥प्रमाद डुख चुरणं नमामि सत्पतंगुणं॥१५॥तिलोकरिप संस्तवे सणौंसदा भवोभवे ॥रुपार्णवंमयाकरी सदेव दोहिरिसीरी ॥१६॥ कलशः जेजेश्री परमेष्टीने जेजेश्री जिनवेण जेजेश्री गुरूकीरहा दियो सुमारगजेण ॥ १७ ॥ इति ॥ ॥ ॥

अथ अरिहंत स्तोत्र छंदमोतिदामः ॥ सदा जगनायक सहायकहंस ॥ सुकाय यवा कलायक वंस॥ सुश्रेष्ठिविसेष्ट सुजेष्ट कहंत ॥अहो अरिहंत करो सुपसंत ॥ १ ॥ सुतात सुमात सुभ्रात सुजात ॥सुगात सुवात सुपात सुआत ॥ लभनसुअष्ट सहेश्र सकहंत अ० ॥ २ ॥ विसाल सुभाल सुबाल अबाल॥दयाल मयाल अजाल कृपाल ॥सुंमाल सुलाल भविक ईहंत ॥ अ० ॥ ३ ॥ अषंम्र अमंम्र अचंम्र अखंम्र ॥ अगंम्र अबंम्र असंम्र सुंसंम्र ॥ अफंम्र एठंम्र भये गुणवंत ॥ अ० ॥ महावीर गम्भीर ध्यानसुंस्थिर ॥ अ

चिर विचिर अमीर सुगीर अपीर सुपीर सुवोध कहंत ॥ अ० ॥ ॥ ४ ॥ अरिस वी
रीस सत्रुदल पीस ॥ जगीस मगीस गुणीसवरीस ॥ अखेह अछेह अनेह रहंत ॥ अ०
॥ ५ ॥ उथापक थाप तिर्थंकर आप॥जपत जिनंद वधत प्रताप ॥ अनंत गुणातम श्री
भगवंत ॥ अ० ॥ ६ ॥ अनेह विनेह अगेह सुगेह ॥ अमेह विमेह अदेह विदेह ॥
लेप अलेप सदादर संत ॥ अ०॥७॥कर्मनभर्मन गर्मउगाह॥अक्रोध अमान अमाय अ
दाह ॥नरोग असोग अभोग तरंत ॥ अ० ॥८॥ अग्यान अराध समाध प्रमाण॥विहार
र करंत भवी हितकाम ॥ भजंत सुरासुर स्वाम महंत ॥ अ० ॥ ९ कहंत सहि उपदे
श रसाल ॥ हटत मिथ्यातम बंधण जाल ॥ अराधक होणते रंतर अनंत ॥ अ० ॥
॥ १० ॥ रटंत कटंत दुरित समस्त ॥ लहलंत सुखामृत वछित वस्त ॥ उरधारक वृध
सहीतवंत अ० ॥ ११ ॥ त्रिजोग निवार वसे शिवलोक ॥ चर्णांबुज ॥ बोधकत रिख
तिलोक ॥ त्रिलोक सुदेव जपो जगकंत ॥ अहो भगवंत करो सुपसंत॥ १३ ॥ इति ॥
॥ अथ. श्री महाविरजीनो स्तवन छंद त्रीभंगी॥जीनसासणस्वामी अंतरजामी शिवगत
गामी सुखकारी ॥ जगमे जसवंता श्री भगवंता सुगण अनंता उपगारी ॥ सिद्धार्थ कुल

आया जुर्क सहायां सुन्नपलजाया गुणधारी ॥ धंन त्रसलानंदन कुलध्वज. स्पंदन
जिनचरननकी बलिहारी ॥ १ ॥ आसण कंपाया सुरपति आया सीसनमाया सुन्नावै
वैक्रीयपासें मेलङ्कतासे॥लेजिनतासे गिरआवै ॥तिहा प्रभूजीनो महोछव कीनो हितकर
फिरसुकत महतारी ध० ॥ २ ॥ जुगवंदणा करके निद्राहर्कें स्तवन उचरके घरजावै
रविउगाई भुधवताई दासीवधाई दरसावै ॥ नृपमोछवकीयो दांनजदीयो । हर्षतहीयो
निहारि ॥ ध० ॥ ३ ॥ योवनवरमाहि नारिव्याहित्रवसरपाही जोगगृहे । तपस्यातनतावै
समदमज्ञावै ध्यानसुध्यावै कष्टसहे ॥ प्रभू क्षीम्पासागरदिनउजागर । गुणरत्नागरं अ
धवारी ॥ ध० ॥ ४ ॥ सुध संजमपालै दोपन टालै॥ शिवमगचालै जगत्राता ॥ क्रोध मां
ननेमाया लोभ हठाया मोह नगाया अरिघाता शुक्ल मनधाया कर्मषपाया केवलपा
या जिणवारि ध० ॥ ५ ॥ सुणनाथ वडाई । मन अकम्हाई आय चलाई प्रभुपासै ॥
सविस्मै आतिपाया चित्तलजायागर्वगयाविमाशि ॥ प्रभुन्नर्म मिटाया जिन मगआया॥
संजम ठायातिणसारो ॥ ध० ॥ ६ ॥ परथम इंद्रभुति पुरवधर सुति ॥ त्रिपदी संपुति
फरमाया ॥ गुणधर पदलीनां । धर्म प्रविना ॥ सम दम चीनातनताया ॥ चुमालीसे

दारा गुणधर ग्यारा ॥ नप अणगारा वृतधारी ॥ ध० ॥ ७ ॥ वार तिथि थाप्पा । पाप उथाप्या ॥ सुवृत आया नर नारी ।केई स्वर्गसिधायाकेइ शिवपाया श्रीजीनराया हितकारी ॥ सेलेसीनावैप्रभुशिवपावै ॥ जगमे नावेअविकारी ध० ॥ ८ ॥ प्रभुअलख निरंजण ॥ नवदुख नंजण ॥ नवजनरंजन किरपाला ॥ जेसुध मतधावै ॥ दुखपुलावै ॥ सुख उपजावै प्रतिपाला ॥ कहेरिख तिलोक । निरतधोक ॥ दीजो शिवथोक नवपारी ॥ ध० ॥ ९ ॥ इति ॥ ॥ ॥ ॥

॥ अथ जिनवाणी स्तवनछंद एहीज । जेजे जीनराया सुनसुणाया । धर्मवताया हितकारी ॥ गणधरजी जेली सधी सुमेली नयर सकेली वीसतारी । रंचेद्वादश अंगे नगतरगे । ध्रुव अगे अतिधारी ॥ धन २ प्रभुवांणी । सनसुप दाणी नवजन प्राणी उरधारी ॥ १ ॥ इहानहि तिर्थंकर केवल गुणधर ॥ अवधि मुनीवर मनग्यानी ॥ जंघाविद्याचारि।अहारक सारी क्रोधजठारी जेज्ञानी नही गगन गमणी पद अनुसरणी वैकेकरकी परिहारी ध० ॥२॥ देवढिखमासमण तारण नवीयण ॥ उपमलेखण जिणकिनो॥इणहि आधारे पंचम आरे धर्मजधारे जीनजीनो ॥ अलंवन मोटो।सूत्रको उठो रंचनरवोटो हित

आया जुर्क सहायां सुन्नपलजाया गुणधारी ॥ धन त्रसलानंदन कुलध्वज स्पंदन
जिनचरननकी बलिहारी ॥ १ ॥ आसण कंपाया सुरपति आया सीसनमाया सुन्नावै
वैक्रीयपासें मेलक्कंतासै॥लेजिनतासे गिरआवै ॥तिहां प्रभूजीनो महोछव कीनो हितकर
फिरमुकत महतारी ध० ॥ २ ॥ जुगवंदणा करके निद्राहकें स्तवन उचरके घरजावै
रविलगाई भुधवताई दासीवधाई दरसावै ॥ नृपमोछवकीयो दांनजदीयो । हर्षतहीयो
निहारि ॥ ध० ॥ ३ ॥ योवनवरमाहि नारिंग्याहिअवसरपाही जोगगृहे । तपस्यातनतावै
समदमन्नावै ध्यानसुध्यावै कष्टसहै ॥ प्रभू क्षींम्पासागरदिनउजागर । गुणरत्नागर अ
धवारी ॥ ध० ॥ ४ ॥ सुध संजमपालै दोषन टालै ॥ शिवमगचालै जगत्राता ॥ क्रोध मां
ननेमाया लोन्न हणाया मोह न्नगाया अरिघाता शुक्ल मनधाया कर्मषपाया केवलपा
या जिणवारि ध० ॥ ५ ॥ सुणनाथ वडाई । मन अकमाई आय चलाई प्रभुपासै ॥
सविस्मै आतिपाया चित्तलजायागर्वगयाविमाशि ॥ प्रभुन्नर्म मिटाया जिन मगआया॥
संजम ठायातिणसारी ॥ ध० ॥ ६ ॥ परथम इंद्रभुति पुरवधर सुति ॥ त्रिपदी संपुति
फरमाया ॥ गुणधर पदलीनां । धर्म प्रविना ॥ सम दम न्नीनातनताया ॥ चुमालीसे

लारा गुणधर ग्यारा ॥ भय अणगारा वृतधारी ॥ ध० ॥ ७ ॥ वार तिथि थाप्या । पाप उथाप्या ॥ सुवृत आया नर नारी ।केई स्वर्गसिधायाकेइ शिवपाया श्रीजीनराया हितकारी ॥ सेलेसीभावैप्रभुशिवपावै ॥ जगमे भावेअविकारी ध० ॥ ८ ॥ प्रभुअलख निरंजण ॥ भवदुख भंजण ॥ भवजनरंजन किरपाला ॥ जेसुध मतधावै ॥ दुखपुलावै ॥ सुख उपजावै प्रतिपाला ॥ कहेरिख तिलोक । निरतथोक ॥ दीजो शिवथोक भवपारी ॥ ध० ॥ ९ ॥ इति ॥ ॥ ॥ ॥

॥ अथ जिनवाणी स्तवनछंद एहीज । जेजे जीनराया सुवसुणाया । धर्मबताया हितकारी ॥ गणधरजी जेली सधी सुमेली नयर सकेली वीस्तारी । रंचेद्वादश अंगे भगतरगे । ध्रुव अगे अतिधारी ॥ धन २ प्रभुवाणी । सवसुप दाणी भवजन प्राणी उरधारी ॥ १ ॥ इहानहि तिर्थंकर केवल गुणधर ॥ अवधि मुनीवर मनग्यानी ॥ जंघाविद्याचारि।अहारक सारी क्रोधजठारी जेज्ञानी नहीं गगन गमणी पद अनुसरणी वैक्रेकरकी परिहारी ध० ॥२॥ देवढिखमासमण तारण भवीयण ॥ उयमलेखण जिणकिनो॥इणहि आधारे पंचम आरे धर्मजधारे जीनजीनो ॥ अलंबन मोटो।सूत्रको उठो रंचनरवोटो हित

कारि ॥ ध० ॥ ३ ॥ सुध समगत तरवर अतिद्रढ परपख । बांणीं सुधाकर जलधारा ।
यादवधारण हिंस्यावारण शिवसुष कारण भवप्यारी ॥एबुध चढावै भर्मकटावे पापछुटा
वैसुभचारीध०॥४॥जोचिंताउचाटण मोहणि दाटण त्रिसल काटण कातरणी॥अरिकंद
कुदालि बंधणपाली॥सुरतरु माली सुतजरणी॥भवोदधिके भाईलाल कहाईपेवो जाई।
नरनारी ध० ५ ससंविपर्याय अह्वासाय त्रिऊंदणमाय होएनही ॥ त्रिदोश रहितं ति
गुण सहितं त्रिपदीरीतं भेदेसंसुधन्याय अराधी सीवबधुसाही ॥ कर्मउपाधी जीणवारी
ध०६ याविराधन कर्कैहयासेमरके उपजानकें डुषपाया॥वलीगर्भमेलटकया जगतमेंअट
क्या दुखजभयभारी॥जिणहित करजांणी श्रीजीनवांणी मनहरषांणी सुषणया॥समकित
सुधकरने मिथ्याहरनेभवजलतरनेशिवपाया॥तिलोकरिषजाचिसारदासाची मनतनराची
जयकारीध० ७कलस।जिनवाणी जयकारहे अनुभव रसकोसार॥नएप्रमांण विचारजो।प
क्षपात परिहार ध०९समदम उपसम भावसुं। जेसाधे नर नार ॥ तिलोकरिष तिणने
सदा। प्रणमे वारं वार ॥ १ ॥इति जिनस्तवनं॥ ॥ अथ २४ तिर्थंकराजिन स्तवनम् ॥
स्तोत्रछंद ॥ एहीज ॥ श्रीआद जिनंद समरसकंदं अजित जिणंदं भजप्रांणी ॥ संभव ज

गन्नाना शिवमग राता दोसुपसाता हित आणो ॥ अभिनंदण देवा सुमति सुसेवा करो-
नितमेवा रिपुघाता ॥चोविसि जीनराया मन तन काया प्रणमुं पाया दोसाता १ श्रीपद्म
सुपासं शसी गुण रासं कियो रिपुनाशं हितकारी श्रीसीतल स्वामी अंतरजामी सीव-
गतगामी उपगारी॥श्रैयाश दयाला पर्मकृपाला भव जन वाला जगदाता चो॰ २वासु
पुज्य सुकुंतं विमल अनंतं धर्म श्रीशंतं संतकरी ॥कुंथुं अरिनाथं तज जगसाथं मल्लि सु-
आथं संगधरी ॥ मुनीसुवृत नमी आतमा दमी उर्मतिवमी तपराता चो॰ ३ रिष्टनेम व
माई नारकुं न व्याई तोरण जाई बिटकाई । सगपणतांई दियावंचाई पारससाई सुपदाई
जय २ तुवृधमानं गुणनिधिखान त्रिजगभानं सुधआतं चो० ७ संसारका फंदा दूर-
निकदा धर्मका छंदा जिणलिना प्रभुकेवलपाया धर्मसुणाया भवसमजाया मुनिकिना
कहेरिद्ध तिलोकं सदातस धोकं दो सुखथोकं चितचाता चो॰ ॥ ५ ॥ इति ॥ ॥

॥ अथ भय भंजन अर्हंताजिन स्तवनं ॥ चोपई ॥ जेजे विश्वनाथ जसवंत । प्रणमुं
श्रीअरिहंत महंत ॥ कुसल वेल जल पुष्करधार । उरत तिमर भानु संसार १ चिन्तावेल
चिंतामण पास । कल्पवृक्ष जिम पुरण आस।आरत हरण करण सुखसंत चरण सरण

पा जंगम थावर पधीयो कूप॥छेदनभेदन कष्ट महंत ॥जनम मरण डुख सह्या अनंत २ ३
नर भव नीचजात झुल किन॥डुषिदालिद्री भयो अतिदिन ॥जग२आगे जोभ्या हाथ
पुरण नही मिलीयो जल भात २ ४ पापउदे नाटकीयो देव।भयोमे करी सुरनी सेव प
छम्या नाटिक तोडीतान करम उदेमे भयो हेरान २५ चउगत भ्रमण माहा डुखलीन तु
मसरणाविन भव२ दीन॥कीधामे अपराध अपार ॥ भरीयोऊं अवगुण भंमार२६ खो-
यदियोमे तिरथ काल॥मोहणी कर्म भर्म जंजाल ॥सर्प अधारे जेवभी जेम।सीपखंमरुपो
ग्रहे तेम२७ मृग मरीचिका जांणत तोय॥प्यास बूजावण हिरणासोय॥धावत२ग्रंमेप्रांण
तेसेमे भ्रमियोअन्नाण२८जेसे जूरत प्रबलताहोय॥ असलचित्तनही व्यापेसोय।तेसेकर्म
उदेगत जीव।धर्मसचित नही आवत इव२९ जब तन ज्वरको मिटत विकार।तब सो
इवंछा करत अहार ॥असुभ कर्म जबहोत पयाण ।तब तुम सरण ग्रहो भवियाण ३०
जाणीमे आगम अनुसार किंचित तुममारगकी कार।ग्यान दर्शण पुरण चारित्र ।पलेन
ही मुज सुद्ध पवित्र३१पलयक चरण सरणकी आस॥धारीयमे॥अबहिये विमास। आ
स निरास करण नहिरीस। तुमसु लागी पुरण प्रीत ३ २ तुमसम और न कोइ किरपाल

अधम उधार दिन दयाल तुम विन कोन सो होतस हाये तुमविन कोन भविक सुषदाये
३३ गज मदवत माहा विकराल। सनमुष आवेतिन कुंभाल। मारणआवे भरतो फाल तु
म जपता हरिहोवे सीह सीयाल ३४ कलपत कालसमीये अदंभाज ते दावानल धुमू प
रचंरू ॥ एसेकष्ट भजे जनकोए तुम किरत जल सीतल सोय ३५ स्पामरंग इंग लाल क-
राल। क्रोध उधित ध्यावे विकराल ॥ नाम दमण तुम नाम विशाल। रटता विघन करेनही
व्याल ३६ गजलवहे वाय कुवाय उठे हिलोला वाहण कंपाय ॥ यसी विपत ध्यान कर-
तार ॥ सो सहिपावे सागर पार ३७ भूपसूं भूपकरै संग्राम। रक्तका खालवहै तिणठांम ॥ य-
से सकट ध्यावै आपालहेरणविजै लट संताप ३८ अथ गजलवहै वाय कुवाय। उठै हि
लोल वाहण कंपाय ॥ यसी विपत ध्यांन करतार। सो सहिपावै सागर पार ३८ सास खा-
सज्वरगुंवड दाहा कुष्ट भगंदर रोग अगाह ॥ जो तुम प्रणमे भाव निसंक। ततू छिण प्रल-
यहोत आतंक ३९ पावन बेमी हथकडी हाथ रोके भापसी रूदे भात। यसी आपदा स
मरे आप। वंधण लुट टले संताप ४० तुम रणमोचन गरिब निवाज। बंधण छोमे श्री जि-
नराज तुम त्रिहूंलोकमे तिलक समान तुमनामे दिन २ कल्यान ४१ ॐ ह्रीं श्री नमो २

अरिहंत ऋद्धि सिद्धि सुख संत ॥ दिजे। दिन दयानिद्धिमोय। भव २ सरणो वंदू तोय
४ हय गय रथ दल प्रबलता पूर । वेरि दूसमण नाशा दूर पूत शपूत कलत्र गुणवंत।
मिले संयोग रहे सुजंत ४३ दुसमण ओर नहीं लागे दाव। वेरमिटी होय सजन भाव
जीहा जावे तिहा आदरहोय॥ मोहणीमंत्र नाम तुम जोय ४४ जरू मुरख नरजे मतही
णापिणतुम शरणेमे रहेजिणा बुध प्रबलसो पंमित थाय जगमे पूजाहोत सवाय ४५
आनको कागद मशी सब निर।जेषणि लेवे दसुरसणगीर ॥ जोलिखे सरस्वति गुण वि-
स्तार। सागर कोडीले नही पार ४६ अलप मतिज्ञ परमादि जीवाकेशोतुम गुण कहुं अ
तिव तुमवालेश्वर जीव प्रांणाराजराजेश्वर गुणनिध खांण ४७ तिलोकरिख करे अरदा-
शा।अंतर जामी तुमगुण राश ॥ आपके पास न मांगुलेस मोय वतावो निज प्रदेस४८
यतिक अरजी लीजो मांन॥कबहुंन भुलु तुम आहसान।निठ १ जांण्यां तुमदेव।भव२
दिजो थांहरीसेव ४९ संवत उगणीसे वर्षबतीश मान । जेष्ट कृष्ण तिथ डुज प्रमान
बारशाने सिद्धजोग विचार। भय भंजन स्तवकियो उचार ५० सेहेर सेहजापुर माल

वदेश। सुभसाता चव तिथंहमेश॥जणगुणसुण जे नर नार ॥तस घर वध मंगल चार॥ ५१ ॥ इतिश्री भय भंजन स्तोत्र समाप्त ॥ ॥ ॥ ॥

॥ अथ परमेष्टी परमानंद स्तवन ॥ दुहा ॥ ॐनमो अरिहंताणं इम पाचु पदमाय ठं ह्रँा ह्रीँ ह्रूँ ह्रँा स्वाहा जपता न्हि श्रीथायए १०८ १ अ० सि० आ० उ० सा० ठं दखी० प्रणमुं सरस्वति होय वरसति।चित झलसे अतिगुण थुणवा ॥४सुधभावे धासो सुषपावे। एकचित चावै जसगुणवा जे जे परमेष्ठी जगमे श्रेष्टी। देपदजेष्टी जगधारं त्रिजुक मझारं नामउदार जगसुपकार नवकारं १ येटेक० बारेगुणवंता श्रीअरिहंता लोगमहंता गुणगहेरा ॥घणघातिकर्म मिथ्याभर्म त्यागअधर्म्म विपलहेरा॥ श्रुकल मन ध्याया केवजपाया इदरआया तिणवारं त्रि० २ वर प्रपदा बारे हर्ष अपारै सुण अवधा रे जीनवाणी॥अमृतसुप्पारी जगहित कारी सुर नर नारी पेचाणी ॥केइसंजमधारै केइव्रतधारै कर्मविवारे शिवगामी त्रि० ३ द्रुतिय पदध्यावो सिद्ध गुण गावो फिर नहीआवै जहाजाई। जे अलपनिरजण भविमनरंजण कर्मके भंजण सीवसाई ॥ पुदगलदा फदा दुर निकदा परमानंदा अविकारं त्रि४ अष्टगुणके धारे जक्तमिहारे कालनमारे उनताई।

जहांसुपअनंता केवलवंता गुणउचरंता ढेनाई॥नीजवासवताई दोमुझता२ तुमसाना२
दातारं त्रि०५गणिवर पदतीजै नितनमीजै सेवाकीजै हर्षधरि।पंचमाहा वृतपालैदोषणटा
लैगजाजिममालै सुरहरी पाचुइ वसकरतेपाचउचरतेपाचुइहरते डुखकारी त्रि० ६सितल
जिमचंदाअचल गिरंदा गछपतिइंदासिरदारं सागर जिमगहेरा ग्यान लहेरामिथ्याअंधेरा
परिहारं।संपदावजपावै न्याव वहापालै पलावेआचारं त्रि०७गुरु सेवासाधीवीज अराधी
चितसमाधि ग्यानज्ञणै॥बारे अंगवांणी पेटी समांणी पुरब नाणी संसेहणे निरवद्य सत
ज्ञाषे सासतर साखे गुण अभिज्ञाषे निजसारं त्रि० ८ उवझाया सामी अंतर जांमी
सिवगत गांमी हितकारी। सिखण नै आवे जोग सीखावै न्याए बतलावै उपगारी॥डर
गंतमाहि पमतो कागव गमतो चितकरेचमतो तिणवारं त्रि० ९ कंचुक अहीत्यागै
डुरेज्ञागै तिमवैरागै पापहरै।जूठापर ढंदा मोहणी फंदा प्रभूका वंदा जोगधरै सब माल
पजाना त्याग न कीना माहावृतलीना अणगारंत्रि१०पाले शुधंकरणी ज्ञवजलतरणी
आपद हरणी इष्टरवै।बोले शतवाणी जनका प्रांणीकीडीहस्ती समलखै शिव मारग ध्यावै
पापहठावै धर्मवमावै सतसारं त्रि ११ एप्रेमप्रज्ञावै विनय हगावै अरि हरीजावे डुरसही

जे त पने जारी डुखविमारी सोग सवारी आतनही ग्रहपीडा नागे इष्टन लागे सत्रुनजा
गै लिगारं त्रि० १२ एह महंतरनिको तारकजीको त्री जगटीको सुखवाता ।एमं त्रकरा
री मेहेमानारी लहे नरनारी सुपसाता सरव जीवनवेली देधनठेली भव २ केली एसार
त्रि० १३ पद्मासणवाली रंगनीहाली आरत टाली ध्यानधरै तिलोकरिख पयंपे नावसु-
ध जपै रिधसिद्ध सपे जेहवरे एछंद त्रिनगी गावे उमंगी नव २ संगी जयकारं ॥ वि०
१४ इति ५ ११८ देव गुण स्तवन छंद संपूर्ण ॥ ॥
एर्द० ॥ अथ समगत छतिशी लिखते॥डुहा॥समगत२ सबकहे ॥ समगत डुरकार॥
जाघट समगत पाइये ॥ तेविरला शंसार ॥ १ ॥ नाटक चेटक ख्यालमे ॥ प्रभु नहीमा
ने धर्म ॥ त्यागनमे संवरकह्यो ॥ एजिन आगम मर्म ॥ २ ॥ ढाल रे नाई सेवो साधस
याणा एदेशी ॥ समगतविन नमीयो चउगतमे ॥ डुखपायो महानारी ॥ अपुरव करण
आयाविन नविके ॥ समगत रहेसदा न्यारीरे ॥ १रेनाई समगत रतनहे नारी राखोज
तन सुधरे समदम उपसम रापेतीणने सीव रमणीत्यारीरे ॥२॥ आउपोवरजी सात करम
थीतगीणले नर नारी ॥एक कोमाकोमी सागर बाकी ॥ अतरमोर्तहिणतारीरे ।ना० ३ ॥

अनंताणु बंधिकी चोकरी जाणो ॥ मिथ्यात मोहणी जुहारी॥ समगत मोहणी मिश्र
मोहणी ॥ उपसमे सातुजे वारीरे ज्ञा० ॥ ४ ॥ उपसम समगत आवे जिवारे ॥ खपायां
थी क्षायक धारी ॥ काइक उपसमे काइक क्षयथावे ॥ क्षयोपसम नाम विचारीरे॥ज्ञा०
॥ ५ परकृति सासवा दानवेदक ॥ पांचुय नाम विचारी ॥ उपसम सासवा दान उतकृष्टी
फरसे ज व पंच वारीरे ॥ ज्ञा ॥ ६ ॥ खयोपसम असंख्याति वारज आवे ॥ वेदकथे
कहीवारी ॥ क्षयकआवे न जावे कदाफिर ॥ सदरकाल रहेलारीरे ।ज्ञा ॥ ० ॥७॥ पाछ
ली चारमेकी एक फरसे॥अर्द्धपुदगलके मझारी॥पावे अजर अमर सुप निश्चल समगत
कीबलीहारी॥ ज्ञा०॥८॥ निश्चेमे समगत केवली जाणे ॥ छद्मस्थतो विवहारी ॥ सतसठ
बोल अमोल अराधो ॥ तेसुणजो विसतारीरे ज्ञा० ॥ ९॥ परथम चार सरदणा सरदो
मोक्ष मारग ततसारी ॥ एहनो परचोकरो निसवासर ॥ ज्ञवभव मेसुलकारीरे ज्ञा० ॥
॥ १० ॥ दुजी सरदहणा मोक्ष साधकनी सेवकरे हितधारी॥ समगत भृष्टकी संगत व
रजो ॥ कुतीर्थि परहारीरे ज्ञा० ११ ॥ तिन लिंग वलि समगत केरा ॥ सुणजो आल
सटारी तरूण पुरष जीमज्ञोगमे राचे॥ तिम प्रभुवाणी विचारीरे ॥ ज्ञा ॥ १२ ॥ भूखो

क्षीर भोजनकरे आदर ॥ तिम जिनवाणी सुप्यारी ॥ भणवाकी इच्छामिले तसदाता ।
हरपेजिन वचन सुभारीरे ।भा०॥ १३ ॥ दशको विनयकरे मनरंगे ॥ अरिहंत सिद्ध भग
वानो ॥ आचारज उवझाय थिवरनो ॥ गणसंघ सातमो जानोरे ॥ भा० ॥ १४ ॥ साध
रमी सुद्ध क्रिया धारकनो वडमान भक्ति करीजे ॥ तिन सुद्धता करो भव प्राणी भव
सागरसु तरीजेरे भा ॥ १५ ॥ मन सुद्धता श्रीजिनध्यावो ॥ वचनथकी गुण गावो नम
स्कार सोकरोकाया सुं ॥ अवरदेव मत चावोरे । भा ॥ १६ ॥ पंच लक्षणथी ओळख
थावे॥सत्रु मित्र समभावे ॥ संसारमे उदास रहेमन ॥ धायजो बाल रमावेरे भा० ॥१७
आरंभ परीग्रह त्यागणो वछे ॥ अनुकंपाचितमाई ॥ सूक्षमभाव सुणी नहीमुरझे ॥ दी
मता२ं आणेसवाईरे भा ० ॥ १८ ॥ पंचअतिचार टाले समगतना ॥ प्रभूदाख्यो
सतमाने ॥ पाषंमीकी महीमा देषविशेषी ॥ वंछे नही कलुजानेरे भा ॥ १९ ॥ कर
णीफल सदेह न आणे ॥ परपाषंमी नही परससे ॥ जावेनही तिणपासे चलाई ॥ संगे
सुगुण विद्धंसेरे । भाः ॥ २० ॥ पंच भूषण पेटी धिरजवंतो ॥ दिपावे मारग भारी ॥
भक्तिकरे वली चतुर विचक्षण ॥ श्रीसंघ सेवे उत्सारीरे । भा ॥ २१॥ भा ॥ २२ ॥ आ

ठ प्रभाविकता गुणतामे ॥ सर्व सिद्धांतसो जांणे ॥ धर्मकथा केवे विसतारि ॥ न्यायसु
वादज ठाणेरे ॥ भा • २३ ॥ तिनकाल सरअवसर जाणे तपकरे डुकरकारी ॥ अने
कविद्याना जाणसो होवे ॥ कवितामे बुधभारीरे भा० ॥ २४ ॥ ठ आगार विचारसु
राषे ॥ दान अन्यतिर्थिने देवे राजा बलवंत जातना भयथी ॥ मावितस्वय मुख केवेरे
भा।० ॥ ॥ २५ ॥ देवता अटवी काल डुकाले ॥ देवेविण धर्म नमाने ॥ जयणा खंदक
रे धरमीसुं ॥ बोलेपेली प्रेम आणेरे भाः । २६ ॥ अधिक मिठाससुं प्रिति जणावे ॥
प्रतिलाभे बहुमाने नमस्कारसो करे जथातथ ॥ करत बमाइ सयानेरे । भाः ॥ २७॥
षटथानक बलीधारे हियामे धरमरुप तरुकेरो ॥ समगत मूल कह्यो जगदीसे सबर वृ
क्षरहे गहेरोरे । भाः ॥ २८ ॥ धरमसो नगर समगत गढसम ॥ धर्म आभूषण जाणो ॥
समदरसण पेटी जिमकहीए ॥ राषे अवेरीयनाणो रे । भाः ॥ २९ ॥ धरमसो मंदर
नीमम्मो समगत इणविनां ठेरेनाई ॥ धरमपदारथ समगत हाटमे ॥ जतनसुं रहे ति-
णमाईरे । भाः ३ • ॥ धरमसो भोजन थालीजुं समगत ॥ राषो सुघरू सदाई ॥ भावना
षट्वलीभे समगतनी भव २ मे सुषदाइरे ॥भाः ॥ ३१॥ चेतवना लक्षण जीवको परथमे

सासतोयहीज जुगते ॥ करमको करता एहीज चेतन ॥ पुंन पाप यही भुगते । न्ना: ॥ ३२ ॥ भवजीव कर्म खपावेतो मुगती नहीतो न्नमेगतचारी ॥ ग्यान दरसण चारितरकरणी ॥ यहीउपाय विचारि ॥ न्ना ॰ ॥ ३३ ॥ सतसठवोल विवहार समगतना ॥ धारेहीयाने तोलीरे न्नवघटेसो समगतसेंव्या ॥ आगममे खोलीरे । न्ना॰ ॥ ३४ ॥ अंकविना जिम पुंन अवरथा ॥ जेसो लिपण गरो तप जप किरिया लेपेन आवे ॥ परालकुटे कोइ न्नारोरे । न्ना॰ ३५ ॥ जीम सुइ दोरासहीतज होवे ॥ सोतो नहीए पोवावे ॥ तिम समगतफरसेयक विरिया निश्चेइ मोक्ष सिद्धावेरे ॥ न्ना॰ ॥ ३६ ॥ देव अदोसी गुरु नीरलोन्नी । धर्मदयामे सदाई ॥ एसुध सरधा परम पदारथ ॥ रापोचित द्रढताइरे ॥ न्ना ॥ ३६ ॥ समगतविन कोइ मुगती न पोचे ॥ वर्तमान नहीजावे॥ नही जासी वली आवते काले ॥ आगममे दरसावेरे ॥ न्ना॰ ॥ ३७ ॥ संवत उगणीसे गतिशसाले ॥ किनीयह गतिसी ॥ तिलोकरिखकहे समगतधारो ॥ चमति रहे धर्मविसीरे ॥ न्ना ॥ ३८ ॥ दुहा ॥ ईणविध करणी साचवे ॥ ते उतरे न्नवपार इम जाणी समगतगहो ॥ मुक्तिमारग चार ॥ इति ॥ १ ॥ समगत ॥ ३६ ॥ सी संपूर्णम् ॥ ॥

॥ अथ ॥ ४ ॥ गत आयुबंधण सज्झाय ॥ गोतम पुछे भगवंत सुं ॥ जीवभमे गत
चारोजी ॥ किणकरणीथकी उपजे ॥ भेदकहो सुविचारोजी ॥ विरकहे सुंणो गोयमा ॥
महा आरंभमे राजीजी ॥ महातृसना निसदीनरहे ॥ पचेंद्री घातकरे गाजीजी । वि ॥
सुगनही मद मांसनी ॥एचारू बोलज पावेजी ॥ तेमरी उपजे नरकमे ॥ दुष अनंत
सिदावेजीवि० ॥ ३ ॥ कपटकरी पारछेतरे ॥ वलीसेवेगुढमायाजी पोटातोला मापाकरे ॥
बोले वचन घणामायाजीः वीः ॥ ४ ॥ अहंकारी सीरसेहरो ॥रंचनही नरनाईजी ॥ ए-
चारूबोल सेवनकरी मरि तिर्यंचमे जाइजी ॥ वीः ॥ ५ ॥ भद्रीक भाव प्रकरती
मे ॥ होवे घणो सुवनी तोजी ॥ दयाभाव दिलमेघणो राखे सबसे हेतोजी ॥ वीः ॥ ६॥
नही अभिमान हीयेकछु ॥ एचारी गुणजामेजी ॥ सोप्राणी आउक्षयकरी ॥ मानव-
नी गतीपामेजी ॥ ७ सरागी संजमधरे ॥ श्रावकना वृत बारोजी कष्टकरे अग्यानमे ॥
प्रभू आग्याथी बारोजी ॥ वीः ॥ ८ ॥ परवसभूष तृपासहे ॥ अकाम निरजरा जाणोजी
एचारूबोल प्रतापथी ॥ पावेदेव विमानोजी वीः ॥ ए ॥ जीव अजीव जाणे ग्यानसू॥
समगत द्रढताधारी जी ॥ आश्रवरोके चारित्रथी ॥ संवर भाव ऊस्यारीजी वीः ॥१०

तपसुंकरम डराकरे ॥ पावे केवल नाणोजी ॥ भाव अजोगी वरतीया ॥ अजरअमर नि
रवाणोजी ॥ वीः ॥ ११ ॥ जेहलु करमीप्राणीया ॥ आदरसी सुद्धकिरियाजी तिलोक
रिपकहे धारजो ॥ ते भवजल सुं तरीयाजी ॥ वी ॥ १२ ॥ इति संपूर्णम् ॥

॥ श्रावकछतीशीप्रारभ्भ ॥ सिद्धचक्रजिनपूजोरेभवीका ॥ एदेशी ॥ देव निरंजण के
वलधारी ॥ वरजितदोप अठारा ॥ चोतिश अतिश पेतिशवाणी भवजल तारण हारोरे
भवीका श्रीजिनआग्या आराधो शिवपुर मारग साधोरे भ० ॥ १ ॥ गुरुगुण सागर पर्म
उजागर सतावीश गुणछाजे ॥धर्म देयकी सेवन करता ॥ शकल भरम भयभाजेरे। भ० २
धर्मजिन आग्या निरवद्य करणी तरणी भव जल पारी॥इणसम अवर नहीसुपदाता तरी
या अनंत शंशारीरे भ० ॥ ३ देव गुरु धर्म एतिज्ञ ततव निश्चल भावे सेवीजे ॥ अवर
मत परचित नदीजे नर भवसफल करिजेरे भ० ॥ ४ ॥ दशेरो दिवाली रापीने होली ॥
मिथ्यापर्व न कीजे ॥ धर्मपर्वसो सर्व मनावो ॥ सुकृत लावोलीजेरे ॥ भ० ॥ ५ ॥ देव
गुरू धर्म सासतरचारूं ॥ रत्न परप करोभाई जईकगेने रापो हियामे ॥ भवश्मे सुप
दाइरे भ० ॥ ६ ॥ निज आतमसम जीव जगतका जाणीदया घटआणे ॥ सचेतमाटी

सुअंगनही घोजे ॥ निरथक पाप घटाणोरे । न० ॥ ७ ॥ अणगण्यांजलमे नहीन्हाणो
पिणोपण वरजीजेरे मांसकोभागो घातपंचेंद्री निरथंक नहीमोलीजेरे । न०॥८॥ घृतसू
महेगो जतनेथेलेपो॥पूंजेसो आग नदीजे॥उघाम्हो दिपक मतिमेलो जएणासे जतनकरी
जेरे न०॥ए॥पाणीसु लकमी नवूजाणी ऊटक फटकनहीकरिए॥छतेमारगहरीकायनचा
पो॥निरथकरंचन फीरीयेरे न०॥१०॥रात्रीस्नान अरूभोजन वरजो॥रात्रे लीपणोटालो॥सुली
यो धानतावभे नहीदिजे॥सुलियो लकरू मतबालोरे न०॥११॥आटोवेसण दाल अरू भा
जी॥मतरांधो विनाजोई॥मोटो फल अथवा बक्रबीजो छेदोमति जनकोईरे न०॥१२॥ दूध
दही घी तेलको वासण॥उघाम्हो मतमेलो॥जूं मांकण तावभेमतनाखो॥चोपभ जूवा मत खे
लोरे न० ॥१३ ॥ निरदेइ पणो गाढे प्रहारे ॥ मतमारो परप्राणी ॥ गाम्होवंधण वजन य
णेरो लाधीमति दया आणीरे॥ १४ ॥ आंधो कांणो बेरो पागुलो ॥ गेलो गुंगो नरजेह
नेरे ॥ कठीण वचन वली हासीनकरी ए ॥ हणनलागेजिमतहनेरे ॥न० १५॥ होयकलेश
तो उपति खमावो ॥ पपी पभीकमणामांही हद चोमासी जावा नदिजे श्रावक वृत्त की
जो चाहीरे न० ॥ १६ ॥ राजदंभे वली लोकमे भभे तहवो ऊठ निवारो विनावीचारे

वात न कीजे ॥ मर्म मोसो मत उचारोरे भ० ॥ १७ ॥ विसवास घातकरो मत किणसु
थापण मत रापो पराई लाचलेइ झूटी साप नभरीए परानिंदा दूपदाइरे भ० ॥ १८ ॥ रा
गद्वेष वस आल न दीजे ॥ परअवगुण मतगावे पापको कारजहोय कदापि ॥ मनमे म
ति पोमावोरे ।भ० ॥ १९ ॥ पोटोलेप लिखोमतिकोई ॥ मोटकीचोरी नकीजे ॥ कूडा
तोला मापा तेवरजे चोरको साजन दीजेरे भ० ॥ २० ॥ कुंवारी विधवा परनारी ॥ वेश्या
गमण तजदीजे ॥ तीव्रअभिलापा नकिजे भोगकी सीलवरत रसपीजेरे ॥ भ० ॥ २१ ॥
परधनकी अभिलाखा नकरीए निजधन समतारापो अधिक दर्वजो वधे त्यागसुं ॥ पा
पमाही मतनाखोरे भ० २२ ॥ दिशमरजादकरी तिणउपर ॥ अधिक मतिजावो आ
गे पंचआश्रवको त्याग नकरीये जावता त्याग नभागेरे भ० ॥ २३ ॥ अभरव्य अहा
रछोभो तूछ भोजन करमादान तजदिजे ॥ अनर्थादंड कुचेष्टा कामकी ॥ हिंस्या उपदेश
नदीजेरे भ० ॥ २४ घटी उपलमुसल सरोता पावडाओर कूदाली । छुरिकटारी सस्त्रगा
दिक ससतर संग्रह करणदो टालीरे ॥ भ० २५ ॥ इगवस्तको सोच न किजे ॥ दूषउ
पजे कोईआई ॥ निजकर्माको दोपवतावो ॥ धिरज धरो मनमाइरे भ० ॥ २६ ॥ धर्म

काममें होवो आगवानी ॥ पापमे मूंन करिजे भोजन वसतर हाट हवेली सोन्ना न क
हीजेरे भ० ॥ २७ ॥ वृक्षने मनषकी ओपमावो दिनी ॥ सुत्र आचारंगमाई भ० ॥महा
महादोषणइ एमाही जाणके काम कटावणोनांइरे भ० ॥ २८ ॥ तिनवषत सम भाव
राषीने सामायक नितकीजे ॥ विकथा वातकरो मतसुगणा ॥ दोषण दूर हरीजेरे भ० ॥
॥ २९ ॥ दोष अठारा टालो पोसामे ॥ मुन जिम भाव धरीजे ॥ निरदोषण प्रासुक
अहारसो ॥ भाव सुसाधूपमी लाभीजेरे भ० ॥ ३० ॥ चवदानेमनितप्रतेंचितारो तिन
मनोरथ किजे ॥ दूषीयो देश दयादिललावे सकतिजिम साजसोदिजेरे भ० ॥ ३१ ॥
ग्यान ध्यान तपको उद्यम सदाकरो भावधरीने ॥ क्रोध कपट छल छिद्र नकीजे वरजे
मूगत श्रीनेरे भ० ॥ ३१ ॥ नवततव पहेचाण करीजे विनएभगत सुधसाधो ॥ चिंता
मणी सम नर भवदूर्लभ समगत रत्न आराधोरे भ० ॥ ३२ ॥ तन धनजोवन सर्व
अथीरहे ॥ सजनसनेही परवारो ॥ पूंनउदे सबजोगजो पायो ॥ पापउदे नहीथारोरे
भ० ॥ ३३ ॥ दूष आव्या सरणागत नाई भटके जीव संसारो ॥ तारकहे जैन धर्म जग
तमे इमजाणी उरधारोरे भ०॥ ३४ ॥ अनंत जीव तरीया और तरसी ॥ वरसीसिवसु

प प्राणी तिलोकरिख कहे समजो भवीका ॥ साचि श्रीजिनवाणीरे भ० ॥ ३५ ॥ समत भगणीसे साल शेतिशे॥ मासुद्ध दशमी जाणी ॥ वारभोम करमालापेठमे श्रावकछतिशी वपाणीरे भ० ॥ ३७ ॥ इति श्रावक ३६ संपूर्णा ॥ १४२ ॥

॥ ई० ॥ ॐनम ॥ सिद्धं ॥ अथ साधुवंदणा ॥ लिप्यते ॥ समरु श्री अरीहंत सीधसाध धर्म प्रभुआग्या मझारजी ॥ चारुही मगल उतमसर्णा ॥ होजोसदा सुपकारजी ॥ प्रणमुं ते गुणवंत त्रीकाले प्र ॥ १ ॥ त्रीकर्ण मनवच कायजी ॥ रिद्ध सिद्ध सुपसंपतसाता नीतरहीजो सवायजी ॥ प्र ॥ २ ॥ ऋषभ अजीत संभव अभीनंदण सुमत पदम सुपासजी ॥ चंद्राप्रभुजीनेसवधि जीनेसर ॥ सीतलदो सीववासजी ॥ प्र ॥ ३ ॥ श्रीश्रेयास वासपुज वंड । वीमल अनंत धमदेवजि । संत कुथु अरो मलीमनीसुवृत ॥ नमीनेमकरु सेवजी ॥ प्र॥ ४॥ पारसअने वृधमान जीनेस्वर । एचोवीस जीनरायजि ॥ कर्म षपाइकेवलपाया ॥ मुक्त वीराज्याजायजी ॥ प्र ॥ ५॥ अष्टगुणातम पनराभेदे अजर अमर अवीकारजी ॥ अलप नीरंजण भवदुष भंजण ॥ समरंता सुपकारजी ॥ प्र ॥ ६ ॥ अष्टसंपदा धारक तारक वारकमीथ्याभरमजी गुण छतीसतीस चउतीरथ ॥ दीपावे

जैनधर्मजी ॥ प्र ॥७॥ इंद्रभुती अगनभुतीस्वामी । वायभुती गुणवंतजी । वक्तभुती सु-
धर्मासांमी ॥ मंम्नीपुत्र जसवंतजी ॥ प्र ॥ ८ ॥ मोरी पुत्र अकंपीअचलजी । मेतारज
जसधारजी ॥ इग्यारमा परन्नासजीवंड ॥ चंमालीससे परवारजी ॥ प्र ॥ ए ॥ चोवीस-
जीनना गणधरवंड ॥ चवदे से बावन जाणजी ॥ चउदापूर्व धारकसारा पङतासङ नी
रवांणजी ॥ प्र ॥ १० ॥ रीपन्नसेणादीक सहश्र चौरासी मुनीवर गुणना न्नंमारजी ॥ धी
र वीर गंन्नीर गुणातम जपता जे जे कारजी ॥प्र॥ ११॥ अरीसा न्नवनमे श्रीन्नरतेश्वर ॥
पायाकेवलग्यानजी ॥ आठकर्म आठपायोधर इणवीध ॥ पायापद नीरवाणजी ॥ प्र ॥
१२ ॥ ऊक्ऊ करतां पुत्र अठाणु । श्रीआदेश्वर स्वामजी समऊाईदीया संजम तेह-
ने ॥ पङंता तेसावधानजी ॥ प्र ॥ १३ ॥ सागर मघवाषटषंम त्यागी ॥ चक्री संनत
कुमारजी ॥ रुपदेषवा सुर ब्लकीधो लीधो संजमन्नारजी ॥ प्र ॥ १४ ॥ पदमरापेहेण
जयनामेरीप । चक्रीदसरीध ठेम्नजी ॥ सुर वीर महाधार गुणागर । कर्म बंधणदीया तो
म्नजी ॥ प्र ॥ १५ ॥ अचलवीजे न्नदररीप वंड ॥ सुन्नदरीपरायजी ॥ सुदरसण आनं
दन नंदन रामरिपीगयासविमायजी ॥प्र॥१६॥बलन्नदर एही पदवीधारक । अश्रबङर नी

वारजी ॥ आगम सापए समूचे दाप्या । बली कडुं अंगमझारजी ॥ प्र ॥ १७ ॥ आ
ड्कुमार माहाबुधवंता । जीत्यासो पंचवादेजी ॥ संजमपाली सीवपदपाया ॥ जीनआ
णा मरजादजी ॥ १८ उदक पेढाल पुतरकेरीचरचा । गोतमसामी सुजाणजी । कु-
मार पुतीया नामलेइने सुत्रसुयगमागके मायजी ॥ प्र ॥ १९ ॥ दसदसा गणायंगमेचा
ल्या । नामकला रीपजाणजी । तेसङ्ग मुगतगामी गुणधारी ॥ पालक श्रीजीनआण-
जी ॥ २० ॥ सुत्र समवायगमाही प्रकास्या ॥ नामकेइ परसीधजी । गुणधर मुनीवर
चउदे पुरवधर । नामलीयानव नीधजी ॥ प्र ॥२१॥ पीगलनाम नीयठेपुछा ॥ परसन
पंचरसालजी । पंधक संन्यासी सुणाकर ततूपीण । वीरपासेगया चालजी ॥ प्र ॥ २२॥
ससेनीवारीने सजमलीधो॥ कठणतपस्पाधारजी । अणसण लेइगयास्वर्ग बारमे । थया
एका अवतारजी ॥ प्र ॥ २३ ॥ वीरजीनेस्वर तात वपाणुऋषभदतगुणधारजी ॥ सेठसु
दरसण राजरषी सीव । धनगगीयो अणगारजी ॥ प्र ॥ २४ ॥ एचारु रीप मुगतपोहता
धनअगवंतरिमातजी ॥ देवानंदा धंनसती जेवंती ॥ प्रस्नपुछा वीक्षातजी ॥ प्र ॥ २५ ॥
वीरप्रभुजीनी नंदनी बंडुं ।सतीय सुदरसणा जांणजी ॥ दिक्षाधारीकर्म्मनीवारी । पाइपद

नरिवाणजी ॥ प्र ॥ २६ ॥ पंचमीपमना कार्तीकसेठे । धारीते सोवारजी । तापस क्रोर
जीम्यो मोरोपर । अथीरजाण्यो संसारजी ॥ प्र ॥ २७॥ सहस अठोतर गुमास्तां साथे॥
आदर्योसंजम भारजी ॥ सेठथया सक्रेंद्र सोधरमे ॥ जास्पेमोक्ष मझारजी ॥प्र॥२८॥
सोले देस तज संजमलीधो ॥ दीयोन्नाणेजेने राजजी करीक्रीम्या धन रायउदाई ॥ सा
र्या आतमकाजजी ॥ प्र ॥ २९ ॥ गंगदत आणंद कोसलरीष रोहो । सुनक्षत्र नाम
अणगारजी । सरवाणभुती अराधीक ड़इने ॥ पऊतासरग मझारजी ॥ प्र ॥ ३० ॥ तांहां
थी चवीने मुगतसीधासे । इत्यादीक अणगारजी ॥ नाम ठाम तपजपको वरणव । भ-
गवतीजी सुत्र मझारजी ॥ प्र ॥ ३१ ॥ धारणीसुतशेणीकनी नंदन ॥ धन १मेघ कुवार-
जी ॥ आठअंतेवर ठीनमेछेमी । लीधो संजभारजी ॥ प्र ॥ ३२ ॥ गुणरतनभीक्षु प-
न्मीतप ॥ अंते अणसणकीधजी ॥वीजे वीमाणमे जाय वीराजी ॥ होसेवीदेमेसीधजी
॥ प्र ॥ ३३ ॥ नारतजीवतीस अबठासी ॥ धनथावरचा कुवारजी ॥ नेम समीपे सं-
जमलीधो ॥ सहसपुरपपरवारजी ॥ प्र ॥ ३४ ॥ थावरचा रीषसुकरी चरचा । सुकदेव
संन्यासी जांणजी ॥ एकसेहस सीपसाथे समज लीधोगुण नीधीपां णजी ॥ प्र ॥३५॥

पंथकादीक परधान पाचसे ॥ साथेसेलक रायजी ॥ अध्याइसहस पुंडरीकगीर अणस
ण मुगत वीराज्याजायजी ॥ प्र ॥३६॥ रेणादेवीकीकेण नकीधी ॥ रतन दीपसुं आयजी
संजमलीधो चंपानगरी वसकरी मन वच कायजी ॥ प्र ॥ ३७ ॥ तीन धनाये धार्‍यो
संजम । सुगुरु थिवर पासजी । तीनुपहिले सर्ग सीधाया ॥ माहावीदे सीव वासजी ॥
प्र ॥ ३८ ॥ ७मैत्री मल्ली जीनवरना ॥ महाबलादीक गुणवंतजी ॥ गुणधर पदग्रही मु
गतवीराज्या । थयासीद्ध भगवंतजी ॥ प्र ॥३९॥ सुबुधीपरधाने भत्रीविध ॥ पाणीपर-
चो बतायजी ॥ जीतसत्रुनृपभर्ममीटायो । दोइगया सीवमायजी॥ प्र ॥ ४० ॥ तेतली
मुनीवर गुणना दरीया ॥ पोटीलादीयो प्रतीबोधजी । केवल पामी मुगत पधार्‍या ।
तजीयोसकल वीरोधजी ॥ प्र ॥ ४१ ॥ युधीष्टर अरुजण अने भीमजी ॥ सहदेव नकु
ल अणगारजी मास२तप अभीग्रह कीनो॥नेम वंदणसुं वीचारजी ॥ प्र ॥ ४२॥ हस्तक
लपपुर गोचरी करता ॥ नेमतणो नीरवाणजी । सुणने पाम्व पाचुसेत्रुंजे ॥ सथारो-
लीयो जाणजी ॥ ४३ ॥ कर्मखपाइ मुगतवीराज्या ॥ श्रमणी द्रोपदा सोयजी ॥ संजम
पाली स्वर्गपाचमे ॥ एकाअवतारी होयजी ॥ प्र ॥ ४४ ॥ धरम घोषसीष धर्मरुचिजी

कुरणाकीम्यापर आंणजी ॥ कडुवा तुंवानो अहारजकीधो । परिषांम समजांणजी ॥ ॥ प्र ॥ ४५ ॥ क्षीण अंतरमे वेदनी प्रगटी ॥ रीषसमता मनधारजी ॥ स्वारथसीधमे जायवीराज्या ॥ चवगिया मुगत मझारजी ॥ प्र ॥ ४६ ॥ कुंम्रीक डिगीयोजांणी ॥ पुंम्रीकलीधो संजमधारजी । स्वारथसीध लीयो तनिदीवसंमे ॥ जासे सीवपुरमांयजी ॥ प्र ॥ ४७ ॥ सुवृता समणीदीक सतीयां ॥ पालीप्रभुकी आंणजी ॥ तेवरणव जिन२ करदेपो सुत्रग्याताजी जांणजी ॥ प्र ॥ ४८ ॥ गोतम समुद्र सागर अने गंभीर नीमीत अचल कुंमारजी ॥ कूंपलि अषोभ प्रसेन अनेवीस्नु ॥ अषोभ सागर जसधारजी प्रा ॥ ४८ ॥ सागर समुद्र हेमवंतनामे । अचल धरण गुणवंतजी । पुरण अभीचंद्र एह अठारा । नाइथया सझसंतजी । प्रा ॥ ५० ॥ अंधग वीष्णु सुतधार णीअंगज ॥ आठ१अंतेवर मेलजी । नेमसमीपे संजमलीधो । करी मुगतमे सेलजी प्रा ५१॥ वसुदेवजी काजाया। अणीयसेण अनंतसेणजी ॥ अजीतसेण आगीहीयारीनामे । देवसेण सत्रुसेणजी प्रा ५२ ॥ सुलसाघर वधीया छबंघव । बतीस २ नारजी । तजीने नेमसमीपे संजम । लेईने छठ २ धारजी ॥प्रा ५३ ॥ पुरवधारी कर्मनिवारी, प-

ञ्जंतामोक्ष मजारजी। वसुदेव सुतधारणी अंगज। सारणथया अवीकारजी प्र। ५४।
गुजतालव जीमकोमलकाया॥ धन १ गजसुषमालजी॥ वसुदेवसुत देवकीनंदण। गे-
न्चो जगजजालजी॥ प्र। ५५॥ एकाकी समसाणमेजाई। तत्राध्यांन लगायजी सुस
रोदेषी रीसन्नराणो॥ माटीकी पालवणायजी। प्र। ५६॥ धग २ता षयरनाषीरा। मे-
ल्या शीषनेसीसजी॥ महावेदना सही समपरिणमे॥ मुगतगया तजरीसजी। प॥५७॥
सुमुष डमुष वली उवएकुंवर॥ दारुण अनाधीष्टजाणजी॥ जाली मयालीउवयाली
शीप पुरीससेण वषाणजी। प्र ५८ वारीसेण परजुनशेषसंब॥ अनीरुध वेदन्नीनंदजी॥
सचनेमी दढनेमीएसब पाम्या सीवसुषकंदजी॥ प्र। ५९॥ पदमावती गोरीगंधारी
लषमणा सुसमाजाणजी॥ जंबुवती सतभामा रुषमणी॥ कृष्ण रामा गुणषाणजी॥ प्र
६०॥ मुलसीरी मुलदता समणी॥ संबकुमारनी नारजी॥ अणसणठाइ केवलपाइ॥
पायोपद अषीकारजी। प्र ६१॥ मकाइ कींकमारषमोटो॥ धन अरजुन अणगारजी॥
तजीकदाग्रह संजमलीधो॥ छट्ठतपस्रीयोधारजी प्र॥ ६२॥ छमासामे कर्मषपाई॥
मुक्तगया गुणवंतजी॥ कासबखेम धितीधर होतकर॥ केलास हरीचंद संतजी॥ प्र॥

६३ ॥ वारतसुदंसण पुरणन्नदर ॥ सुमनन्नद्र सुप्रतीष्टजी ॥ मेघएवंता अत्रषएसोव॥।
पायापद प्रतिष्टजी ॥ प्र ॥ ६४॥ नंदादिक तेरे पटरांणी ॥ वीरजीनंद उपदेसजी ॥ के
वलपाइ मुक्तसीधाई ॥ पाइ अवीचल एसजी ॥ प्र ॥ ६५ ॥ कालीदिकदसश्रेणकाग
णी ॥ सुण्योपुत्र वीजोगजी ॥ महातपधारीकरम नीवारी ॥ मेटदिया सबरोगजी ॥ प्र॥
६६ ॥ एनेवसङ्क अंतगढसीधा अंतसमे केवलपायजी ॥ अंतगम्नसुत्रमे वरणवजाणो
॥ जपतासुप सवायजी ॥ ६७ ॥ प्र ॥श्रेणीक सुत धन जाली मयाली ॥ उवयाली पु
रषसेणजी ॥ वारीसेण दीर्घदंत लठदंतजी ॥ गुठदंतसब जगसेणजी ॥ ६८ प्र वीहल
मर अभयादिक तेवीस ॥ श्रेणीक सुत गुणधामजी ॥ अनुत्रवीमाण गयातेसारा ॥ च
ासी सीवठांमजी ॥ ६९ ॥ प्र ॥ वतीसरंन्ना तजीधनकोमी ॥ धन धन्नो अणगारजी
॥ छठ श्तपनीरंतरकरणी । आंबीलउजित आहारजी ॥ प्र ॥ ७० ॥ चउदेसहश्र मुनी
श्वरमाहि ॥ श्रेणीक आगेस्वामजी ॥ कट्टेडुकर श्तपधारी ॥ सम दम उपसमधांमजी ॥
७१ ॥ प्र.॥ सुनखत्र इसीदासजी पेटग ॥ रामपुतचंद्रमा नामजी ॥ मुटमायी पेढाल पु
त्तरीप ॥ पोटील वीहल अन्नीरामजी ॥ ७२ ॥ प्र ॥ धनानीरीते एनवही ॥ करणी महा-

सीरेकारजी ॥ अनुत्रववाई सुत्रके माही ॥ दाष्योछे वीस्तारजी ॥ ७३ ॥ प्र ॥ धन सुवाक्ष
त्रद्र नंदीरीप ॥ सुजात सुवासव धीरजी ॥ जीनदास धनपति महाबलजी त्रद्रनंदीगंभी
रजी ॥ ७४ ॥ प्र ॥ महचंदवरदत्त दसमुनीवर । पुरवदान प्रभावजी ॥ गेध संपतपाया
अतीसुदर लीयो संजमचित चावजी ॥ ७५ ॥ प्र ॥ केइक तीणत्रव मुक्त सीधाया ॥ के
इपंनरात्रवधारजी ॥ वरसे मुगतसीरी वरुत्रागी सुपवीपाक अधीकारजी ॥ प्र ॥ ७६ ॥
पत्रमादिक दस श्रेणीक पोता ॥ वीरजीणंदके पासजी ॥ दीक्षालेइ स्वर्ग सीधाया ॥
पासे अविचल वासजी ॥ प्र ॥ ७७ ॥ नीषढादिक बलत्रद्रका नंदन बाराही गुणवंत
जी ॥ पांच १से त्याग अतेवर सर्वारथसीध पोहंतजी ॥ ७८ ॥ प्र ॥ सुत्रनीरावलीकानें
माही ॥ त्राष्यात्राव जीनंदजी ॥ एकाअधतारी वेरीपसघला ॥ टालसी त्रव दुष फंद
जी ॥ ७९ ॥ प्र । दोमासासुवर्णकोइग ॥ आइ त्रला अपारजी ॥ समताथी केवलपद
पाया ॥ धन कंपील अणगारजी ॥ ८० ॥ प्र ॥ नेमी राजरिषीश्वर धन धन ॥ त्यागी रम
णी हजारजी ॥ इंद्रसुप्रती उतरकीधा ॥ पायात्रव जलपारजी ॥ ८१ ॥ प्र ॥ हरकेसी
चीत मुनीगुण सागर ॥ सजती रीपरायजी ॥ गर्दत्राळी क्षत्रीराजरीपीधन ॥ दसारण

भद्रकह्याएजी ॥ ८२ ॥ प्र ॥ करकंडु डुमइनमीराजा ॥ नगाइ एहचारजी ॥ एकसमे च
वसंजमधार्‍यो ॥ एकसमे भवपारजी ॥ ८३ ॥ प्र ॥ महाबल मृगापुत्र मुनीश्वर मुनी
अनाथी जाणजी ॥ समुद्रपाल व्रतपाल दयानीध ॥ रहनेमी उजमालजी ॥ ८४ ॥ प्र
केसीगोतम चर्चाकीनी । जयवीजे घोष रसालजी ॥ गर्गाचार्य उत्राध्ययने पेठ्योसीष जं
जालजी ॥ ८५ ॥ प्र ॥ धना सालभद्र रीषजोमी । तम्के तोम्योनेहजी ॥ मास २ तप
धारणकीनो ॥ त्यागी ममता देहजी ॥ ८६ ॥ प्र आठअंतेवर रातेपरण्या ॥ सुनैया ने-
न्याणव कोमजी । दीनउंगालीयो संजमभावे ॥ पांचसे सतावीस जोमजी ॥ ८७ ॥ प्र॥
ढंढणरीष लीयोअभीग्रह डुकर ॥ चुस्याकर्म करूरजी पंधक रीषनी पालउतारी ॥ क्री-
म्याकरीभरपुरजी ॥ ८८ ॥ प्र ॥ पंधकरीषना सीषपांचसे। घाल्याघांणी मायजी । क्री
म्याकरके केवलपाया ॥ मुक्तवीराज्या जाएजी ॥ ८९ ॥ प्र ॥ थुलभद्र अरणक सीजं
भव ॥ श्रीजीन आग्यामायजी ॥ वरत्या वरते तेसङ मुनीवर थुणतापातीक जाएजी
॥ ९० ॥ प्र ॥ मरूदेवी गजहवदेपायो ! नीरमल केवलग्यांनजी ॥ ब्राह्मीसुंदरी चंदण
वाला ॥ धायो सुकल ध्यांनजी ॥ ९१ ॥ प्र ॥ राजमती द्रोपदी सुभद्रा । सीता कौस

ल्या जाणजी ॥ मृगावती अंजणा मृगलेष्पा ॥ मलयासीलनी पानजी ॥ १२ ॥ प्र ॥ चे
लणा सुजेष्टा सेवाकुंती । मेणरह्यादिकजेह्जी ॥ संकट पमीयासीलजराष्यो ॥ आएयो
संजम नेह्जी ॥ १३ ॥ प्र ॥ गुणवंतना गुणग्राम करता ॥ पातीक डर बुलायजी ॥ अ-
सुन्न करमकी कोम्नपपावे ॥ गोततीर्थंकर पाएजी ॥ १४ ॥ प्र ॥ सवंत वगणीसे सेती-
ससाले । महावदअष्ठमी जाणजी । गामचींचुमी देसदक्षणमे ॥ नगर तालुके जाणजी
॥ १५ ॥ प्र ॥एवतारीप जी महाराजप्रतापे ॥ तीलोकरीपकहे एमजी ॥ न्नणसी गुणसी
जेन्नवीन्नावे ॥ पावे अविचल पेमजी ॥ १६ ॥ प्र ॥ इतिसाधुवंदना संपुर्ण ॥
॥एर्दप॥ॐनम सिद्धं॥अथ आलोवण प्रारंन्नः ॥एह्आत्माने॥,णन्नवे ॥परन्नवेअनेरे॥ अनं
तन्नवे ॥ १ए ॥पापस्था नक सैव्याहोय ॥ अणुमोद्याहोय ॥ तेनी आलोवणा ॥प्रथमनव
कार मंत्रकहैछे ॥णमो अरिहंताणं॥णमोसिद्धाणं । णमोआयरियाणं णमो उवझायाणं॥
णमो लोएसव्वसाऊणं ॥ अथ उपमा वर्णवेछै १०न्नवनपती २०इंद्र ॥ १६ वाण व्यंतररा ॥
३२इंद्र॥ १२ ॥ देवलोकना ॥ १० ॥ इंद्र ॥ मोटाने ॥ प्रधान ॥ तिम सर्व मंत्रमेनवकार
मित्र मोटोने ॥ प्रधान ॥ मनुक्क् रुधमे चक्रवर्त ॥ मोटाने ॥ परधान ॥ तिम सर्व मित्रमे

नवकार मिंत्र मोटोने प्रधान ॥ चार तिर्थमे ॥ तिर्थंकर ॥ मोटाने प्रधान ॥ तिमसर्व मं-
त्रमाहें नवकारमंत्रमोटोने प्रधान ॥ सुरपुर्षमे वासुदेव ॥ दानमे वैश्रमणभंमारी ॥ पदवि-
मे तीर्थंकरजीकीपदवी ॥ बलमे तिर्थंकर जीनोबल ॥ ७१ ॥ ज्ञानमे केवलज्ञान ॥ ७२॥
ध्यानमे शुक्लध्यान ॥७३ ॥ दानमे अभयदांन ॥ ७४ ॥ पानमे वज्रहिराकीपान ॥ ७५॥
बाणमे राधामणजाण ॥ ७६ ॥ चारित्रमे जथाख्यात ॥ ७७ ॥ गोत्रमे तिर्थंकर जीनोगो
त्र ॥ ७८॥ घातमेकर्मनीघात ॥ ७९ ॥ गतमे अनुत्तर विमाणना मेलनीगत ॥ ८०॥
वातमे निरवद्य सरबात ॥ ८१ ॥ भातमे क्षीर चावल भात ॥ ८२ ॥ रातमेदीवाली-
नी रात ॥ ८३ ॥ समगतमेक्षायक ॥ ८४ गायकमे धर्मगायक ॥ ८५ ॥ भावमेक्षा य-
क ॥ ७६ ॥ व्रतमे सीलव्रत ॥ ८७ ॥ घृतमे गो घृत ॥ ८८ ॥ सिंघेणमे वज्रऋषभना-
राय ॥ ८९ ॥ गायमे कामधेनु गाय ॥ ९० ॥ संठाणमे समचौरंस ॥ ९१ ॥ जसमेभ
गवंतनो जस ॥ ९२ ॥ रसमे इक्षुरस ॥ ९३ ॥ वर्णमे शुक्लवर्ण ॥ ९४ ॥ मर्णमे पंम्ति
मर्ण ॥ ९५ ॥ सर्णमे प्रभुनो सर्ण ॥ ९६ ॥ गंधमे कृष्णागर ॥ ९७ ॥ आगरमे रत्नाग
र ॥ ९८ ॥ अकलमे पली ॥ ९९ ॥ धर्मानी संली ॥ १०० ॥ धर्ममेजैन ॥ १०२ ॥ ई-

द्रीमे नेन ॥ १०२ ॥ पणमे उत्रायन ॥ १०३ ॥ पाषाणमे पारस ॥ १०४ ॥ जोमामे सा
रस ॥ १०५ ॥ मासमे सावण ॥ १०६ ॥ देत्यमे रावण ॥ १०७ ॥ फलमे अंर विंद ॥
॥ १०८ ॥ सुरमे गोविंद ॥ १०९ ॥ वस्त्रमे खोम जुगल ॥ ११० विन विश्वासिमे चु-
गल ॥ ११२ ॥ वनमे नंदन ॥ ११३ ॥ रथमे हरिस्यंदन ॥ ११४ ॥ सागरमे सयभु
॥ ११५ ॥ लोकिक फर्स सहनमेभु ॥ ११६ ॥ क्षेत्रमेमहाविदेह ॥ ११७ ॥ पापविज
स्नेह ॥ ११८ ॥ वृक्षमेजंबु ॥ ११९ ॥ जगजीवावणमेअंबु ॥ १२० ॥ नदीमेसीता ।
॥ १२१ ॥ सतिमे सीता वंदिता ॥ १२२ ॥ थितिमेल वसतिया॥१२३ ॥ बुद्धमे उत
पतिया ॥ १२४ ॥ वाजामाहे जंभा ॥ १२५ ॥ स्त्रिमेरंभा ॥ १२६ ॥ लांबापवर्तमे
निषध ॥ १२७ ॥ वृद्धिवृक्षमे वम ॥ १२८ ॥ गोल परवतमे रूचक ॥ १२९ ॥ तेजमे
अरक ॥ १३० ॥ १३१ ॥ मणमे चिंतामण ॥ १३२ ॥ हस्तिमे ऐरावण ॥ १३३ ॥
वचापठनमे सुंदरसण ॥ १३४ ॥ देवलोकमे ब्रह्मा ॥ १३५ ॥ सभामे सुधर्मा ॥ १३६ ॥
वृषभमे मारवाभक्तो ॥ १३७ ॥ चोपदमे सार्डूलो ॥ १३८ ॥ अहमदकी पदवो ॥ ३९ ॥
भगवतकीठबी ॥ १४० ॥ अग्निमेसति ॥ १४१ ॥ गतिमेसिद्धगती ॥ १४२ ॥ प्रथ्वीमे

इसीपभारा ॥ १४३ ॥ तपेसुरा अणगारा ॥ १४४ ॥ भापासुमती ॥ १४५ ॥ मन गु-
पती ॥ मोटाने परधान तिमसर्व मंत्रमे नवकारमंतर मोटो नेपरधान ॥ अथनवकारना
गुणकहे नवकारमंत्र चउदा पुर्व नुसार ॥ कर्मबंधनो काटणहार ॥ मिथ्यामतके देत
नीवार ॥ बोधबिज समगत दातार ॥ अजर अमर पदवि दातार मनबंछानो पुरण ॥
चितानु चुरण ॥ भवोदधि तारण ॥ नरकादि दुखवारण ॥ महाकल्पाणीक मंगलिक
महाजसवंत महंत ॥ माहागुणकंत ॥ भाकणी साकणी ॥ भुताविहंभणी ॥ मोहणी पं
भणी ॥ मोक्षको मभणी ॥ कर्मरिपुभंभणी ॥ अष्टसिद्दी ॥ नवनिधी ॥ अचलऋधिदायक
विघनघायक ॥ जगत नायक ॥ भविक भायक । परममंतर । पर्म जंतर ॥ हदय अंतर
पर्मरत्न ॥ पर्मजतन ॥ पर्मरसाण ॥ पर्मभाण ॥ सेवामे सेवा मेवामे मेवा ॥ जपमे जप
तपमे तप ॥ सममे सम ॥ दममे दम ॥ ग्यानमे ग्यान ॥ ध्यानमे ध्यान ॥ दानमे दान
आनमे आन सकल सुपदाई ॥ अपरकोई नाइ ॥ दोहा ॥ शफल कुशल वेलीप्रते ॥
परमेष्टी जलधार ॥ तिलोककहे सिंचो सर्वो ॥ जो चाहो भवपार । १ । सकल आपदा
वनविषे ॥ परमेष्टी पदजेम ॥ भसम करे उप द्रुमको ॥ वर्ते पुरण खेम ॥ २ ॥ सवैया३ १

नमु अरिहंत घनघातिक कर्महण्या ॥ परम पुनित ज्ञान भानभये । जारीहे ॥ अजर अमर परमात्मापरम जोति॥ पायाहे परमपद ॥ सिद्ध अविकारीहे ॥नमु आचारज नित पालत आचारपच ॥ नमुउवज्झायग्यान । गुणके भंमारीहे ॥ साधुसाधे आतमासो कहतहे तिलोकरीष ॥ मनवचकायकरी वंदण हमारीहे ॥ १ ॥ दुहा ॥ सकलसार ॥ भुवणमुगट ॥ मंत्रपरम नवकार ॥ तत द्वादश अंगमे ॥ सोधलीयो सुषकार ॥ १ ॥ वाचना एपचपरमेष्टीके नमस्कार १००८ वारातिखुत्तो ॥ जाव पजुवासामी ॥ पछेअरीहतसीद्ध ॥ केवली भगवतनीसाषे ॥ आलोवणाकरणी ॥ ते भवजलनी तरणी ॥ तेसुणो चीतलाइ ॥ प्रथमसुधताइ ॥ समगतवडाई ॥ कडसुधताई जीम ज्ञानीवताई ॥ ठदत्रिभंगी ॥ परमेश्वर दापे ॥ समकीतपावे ॥ सुपनहीपावे ॥ मुक्तसिरी ॥ सुसमगत तरवर ॥ अतीदृढ परवर ॥ सेवोभवीनर जुकरगी ॥ पर्मार्थनीसेवा ॥ करोनितमेवा ॥ हरिहरदेवा ॥ परिहारं ॥ जिनधम उपाशक ॥ सतज्ञानाशक ॥ जोचाहोउरनिस्तार॥ २ संकाजिनमतनी ॥ गतआगतनी । सतअसतनी भवगंमो ॥ अनमतकीईंग ॥ तजो वितिगिछा ॥ ज्ञाननुप्रिछा अतिमंमो ॥ पापं मवडाई ॥ परचोनाई ॥ निश्चलसमगतवृत

धारं ॥ जिनधर्मउपाशक ॥ सतज्ञाशक ॥ जोचाहोउर निस्तारं ॥ २ ॥ दोहा एक
समकितपाया विना ॥ तप जपकिरीया फोक ॥ जन्म मरण घटसेनही ॥ समझो चा-
तुरलोक ॥१॥एक समगतपायाविना॥तप जप किरी याफोक ॥जेसोलिपणगरपे॥समज्ञ
कहे तिलोक ॥ २ ॥ एकस० । तप० सुनजेसेविन अंकपे ॥ समज्ञकहे तिलोक ॥ ३ ॥
एकस. तप. । जो मुरदोसीण गारवो ॥ समजकहे तिलोक ॥ ४ ॥ एकस. तप. अंधेकुं
जो आरसी ॥ समजकहे तिलोक ॥ ५ ॥ एकस. तप. वहिरा आगे गायवो ॥ समज्ञक
हे तिलोक ॥ ६ ॥ एकस. तप. जैसे नीरवीलोवणो ॥ समझकहेतिलोक ॥ ७ ॥ एक-
स. तप. ॥ ओसपेतमे विजजो ॥ समझकहे तिलोक ॥ ८ ॥ इति ॥ ॥
अथ समगत रत्न किंचिता धिकार प्रारंभः ॥ समगतका भाव श्री आचारंगजी श्रुत्रका
चोथोध्ययने । समगतनाम इमकह्यो ॥ अतितकाले अनंता तिर्थंकरथया ॥ वर्त्तमाने
संख्याता ॥ अरिहंतछे ॥ अनागतकाले अनंताहोसी ॥ तेअर्धमागधमे वाणीप्रकाशे ॥
ते सुंप्रकाशे ॥ तेसूत्र ॥ सव्वेपाणा ॥ सव्वेभुया ॥ सव्वे सत्ता ॥ नहंतवाजाव परिघेतेवा ॥
अर्थ ॥ कोइजीवकिहिंस्या करणीनहीं ॥ एहवो धरम सास्तोछे ॥ यर्मकीजे हंस्याकरेते

दोपनहीं एहवो वचनते ॥ अनारज भगवंते कह्योछे ॥ एहवो सर्दहैते समगती ॥ तथा ॥ १ ॥ द्रव्य ॥ २ ॥ क्षेत्र ॥ ३ ॥ काल ॥ ४ ॥ भाव ॥ एच्यार ॥ पदारथ ॥ सुध्दसरदहे तेद वंधीतो ॥ नवतत्व ॥ पटदर्व ॥ पट्काया सुद्दसर्दे । २ । क्षेत्रथकी ॥ १ ४ ॥ राजनथा ॥ ३ ४३ २ रजुप्रमाणे लोकछे ॥ अनंत रजुप्रमाणे अलोकछे ॥ ते साचो सरदे ॥ ३ ॥ कालथकी ॥ समे आवलीक ॥ महुर्त ॥ दीनरात ॥ पष ॥ मास ॥ ऋतु ॥ अयन ॥ वरस पुर्व ॥ पल ॥ सागर ॥ जाव अनंतसर्पणी ॥ अवसर्पणी सतसरदे ॥ ४ ॥ भावथकी ॥ ॥ ५ ॥ वर्ण ॥ २ गंध ॥ ५ रस ॥ ८ ॥ फर्श ॥ दरवगुणपरजाय ॥ साचासरदे ॥ तथा ॥ तपजप ॥ संजम ॥ फल ॥ साचा सरदे ॥ सुत्र॥ सुचिन्नाकम्मा ॥ फलाविवागाभ्न वंति ॥ अर्थ । जेहवी करणीकरे ॥ तेहवाफल पामे एहवी सर्हाते सुद्द समगती जाणवो वीवार समगतलक्षण हिवेनिश्चेसमगतलक्षणकाल कोइकजीव । अतितकालेसमगत फरसे नही ॥ तेप्राणी ॥ अकाम निरजरा करीने ॥ आउपो वर्जिने ॥ सातकर्मकी एक कोमाकोड सागर अंतर ॥ मुहूर्तघाटरहे ॥ जदीमोहणी कर्मकी । ७ । सातप्रकृति ॥ उपसमावेतेवारे ॥ उपसमसमगत आवे ॥ तथा षपावे ॥ उपसमावेतो क्षयोप

सम समगत आवे ॥ पपावेतो क्षायक ॥ तथा । उपसम ॥ समगत ॥ आइसो वर्तता
उआवलिकाकी थित बाकीरहे तीवारे ॥ वेदक समगत जाणवी १ वारफर्शे थीत ए
कसमाकी ॥ जिवारेउइ ॥ आवलिकाकी थीतपुरीथया ॥ अवश्य मिथ्यातआवे ॥ तथा॥
खयउपसमनि थीतमे १ समेवाकीरहे ॥ तिवारे ॥ मिथ्यातमोहणी आददेइ ७ ॥ कर्मनी
वर्गणानेवेदे तेवारे ॥ वेदक समगत कहिए ॥ तिवारेपछेक्षायक समगत आवे ते अ
यापछे ॥ चायनही ॥ उपसमने ॥ जगन ॥ १ ॥ वार फर्शे ॥ उतकृष्टी ५ वारआवे ॥ उप
समनी थित जगन उतकष्टी ॥ अंतर मुहूर्त्तकी ॥ सास्वादान जगन उतकृष्ट ॥ उआ
वलकाकी एकजीव ॥ ५ ॥ वार फर्शेखयोपसम थित । ज । अंतर्मुहूर्त उ० ॥ ६६ ॥सा
गर जाजेरी एकजीव असंख्यातीवारफर्शे क्षायककी आदछेपण अंतनही ॥ जयनहीहै ॥
खायकवेदक वरजीने ॥ ३ ॥ सम० आंतरोपरूनो ॥ जः ॥ अंत ॥ उतकृष्ट ॥ अनतकाल
अर्धपुदगल देश उणा ॥ वेदकको आंतरोनथी ॥ अल्पाबहुत्व कहेछे ॥ सर्वसेथोराजी
वसास्वादानना वणी ॥ १ ॥ उपसमनाधणी संख्यातगुणा ॥ खयोपसम । संख्यात गुणा
क्षायकना अनंतगुणा मिथ्याद्रष्टी अनंतगुणा ॥ इहावेदक नकहीते ॥ क्षयोपसमनोभेद

जाणवो ॥ तेसमगतिजीव । ७ । ठामे ॥ आठषोनहो बांधे ॥ १ ॥ नर्क ॥ २ ॥ तिर्यंच ॥ ३ ॥ भवणपती ॥ ४ ॥ व्यंतर ॥ ५ ॥ जोतषी । ६ । अस्त्रि ७ नपुंसग ॥ मनुक्षतिर्यंचतो ॥ विमाणिकनो नारकी ॥ देवता ॥ मनुक्षनो ॥ आठपोबांधे ॥ समगतको अराधिउ० ॥ १५ ॥ भवेमोक्ष जाय सुत्र ॥ जहासुइससुताइ।पम्मिय वि न विणसइ ॥ तहा जीवोवीसमत्तो ॥ ससारे न वीणस्सइ ॥ अर्थ जिमडोरासहीत सुइ ॥ षोवाय नही तिम ॥ जीवरूप सुईसमगतरूप ॥ मोरो ॥ पोवाणापाठे निश्चेमोक्षजाए ॥ एहवो समगत ॥ कल्याण मंगलीक निरभयदान ॥ सीद्दिगती अनत सुपकीदेणहारीठे ॥ समगतिजीव चारसरणा ग्रहेते ॥ चार सर्णा कहेठे पेलोसर्णों तेकहेठें ॥ उतपन विमल ॥ निर्मल केवलज्ञान ॥ करी । सुर्यनीपेरे प्रकासका करणहार ॥ समकीतवृत सुद्धधर्म दातार ॥ अनंतज्ञान ॥ अनंतदरसण सार अनंतसक्तीधार ॥ इत्यादिक अनंतगुणकेधार अपार ॥ जघन सातहाथ जाण । उतकष्टा । ५०० । धनुषप्रमाण ॥ देहेदिपतिजीम ॥ तेजभाण ॥ प्रथमसंघयण ॥ परथम संठाण एकसहश्रने आठलक्षनमान ॥ चोतिश अतिसय विराजमान ॥ पेतिश गुनवरसतवाण ॥ चोसठइंद्र पुजनिक भगवान ॥ तिलोकदयाल ॥ ति-

लोकमयाल ॥ तिलोक प्रतिपाल तिलोकगुवाल ॥ जगतहेतु ॥ जगतकेतु ॥ त्रिलोकना-
थ ॥ तिलोकतात ॥ तिलोकमात ॥ तिलोकभ्रात ॥ नवमनुक्षभ्रात ॥ आनंदहर्ष उपजा-
णहार ॥ मोक्षमारग दिपावणहार ॥ अभेदान देणहार ॥ राग द्वेष जितणहार संसार
सागर तारणहार ॥ एहवाश्री अरिहंत नगवंत ॥ ५ ॥ नतैं ॥ ५ ॥ इरवतैं ॥ ५ महावि
देह क्षेत्रनेविषे ॥ अतितकाल अरिहंत अनंताथया ॥ वर्तमानकाले संष्याता ॥ अरिहंत
नगवंन । विचरेछे ॥ तेनगवंतनो ॥ धर्मी २ पले २ समे १ सरणोहोजोहेस्वामीनाथ ॥
इतिपेलोसर्णों संपुर्णम् ॥ १ ॥ हीवे विजोसर्णोश्री सिद्धनगवंतनो ॥ तेसिद्ध नगवंत-
जी केवाछे ॥ ३१ ॥ गुणके धरणहारछे ॥ ५ ॥ नेद ज्ञानावर्णि ॥ ए ॥ नेदे दर्शनावर
णि ॥ २ ॥ नेदे बेदनी ॥ १ ॥ नेदे मोहाणि ॥ ४ ॥ नेदे आउषो ॥ २ ॥ नेदे नाम १
भेदे गोत्र ॥ ५ ॥ नेदे अंतराय कर्मने खयकरणहारछे ॥ बलि ॥ ३१ ॥ अतिशेकरीस
हितछे ॥ १ ॥ नकन्हे ॥ १ ॥ ननिले ॥ ३ ॥ नलोहिए ॥ ४ ॥ नहालिदे ॥ ५ ॥ नसु
किले ॥ ६ ॥ नसुन्निगंधे ॥ ७ ॥ नडन्निगंधे ॥ ८ ॥ नतिते ॥ ए ॥ नकएडु ॥ १० ॥ नक
साये ॥ ११ ॥ नआयंबिले ॥ १२ ॥ नमडुए ॥ १३ ॥ नकखमे ॥ १४ ॥

॥ १५ ॥ नगुरूए ॥ १६ ॥ नलज्जए ॥ १७ ॥ नसिये ॥ १८ ॥ नउसिने ॥ १९ ॥ ननिधे ॥ २० ॥ नलुखे ॥ २१ ॥ नपरिमझ्ले ॥ २२ ॥ नवंटे । २३ नतंसे ॥ २४ ॥ नचोरसे ॥ २५ ॥ नआयंते ॥ २६ ॥ नइच्छि ॥ २७ ॥ नपुरिसे ॥ २८ ॥ नपुसंगे ॥ २९ ॥ नअनहा ॥ ३० ॥ इत्यादिक अतिशयकरी विराज मान ॥ १४ ॥ भेदे ॥ १५ ॥ प्रकारे तेपण ॥ निरागी ॥ निसोगी ॥ निजोगी ॥ अनंत ज्ञान दर्शण क्षायकसमगत ॥ अनंत सक्तिनाधणी ॥ सुध्दिबुद्धी ॥ पारगति ॥ परंपरागती अजर ॥ अमर ॥ अरकय ॥ अन्नय । निकलंक ॥ निरंजण ॥ निराकार ॥ अशरीरी ॥ जीवसरूपी ॥ एकसिद्द तिहा अनंत सिद्द लोकने अग्रभाग॥कर्मखपाविने मोक्षपहुंता॥तेसिद्द भगवानजीको ॥सरणो॥धर्मी २ पल ॥२॥समे॥२॥होंजो हो स्वामीनाथ॥इति संपुर्ण ॥तीजोसरणोश्रीसाधुमुनी राजको तेमुनिराजकेवाछै॥तिहाकेवली॥भगवंत॥अनंत ज्ञान दर्शण क्षायकसमगत क्षायक चारित्रनाधणी ॥ जगन २कोड॥उत्कृष्टा ॥ नवकोडकेवली ॥ २ हजारकोडज। उ० नेवहजारकोड मुनिराज ॥ तेसाध केवाछै । गणधर ॥ आचार्ज ॥ उपाध्याय ॥ बहुश्रुती द्वादशअंगना जाणकार ॥१४॥पुर्वका भणणहार ॥ मइनाणी । सुयनाणी । उंहीनाणी । पर्मअव

लोकमयाल ॥ तिलोक प्रतिपाल तिलोकगुवाल ॥ जगतहेतु ॥ जगतकेतु ॥ त्रिलोकना-
थ ॥ तिलोकतात ॥ तिलोकमात ॥ तिलोकभ्रात ॥ ञवमनुक्षभ्रात ॥ आनंदहर्ष उपजा-
णहार ॥ मोक्षमाग्ग दिपावणहार ॥ अन्नेदान देणहार ॥ राग द्वेष जितणहार संसार
सागर तारणहार ॥ एह्वाश्री अरिहंत ञगवंत ॥ ५ ॥ ञर्ते ॥ ५ ॥ इरवर्ते ॥ ५ महावि
देह क्षेत्रनेविषे ॥ अतितकाल अरिहंत अनंताथया ॥ वर्तमानकाले संख्याता ॥ अरिहंत
ञगवन । विचरेछे ॥ तेञगवंतनो ॥ ध्रमी २ पले २ समे १ सरणोहोजोहेस्वामीनाथ ॥
इतिपेलोसर्णो संपुर्णम् ॥ १ ॥ हीवे विजोसर्णोश्री सिद्धञगवंतनो ॥ तेसिद्ध ञगवंत-
जी केवाछे ॥ ३१ ॥ गुणके धरणहारछे ॥ ५ ॥ ञेदे ज्ञानावर्णि ॥ ९ ॥ ञेदे दर्शनावर
णि ॥ २ ॥ ञेदे वेदनी ॥ १ ॥ ञेदे मोहणि ॥ ४ ॥ ञेदे आउषो ॥ २ ॥ ञेदे नाम १
भेदे गोत्र ॥ ५ ॥ ञेदे अंतराय कर्मने खयकरणहारछे ॥ बालि ॥ ३१ ॥ अतिशेकरीस
हितछे ॥ १ ॥ नकन्हे ॥ १ ॥ ननिले ॥ ३ ॥ नलोहिए ॥ ४ ॥ नहालिदे ॥ ५ ॥ नसु
किले ॥ ६ ॥ नसुञिगंधे ॥ ७ ॥ नडञिगंद्दे ॥ ८ ॥ नतित्ते ॥ ९ ॥ नकएडु॥१०॥नक
साये ॥ ११ ॥ नआयंबिले ॥ १२ ॥ नमङ्गए ॥ १३ ॥ नकखडे ॥ १४ ॥

॥ १५ ॥ नगुरूए ॥ १६ ॥ नलज्जए ॥ १७ ॥ नसिये ॥ १८ ॥ नउसिने ॥ १ए ॥ ननि
धे ॥ २० ॥ नलुखे ॥ २१ ॥ नपरिमम्ले ॥ २२ ॥ नवटे। २३ नतंसे ॥ २४ ॥ नचो
रंसे ॥ २५ ॥ नआयंते ॥ २६ ॥ नइन्त्रि ॥ २७ ॥ नपुरिसे ॥ २८ ॥ नपुसंगे ॥ २९ ॥
नअनहा ॥ ३० ॥ इत्यादिक अतिशयकरी विराज मान ॥ १४ ॥ न्नेदे ॥ १५ ॥ प्रकारे
तेपण ॥ निरागी ॥ निसोगी ॥ निजोगी ॥ अनंत ज्ञान दर्शण क्षायकसमगत ॥ अनंत
सक्तिनाधणी ॥ सुद्धिबुद्धी ॥ पारगति ॥ परंपरागती अजर ॥ अमर ॥ अरकय ॥ अन्नय।
निकलंक ॥ निरजण ॥ निराकार ॥ अशरीरी ॥ जीवसरूपी ॥ एकसिद्द तिहा अनंत
सिद्द लोकने अग्रन्नाग॥कर्मखपाविने मोक्षपऊंता॥तेसिद्द न्नगवानजीको ॥सरणो॥धर्मी २
पल ॥२॥समे॥ ३॥होजो हो स्वामीनाथ॥इति संपुरणं ॥तीजोसरणोश्रीसाधुमुनी राजको
तेमुनिराजकेवाढे॥तिहाकेवली॥भगवंत॥अनंत ज्ञान दर्शण क्षायकसमगत क्षायक चारित्र
नाधणी॥ जगन २कोम॥उत्कष्टा ॥ नवकोमकेवली ॥ ॥ २ हजारकोमज। उ० नेवहजारको
म मुनिराज ॥ तेसाध केवाढे। गणधर ॥ आचार्ज ॥ उपाध्याय ॥ बहुश्रुती द्वादशअं
गना जांणकार ॥१४॥पुर्वका न्नणणहार ॥ मइनाणी। सुयनाणी। उहीनाणी। पर्मअव

हि रिजुमती ॥ विपुल-मती ॥ मणनाणी ॥ पंचसुमतिनापालक । मणगुतिया । वयगु
तिया । कायगुतिया ॥ गुत्तागुत्तेंदीया । गुत्तबंभचारी ॥ अकोहा ॥ आमाणा ॥ अमा-
या ॥ अलोहा ॥ संतालवसता । परिनिवुमा ॥ अणासवा ॥ अममा ॥ अकिंचणा ॥ छिंन
गंथा । छिनसोया ॥ जाइसंपन्ना ॥ कुलसंपना बलसं॥ रूपसं॥ विणयसं।नाणसं। दंसणसं
चारित्तसं। लघासं। लाभसं ॥ उयंसी ॥ तेयंसी ॥ वचंसी ॥ जसंसी ॥ जीयकोहा मा-
णा। मायालोभा । जियंदिया जीयनिंदा॥ जीयपरिसहा ॥ जिवाअसमरणा भयविप्पमु
का ॥ वयप्पहाणे ॥ गुणप्प। कर्णप्प। चर्णप्प। खंतिप्प।मुंतिप्प।अज्जवप्प।मदवप्प। लाघव-
तवप्प। मनबलीया ॥ वचब।कायब।नाणब।दंसणब।चारितब।खेलोसहीपत्तिय॥जलोस ॥
विप्पोस ॥ आमोस॥ सवोस । कोठबुद्धीया ॥ बीजबु । पदानुसारीया ॥ खिरासवा ॥
मडयासवा ॥ सप्पिसवा ॥ अखीणमाणसीया ॥ चारणाविद्याहरा ॥ वैक्रेलद्धी ॥ तेजु-
लेस्पा ॥ सितललेस्या पुलाकलब्धी॥ आददेह अनेकलब्धीनाधणहारातपसी ।मोटा मा-
हाणुभाग ॥ कनकावली॥ एकावलीरत्नावली॥मुक्तावली लघुसिंहानिक्रिमी वृद्धसिंहानिकि
मी ॥ भद्र ॥ महाभद्र ॥ सिवभद्र ॥ भद्रोत्तर ॥ जवमध्य ॥ चंद्रपडिमा ॥ वज्र पडिमा

भिरकुनीपडिमा ॥ वहणहारा । चोथभति • ॥छठभतिया ॥ अठम । दशम ॥ डुवालस
चोवदसभ । अद्दमासीया ॥मासीया दोमासीया । तिमासिया ॥ चोमासिया ॥ पंचमा
सिया॥छमासिया॥घोरतपस्याका कर्णहारा ॥ उरकीतचरगा निरकीतचरगा उखित्तच • ॥
निरिकत्तचअंतच॥पंतच॥समुदाणच॥संसठच॥असंसठच॥दिठलाभीया ।अदीठला ।पुछ
ला.अपुछला.।भिरकला.अभिरकला॥तथा अंत अहारी ।पंतअ.।अरसअ० विरसअ॥लु
खअ॥तुछअ.अंतजिंवी॥पंत.॥जाव विरससजीवि ॥पुरिमढीय॥आयंविलीया निविगईया
नोनीकामरसभोय इत्यादीकआहारनाभोगवणहारा॥तथा विरासणीया॥लगडसणीया मं
मास ।निसीया। उनाले सुरजकी आतापना सियाले ठंमसहे ॥ उकडुयासणीया ॥ इत्या-
दि कायकलेशतपनाकरणहारा एहलोक परलोक पभिबुद्धा कम्मंनिघाय ॥ निठाए ॥ अ
भुठीया मोक्ष मारगना साधणहार ॥ छंद ॥ सुरप्रताप शशिचित सीतल सिधुगंभिरसु-
मेरू अमोले॥ कजअलेपसु कुमुवइंदीय॥वाक कहेजिम अमृतघोले॥वारणधिर अमि-
त मृगाधिप उंट विना नभधि गुणटोले ॥ वायअवंध धरासहने सच ॥ चैन जतिगुण
आगमबोले।१ ॥सदाचरूं मुनीकर्मके उपर तप तरवार चले चलकती ॥ बाणपरीसह

जीतणकारण॥क्रिय्याकी ढाल ढले ढलकंती ज्ञानघोडे असवारजयेरूष ध्यानकी चुड झले झलकंती ॥ कहते तिलोकसो सतकुं वंदना मुक्तिमेलमेजाज झलकंती ॥ ३ ॥ एवामु निराज सारयाआतमकाज ॥ तारणी जाजाजुगसोरताज ॥ गरीबनवाज १७ ज्नेदेसज मनाधारण १९ ज्नेदतपस्या नाकरणहार आपणीआतमा ज्नावताथका विच रेछे ॥ जीणपुरसाको घमी १।समे २।सणोंहोजो चोथोसणो केवलीपरूप्या धर्मनोते धर्मकेवोछे॥ त्रसथावर सुक्ष्म वादर॥पर्याप्ता॥अपर्याप्ता एकेंद्री॥ बेंद्री तेंद्री॥चोंद्री॥इत्यादिक॥सर्वजीवत मांही॥हणवोनही॥३ ॥कारण ३ जोगथी॥एहवो केवलीज्नाषित दयामे धर्मजांणवो॥तेसास्व तो॥नित्यसास्वतोछे॥प्रधानछे॥निकलंकछे करमसल्यको काटणहार॥ १७॥ज्नेदेसंजमरूपना। वायकरी मोक्षरूपी पाटणके पोचावणहार॥ज्रगत पम्ता ज्नवजीवनें धरीराषे॥ माथाना मुकुटसमान॥ तेधरम ॥ अतितकाल । वर्तमानकाल ॥ आवताकाल ॥ तिनकालेसास्वतोछे एधर्मविराधी ॥ अनंताजीव शसारमध्येबुड्या । बुम्हे ॥बुम्हसी ॥ दयाधर्म अराधि ॥ अनंताजीवतरया ॥ संख्यातातरेछे॥ अनंतातरसी एहवोचोथो सरणो दयाधर्म नोपमीवजुंछु ॥ घमी २ । पले १ । समे २ । होजो ॥ इतिचोथो सर्णो ॥ हवेवाराव

त समगतनी । आलोवणालिष्यते । प्रथम समगतनीआलोवणकहेछे अरिहंतदेव । गु-
रूसुसाधु। जिनप्रणीतदयाधर्म ॥भावतोसमगतपालु ॥ द्रव्यतोलोकीकमिथ्यात तेकहेछै ॥
लोकिक देवगत ॥ गुरूगत धर्मगत पर्वगतमिथ्यात ॥ ए ४ भेद ॥ लोकीकदेव ॥ हरिहर
ब्रह्मासुर्यइंद्र ग्रह ।गोत्रज ॥ गणेश ॥ दिगपाल । क्षेत्रपाल कंद कपिल बुध हनुमान य-
क्षादिदेव । तथा ॥ मंमी । चंमी भवानी काली । अंबा ॥ श्रीमाता ॥कुकमेश्वरी ॥भारती
ज्वालामुपी अजारी॥ वाराही ॥ भेसाकवाली ॥ शीतला ॥ बोदरी ॥ सरस्वति ॥ कम
क्षादिक ॥ मुक्तिदायकभणी अराधिए ॥तेलोकीक देवगत मिथ्यात चरकपरिव्राजक का॰
ली ॥ कपालिक द्वीज तापसादिक संसार तारकभणी वादियमानीए तेलोकीक। लोको-
तरदेवगत मीथ्वात ॥ जिननहीजेतीर्थंकर नामधरावे । गोसालादिक । तेनेदेवाधिदेवमा-
न्या ।तेलोकोतर पासथा उसन्ना कुसीला ससत्ता अहाछंदा । निन्हवद्रवलिंगीतणीविपे-
जेगुरूबुधी ॥ तेलोकोतरमी ॥ गुरूआश्री । जांणवो ॥ ए ४ मीथ्यात ॥ एश्रीसमगतना
पाचअतिचारसाधु ॥ सका कंखा । वितिगिछा परपाखंमीपरसंसा परपाखमीसंथवो ॥अ
र्थ॥संका जीवाजीवादिक नवपदारथमाही एकोपदारथतणो मनसंदेहकिधोहोए अथवा

देवगुरु धर्मसिद्धांततणो संदेह किधोहोय अपर धर्मतणो अभिलापकिधोहोय अथ
वा सर्वधर्मसरीखा लेखव्याहोए धरमतणा फलनोसदेह किधोहोए तथा मलमलिन गा
त्र तपोधना देखीने डुगंछा कीधीहोय परदर्शनीसु संस्तवपरीचय ईष्टगोष्टी अंतरंग प्रिती
भक्तिनदान अलापादीक किधाहोय परतीर्थिपासे सेवसपणे गयाहोय स्नान दानहोम म
होछवकीधाकरायाहोय संक्रांतिग्रहण स्नानदानादिक समाचारीयाहोए होलीपम्ली पुं-
जीहोए पीपली तुलसी पाणीघाल्याहोए नदी कुंम्बवाणारसीदिनगरीदिक नगरी। आबु
गीरनार गोम्मीचो सत्रुजो समेतशिखर मागी तुंगीआदिधर्म तिर्थसर्दह्याहोए आदितवार
एकादशी भणीतपकिधोहोए कन्याहल लिधोहोए निलीतुलछी परणावीहोए सावसंव-
छरी जीम्याहोए जात्राजाणी मानताकीधीहोए आज पम्वा भाइविज जमराबिज आ-
खातिज गणगोरी तिजविनायकतथा ऊभीचोथ नागपाचम कुवाराकीपाचम जुलणाछठ
सीलसातम चेत्रतथा जन्म अष्टमी द्रोअठमी महानवनी जन्मनोमी रामनोमी अहवा
तथा विजी धुपदशमी भिमतथा निर्जला मोनएकादशी वछबारसी धनतेरसी शिव
चउदशी पितृकी अमावस्या माहीपुर्णीमा प्रमुख तथा शंक्राति ग्रहण-व्यतिपात वेधृत

प्रमुप लोकीकपर्वसप्तमी अने अष्ठमि चउदसी अमावस्यापुर्णिमा पजुसणा परवतणी तिज चोथ पाचमटाली अनेरेदीवसे पूर्वबुद्धिय तपकिधोहोए अने जिनवचन विराध्यो होए अनेरो श्री समगतविषे जेपक्ष मास माही चोमासी संवछरी संबंधिसुक्ष्म बादर अतिचार लागोहोए तेसर्व मन वचन कायाए करीने मिछामि डुक्कडं ॥ इतीहिवे १२ वृत आसरी ॥ १२ ॥ वृतमाहि पेलो प्राणातिपात विरमण वृत स्थुलवेंद्रीयादिक त्रसजीव निरापराध उपेतकरण ॥ संकल्पीकरी ॥ हणवानहीं ॥ एप्रथमवृतना ५ अतिचार सोधु ॥ बंधवहे छविछेय। अइचारे भतपाणी वोछेय ॥ अर्थ ॥ दोपद चोपदप्रते। निवमबंध बांध्याहोय रिसवसे ढोरस्वांन मीनाम्हा दास दासी कुमार छेरू वाछरूने कर्कसपणे गाढो प्रहार मारयोहोय करण कंबलादि तणो छेदकिधोहोय चोकमी कुंभली पाभिहोय बलीवरदन घाल्याहोय पोठीयामे अतिचार भरयाहोय कुटंबनायक डुंते ॥ भुपा तरस्या ग्लानवृद्ध छेरू सार संभार न किधोहोए लहणा सारू धरणादेई जीमवानहीं दीधोहोए ॥ सुलीयाधान दलायाहोए ॥ निलफुलनी जयणा नकिधोहोए ढाचा माड्याहोप कोठघालीहोए पुंजेअंगनी दीधीहोए ॥ दिवोउघाभो मुंक्योहोए ॥ सुंल्पा छकमा फमा

या तथावाल्याहोए ढांणा अणपुंज्या पलेव्या वाल्याहोय ॥ वासीलीपणो किधोकराव्यो
होए ॥ आपोफल दांते नांज्योहोए तम्के मांकणनांष्याहोय ॥ माढरहणवा धुवोकिधो-
होए ॥ रात्रेलान किधोहोए ॥ घरनामनुष्यांने जयणाविषे सीखामणनही दीधीहोए अने-
रो एपहिला वृतके विषे ॥ दोषलागो होयतो ॥ मिछ मिछुकडं ॥ १ ॥ अथ ॥ विजोस्थु-
ल मृषावाद विरणवृतना ॥ पंचभेद ॥ कन्यालीए ॥ गोवालीए ॥ भुनालीये ॥ नासावहा
रे॥कुम्संखिजे॥ए३ मोटिकाकुम्॥आपणेकाजे॥स्वजननेकाजे धरमनेकाजे॥मुक्तिनेकाजे
कुडो बोलवानात्याग ॥ सुक्ष्म ॥ अलिकतणी जयणा ॥ एडजा थुल मृषावादना पांच अ-
तिचार सोधे ॥ सहस्साभरकाणे ॥ रहस्साभरकाणे ॥ सदारामतभ्नए ॥ मोसोवएसे॥कुम्
लेहकरणे ॥ हारते फिटते कुणेप्रते ॥ कुडोआलदीधोहोए ॥ बेजणाएकाते मित्र मैत्रता
देषी ॥ कहेमे जाणीयो ॥ तमेराज विरूद्ध चितव्योछे ॥ इमभ्नणीयोहोए ॥ कलत्रमित्र
तणोमंत्र ॥ अनेरा आगले कह्योहोए ॥ मृषा सिद्धांत तणोकुडो उपदेशदीधोहोय ॥ त-
था अनेरापासे ॥ कुडो बोल्याव्योहोय ॥ कुम्लेषलिखायाहोय ॥ मोसोभेद कीधोहोय ॥
कुमीजंमी कुमीगपलगाविहोय ॥ तथाकोइसेषेदो झगडो मांम्योहोय ॥ तेफलाणोनो

धन राषीलीधोठे॥इसो बोल बोलीयोहोए॥अनेराए बिजाव्रतमे॥दोपलागोते मिछामिडुकडं॥ ॥ ३ ॥ तिजोथुल अदतादान विरमण सचित अचितराज निग्रहकारीयो परायो अण दीधोलेवानियम सुक्ष्म तृणाइंधण पंथपतित विवहार निउगी दाण चोरी जथणए तिजा थुलतेना पांचअतिचार सोधु तेनहरूतकर पओगे विरूधरे जायकम्मे कुडतोले कुडमाणे तंपमीरूवग ववहारे तेनादूतजाणी करी चोराइ वस्कलीधीहोए ॥ चोरने सबल आप्योहोए ॥ चोरीनीवस्तु वेची वेचाविहोय ॥ विरूद्ध राज कामाकिधोहोय॥ अनेरेदीधे अनेरो लाधोहोय ॥ भलीवस्कवताईने पोटीदीधिहोय नवीवताइ जुनीदीधीहोय ॥ नाणोपालटो कीधोहोय । भुलीगयोते पाछो न दीधोहोय ॥ अनेराइ अतिचार लागोहोयतो ॥ मीच्छामि डुक्कडं ॥ ३ ॥ चोथो सीलव्रत ॥ यथासक्ति ॥ सदारासंतोष ॥ परदाराविवर्जित॥ एचोथाव्रतना ॥ ५ ॥ अतिचारसोधु ॥ इतरिय परिगहीयागमणे ॥ अपरिगहीयागमणे ॥ अनंगकिडा ॥ परविवाहकरणे ॥ कामभोग तिव्राभिलासे ॥ अर्थ ॥ थोभाकाल द्रवदेइ राषी ॥ तपवय अणपरगमी ॥ तेसाथे गमणकीधोहोय विधवा कुमारी गणका साथे गमण किधोहोय॥स्वदेहपरदेह कामकुचेष्टा किधीहोय ॥ पराया विवाह नात्रा जोभाया

होय ॥ तथा अनेरानी मांगपरणीहोय ॥ रात दिन विषयअभिलाष किधोहोय ॥ पर्वति-
थी ॥ सीलभंग थयोहोयतो ॥ मिच्छामि डुक्कडं ॥ ४ ॥ पांचमोपरिग्रह प्रमाण ॥ नव
विध ॥ खेतघर ॥ हिरण ॥ सोवण ॥ धनधाने ॥ दोपद चोपद ॥ कुविय धात इत्यादि
क ॥ प्रमाण किधोहोय ॥ तथापरीग्रहकारणी मोटा । आरंभकिधोहोय ॥ आहट दोहट
धस्याहोय आपणो परिग्रह ॥ पुत्रपुत्रादिक तणोकरी ॥ आपणेकाजे आएपोहोय ॥
परीग्रह प्रमाण लिधोनहोय लेइनेपढीयो न होय ॥ पढीने विसारयानहोय ॥ विसारी
ने संभारयो नहोय । अनेरोइ सुक्ष्म अतिचार लागोहोए ॥ तोमिछामि डुक्कडं ॥ ५ ॥ हि
वे ॥ छगोदिशिव्रत त्रिविध ॥ उर्द्धदिसिवय अहोदिसीवय तिरयदिसिवय एछादिशी त्र
तप्रमाण अतिक्रम्योहोय एकपखाभुमीका लंगीकरी विजापखा वधारीहोय लोभलगे
अति विषमपंथे वासोहोए अनेराइ सुक्ष्म अतिचारलागोहोए ॥ तोमिछामि डुक्कडं ॥ ६ ॥
हवे ॥सातमो उपभोग परीभोग व्रत दोयभेद भोजनआश्री वैपारआश्री आहारआश्री
अनंतकाय सुरणकंद वज्रकंद आदोहलद लसण गाजरमुला आलु पीमालु सकरकंद
आददेई स्वादहोए सचित अहारे सचित्ततणो नियमलिधे अविकोस चित लिधो

होय सचित प्रतिबंध रायण मुपमाहीघाली नीकालीहोय वृक्षतणो गुद तत्कालउचेटी अचित बुधी अहारियोहोय अपोश्रुद्धि राजगरो पासिध्दी पोलीमाहीलो कणपादोहोय डुम्योसही ओलायुंतथा अचितबुद्धी अहारियोहोय तुगेसधि कुपेली आंबिली मोरकुंप- ली सुक्षमकेरीतणो भक्षकिधोहोय अणगलपाणी पिधोहोय रात्री भोजन किधोहोय अं धारे जिमवाबेठाहोय १ ४नेम साजसवारेचिंतव्या नहोयवृषाकालेजुनो पापरोपारक पजुर आहारियाहोय फुलसहीतरोटी प्रमुष पाधोहोय अनेराई सुक्षम अतिचार लागोहोयतो॥ मीछमी डुकरूं हवे कर्मादान॥कर्मतलार गुसीपालप्रमुष कठोरकर्म अने आजिवकाथी कुवेपार परिहरी॥१५॥अतिचार सोधु ईगालकर्मी लाभ्राअर्थी राधीणी लीहला सोनाराठं ठारा कंसारा।भाम्भुंजा।इंटवहा नीमाह धातुमणादिक॥अग्निकर्म किधोहोए।वनकर्मि ॥ कणकंपास।फुलफल ।पानतणो विक्रीयाकिधोहोए॥दलावणो॥ लोटावणो मंमावियोहोए ॥काठवढाव्या॥फमाव्याहोए॥शकटकर्मि गाढावाहणी धुरी उधिपतणो वेपारकिधोहोए फोम्किकर्मि॥ आजीवकार्थे ॥पांणी पाषाण ॥माटी॥मुरम खणाव्याहोए॥ करसणकिधो- होए ॥ दंतवाणीजे ॥ आगरेजइ ॥ गजदंत चमरू कस्तुरी ॥ नखरोम ॥ चर्मादिधोहोए

लखवाणिजे । लापगुली ॥ मणसील ॥ धाजमी ॥ मजन्ना । तुरी ॥ साजी । साकरोम ॥
न्नांग ॥ साबु ।कंदादिकवस्तु चोरीयाहोए ॥ रसवाणिजे रसमद्य ॥ मधाग । मधु मांख-
ण ॥ घी तेलादिकनो वैपारकिधोहोए ॥ विसवाणिजे ॥ विष हल हथीयार ॥ यंत्र लो-
ह हथीयार ॥ कागसीप्रमुप ॥जीव घातकवस्तु वेची वेचावीहोय ॥ केशवाणीजे ॥ दोपद
चोपदतणो विक्रयकिधोहोय॥ तथा उन चमरनो वेपारकिधोहोए जंतुपिलनकर्म ॥ अर्ह-
द पावद ॥ कोल्ह ॥ लोढणी ॥ उपल ॥ मुंसल ॥ घट्टी घाणीदिक ॥ कराव्या ॥ तथा-
वेपाराकिधोहोए ॥ निल्लंछणकम्मे ॥ दोपद ॥ चोपद ॥ आंक ॥ मांन ॥ पाछणाकर्ण ॥
कंबला ॥ मुखछेद ॥ नासावेधादिक कीधोहोए ॥ दवगिदावणया ॥ चारोअनंतणी घणी
निपत्तिनणी दवदिधो॥ देवराव्योहोए सर ॥ शापिल । खेमावियाहोए ॥ क्यारागहाविया
होए द्रह तलाव फोमाव्याहोए ॥ असतीपोपणया ॥ श्वान बिडाल ॥ उष्ठप्रणामे पो-
ष्याहोए ॥ तथा दोपद चोपद॥ पोषीने वेच्याहोए ॥ अनेरावक्र ॥ पापवेपार किधाहोए
इणीपरेकरमना ॥ १५ ॥ अतिचारलागोहोय ॥ तोमिच्छामि उक्कं॥आठमो अनर्थादंड-
वीरमणवत ॥ अवझाणायरीये ॥ अर्तध्यांन ॥ रौद्रध्यान ॥ अंतरमोर्चे ॥ उपरांतधारचो-

होए ॥ अनेवयर ॥ कल्हवाद ॥ अबोला ॥ रूसणा ॥ सरापदेणा गालदेणा ॥ निकें
स वचनतणोध्यानते ॥ अपध्यानाचरीतु ॥ तथाझीलणो ॥ गंटणो ॥ हिंचवो ॥ जुवा-
होडवाद ॥ विकथा हास्य रस पुंन प्रभावमोदलिने ॥ नाटकगीत ॥ फाग ॥ चावर ॥ खे-
लवाभी ॥ वेसकरावबा॥ अनेमाल माहिष ॥ श्वान ॥ कुकमा ॥ जूझाडवा ॥ रोगश्रममु-
कि ॥ आघरित सोइरेवो ॥ निरथैं ॥ पान फुल फलपान ॥ तृणादितोडवो ॥ एप्रमाद-
चारितु ॥ तथा दाक्षणपाखे ॥ कोसी ॥ कुदालो ॥ पावमो ॥ धनुष । खडग अग्निदेणी ॥
तेहिंसाप्रदान ॥ तथा घोडा कलासीखावेफेरे ॥ घेतखेडे ॥ गाडोहांके ॥ डकांनमांभे ॥ इ-
सोजेबोलवोते पाप उपदेशकहिये ॥ए४ ॥ अनर्थादंमपरहरीए ॥ ये ठमाअनरथदंमना ५
अतिचारसाधु ॥ कंदप्प ॥ कंदर्पलगे सविकार वचनवोल्याहोय ॥ कोकुय ॥ भंभचेष्टा
मुख नयन विकारकरी लोकहसावियाहोय मौखोरीय ॥ वाचालपणे ॥ पराइ निंदा ॥ल-
माई ॥ मर्म ।मोसोबोलीयाहोय संयुक्ताधिकरण ।उखल ॥ मुसल ॥ घटी ॥ घाणी ॥ सि
ला ॥ लोटी । धनुष ॥ बाण ॥ मेलि मेलायोहोय ॥ स्नानभोजनपहेरवे॥ ओढवे सुर्ग-
किधीहोय ॥ तथारातेमाथो॥ गुंथ्योगुथायोहोय लिपने करचो कराव्योहोय ॥ करकश ॥

अशुभ वचनबोल्याहोय ॥ अनेरोइसुक्ष्मअतिचारलागोहोयतो ॥ मिछामिडुकरूं ॥८॥ ए
तिन गुणवृत॥हवे ॥ चार सिक्षावृत ॥पेलो समायकवृत ॥ समो राग द्वेष॥रहित॥समभाव
किजे ते समायकवृतना ५ अतिचारसोधुं समायककिधे आर्तरौद्र ध्यांन चितविमा
णतें मनडुपणीहाणे किधोहोय ॥ वचनेकरी । जाव आव ले दे आणमुके इत्यादि साव-
द्य । वचन बोलाणोहोय ॥ उघाडे मुखे बोलाणोहोय॥ पडिलेह्या॥प्रमार्ज्या विनाहाथ प-
ग हलाव्योहोय ॥ अतिवेला समायक नहीकीधीहोय ॥ करीने भुलानोहोय ॥थीतआ-
याविना पारीहोय कण कपासीया ॥ फुलफल ॥ लुण माटी पाणी ॥ पुरप अग्नितणो
संघटोकिधोहोय ॥ निंद्राविकथा प्रमाद किधोहोय ॥ सचितने संघटे ॥ इरियावही प-
डिकमीनहोए ॥ अनेरोइ सुक्ष्म अतिचारलागोहोय ॥ तोमिछामिडुकरूं ॥ ९ ॥ हवे ॥
दशमो देशावकाशिकव्रत ॥ छठोदिशिवृत ॥ जेदिसितणो प्रमाणकिधो ॥ तेदिन२प्रते स
कोचिए। अनेराइ सर्ववृततणा नियमसकेलिय । तेदेशावकाशिक कहीए ॥ एदशमावृ-
तना पांच अतिचारसोधु ॥ आणवाण पठगे देशावकासीक कीधे ॥ निर्मीभुमिकाना बा-
हिरऊंतो ॥ जिणपासेवस्त आणाविहोय ॥ अथवा कोईवस्तु मोक-लीहोय ॥ साद-

वणा

करी खासीजकारोकरी ॥ गाम्हि गुणेरूपदेखाम्ही काकरीनाखी आपणपोठतो जणाव्या होए अनेरो दशमावरतमे दोषलागोहोयतो ॥ मिछामि डुकडं ॥ हिवे ॥ इग्यारमो पोषधव्रत ॥ चार अहारना पचखाण । स्नानादिक ॥ सुश्रुषाना पचरकाण सर्वथाकुसीलना प०।सर्वसावद्यनोप० छकायपोषवोते पोषधव्रत तणा ५ अतिचारसोधु ॥ पोषहकिधे ॥ सिज्झाउपाश्रय संथारा । संथाराभुमिका ॥ अनेमल मुत्रतणी ॥ भुमिका दिवसछते ॥ पडिलेह्या दृष्टीजोइनहोए ॥ अथाविरूयपरि ॥पडिलेव्याहोए ॥ प्रमारज्यानहोय ॥ विरूइपमारज्याहोए ॥ उपवाससुधनकिधोहोए ॥ च्यारआहारमाहि कोइषंछयोहोए ॥ अब्रह्मचर्य गृह ॥ व्यापार वंछ्योहोए ॥ पाछला समारव्याहोए ॥ अनागत प्रार्थियाहोए ॥ दिवसे लाबेपगे सुतोहोए ॥ उपायश्रयथी निकलता आवसही ॥ आवतानिसही ॥ पेर रात्र उपरात गाढे श. सब्देबोल्याहोए ॥ अनेरोइ कोइ सुक्ष्म अतिचार लागोहोए ॥तो ॥ तस मिछामि डुकडं ॥ ११ ॥ बारमे अतितसंविभागव्रत तेसाधुने ॥ पारणे तथा नित्यदानदीधाविना नजीमे तथा भावना अवश्यभावी ॥ विना भावनाए जीम्योहोए ॥ दान १४ प्रकारना फासुक एषणिक ॥ तेव्रतना पांचअतिचार सोधुं ॥ सचित्त निरकेवणया

सुजतो अन पानादिक ॥ अणदेवानी बुद्धिये ॥ सचित उपरे मेल्योहोए ॥ अथवा सचि
ते ढांक्योहोय ॥ कालातिक्रम ॥ वेलाटाली ॥ अनपानतणी निमंत्रणा किधीहोए ॥
आपणीवस्तु परनी कहीहोए ॥ अथवा आलससारू डुजाना पासेथी देवायोहोए ॥ तथा
मान सारू ।डुसरानीसिरमसारू हाथे नदीधीहोय ॥ मछरलगे अनेरातणो दानदेषी ॥ तेनी
सरधाएदान दीधोहोए ॥ अनेरोइ सुक्ष्मअति० ॥ तोमिडः ॥ अपछिमा ॥ मारणांतिक ॥
संलेखणा तणा ५ अतिचारसोधु ॥ इहलोकआश्री ॥ ऋद्धि वृद्धितणी वांछाकिधिहोय ॥
परलोकआश्री ॥ इंद्र चक्रवर्ति तणी आसंसाकिधीहोय ॥ जीवतव्य तथामरणकीवंछाकि
धिहोय । कामभोगतणी प्रसंसा वंछा किधिहोय ॥ अनेरोइ सुक्ष्मअतिचार ॥ तो मिछा ॥
ध्यानका १४ दे अतिचार आलोवुं ॥ तथाज्ञान आचारे ॥ ज्ञानकीकोइ आशातनाकीधी
होए ॥ भणतां गुणतां अंतराय दिधिहोए ॥ जाण तथा अजाण अघोपाछेकह्योहोय ॥
हिणो अक्षर तथा ओछोअक्षर ॥ पदहिण ॥ विनेहीण किधोहोय ॥ मन वचन कायाछा
मे नराख्याहोय हिणेमने घोषाकिधोहोए ॥ अकाले सझाए किधिहोए ॥ काले सझाय नही
किधिहोय ॥ असझाएमे सझाए सझायमे नसझाय कीधिहोए ॥ आसातनाआणीहो

यश्रनेरो. ज्ञानसंबंधी अतिचा. ॥ मिछामिडकडं तथा दरसन नोविपे जे । समगत विरा-
ध्योहोय ॥ देवगुरूने नमस्कारन कीधोहोए ॥ पेला ज्ञोजनकिधोहोए ॥ गुरूने उपगरणे
पग नमाड्योहोए गुरूने खमाव्यानहोय ॥ तोमिच्छा ॥ चारित्रआचारे ॥ ५॥ माहावृत ॥
५ सुमती ॥ ३ गुपती विपेदोपलागोहोए ॥ मि० ॥तपाचारे छति सक्ति पचखांण कि०
करीने ज्ञांग्योहोए ॥ पचपाण पारयोनहोए ॥ नियम अभिग्रह भागोहोए ॥ ७ज्ञेद अ-
भ्यंतर छज्ञेद बाह्यए । १२ ज्ञेदे तप अवसरे साचव्यो नहोए । तो ॥ मि० वियाचारे ७
तिशक्ति छआवशक शुद्धसाचव्यान होए बेवार वंदणाकिधिहोए ॥ काउसग अधिको
ओछोकिधोहोए॥ द्वेषकरता कोइ वार्यो नहोए नवोज्ञणता आगलो गुंणता, सुत्र ॥ अर-
थविचार ॥ पुछता केतो आलस किधोहोए ॥ ७ति सामग्रीये दांनदीधो नहोए धरमिने
साज नदिधोहोए ॥धर्मवर्तनी आपदाज्ञागी नहोय ॥ तेसवि मन वचन कायाए ॥ मी०॥
ज्ञान दर्शन चारित्रमे सर्वथाप्रकारे दोपलागोहोएतो ॥ मि ॥ ० ॥ । ७ लाषप्रथ्विकाय।
७लाषअपकाय । ७ । लाषतेउकाय १० लाषप्रतेकवनसपती काय॥ १४ लाष साधार-
णवनासपतिकाय ॥ २ बेलाषबेंद्री ॥ २ लाषतेंद्री ॥ २ लाषचोंद्री ४ लाषनारकी ॥ ४

लापतिर्यंच ॥ ४ देवता ॥ १४ लाषमनुक्षएवं ८४ लाप जीवाजोणिका जीवकुं । गाथा
खामेमि सव्वजीवे सव्वेजीवाखमंतुमे मित्तिमे सव्वभूएसु ॥ वैरंमज्झ नकेणई ॥ एमसर्व
जिव खमाइने ॥ १८ पापकी आलोवणा करवी तेकहेछे ॥ पेलो प्राणाति पातना २
भेद । द्रव्य ॥ भाव ॥ द्रव्यतो परनी हिंस्या ॥ भावे ॥ आपणीहिंसा ॥ द्रव्यपरप्राणिनी
घातते जीव ६ प्रकारे ॥ पृथ्वीकायतेना । २ भेद ॥ सुक्ष्म ॥ बादर । सुक्ष्मतो सर्वजीव-
नी आगलके असंख्यातमे भाग ॥ अंतरमोतको आउषो ॥ नोपकामें आउषेमरे ॥ केव
लीजदेषे ॥ इमपाच थावरमे जांणवो ॥ हिवे बादर आश्रीकहेछे ॥ प्रथ्वीना अनेकभेद
कालीमाटी । निली ॥ लाल पीली । धोली । पतंग । पांडु ॥ सुधमाटीकी खान ॥ तुरी।
माटीनपान ॥ ऊसनी ।आवुयानी वानीनी।हिरमचनी गेरुनी लुणनी । संचलनीं सीधव
नी । सोनानी रुपानी तावानी कथीरनी । जसतनी । सीसानी । लेहानी ॥ अरणनी । गो
पी चंदननी ॥ सपेतानी ॥ रतननी ॥ परवालानी । पीलीमाटी ॥ हरीयालनी ॥ हींगलु
नी ॥ मणसीलनी लुणनी । सोनागेरुनी ॥ पारीमाटीनी ॥ हीरानी ॥ पापरीयानी । चु-
नीनी ॥ पापाणनी ॥ मुरमनी । फटकनी ॥ अभ्रकनी । पारानी । षंमीनी । सोरठीनी ।

सोरमानी ॥ ॥ गोमीजरतन ॥ रजकरत्न ॥ अंकरतन । फीटकरतन ॥ लोहीतासरतन मकररतन । मसार भुजमोची । इंद्रनील ॥ चंद्ररतन । गोरकरतन ॥ हंसगर्भ रतन पुला करतन ॥ जलकातीरतन सुरजकांतीतरन । वैडुर्यरतन । अरीष्टरतन इत्यादी पृथ्वी का-यनां २ दोभेद । अपजीत्ता । पजीत्ता ॥मी ॥दुजी अपकायाते ॥ उसकोपाणी । हेमको पाणी गमाकोपाणी । धुवरकोपाणी । हरतणकोपाणी सुधोदक । सीतोदक । उसनोदक पारोदक । अमलोदक । तुणोदक । वारुणोदक । पीरोदक ॥ इखुदक रसोदक । इत्या-दीक । अपकायकाजीववीराध्याहोए ॥ मी ॥ हीवेतीजी तेउकाय ॥ अग्नी । अंगारा की मुमरकी । अरचीकी । उलकापातकी वीजलीकी इत्यादीक अपकायाकाजीवव‍ि राध्याहोए ॥ मी. ॥ हीवे चोथी वाउकायतेना नांम उकलीया मंरूलीया गुंजालीया सुध वाए । संवरतवाए । घणवाए । तणवाए ॥ पुर्व । पछम । उतर । दक्षण वीदीसनोवाए ॥ इत्यादीक वाउकायका जीवविराध्याहोए । मी. ॥ पाचमी वनसपतीकाय तेनांमे । रुप । गुछ गुम । लता।वेली तृण।। पवीया । काणा । हरीकाय जलरुहा । इत्यादीक ॥ प्रत्येकव नसपतीकाय ॥ हवेसाधारण आदो सुरण । पीमी । लोम ॥ रतालु ॥ पीमालुं । अरवी

गाजर । मुला । मोगींगा ॥ कसुरया ॥ लसण । हीरली । सीरली ॥ सीसरीली । कंदली असकनी । सीहकना मुसढी । सकरकंद ॥ बजरकंद ॥ इत्यादी अनेकन्नेदछे । हवे ढगी त्रसकायाका ४ न्नेद ते वेंद्री तेंद्री । चौद्री । पंचेद्री वेद्रीते कोडा । कोमी संष सीपपोराजलोष । कीडी लट । महीयर । मोकरा । गीमोला । करम्या । प्रमुष वे द्रीजाणवा । वेद्रीते कीमी मकोमी माकण । धनेरा जु लीष ॥ घमेल उदाई । कंथुवा कान षजुरा कीमता । घोमला । प्रमुष चोंद्री न्नमरां । भमरी । टीडपतंग । माषी । माछर । मांस । बगाइ । वीछुकेकडा । करोल्या । माकडी । कसारी । बाणीया फुंदा । प्रमुषचोंद्री जाणवी । पंचेंद्रीका ४न्नेद नारकी । तर्यिंच मनुक्ष । देवताते नारकीका ७ भेद गमा वंसा सीला । अंजणा । रीठा । मघा माघवइ । तीरयंचका पांचन्नेद । जलचर । थलचर खेचर उरपर भुजपर मनुक्षका ४न्नेद । करमभुमी ॥ अकर्मभुमी ॥ अंतरदीपा ॥ समोछम देवताका । ४ । न्नेद । न्नवणपती । व्यंतर जोतषी । वीमाणीक इत्यादीक । सर्वन्नेद । ५६३ न्नेदछे तेने । १८ लाष ॥ २४ ॥ हजार ॥ १२० न्नेदे ॥ दोषलागोहोयतो ॥ प्रथमप्राणातीपातमे । दोषलागो होयतो । मीछामी डुकमं ॥ १ ॥ हवे डुजो मृषावादतेना २ न्नेद ॥

निश्चेने व्यवहार।निश्चेनयमें जेपरवसतुं पुदगलादीकने आपणीकेणी।तेनिश्चेमृषा।वेवारमृ
षाजे। क्रोधकरी ॥ मानकरी । मायाकरी। लोभकरी रागकरी। द्वेषकरी ॥ हासकरी
भयकरी। कठोरभाषा। करकसभाषा। मीश्रभाषा। हींसाकारी। छेदकारी ॥ भेदकारी
इत्यादीक मृषावादवोल्याहोए। ३। करण। ३ जोगकरीदोष लागो होयतो। मीछामी
डुकडं॥२॥हवे तीजो पापअदता तेचोरीना ४भेदनिश्चे। वीवहार। नीश्चे नयमे॥इंद्रीना ते
वीसवीषे ८ कर्मवरगणा॥इत्यादीक॥परवसतु लेवानीवंछा ॥ तेनीश्चेअदतादान कहीजे वी
वहारमे।९वीधपरीग्रह। तृणतुस मात्र। अणदीधी वसतु लीधीहोय।३ कर्ण ३ जोगथी
तसमी। चोथों सीलवृतते२प्रकारे।नीश्चे। वीवहार।नीजनो स्वभाव ज्ञानादी गुणप्रवृती
वीवहारमे। मनुष्यत्रीयंच देव सवंधी॥ मैथुन सेव्योहोएतो॥मीछामी डुकडं॥ पंचमो परी
ग्रह तेरप्रकारे। नीश्चे। वीवहार। मीश्चेमे करम परीग्रह वीवहारमे। काया भयगर्णपरीग्र
ह॥ ममता मुर्छा परीग्रह सेव्योहोएतो। मीछामी॥ क्रोध मानमाया॥ लोभ। राग द्वे-
ष॥ कलह। अभ्याषण। पीसुण॥ परपरवाद। रता। रत। माया। मोसो। एपाप॥ द
र्व्यआश्री क्षेत्रआश्री। कालआश्री! भावआश्री। अर्थे। अनर्थे। धर्मअर्थे। कामवसे।

इणन्नव । परन्नव । अनेरे अनंतन्नवे । अरीहंत न्नगवंतनीसाषे । त्रिवीधे ३ ॥ मीछामी ऊ-
कर्म ॥ १७ ॥ ॥ मीथ्यात २ प्रकारे नीश्चे व्यवहार। नीश्चेमे ॥ मीथ्याद्रष्टी एसरदैहे ॥ व्य
वहारमें कुदेव कुगुरु कुधर्म । सत्यमाने । तथा ॥ १० ॥ प्रकारका मीथ्यात । धर्मअधर्म
सन्या । अधर्म्मों धर्म्मों सन्या जीवे अजीवे संन्या । साऊ असाऊ सन्या । असाऊ
साऊ सन्या अमगे मगे सन्या । मगे अमगे सन्या । मुते । अमुते सन्या ॥ अमुते
मुते सन्या ॥ इत्यादिक । १८ मो पापस्थांनक सेव्योहोय । ३ कर्ण ३ जोग । अर्थ अ
नर्थे सेव्योहोयतो मीछामी ऊकर्म ॥ तथा इश्वर महेश्वर । ब्रह्मा । महादेव दीहामी ।
सीतला । चोथ । बीजासण । मंमी । चंमी । न्नेरु । क्षेत्रपाल भुतन्नवानी काठका ॥
पीतलका ॥ सोनाका । रुपाका । तांबाका । पाषाणका । गाराका । गोबरका । इत्या-
दीक । देवकरी मान्याहोए तो० ॥ फल । फुल । पाणी । अगनी । धुप ॥ दीप केसर ॥
चंदणादिके । अर्चायाहोय । पुज्याहोय । बुजाया होय । अणमोयाहोय । अर्थे अनर्थे ।
त्रीवीधे ३ करी मीछामी ॥ तथाजोगी । जंगम । न्नेषधारी । नागा संन्यासी गंगागुरू
गयागुरु । कलागुरु । वीद्यागुरु । इत्यादिक गुरु बुधीजांणीने वंद्या पुज्याहोय तो मिछा-

मी० ॥ कुडं । वावमी । सर तलाव । नीवाण ॥ देवरा ॥ मुकरवा । मंजीत । मसीत ॥ चेताली । तीरथजात्रा । मंमी । प्रमुष कराव्याहोंय गयावोहोय । तस मीछामी डुकडं ॥ तथाहिंस्याकारी दानदिधाहोय।धर्म अर्थे। तस मीछामी डुकडं। परभव आश्री नारकीप णे । ती यचपणेते । एकेंद्री । वेद्री । तेंद्री । चोद्री । पंचेद्रीमे जलचरपणे थलचरपणे । खेचरपणे उरपर । भुजपरपणे ॥ देवतामाहे भवणपतीपणे ॥ परमाधामीपणे । जो तषीपणे । वंतर पणे । त्रीजचपणे ॥ १ ९ ॥ देवलोकपणे । ३ कलवीषी । ए । नव- ग्रीवेगपणे ए लोकातिकपणे।५ अथ० मनुक्रमाहे।काजीपणे ।।मुलापणे।कीरपणे कसाइ पणे । पटीरूपणे । भीलपणे । हलालपोर। नाइपणे ।तेली तंबोली। गाधी। माली । घाची मोची।कागीना।छीपाना। रगरेजना। लीलगरना तीरगरना सवणी मणगरना ।हलवाइना । प रीगरना। सीसीगरना। सीकलीगरना। मछीगरना पासीगरना ।वादीगरना ।साजीगरना ड वगरना । कचाराना। मणाइराना । लुहारना। सुनारना ।सलावटना सुतारना । कुंभारना । तुनारना । ठटेराना । ओमना । सीलवरना । चीताराना । पारोमना । हालीना । कसाणा माहे सेडना ॥ अजणाना गेलोताना । पुवारना कलमीना । पातीना । वागवान । मो-

मेवान । दरवान । सरवान । पासवान । चीतावान । कुतावान । लुटवान । कोटवान ॥
वाम्हान फोजदार । डुजदार । तफदार । षेतदार । कावीदार । गोलमदार जमादार नी-
लदार र्हादार । रफदार । मेवना । मेवातीना कानुगाना । वागवानना । चोधरी । पटेल
पटवारीना । नंमारी कोठारी । तेसीलदार । सहणामीणा ॥ गुजरना घाकम अहीरजात
पीजारा।शीणजाराना मार्मवी कोर्मवी । कासीद । हलकारा । उमीदार ॥ चोपदार ॥ अ
गमा । जोगमाना डुमनाट । नोजक । चारण जागाना । कापमीना कालवेल्या । कला
ल । दलाल । फेरायत । कठारा ॥ मजुरया । घसीयारा ॥ षोजा दाई वेस्या ॥ नगतण
कंपनी । हीजमाारावल । नोग । नट नटावा ॥ फाजर । सागीरागी ॥ पेरादी ब्रहाम
ण ॥ पतस्या । जोतषी । गरुमा । मीसर नट । नागरनंदवाण्या । गुजराती सदासेठ
बजाज । पसारी सराप । कसेरा । हाटवाण्या ॥ डुबे । चोबे । नडभुजा तमोण्या वोहरा
नंडसाली । कोठारी । कोटवाल । राजा जुवराजा पातसा वजीर लमराव मुगल । पठा
ण । नीसदना अंगरेज रोहीला । नठारा । मुगराल षारा । इत्यादीक । आरज । तथा अ
नारजना नवकीधाहोय तीणनवे ॥ होंसाकारीठाम ठेकाणा । आसणवेसण शस्त्र वस-

ते। गाम नगर। पेडा गढ कोट। सोनो। रुपो तांबो लोहादीकना आगर सागर ॥
पुर। पाटण। सवस। हाट हवेली। पाई। पास कुमो कुंम्कुमी। वावमी। तलाव स-
रोवर द्रह पाज वाग ॥ वागीचा। रुष कीलो। चोक चोगान। चोहटा। बजार। भे-
ला। नाव झाझा घाणा घाणी लीलकी। कोठा। कोठी जालफंद ॥ पोडा बेडी ॥ भा-
पसी। बंदीषाना। कठंजरा। पींजरा आगल भोगल सांकल तरवार कटारी ॥ भाला ब
रछी। तीर कबाण। नाली। बंडुक। दारु। गोला गोली। वगतर। टोप। कुहामा। व
रछी। छुरी। छुरा। कतरणी। सुई कुसी कुदाला। पावडा पावडी। उपल। मुसल जा-
तण चरषा चरषी। रहट्या। रहटो। चरचा। चरची कुम्भाकुम्भी ॥ रुछता। माागाडी। रथ
बाहल। सेवका सुपपात्र नालकी ॥ पालषी तामजान। तागो। तुंग। इत्यादी-
क हींसाकरी। आश्रवकारी। उपगरण कीधाहोए करायाहोय। अणमोद्याहोय ॥ अरथे
धर्मअर्थ कामवस इणभवे परभवे कीधा। होएतो भगवंतसाषे वोसरे १। मीछामी डुक-
डं। एक प्रकारको असजम। दोवधन। तीन दंड। तीन गर्व। तीनसल। तीन वीराधना
तीनगुपती। तीनरतन चारकषाए। चारसंगन्या ॥ चार वीकथा। चारध्यान। पाचक्री-

या । पांचकामगुण । पांचप्रमाद । पांच आश्रव । पांच महावृत ॥ पांच अणुवृत । पांच सुमती । ६ काया ६ लेस्या सातभेद सात वीसन । आठ प्रवचन । नववाड । नवतत्व ॥ नवनीयाणा । दसधर्म । दस प्रकारसुंड । इग्याराप्रतीमा श्रावककी । बारे पडमा साधुजीकी ॥ १२ ॥ भेदे तप । १२ भावना ॥ तेरे कीरीया ॥ चउदे भुतग्राम । चउदे गुणठाणा । पनरेपर्माधामी ॥ १५ भेदे सीध ॥ १६ सुयगडागअध्येन ॥ १६ । कषाय ॥ १७ भेदे संजम । १७ भेदे मर्ण १८ । अब्रह्मचर्य । १० ब्रह्म चर्य १८ लीपी । १९ ग्याताध्ययन । वीस असमाधीथानक २० आश्रव २० संवर २० । वेरमण । २१ सवलारी । श्रावकगुण २२ परीसह तेवीस अधन ॥ २४ ॥ तीर्थंकर । २४ देव । २५ भावना ॥ २५ कीया - २५ मीथ्यात । २६ । अधेन दसासुत षंधनाम वेवार ॥ २७ ॥ अणगारगुण ॥ २८ आचारकलप ॥ २८ ॥ सीषामण । २९ । पापश्रुत्र । २९ । नीवंध ॥ ३० ॥ मोहणीथानक । ३१ । सीधगुण । ३१ अतीसय । ३२ । जोगसंग्रह ॥ ३१ सुत्र । ३२ । नाटक । ३३ असातना ॥ ५२ । अनाचार ॥ ५२ ॥ प्राण । इत्यादिक । तेमाहे जाणवा जोगजाणयोहोए । छेम्वा जोग छेम्यो नहोय । आदरवा जोग । आदरयो नहोय । अ

नंत अरीहंत सीध्द नगवंतनी सापे त्रीविधे २। मीछामी डुकमं ॥ इती ॥ आलोवणा तिलोकरिखजी कृत समाप्तम् ॥ ॥ ॥

अथ श्रीदशवैकालिक सूत्र १० अध्येन प्रतेक उदेशापिठका संयुक्त १५ सझाय प्रारंन ॥ मेरी २ करतां जन्मगयोरे एदेशी॥जैजि नराया॥ जेजिनवाया ॥ जेसतगुरू जिनने धर्म बताया ॥ जे० १ ॥ नवजन तारक सीव सुख दाणी ॥ परूपी डुवा दश अंगकीवाणी ॥ जे० २ ॥ श्रुति सागर गुणधर जीये झेली ॥ सुत्र रचना रची नय रस केली ॥ जे० ३ ॥ सौधर्मी स्वामी पाटोधर पेहेला ॥ तश शिष्य परथम केवली ठेला जे० ४ ॥ श्रीश्री जंबू गुणनिधि अंबू ॥ नव ताप हरण द्रढ स्वछ सु तंबू ॥ जे० ५ ॥ तशाशिस सफल कियो नर नवजी ॥ परनव सुधारयो श्री परनव ॥जी जे० ६ ॥ महागुण संनव सिज्यंनव नारी ॥ तश्य पुत्र मणक नया अणगारी॥ जे० ७ ॥ पुर्वके माही गणीवर जी बीचारी ॥ आवखा थीतरही खट मासकीसारी ॥ जे० ८ ॥ तब तिणे मनमाही कियो वीचारो ॥ किणविध होयगा नव निसतारो ॥ जे० ९ ॥ ग्रंथ लघु निर्ग्रंथ महतो ॥ मार्गसिध्दात रचनेकी करीसंतो ॥ जे० १० ॥ आतम प्रवाद धी धर्मपनंती

उचार्यो ॥ कर्म प्रवाद थीपींभिखणा सास्चो ॥ जे० ११ ॥ वचन सुधि सत्यप्रवाद थी
धारो ॥ शेष अध्येन सात सूविचारो ॥ जे० ॥ १२ ॥ पुर्व नवमो आचार वथु तिजी
जाणो ॥ वेयालु समे सूत्र थया परीमाणो ॥ जे० ॥ १३ ॥ दशवै कालीक दियो नाम
उचारो ॥ तीन मगल इणमे सुखकारो ॥ जे० १४ आद मंगल प्रभूने नमस कारो ॥
निरविघ्न सास्त्र तणी दूजों धारो जे० १५ अंत मंगलीक थी लहो सुख मुक्ती ॥ सास्त्र
मंगल पद सुणो आगे जुक्ती जे० १६ धम्मो मंगल मुकीठं आदजाणो ॥ नाण दंस
ण संपन्नं मध्य गणो जे० १७ निरकम माणाय वुध वयणे ॥ अंतमंगलिक सोचो दी
र्घ नयणे जे० १८ प्रथम अध्येनमे धर्म परसंसा ॥ इतीयाध्येने धिरज पर अंसा जे०
१९ अन्नाचिर्णको तिजामे विस्तारो ॥ चोथे छकाय तणो हित कारो जे० २० पंचमे
विशुद्ध नीख्या शिक्षाआणी॥छटे मुनी गुण कीरीया वखाणी जे० २१ वचनसुधी सातमे
परधानो ॥ आठमो विचारो आचार निधानो जे० २२ नवमे अध्येने विने मुल दाखे ॥
दशमे अध्येन नीरकू गुण नाखे जे० २३ समचे नाम कहा इहा संतो ॥ अनंत नया
तम वचन महंतो जे० २४ सुत्र समुद्र पार कुण पावे ॥ गगन शशी शोशु देख उमावे

जे० २५ तेसेहू आलसी महा अल्प बुधी ॥ जिना गम की नही पुरण सुधी जे० २६ प्रतेक अध्येन उदेशा विचारो ॥ कहूं निज भाखामे गुरू उपगारो जे० । २७ पाले अराधे भावसुध आणी ॥ तिलोक रीखजी कहे सो वरे सीव राणी जे० २८ ईती पीठका सज्झाय ॥ १ ॥ अथ प्रथमा ध्ययन सझाय प्रारंभ ॥ भाव पुजा नीत कीजीए एदेशी धर्म मंगल उतकृष्ट छे सासतो ए त्रिहूं कालोजी ॥अहिंस्या लक्षण धर्मनो भाख्योछे दिन दयालो जी १ धरम आराधोजी भावसुं संजम सतरे प्रकारोजी ॥ बारे भेदे तपस्या करे ॥ दर्व भाव सु विचारोजी ॥ ध० ॥ २ ॥ चार जातका देवता हरी हर चक्री उदारोजी ॥ धर्म वीपे सदा मनरहे ॥ तिणने नमें वारंवारोजी ध० ३ जीमतरू फूले अली चित्त रली ॥ पीवे सो मकरंदो जी ॥ पिण नही देवे कुसुमने ॥ पोतेभपती आणंदोजी॥ ध० ४॥ तिम मुनी लोक विखे कह्या आरंभ परीग्रह निवारो जी॥भमर भीख्यायरवणीगृहे जो देवे सुध दातारोजी ॥ ध० ५ संजम भार निभाववा ॥ छकारणे करे अहारो जी ॥ हर्षशोक आणे नही ॥ छंभे छऽपरकारोजी ध० ६ दुख नही देवे पर प्राणीने ॥ नवकोटी सु वीचारो जी ॥ गृहस्थ करे निज कारणे भमर जू हे अण गारोजी ॥ ध० ७ मु-

नी वर मधु कर सम कह्या ॥ उत्तम अवसर जाणोजी ॥ डुम पुप्फी अध्येनमे ॥ जग
गुरु किया वखाणो जी ध० ८ सुत्र प्रमाणे विध गृहे ॥ सुर विर सिर दारोजी ॥ तिलोक
रीखजी कहे नित जे ज्ञणी प्रणमु मे वारम वारोजी ॥ ९ ध० ॥ इती डुमपुप्फीया झयणं
॥ १ ॥ मघधा धिपश्रेणीक सुखकारी ॥ एदेशी ॥ ए शंशार ज्ञयागरजाणी अहो कंचु-
क जिमछमो ॥ श्री जिन धर्म परम सुख दाता ॥ संजम सुं चित मंभोके ॥ सुगुणा अनु
ज्ञव ग्यान विचारो ॥ होवेज्जु ज्ञव निसतारोके सु० अ० ॥१ ॥ त्रिविध २ त्याग करी
ने ॥ काम ज्ञोग अज्ञी लाखे ॥ पगले २ वीखवाद लपावे ॥ संकलप वस चित राखेके
॥ सु० ॥ २ ॥ वसतर भुखण ज्ञामणी आदी ॥ नहीजीणने वस माही ॥ ज्ञोगवे नही
पीण सो नहीत्यागी ॥ जग तारक दर साईके सु० ३ रिध धणी जिणने वस माई ॥पि
णते नही अनु रीगीते त्यागी जग दीशपयंपं ॥ जाणो महावम्ह ज्ञागीके सु० ॥ ४ इम
सोची समता करता कदा चित ॥ निकले चित संजम घरथी ॥ सोचे वस्तु नही हूं य-
हनो करे ममता अपरथीके सु० ५ ज्ञोग रोग डुख दायक जाणी ॥ काया कोमल प-
णो ठंमो ॥ सीत उसन परीसह सब खमीया ॥ सीव वधु सु प्रीति मंमोके सु० ६ रा

जमती सती रह नेमीना ॥ विकल वचन सुणी जंपे ॥ अति जाजल धग २ ति अगनी ॥ स परिताप तन कंपेके सु० ७ अगधन कुल जातनो फणधर ॥ जाय पडे तिण माहीं ॥ वम्योजेहरनही वंछे ॥ समजो न्याव लगाइके सु० ८ धिकारहो तुज अपजस कामी ॥ असंजम जीतव चावे ॥ वम्यो भोग वंछणो नहीं जुगतो ॥ मर्ण भलो तुज थावेके सु० ९ ॥ जिहा जिहां तु देखसी त्रिया नयणे ॥ अथिर भाव तुज थासी ॥ हरू वृक्ष जिम परू पवन प्रतापे ॥ तीम तुज संजम जासीके सु० १० अंकुश थी जीम गजवस थावे ॥ जिम सति मावत जेमो ॥ ग्यान अंकुस करीने वस लाइ ॥ उनमत गज रह नेमीके ॥ सु० ११ ॥ धर्म खुंटे मुनी थीर करी थाप्यो ॥ दोनु लह्यो सीव वासो ॥ इम जाणी मुनी वस मन कर राखे ॥ छुटे तस गर्भ वासोके सु० १२ सामानपुर्वि अध्येन बे'डुजो॥तुजो भव जन भावे॥तिलोक रीखजी कहे सुझो जिन मारग ॥सो इम मन सम झावेके॥ सु० १३ ॥इति सामान पुर्वि अझयणं॥२॥थेकरज्यो स्याणा धर्म तेवार आखा तीजको॥एदेशी ॥तथा यारस सेलडी आदजिनेश्वरकीयोपारणो संजमधारे ममत निवारे ॥ ७ काया प्रति पाल ॥ ते बावन-अनाचिरण वरजे ॥ जिन आणा उज मालहो

थे० १ आरंभ घे सुणो भवप्राणी ॥धन जे परमे श्वर वाणी आदरे आग्याआदरे आदरेथे० १ आरंभ
कर कीयो अहार उदेसीका॥मोल आण्यो मुनी काज ॥ नित्यपिंम वली साहमो आ-
ण्यो ॥ सो नही ले रिख राजहोथे. २ रात्री भोजन स्नान सुगंध तन ॥ पहेरनही वली
माल ॥ नकरे विजणो रात्रे सो गंध ॥ दे गृहस्थ पातर टालहो ।थे० ३ दान सालानो
आहार न लेवे ॥ मरदन नही करे तेल ॥ दातण मीसी गृहस्थसें साता ॥ तजे चोपमा
दीक खेलहोथे० ४ मुखनही जोवे दरपण माही ॥ छत्र धरे नही सीस ॥ सावद्य ओप-
दी वरजे पगरखो ॥ साचा जेह मुनीस हो ॥ थे० ५ ॥ तेउ आरंभ तजे अहार से-
ज्यां तर ॥ बेठेन माचे पलंग ॥ विन कारण गृहस्थ घरे नहीबेठे ॥ टाले उगटणो अं
गहो ॥ थे० ॥ ६ ॥ वेयावच गृहस्थकी करेनरीपजी ॥ जात जणाइ अहार ॥ मीसर
पाणी वली डुखआयां ॥ सरणो न वंछे परीवार हो ॥ थे, ७ ॥ मुलो आदो खंम सेलमी
कंद मुलफल वीज ॥ संचला दिक पंच लूणआददे ॥ तजे सचेत सब चितहो ॥ थे०
८ ॥ सोभा कारण वस्त्र धुप धोवण ॥ वमण वस्ती कर्म जेह ॥ विरेचन अंजण दंत प-
खा लण ॥ सरीर सश्रुखा तेह हो ॥ थे ॥ ९ ॥ इत्यादिक अना चिरणटाले ॥ निगरंथ

संजम धार ॥ उग्र विहारी आश्रव वर्जे ॥ खट काया सुख कारहो ॥ थे० ॥ १० ॥ उ-
स काले आतापना लेवे ॥ सीत काले सहे थंम ॥ चोमासे थिर तन तप धारे जेन ध-
र्मका मंम्हो थे ॥ ११ ॥ सहे परिसा मोह हटावे ॥ दुष्कर किरिया धार ॥ केइक पावे
सर्ग तणा सुख ॥ केइक मुगत मझार ॥ थे० ॥ १२ ॥ खुमीयार नामा ध्येन तिसरो ॥
दाख्यो मुनी आचार ॥ जेपाले सूध तिलोकरीख तस ॥ प्रणमे वारंवार थे० ॥ १३ ॥
इती खुमीयारझयण ॥ ३ ॥ ६३ ॥ मानव जनम २ रतन तेने पायोरे ॥ एदेशी ॥ श्री
जीन धर्म २ को सारोरे ॥ खट काया वगारो ॥ श्री० ॥ ॥ पाटो धर श्री सौधर्मा
स्वामी २ जंबु पुछे तिणसु सीर नामीरे ॥ चोथा अध्येन मझारो ॥ किस्पोछे अधीकारो
॥ कहो तसविस तारो ॥ श्री० ॥ १ ॥ इमसुणीकहे जिमप्रभूफुरमाये ॥ तिमकहू तु-
जसु सुणवायोरे ॥ प्रथवी वलीपाणी ॥ तेउवाउ वखाणी ॥ वनस्पती तसठाणी ॥ श्री
२ ॥ निजआतमसमकहीछइकाया ॥ सुखवछक प्रभुदरसायारे ॥ सवजीवणोचावे ॥
दुखसु थररावे ॥ आगम दरसावे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ इम जाणी त्रिविध २ भवप्राणी ॥ छ-
काय रक्षा सुखदाणीरे ॥ क्रोधलोभ भयहास्या ॥ वसमत बोलो भाखा ॥ सतवृत सुख

खासा ॥ श्री० ४॥ गामनगरने अल्प बहूगेंटो मोटो ॥जाणों अपत सबखोटोरे ॥सुरनर
तिरजंचो ॥ मइथुनथकी वंचो ॥ त्यागो यहपरपंचो ॥ श्री० ॥५॥ अल्प वड्ऊगेंटामोटा
सचेतो॥मिसरवली अचेतोरे॥ परीगृह दुखकारो ॥ ज्ञरमावे शंशारो ॥ करिय परि हारो ॥
श्री० ६ ॥ असणादिक ज कह्या चउअहारो ॥ निसत्रोजन परिहारोरे ॥ एहखट वृतसुख
कारो॥पाल्याभव निसतारो॥इम जाणीने धारो॥श्री० ७॥वसतरपातर उपगरणसारा ॥ति
पुज्यो पलेवो वारंवारारे ॥ त्रसथावर प्राणी ॥ जत्न पेखणी ॥ इम आगम वाणी ॥ श्री०
८ ॥ अजेणा सु चाले तथा उभोरेवे ॥ बेठसुवे खावे मुखकेवेरे ॥ प्राणीनीहिंस्याथावे॥
पापकर्म बंधावे ॥ अति कटु फलपावे ॥ श्री० ९ ॥ शिख्यपुछे तबकीण वीधकरीए ॥
गुरुकहे जेणा आदरीयेरे ॥ पापकर्म नलागे ॥ रूंधे आश्रवसागे ॥ अविचल सुख-
आगे ॥ श्री० ॥ १० ॥ परथम ग्यानपछे दयाआणी ॥ काइजाणे जे पाप अनाणीरे ॥
सुत्र सुणपा बोध आवे ॥ आश्रव गेंटकावे ॥ संजम पदपावे ॥ श्री० ॥ ११ ॥ धारे
उतकृष्ट संजम धारी॥ कर्म भर्म करे ग़रीरे ॥ केवलपदपावे ॥ सीव पूर मेसीधावे ॥ सा-
सता सु खपावे ॥ श्री० १२ ॥ इम जाणी वृधपणे पण किरीया ॥ धारी अनंताही त-

रीयारे ॥ ढजीवणी अधीकारो सुध पाले नरनारो ॥ तिलोकरीखजी सोंदिसारो ॥ श्री०
१३ ॥ इति ढजीवणीया ऋयणं ॥ ४ ॥ ॥ सोवण सींघासण रेवती एदेशी ॥ सा-
स्त्र विधि किरीया सुध आदरे ॥ दर्वक्षेत्र विधि जाणरे ॥ गजगति जिम जती सचरे ॥ दे
खी युसरा परमाणरे ॥ बलीहारी जाउरीख चर्णकी ॥ तरसथावर प्रतिपालरे ॥ कोयला
रुखत्नरमी पुंजपर ॥ चालेनही संकानिहालरे ॥ व० ॥ २ ॥ वेश्या वासमे नही सचरे ॥
नवप्रसुत भानगायेर ॥ उनमत वेलहयगज जिहालडें ॥ मुनी दूरवर्जने जायरे ॥ ब०
३ ॥ धम २ चाल चालेनही ॥ हासे बोले नही पथरे ॥ चालेनही महेल देखतो ॥ अंधा
रोघरते तजंतरे ॥ ब० ४ ॥ डुगढणीक अप्रतितकारीयो ॥ कुत्रतिहा मुनीनही जायरे ॥
पडदोकिमाड आग्याविना खोलेनही रीखरायरे ॥ ब० ५ ॥ दोखवया लिसटालने । सुज्ञ
तोले नीखूअहाररे ॥ उपरं तदोस विधिपिडनी ॥ सुणजो काइक अधीकाररे ॥ब० ६॥
दोजणा सामल अहारते ॥ निमंत्रे एकतिणवाररे ॥ तेमुनी सरवरजेसही ॥ वहरेजु गहा
मी जेवाररे । ७ गर्भणी अर्थे भोजनकीयो ॥ जिम्यापहीली परीहाररे उठे सरके वेराव-
णभणी ॥ पूरणमास गर्भपूतनाररे ॥ ब० ८ ॥ बालक धवरावती जूवती ॥ ठेडा वतारो

वेजे वालरे ॥ दानपुन मंगतअर्थे जेकीयो॥ एसहूदेरिखटालरे ॥ व० ॥ए ॥ अल्पखाणो
बहूनाखणो ॥ मूनीजनतेवर जंतरे ॥ तरखाबूझे नही जिणजले ॥ तेनही वहोरेगुणवंतरे
व० ॥ १० ॥ उपयोग विनालेवाणो कदां ॥ परिठवे तेद्दयकंतरे । आणासक्ती स्थानके
आणनी गृहस्थ घरे अग्यागृहंतरे ॥ व० ॥ ११ ॥ विधिसूध अहारकरता कदां । काष्ट-
काकरो निकलंतरे ॥ हाथमे गृही मुके तदां ॥ पिणमुखसुनही थुकंतरे ॥ व० ॥ १२॥
जो नीजस्थान आविमुनी ॥ नसहीसब्दकहंतरे ॥ करेकाउसग इरियावही अतिचार स-
झतेचितंतरे ॥ व० ॥ १३ ॥ आलवेसुध विधि गुरुकने । जिणघर जिणविधि अहाररे॥
सज्झायकरी विश्रामोलेइ ॥ आमंत्रे जे अणगाररे ॥ १४ ॥ व० ॥ साकसहीत रहीत त-
था ॥ अरस विरस जेअहाररे ॥ मधुघृत जिममुनी भोगवे ॥ स्वादन करेलिगाररें ॥ व
॥ १५ ॥ उल्लहाउमुहादाइकहा ॥ मुहाजीवी इमजाणरे ॥ दोइजावेसूत्रगती-
विखे ॥ अनुक्रमे लहे निरवाणरे । व० ॥ १६ ॥ पंचमो अध्येन पिंडेखणा ॥ प्रथम उ-
देशामझाररे ॥ तिलोकरिखजी कहे वरणवसीरे ॥ पालेसो धन अणगाररे । ॥ व० ॥
॥ १७ ॥ इति पिंडेखणा पढमो देशक । ५ । १ । ॥ प्राणी आलखोटाने साधोको न-

ही ॥ एदेशी ॥ पात्रा विखेजे मुनी वेरीयोरे ॥ डुगंध सुरगंध जे कोइ अहाररे ॥ भोग-
वेजीमभुजंगबीलमे धसेरे पीण पठवे नही सो लीगाररे ॥ प्रभु अग्या अराधो मुनीवर
भाव सुरे ॥ १ ॥ जो चाहो भवो दधी पाररे ॥ अलपकालछे डुखदेहीनेरे ॥ सुख अनंत
अपाररे प्र० ॥ २ ॥ कालो कालसु कीया विधी साचवेरे ॥ अण मिलीयाथीशोच-
नकोयरे ॥ चुगो जोलेवे जिहा पंखीयारे ॥ वली भीख्युग मागतो होयरे प्र० ॥ ३ ॥ त-
देखी मुनी नही संचरेरे जिहा परप्राणी नही डुहवायरे ॥ जो करे गृहस्थी आदर वंद-
णारे ॥ वली वली तिण घर नही जायरे प्र० ॥ ४ ॥ वंदेतो हरख आणे नहीरे ॥ वि-
न वंया सु एही कुम लायरे कठिण वयणरीखबोले नहीरे ॥ समता सागर मुनी रायरे ॥
॥ प्र० ॥ ५ ॥ बिना बताया गुरु देवनेरे ॥ भोगवे नही सो लिगाररे ॥ किंचित छनो सो
राखे नहीरे ॥ कपट नकरे अणगाररे ॥ प्र० ॥ ६ ॥ नसा सहीत अहार नही भोगवे
रे जिणथकी सजमहाणरे ॥ पर्म गुरु दोख मोटो कह्योरे ॥ त्याग्याथी होय कल्याणरे ॥
॥ ७ ॥ तपवयरुप अचार वली भावनारे ॥ चोरकह्यापंच प्रकाररे ॥ तेथावे किल वीखी
देवतारे ॥ कह्यो डुरगती अवताररे ॥ ड़ु० ॥ ८ ॥ एलक मुकापणे होवे तिहांथी॥मरी-

णहो ॥ सिंहासणपर बेसे नहीकांइ ॥ पडिलेहणडकरकार ॥ ग्या० ॥ ११ ॥ जावेगो
चरीकाजेहो ॥ विराजे नही गृहस्थी घरेकांइ ॥ उपजे दोख अपार ॥ वृधतपसी रोगीरा-
याहो ॥ जसकायामे सकति नही कांइ ॥ कल्पेत्रिहु अणगार ॥ ग्या० ॥ १२ ॥ स्नान-
वरज्यो जीनरायाहोवडकाया थाये विराधना कांइ ॥ वृतमे लागे अतिचार ॥ सुगंधि
क चंदनकेशरहो ॥ परमेश्वर वरज्यासाधनेकांइ ॥ दढ कर्म बंधणहार ॥ ग्या० ॥ १३ ॥
जे समदम उपसम सागरहो ॥ रतनागररिख बहू गुणतणाकांइ ॥ कर्म खपावणहार ॥
पापपुंज खपावेहो ॥ तनतावेतप जपसाधना ॥ करे कपटक्रोधपरिहार ॥ ग्या० ॥ १४ ॥
ग्यानध्यान रंगरातहो जगनातानातातेम्नेकांइ ॥ शशी समजसनिरमलधार तिलोकरि-
खजी कहे धर्मारथ साधहो ॥ अराधीसीधीकोइसर्गमेकांइ ॥ उपजेजाइ अणगार ॥
ग्या० ॥ १५ ॥ इतिधम्मठ काम ऊयणं ॥ ६ । ११८ ॥ वंचववो लमानोहो ॥ एदेशी ॥
चउन्नाखा जिनवरकही ॥ जाणेरिख बुधवंताहो ॥ दोसिखेदोवरजितकरे ॥ जे
चतुर महताहोके मुनीवरवसबोलहो ॥ जिहा सावध तिहासत्यनही ॥ इस अनुनवतो
लेहोके मु० ॥ १ ॥ सत्य विहार समाचरे ॥ झूट मिसरटालेहो ॥ निर्वंघ अकर्कस असं

देहसा बुधवतगोरा ज्ञालेहोके ॥ मू० ॥ ३ ॥ अतित अनागत वृतमानमे ॥ एकंत नहीं ताणेहो निस्संदेहनिश्चेतजे ॥ जे अवसर जाणेहो ॥ मू० ॥ ४ ॥ निस्सदेहसाचिवली जिणथी जीवणाहो ॥ तेपिण रिववरजे सही जिहापाप बंधावे होके ॥ मू० ॥ ५ ॥ काणो नकहे एकनेंत्रीने ॥ पमग २ रोगीहो चोरने चोर कहे नही ॥ जेमुनी उपयोगीहोके॥ मू० ॥ ६ ॥ मूरख गोलोकूतरो ॥ क्रोधी कपटी भिख्यारीहो ॥ वर्जे इत्यादिक भाखाजे लागे परने खारीहोके ॥ मू० ॥ ७ ॥ दादी पमदादी माता धुया ॥ सखी चोरी कुराणी ॥ इत्यादिक शोलेपर कारनी ॥ वरजेरिख वाणीहोके मु० ॥ ८ ॥ नामगोत्र जिमतेहनो ॥ तिमहीजवतलावेहो ॥ तिमही पुरख नातासहू ॥ वरजे बतलावेहोके ॥ मू० ॥ ९ ॥ मनख मनुष्यपसुपंखी अहो ॥ गाय बेल तरु खेतीहो ॥ भोजन नदी दीक ये सहू ॥ देखी बोले सोचेति होके ॥ मू० ॥ १० ॥ रुमो विवाह किधो इणे ॥ भली निपजी रसोइ होके॥ ॥ वारुछेयेशाक भलो मस्यो ॥ दाखे नही रिखजोइहोके मू० ॥ ११ ॥ भलो हराणो द्रव्य मुंजीनो ॥ भलो गयो धन यहनोहो ॥ एकन्यासुंदरसीरे इमवचन कहेणो होके ॥ मू० ॥ १२ ॥ रुमोकिधोतपपरि पकसीछे ॥ छेयो मोहणी तांतोहो ॥ पंमित मरण क्रो-

धादिक हरचो ॥ भलो कहे तिणवातो होके ॥ मू ० ॥ १३ ॥ भलो थयो कर्मखाजी-
थयो ॥ साधु किरिया भलेरीहो ॥ इत्यादिक भाखा वदे वली । जिणमे वुध गहेरी हो
के मू० ॥ १४ ॥ आवो जावो तेमीलावो ॥ उठोवेठो खावो पीवो हो ॥ इत्यादिक मु-
नी जंपे नही ॥ जाके अनुभव दीयो होके ॥ मू० ॥ १५ ॥ करजो सामायक पडिक-
मणो ॥ सुणजो सूत्र प्राणी हो ॥ पालो दयादेवाणप्रीया ॥ बोले मृदू सतवाणी हो-
के । मू० ॥ १६ ॥ देव मनुष्य त्रियंचमे ॥ होवे कलेस लडाइ हो ॥ हारजीत अमुका-
तणो ॥ चिंतें नही मनमाइहोके ॥ मू० ॥ १७ ॥ वायु वृखा सीत उसनता चढे नही वृ
घिहाणी हो क्रोध लोभ भय हास्य कारणो ॥ रिख बोलेन वाणी होके मू० ॥ १८ ॥
सूवकसूधी विचारीने ॥ भाखा दोषनि वारी हो ॥ कषाय टाले पाले दया ॥ कर्म शत्रु प्र
हारे होके ॥ मू० ॥ १९ ॥ केवल लेइसीवपूर लहे सुवकसुधी प्रभावे हो ॥ तिलोकरि
खजी कहे अराधिकसदा ॥ तससीसनमावेहोकें मू० ॥ २० ॥ इति सुवकसुद्धि ऋयणं
॥ ७ ॥ दया धर्म दीलमाही भावेरे । एदेशी ॥ मुनी जिन आग्या आराधोरे ॥ निजा
तमकारजसाधोरे ॥ आचारनिध्याननेपामीनिजी ॥ वरते जिम अणगार ॥ सुण

जंबु किरिया न्हलीजी ॥ जंपी पर्म दातारमु॰ ॥ २ ॥ सूक्ष्म धुंवर फुल कंथुबाजी ॥ किमी नगरा दिक उतंग ॥ फुलणखसखसादिक बीजसोजी उगता अंकूरा अंग ॥ मु॰ ॥ ३ ॥इम्म किमी दिकना कह्याजी ॥ येअष्टसुक्ष्म जाण दया पालो गाढाउपयोग सुजी ॥ पम्लिलेहणापरीमाण मु॰ ॥ ४ घर २ फिरे रिखगोरीजी ॥ देखे सुणे बहुका न ॥ थीरराखेनीजआतमाजी ॥ तपसंजमसावधान ॥ मु॰ ॥ ५ ॥ थोडो २ अहे अहार सोजी । लूखवृती अणगार ॥ उणोदरी अहार न्हपतारहेजी ॥ कोधनकरे लि-गार ॥ मु॰ ॥ ६ ॥ देहे दूख दिधा संपजेजी ॥ महासुख कह्यो वितराग ॥ चंचल नही तीन जोगसुंजी ॥ निरमल चितमह्य न्हाग ॥ मु॰ ॥ ७ ॥ अथीरजितब जाणनेजी ॥ धर्म धारे तजी न्होग ॥ अवसर जाण मुनी वरूजी संजम माह्ये आयो-ग ॥ मु ॥ ८ ॥ जिहां लगे जरा पिडे नहीजी व्याधीन अंग वढंत इंद्री बलहीण होवे नहीजी ॥ तिणपेली धर्म चढंत मु॰ ॥ ९ ॥ कोधसु नास प्रिति तणो-जी ॥ मानथी विनेगुणजाण ॥ मायाथीनास मित्राइनोजी लोभ्नेसकलगुणहाण ॥ ॥ मु॰ ॥ १० ॥ क्षिम्याथी कोधजावे सहीजी ॥ विनयथी मानहणाय ॥ कपटाइ

सरल सन्नावसुजी ॥ लोन्नसंतोषथी जाय मु० ॥ ११ ॥ चउगत वृक्ष पुष्टीहोवेजी ॥
कखायको जलसिचाय इमजाणी चारी निवारजोजीश्रीगुरु ञ्गतमनाय मु० ॥ १२ ॥
निद्रा हास्य विकथातजोजी ॥ सज्ञायध्यान धरंत ॥ बहूसुत्री सेवाकरेजीगुरु विने अधि
कसाधंत मु० ॥ १३ ॥ नियाकरे नही कोइनीजी ॥ बोले विचारीबोल ॥ डवादश अं-
गखिल विकदाइजी ॥ नही करे हास्यकितोल मु० ॥ ३४ ॥ जोतखनिमत ञारवे न-
ही जी ॥ रेवेनिर ववथान इस्त्रीपसु वरजीत सहीजी ॥ नारी कथासुणे नही कान मु०
॥ १५ ॥ कुकमी कावाल बिलायसुजी ॥ डरे जिमनारीथीसंत ॥ चित्रामनदेखेतेहत-
णोजी ॥ ब्रह्मचारी गुणवंत मु० ॥ १६ ॥ हस्तपाव कर्णनासिकाजी छेदाणा वृधनार ।
तेहवीपण ब्रह्मचारीतजेजी ॥ वलीसोन्नासरस अहार ॥ मु० ॥ १७ ॥ जिणसरधा-
ये निकलेजी पालेतिमजावजीव ॥ साहीसंघासंघजेह्वाजी ॥ कर्मासुझूक्के अ-
तीव मू० ॥ १८ ॥ अगनीसुधर्मीनिरमलकरेजी ॥ रुपाने जेमसुनार ॥ तिमकर्म खार
करे वेगलोजी ॥ तपस्या अगनप्रचार । मु० ॥ १९ ॥ केवल लइ सिवपद ग्रहेजी ॥
चंद्रजो सोहे अकाश ॥ आचार निध्यान अध्येनमेजी ॥ तिलोकरिखजी कहे खुलास॥

मुं० ॥ २० ॥ इतिआचारपाणिहिज्झयणं ॥ ८ ॥ १५८ ॥ श्रीजीनमुजनेपारउतारो ॥
एदेशी पदकी चालमे ॥ रेभाइ विनयधर्म सुखदाइ ॥ तिणसुकमी रहेनहेकांइ रेभाइ
विन ॥ मानक्रोध छलछोभसुप्राणी ॥ विने नहीसीखेगुरु पासे ॥ ग्यानभणेतोइविपत
सवाइ फल आया वास विनासेरेभाइ ॥ वि० ॥ १ ॥ मंद प्रकृति अल्पश्रुति वयछोटा
हिलणाथी असातना लागे ॥ आचारवंत वरश्रुतगुण सागर ॥ तिण नोही विनो कोइ-
त्यागेरेभाइ ॥ व० ॥ २ ॥ तिणने जिम अगनी भस्म करे वसतुं तिमग्यानादिकगुण
नासे ॥सर्प छेटो तोइमस्या प्राण खोवे अवनित डुरगति डुखपासेरे भाइ वि० ३ आसी
विषप्राण लेवेएकभवमे गुरुअसातनाभव २ में ॥ डुखदेवेबोध बीजनही आवे ॥ जायप
मे डुखदवमेरेभाइ वि० ॥ ४ ॥ अगनीने पगकरीने जोचापे॥सर्पने कोप चमावे ॥जीत
वअर्थेखावे जहेर हलाहल ॥परवतसीरथीहटावेरेभाइ॥वि०॥५॥ सुतोसींघ जगावे चाला
करा॥वरछीपर हथेली प्रहार ॥इणदृष्टते असातनाकरे गुरुनी॥वलीसुखचित विचारेरेभाइ
॥ वि० ॥ ६ ॥ देव जोगे०वरतेसुखदाइ ॥ असातना फल टलेनाई ॥ नयाविमोखोगुरु
हिलणाय ॥ जनतारक फरमाई रेभाइ ॥ वि० ॥ ७ ॥ तिण कारण सिवसुखनाअरथी ॥

अगनी जीम गुरुने सेवीजे ॥ धर्मपद एकसीखे जिणपासे ॥ तिणनोपण विनयकरिजे रेभाइ ॥ वि० ॥ ८ ॥ लज्यादया संजमसिलयचारु ॥ अर्थीपुरखसीवगामी ॥ करेगुरु भक्ति तो भर्मपुलावे ॥ तमहरे जू दिनसामीरे भाइ ॥ वि० ॥ ९ ॥ जिमशशीसोहे गृहगणनाही ॥ तिम आचारजपण गजे ॥ बनितशील्यरत्नागरजेहेवा ॥ मुक्तीके माही विराजेरे भाइ ॥ वि० ॥ १० ॥ विने समाधिपरथम उदेशामे ॥ एहवरण कह्योसारो ॥ तिलोकरिखजीकहे विने जो अराधो ॥ सोहीलहे भवपारोरेभाइ ॥ वि० ॥ ११ ॥ इतिविनय समाही पढमोदेशो ॥ १ ॥ १ । देशीकेरवामे ॥ जिम वृक्षने मूलखंदपछे शाखा पानफूल विसतारा॥भलारेग्यानी ॥ पा० रे ॥ विनेवर धर्म अराधजो काइ ॥जो चाहो भवनिस तार ॥ भ० ग्यानी ॥ जो० विने ॥ २ ॥ तिम धर्मतरु विने मूलपयंप्यो ॥ जगतारक जसधार । भ० ॥ वि० ॥ ३ ॥ क्रोधि अग्यानी मानी दुष्टभाषक ॥कपटी धुरतन रलार ॥ भ० क० । वि० ॥४॥ संशारसागरमे तणावेयेसाउष्टी ॥ काठनदी पूरमझारा॥ भ० ॥ वि० ॥ ५ ॥ भलो शिखदेताउलटीधारेज्यूं ॥ सीरे अतिदंडपरिहार । भ० ॥ वि० ॥ ६ ॥ अवनीत इणभवदुःख उखपावे ॥ सदां दालिद्र घरबार । भ० ॥ वि० ॥ ७॥

वनीत नरनारीने इणनव सुखसंपत ॥ परन्नवमे जय २ कार॥ भ॰ वि॰ ॥ ८ ॥ सुर न्नवपदविचाकरहोवे ॥ अवनित पणो दूखकार ॥ न्न॰ ॥ वि॰ ॥ ए ॥ विनित गुरू अन्नि प्रायनो जाणक ॥ नमणकरे वारंवार । न्न॰ । वि॰ ॥ १० ॥ सिखेसुत्र अरथ धरम वन धारक ॥ उतरे न्नव जलपार ॥ न्न० वि० ॥ ११ ॥ तिलोकारिखजीकहेअध्येन नवमामे ॥ दूजेउदेशे अधिकार । न्न० वि॰ ॥ १२ ॥ इति वि० वितियो उदेशो ॥ ९ ।२

सुमति सदाइ दिलमेधरो ॥ एदेशी ॥ श्री ॥ गुरुआग्यासरिधरो ॥ जो गुरुपदकीचाय विवेकी ॥ अगनी होत्रीजिम अगनने ॥ सेवेतिमसेवोपाय ॥ वि॰ श्री॰ ॥ १ ॥ अंगचेष्टा जाणे गुरुतणी ॥ करो सुश्रुखा वारंवार ॥ वि॰ ॥ वय छोटा दिक्षाकरी बडा ॥ साधोतस विनय वेवार ॥ वि। ॰ । श्री० ॥ २ ॥ दोखबयालीस टालने ॥ लेवेसुझतो अहार ॥ वि॰ ॥ संथारोसिज्यासणन्नोगवो ॥ हरखशोकपरिहार । वि॰ वि॰ ॥ ३ ॥ वचनकांटा दूर धरकह्या ॥ खमेमूनी समताधार ॥ वि॰ ॥ पर अवगुण वेरीपणो ॥ अप्रिय वचन परिहार ॥ वि॰ ॥ श्री॰ ॥ ४ ॥ लोलपी कोतकी न्नाइपणो ॥ वरजेवानित अणगार वि॰ ॥ चुगलनही दिनवृती नही ॥ निजपरसंशानिवार वि॰ श्री॰ ॥ ५ ॥

ग्यानादिक गुणे साधूहोवे ॥ कामार्थी गुणथी असंत वि० इम जाणीगुण सं-
ग्रेकरो ॥ रागधेखदोइ हणंतवि ॥ श्री० ॥ ६ ॥ जिमकन्या भणीतातने । देवेदेखी घ-
रठाम ॥ वि० ॥ तिसगुरु सुशिखनेन्नली ॥ सीक्षादेइ देवेसविधाम । वि० । श्री० ॥ ७ ॥
सुशिष्यमानेगुरू आगन्या ॥ जावेमुगतनेमाय वि० तिजो उदेशो नवमाध्येननो ॥ तिलो
करिखजीकहे वरवाय ॥ वि० श्री० ॥ ८ । इति विणय समाही ए नवमझयणे ॥
त्रतियो उदेशक ॥ ९ । ३ ॥ चारपहरको दिन होवेरे ॥ एदेशी ॥ सौधर्मा सामी रूमी
रितसुरे आर्ज जंबूसु कहे एमरे ॥ चतुरमूनी ॥ जिम श्रीवीर मूझनेकह्योरे ॥ दाखूहू तुझ
थी तेमरे ॥ च० ॥ चारसमाधि चित धरोरे १ परथम विनय विचाररे ॥ च० ॥ गुरु
शिख्या सुणो खंतसुरे ॥ च० वरतो समाविवहाररे ॥ च० चा० २ ॥ सुत्रमे किरीया
करणी कहीरे । सांचवो कालो कालरे ॥ च० मन अभिमान आणो मतिरे ॥ झइ उ-
विनित विशालरे ॥ च० चा० ॥ ३ ॥ सुत्र समाधि दूजी चिंतवैरे ॥ जाणसुसूत्र वि-
चाररे च० ॥ सुत्र शिख्याथकी माहरोरे ॥ रेंसी चितथीरश्री काररे ॥ च० । चा० ॥ ४ ॥
थापसु आतमा धर्म मेरे ॥ समझासुजवलोकरे ॥ च० ॥ मानवरच चिहू कारणेर

संगृह करे सुन्नथोकरे ॥ च० ॥ परलोक सुर सुख कारणेरे ॥ नही करे तप मुनीराजरे ॥ च० ॥ चा० ॥ ६ ॥ सर्व दिशाकिर्तिभणीरे ॥ भली मानसी घणा जनरे एचउवजीं निर्जरा भणीरे ॥ मूनी धारे तपस्या रतनरे ॥ च० चा० ॥ ७ ॥ चोथी आचार समाधि सीरेरे ॥ तपकारण जे कह्याचाररे ॥ च० तेवरजी सीवकारणेरे ॥ पाले किरिया आचाररे ॥ च० चा० । ८ ॥ चोथो उदेशो विने समाधि नोरे ॥ दाख्यो विर जिणंदरे ॥ ॥ च० ॥ तिलोकरिखजी कहे तिम आदेरे ॥ पामे पर्मा नंदरे ॥ च० चा० । ९ ॥ इति विनय समाधि चतुर्थो देशक । ९ । ४ ॥ कुविसन मारगमाथे भ्रिग २ । एदेशी ॥ तजत आश्रव घर भजत संवरवर जिनवाणी धारहो ॥ चितसमाधि नित्य अराधी ॥ त्रियावसमेन लिगारहो ॥ १ ॥ धनयेसासंत करुणारस सागर ॥ गुणरतनागरपूरहो ॥ ग्यानउजागरनागरपंमीत ॥ संजमकिरियामे सूरहो ॥ध० ॥२॥ प्रथवी नखणे नखणावे रूखेस्वर ॥ पियेनपावे सचित नीरहो ॥ जलेन जलावेतेउमहाससतर ॥ विजणेनकरे समीरहो ॥ ध० ॥ ३ ॥ छेदेनछेदावे वनसपतीने ॥ नकरे सचित अहारहो ॥ नवकोटी सुधगृहे रिखभिल्या ॥ प्रभूवाणी अवधार हो ॥ ध० ४ ॥ आतमासमजाणे छइ काया ॥ पं

च महा वृत वंत हो ॥ आश्रव रुधे कखाएके टाले ॥ ध्रुव जोगी धनवंत हो ॥ ध ० ॥
॥ ५ वर्जे जोग सावज्य समद्रष्टी आंथि ग्यान तप चर्ण हो । पाप प्रहारे थीर जोगधारे
जे मुनी तारण तर्ण हो ॥ ध० ६ ॥ चार अहार बासी नही राखे ॥ भोगवे साधर्मीक
आमंत्रहो ॥ सज्झाय ध्यानमे लीनहो रहे नितआतमा निजराखे स्वतंत्रहो ॥ ध ० ७ ॥
विगृह कारणी दूखवधारणी नकथे विकथा प्रवंदहो ॥ नकरे रागधेखखीस्या धारक ॥
संजम तप ध्रुव वंध हो ० ॥ ८ ॥ पंच इंद्रीने कंट समलागे ॥ अक्रोस वचन प-
रिहारहो ॥ अटहहास सब्द पर्म भयंकर ॥ समसुख दूख विचारहो ॥ ध ० ॥ ९ ॥
पमिमाधारक सात भयवारक- ममता नही तन तुखतोखहो ॥ प्रथवी समान
तपधान अराधे ॥ वरजे नियाणो कितोलहो ॥ ध० ॥ १० ॥ सहत परिसहखडत
अरिसे ॥ कुगतिसे आतमटालंतहो ॥ जनम मरण भय वरजणकारण संजम
तपस्या साधंतहो ॥ ध० ॥ ११ ॥ हातपाय वायईदीयसंजय ॥ सज्झाय रक्तसूत्र जा-
णहो ॥ भंरू तपगरण मुरछा नहीराखे ॥ जेभिखूचाहे कल्याणहो ॥ ध० ॥ १२ ॥
अग्यात कुले गृहे अल्पअहार रिख ॥ नकरे विणज वेपारहो ॥ छेडे कुसंग मूरछे नही

भोजन ॥ नही वंछे पूजा सतकार हो ध० ॥ १३ ॥ कोयवसेकु भाखा न जंपे ॥ छंडे
छल अभीमानहो ॥ ॥ पुंनपापफलप्रतेक विचारेजे भिखू आगम जाणहो ॥ ध० ॥ १४
धर्मदेव धर्मदेशनादायक ॥ नायक पायकजेमहो ॥ श्रीजेन धर्मने धारे धरावे ॥ वरजे कु
सील लींग प्रेमहो ॥ ध० ॥ १५ ॥ देहको वासअसूचदूवासक ॥ असासतो विधुसंझा
वानहो ॥ ममता त्यागी अनुरागी मुगतका ॥ निजपर आतम सुखदानहो ॥ ध०१६ ॥
जनममरण रणडरण मिटाइ ॥ चरण करण उधारहो ॥ चरण सरण वरतरण तारण
को ॥ केवल कमला भरतारहो ॥ ध० ॥ १७ ॥ मुगतमहेलकी सहेल अचलपद ॥ अ
जर अमर अविकारहो ॥ अलखनिरंजन भवी मनरजन ॥ वरतेजेजे कारहो ॥ ध० ॥
॥ १८ ॥ दशमो अध्येन भिखू मारगनो ॥ जे कर्म भेदन हारहो अराधना करे समदम
परिणामे ॥ पावेभव निसतारहो ॥ ध० ॥ १९ ॥ संवत पनरेसे एकतिस संवछर ॥
उतरचो भसम गृह क्रूरहो ॥ श्री जीन सासण उदे पुज्या प्रगटी ॥ समगत जोत सनूर-
रहो ॥ ध० ॥ २० ॥ गुर्जर देश विशेप प्रसिधता अहमदावादमझारहो सुधसर्धा धा-
रक श्रावक लुंकाजी किनो ग्यान उपगार हो ॥ ध० ॥ २१ ॥ तत देशनासुणी एक

दिनमाही मूलनाणोजी वखाणहो तितालिसजणा संगेसंजमधाखो चितदढता अति
आणहो ध० ॥ २२ ॥ डुकर २ करणी धारी दया धरम थयो परकाशहो सातमे पाटे
सतरेसे पूज पदधारक बिमासहो ढ० ॥ २३ ॥ श्रीश्री कान्हजी रीख महाराया दीपायो
जेनधर्महो चालिस सहलगृंथ आगम कंठागर टाल्यो अग्यानको नर्महो ध० ॥ २४
ततपाटो धर पूज्य तारारीखजी कालारिखजी गुणी गुणवंतहो वगसूरिखजी तसे पाटे
विराज्या सुरवीर महमंतहो ध० ॥ २५ ॥ तत् अंते वासी पूज्यधनजी समदम उप
सम धारहो ततशिख्य श्रीयवंतारिखजी चरण करण दातारहो ध० ॥ २६ ॥ चरन स-
। तस गृहण करीने बालख्यालजिमजाणहो प्रतेक अध्येन उद्देशाकी किंचित रची
। हीत आणहो ध० ॥ २७ ॥ हिण अधिक पद अर्थ जो दिसे बुध जनसु अरदा
सहो सुधकर लिज्यो हांस्यनाकिजो जेणाशुध नणजो उलासहो ध० ॥ २८ संवत उ
गणीसे चालीस संवछर चेत्रशुकल बिज जाणहो वार,चंद्रदेश दक्षणमाही अहमदनगर
माणहो ध० ॥ २९ ॥ तिलो करिखजीकहे धन जिनागम सर्धेजो नवीक मन खंतहो
अनंत शशार परत कर देवे पालेसो होय सीवकंताहो ॥ ध० ॥ ३० ॥ हिण अधि-

कजे अग्याने बाहीर ॥ जो कोइजोमाणो होयहो ॥ देव गुरु धर्म आतमासा मिठ मिदूकर्म मोयहो॥ध० ॥ ३१ ॥ अरिहंत सिधसाधुधर्म येचारी ॥ होजो सदां सर्ण चारहो ॥रिधि सिधि सुखसंपत अवीचल दिजो धर्मदातारहो ध० ॥ ३२ ॥ १ । कलश ॥ जिनराज वाणी सुखदाणी । भवीक प्राणी सुखभणी ॥ सत्यभंगी कहीचगी भवीकरंगीरूचघणी जे पाले भावे कर्म धावे केवल पावे सारये ॥ तिलोकारिखजी एमसीख गुरुगम ॥ रचीसझायसुखकारए ॥ १ ॥ इति भिखूनाम दशमं ऊयणं समतं ॥ १० ॥ इति दशवै कालीक सूत्रजीको पिठका सहित ॥ अध्येन उदेशा प्रतेक सझाय पनरे संपूर्णम् ॥ मूलगाथा ॥ ५३५ ॥ सर्वसझाय ॥१६१ ॥ गाथा । १८४३॥

श्रीवित रागायनम. ॥ॐह्रींश्रींऐंनम॥अथ श्री पंचपरमेष्टी स्तवनः ॥अरिहंत पदस्तवन प्रारंभः ॥ ढालः रेभविका सिद्धचक्र पदपुजोएदेशीः ॥ श्री अरिहंतजी बंदोरेभवीका ऊछत ऊरनिकंदोरे भवीका श्रीअरीहंतजी बदो ॥ एआकणी ॥ वीसबोल सेवनकरी स्वामी ॥ तिसरा भवकेमाही ॥ गोत्रतिर्थकर बंधणकीयो ॥ चवदे स्वपन दीया माइरे॥भ० ॥ १ ॥ सून विरीयामाही जनमभयोहे ॥ ईंद्र सकल हरषाया ॥ मंदीरगीरपर माठे

ब करके ॥ मातापासपोढायारे ॥ २ ॥ भोगावली कर्मभोगवीयासुं ॥ वरसी दांनदे कर-
के ॥ संजमलेकर कर्मक्षयकीना ॥ केवलपद अनुसरकेरे ॥ भ० ॥ ३ ॥ पेतिश वाणी
निरवद्यजांणी सुखदाणी भव्यप्राणी॥अमृतजीम उपदेश देइने॥तिरथ चउदीया ठाणीरे॥
भ० ॥ ४ ॥ प्रथम संघेणसंठांण प्रभूके ॥ रोगरहीत वरकाया ॥ प्रभुको रूपदेखीने सुर
नर ॥रोमरोम उलसायारे ॥भ० ॥५॥एकसहश्र अष्टलछनस्वछन ॥ जिहांविचरे जिनरा-
या ॥ सात इतसो कोसनथावे । आसोक तरुकरे छंयारे ॥ भ० ॥ ६ ॥ देवदूंदभिवाजे
गगनमे ॥ इंद्र ध्वजा लहेकावे ॥ चोसटजोडा विजाय चमरना ॥ तिन छत्र सिर थावेरे॥
भ० ॥ ७ ॥ जोजन मंम्ल वायसुगंधी ॥ अचीत जल वरसावे ॥ कुसुम पंचवर्ण जल
थलसीरषा ॥ ढिंगअधिक महेकावेरे ॥ भ० ॥ ८ ॥ विषमपंथसो पाधरो होवे ॥ कंटक
अणी अधोथावे ॥वेरभाव नही जागे जोजनमे ॥सिंच अज्यासम भावेरे ॥भ०॥९॥आभ
कागल लेषणवनराइ ॥स्याही सागर जललावे ॥ कोमाकोम सागर सुर गुरजो ॥ लिपता
पार न पावेरे ॥ भ० ॥१०॥ अनंत गुंणातम आतम प्रभुकी ॥ मुलकागुण कह्यावारा ॥
तिलोकरिख अनुरागी प्रभुको॥चाहे भवजल पारारे ॥ भ० ॥ ११॥ इति अरिहंत जिन

स्तवन संपूर्णः ॥ १ ॥ ॥ अथ सिद्धस्तवन प्रारंभः ॥ संती चरणरीजाउ बलीहारी ॥ ए-
देशीः ॥ वंदू सिद्धसदा अविकारि ॥ पुरो प्रभुआस हमारी ॥ एआंकणीः ॥ शुकलध्यान
सेलेसी प्रणामे ॥ तिनहीजोग नीवारि ॥ एक सम्यामाही जायविराज्याते ॥ सिद्धक्षेत्र
सुपकारी ॥ करमकी लागेनकारी ॥ वंदू ॥ १ ॥ स्वारथ सिद्धसूं जोजन बारा ॥ उर्द्धदि-
शाके मझारी ॥ लाखपेतालीस जोजन पोहोली ॥ चितालत्र आकारी ॥ जोजन दल
आठ उचारी॥वंदू॥२॥ठेहमे माखीनी पाखसुंजीणी सुहाली घटारी मठारी उरजण सुव-
र्णमाहीमनोहर ॥ ठविलागे अतिप्यारी ॥ दीपनही दीसेलिगारी ॥ वंदू ॥३॥ जोजनको
उपरलो गाउ ॥ भागठगो सूविचारी ॥ सहेजानंद आतम अवगेहणा ॥ परमानंद पद-
धारी ॥ नहीजीहा दूपविमारी ॥ वंदू ॥ ४ ॥ पंचवरणमे वर्ण नहीहे ॥ वासना दोय
प्रकारी ॥ पच रस अठ फरसनजिनके ॥ तिनुहि वेदविकारी ॥ विपे कीलाय नीवारी
वंदू ॥ ५ ॥ पंचप्रमाद उपाविनहीहे ॥ च्यार कषायकुं टारी ॥ अजर अमर अविनासी
अखम्नित ॥ निरंजण नीराकारी ॥ सदातीरपत निराहारी ॥ वंदू ॥ ६ ॥ जांणत देखत
सर्व पदारत ॥ निराबाद सुषधारी ॥ समगत क्षायक अटल॥ओगेणा ॥ अमुर्तिक गुण-

धारी ॥ अलप जसजोत अपारी ॥ वंदू ॥ ७ ॥ अगरु लघु परजाय सदाथिर ॥ नही
जिहांतात महेतारी। सुत्त सहोदर सज्जन दूसमण ॥ नही सगपण व्यवहारी ॥ जात-
कूल वरण न च्यारी ॥ वंदू ॥ ८ ॥ सिष्य गुरु नही पायक नायक ॥ रुप अनुपम धारी
पंनराभेदे आगम अगोचर ॥ नहीउसन नहीठारी ॥ नहीकोइ वस्तिउजारी ॥ वंदू ॥९॥
जावे पीण आवेनही पाछा ॥ पंचमी गत सुषकारी ॥ तिलोकरीष तुमस्थांन बतावे ॥
एमांगुरिजथांरी ॥ वारीमे जाउबलीहारी ॥ वंदू ॥ १० ॥ इति सिद्धस्तवन ॥ २ ॥

अथ आचारज स्तवनप्रारंभः ॥सुगुरु पिछांणो इणआचारे॥एदेशीः ॥ आचारज प्र-
णमुं पदातिजे ॥ अष्ट संपदाधारीजी ॥ च्यारतिरथकुं दे सुषसाता ॥ आदिज वचनका
धारीजी ॥ आ० ॥ १ ॥ पंच महाव्रत पुरणपाले ॥ पंचसुमतका धारिजी ॥ तिनगुप-
तसो द्रढकरी राषे ॥ निरमल पंच आचारिजी ॥ आ० ॥ २ ॥ नववाड सुध ब्रह्मचर्य-
धारी ॥ जीत्या च्यार कखायजी ॥ पांच ईंद्री गणीवसकरी राखे ॥ निरवद्य वाणीन्पाय-
जी ॥ आ० ॥ ३ ॥ श्रीजीन धर्मने खुबदीपावे ॥ मीथ्याखंम्ण हारजी ॥ वादीजनसुं
हार न पावे ॥ बुद्ध प्रबल नयसारजी ॥ आ० ॥ ४ ॥ सुरा मन वचन कायाना ॥ जलके

नही लवलेशजी ॥ न्भ्यजीव तारणके काजे ॥ साचोंदे उपदेशजी ॥ श्रा० ॥ ५ ॥
कलेश ऊवेजो च्यार तिरथमे ॥ देवे श्रापमिटायजी ॥ संतोसे अमृतवांणीसुं ॥ दिन
दिन पुन्यसवायजी ॥ श्रा० ॥ ६ ॥ सम दम उपसम तप जपराता ॥ ध्याता निरमल
ध्यानजी नाता ताता तोम्हदीया सब ॥ गाता जिनगुण ग्यानजी ॥ श्रा७ ॥ ४ ॥ पंच
श्राचारजे पाले पलावें ॥टाले टलावे दोषजी ॥ परउपगारी काक सरीखा ॥ नाणे राग-
ने रोसजी ॥ श्रा ॥ ९ ॥ इति श्राचारज स्तवनः ॥ ३ ॥ अथ उवझाय स्तवन प्रारं-
न्न॥ ढाल सुंणोचंदाजी॰ श्रीमंदरपरमातम पासे जावजोः ॥ एदेशी ॥ सुणो न्भवीयण-
जीःचउथे पद उवझाय नमो सुखकारण॥ सुद्धसरधाजी बोधदेइने मिथ्यान्नर्म निवारणा॰
ए श्राकणीः ॥ जे अंगईग्यारेका धारकछे ॥ चवदा पूरब सुविचारकछे ॥ सुद्द पाठ अ-
रथ उचारकछे ॥ सुंणो भवीयणजीः चोथे पद उवझाय नमो सुषकारणा ॥ १ ॥ जेसातुं
इ नयका जाणकछे ॥ निश्चे विवहार वषाणकछे ॥ जेसुध असुद्ध पहेछाणकछे ॥ सुणो ॥
॥ २ ॥ जे नितिबात वतावेछे ॥ सब मिथ्यान्नर्म उभावेछे ॥ भिन न्निनकरके समझावेछे ॥
सुणो ॥ ३ ॥ जेग्यान ग्रहणने श्रावेछे ॥ सुद्द पातरदेष पढावेछे ॥ अग्यानपणो तसढावे

छे॥ सुंणो ॥ ४ ॥ जे उपसम रसना सागरछे ॥ तस संजमगुंण रतनागरछे॥ उतपात महाबुद्द नागरछे ॥ सुंणो ॥ ५ ॥ जे चरचा करवा आवेछे ॥ सत्यन्याय बतावेछे ॥ सङ्क फिटा हुइ करके जावेछे ॥ सुंणो ॥ ६ ॥ जिनन्ही पीणजे जिनजेवाछे ॥ वांणी सत्य निरवद्य मेवाछे॥ हितकारी जेहनी सेवाछे सुणो ॥ ७ ॥ तिलोकरिष कहे जे गुंणगावेछे ॥ ग्यानावरणी कर्म खपावेछे ॥ अनुकमें मुक्तीसीद्वावेछे ॥ सुंणो ॥ ८ ॥ इति उवझाय स्तवन संपूर्णः ॥ ४ ॥ ॥ अथ साधुजीको स्तवन प्रारंभः ॥ निरमल सुद्द समकत जीणपाइः जाके कर्मरिहे नहीं काइः ॥ एदेशीः ॥ वंदो साधु सदा सुंणो ग्याता ॥ जिणसुं भवभवमे सुषसाताः ॥ ए आंकणीः ॥ एसंशार असार जांणके ॥ लिनो संजमभारो ॥ तप जपकी पप करताविचरे ॥ निरवद्य वेणउचारो ॥ बंदो साधु सदासुंणो ज्ञाता ॥ १॥

एकतत्त्ववि धारइ. १ | एकदोषनि वारइ.१ | दो०तपसजम पाल इ रदो०रागद्वष २ | ति०ग्यांन दर्शण चारीत्रअराधेः | ति०मनवच नकायासाधे | त्रि०तिनग वगालेः

एकविचारेः एकनिवारेः॥ दोपालेःदोटाले ॥ तिनअराधेः तिनकुंसाधे ॥ त्रिङ्गंगालेः

चि०कषायचारगीरावे ॥ २॥च्यापाचारविकथान करइ | च्या०चारसरणा चि तधरेः | पं०पचमहाव्र तपालेः | प०पचहद्रोपा ले | छे०छवृतिपाल क मुनिराज

चिऊंढाले॥वंदो०॥२॥ च्यारकरेनहीः च्यारचरेचित ॥ पंचपालेः पंचलाले॥ छप्रतिपाल

छ०छकायानीदयापाळ०छलेस्या म्हासुं तिनःअधर्मलेस्या वर्जेइ-३ पटद्रव्यभेद जाणे पुन छे०छेअवृति त्यागे॰ सा:सात पिंडेषणाविसु द्धआर॰ लेवे

णःछप्रतिपाले॥ छमेतिनकुंमोमे॥ वंदो०॥३॥छजाणे. अरुछकुंत्यागे सात विसुध्दिलावे

सा सातमय सातविसन वेगलाकरे॰ त०आठ॰मद छोडे: आठप्रवचन ५सुमति॰३गुप तिःपटकोवणाकरे४ पा०नववाडब्रम चर्यपाले नवनिहाणटाले नवतत्वजाणे

सात सातकुं दूर निवारे॥ तजेआठः अठचावे॥वंदो॥४॥ पालेनवटाले नव जाणें॥

द०५इन्द्री.४कषाय १ १०मन. द०१०प्रकारेअसत्य १०प्रकारे मिश्र॰ एदसदमेप१०प्रकारेजतिधर्मः एभापानवोले द.१०प्रकारेसत्य १२प्रकारे विवहारभाषा बोले

दमणकरे दशसेवे ॥ दस दससो बोलेनही मुखसुं॥ दस बारासु केवे ॥वंदू ॥ ५ ॥

ह०आठकर्मरुप सत्रुनेहणे घातःकरे क०करणकरावणकांमी जु०जेपदारथमृपाजाणो तेजुठोकहे अ०परायाजीवःअदतग्रहणतेछोडवे तयापुदगलचोरीछेइममहे॰

हत्याकरण॰ करावणकामी॥ जुठकहेजेजांणी॥ अदतहरेपरकोहितआंणी॥

य०श्रीजिनरुप धि वुधीजिणसुंप्रेमआणे६ ध तपजपरुपधन भंडार अखुट॰अ अधर्मा स्तिनीपरे थिरध्यानकरणहार प्र.श्रीजिनआ ग्यामानेछे नि.अहंकारर हित

परधि प्रेमज ठाणी ॥वंदो॥६॥ धन आखुट अधर्मसा ध्यानी॥ महामानी निरमानी॥

मां सरीरकोमासतप करिसोसे   मां.मासदूगऊनीक'तया १२ मासभपेनहि'   म.८मयथकीःतृ०इछानहिः७   ह.लोकीकछाथीःघोडा'

मांसन्नखे नित मासन्नखे नही ॥ मयथीतृपता आंणी॥वंदो०॥७॥ हय गय रथ

रय.रु'प४दलछोडीयाछे   लि'लोकोतर४मनघोजो'धिर्जता थी.सोलरथ भावपेदल'सदाराखे   मा०ससारीकमातपिताःनारीःपुनः त्यागन कीना   अ,अनुरागपणोराखेछय

पायक तजादिना॥ लिनासो सङ्गपासें ॥ मात पिता नारीसुतत्यागी अनुरागी

प९कर्मवर्गणा कर्मचेतनाकेदु जीवचेतनाकुंसातायछे   इ०इत्यादिकगुणधारकः   तिलो०कविजनकहेःअनुभवःरस अतरःग्यानकीःसेली.विवेकता

स०समजबोधइत्रीकरनेकलीविचारी९

दूपदेइ साता चावे ॥ इत्यादिक गुणधारी ॥ तिलोकरिप अनुन्नव
नसेली ॥ समज कही सुविचारी ॥ वंदों ॥ ए ॥ सुगणासमजी सीस नमावे ॥ निगु-
एसा मुनिवर जोकोइसेवे ॥ सो होसी सीवचासी ॥ वंदू ॥ १० ॥
॥ कलश ॥ इम पंचनांम नवकार जगमे ॥ सार इणसम
पपावे ॥ विघन सब न्हासेसही ॥ १ ॥ नगणीसे शेतीसःवि-
वनाकरी ॥ नव नव सरणोहोज्यो मुजने॥ अधिक दिन टि-

न हिरि सिरी॥प्रभु अधिकदिन॥१॥हिरिसिरि॥इतिपंच प्रमेष्टी स्तवन संपूर्णम॥ सर्वंगा-
था ॥ ४१ ॥ अथ चोवीस तिर्थंकर स्तवनप्रारंभः श्रीरिषभ जिन स्तवन प्रारंभः ॥
ढाल १ इण सरवरीयारीपाल उभीदोय नागरि मारालाल उभी दोयनागरिः ॥ एदेशीः
पामी सुगुरू पसाय जाएया सीवपुरधणी ॥ म्हाराज । जाण्या ॥ श्री मरुदेवीनानंद ०
नाभिकुल गुंणमणी ॥ म्हा० ॥ ना० ॥ त्रिभवननायक देवपायकनी विनती ॥ म्हा॥
या० ॥ मोहरिपु भयआंण सरणग्रह्यो सुभमती म्हा० ॥ सर० ॥ १॥ तार तार मुजतार
वातकहुं मनतणी ॥ म्हा ० ॥ वा० ॥ जनम मरण जंजाल आवे घबरावणी ॥ म्हा०
आ० ॥ तारयाजीव अनंत संतसुगुणाघणा ॥ म्हा० ॥ सं० ॥ उधरीया अपराधि महा-
अवगुणतणा ॥ माहा० मा० ॥ २ ॥ तुंम वृधदिन दयाल कृपाल दयामणो ॥ माहा०
कुं० क्योन करो मुजसार विसारयो किमवणो माहा० वि० ॥ जेतारो गुंणवंततो अच-
रजछे नही ॥ माहा० ॥ तो० ॥ जोमुज सरिपोदीन उधारया जससही ॥ माहा० उ० ॥
॥ ३ ॥ आपदपमीया आज आयोसरणे वही ॥ माहा० ॥ आ० ॥ ओरण तारणहार
तेमाटे मेकही ॥ माहा० ॥ ते० मुजसरिखो कोइ दिन प्रभु तुजसारखो ॥ माहा०॥प्र०

मा.सरीरकोमासतप करिसोसे मा.मासदूगछनीक'तथा १२ मासभपेनहि' म.८मयथकी'तृ०इजनहि'७ ह.लोकीकहाथीःघोडा'

मासन्नखे नित मासन्नखे नही ॥ मयथीतृपता आंणी॥वंदो०॥७॥ हय गय रथ

रथ'क'प४दलजोडीयाछे ति'लोकोतर४मनघोडो'धिर्जहाथी सोलरथ'भावपेदल'सदारापे मां०ससारीकमातपिता नारी'पुत्र त्यागनकीना अ,अनुरागपणोराखेहय

पायक तजादिना॥ लिनासो सङ्गपासें ॥ मात पिता नारीसुतत्यागी अनुरागी

माताग्यानपिता समता प०कर्मवर्गणा कर्मचेतनाकेदू इ०इत्यादिकगुणधारक' तिलो०कविजनकहे'अनुभव रस नारी सुबुधिपुत्र०८ पदेवे जीवचेतनाकुंसातावछे अतर ग्यानकी सेली विवेकता स०समजबोधइत्रीकरनेकहीविचारी९

न्नासे ॥ व०॥ ८ परदूपदेइ साता चावे ॥ इत्यादिक गुणधारी ॥ तिलोकरिष अनुन्नव रससेलो ॥ समज कही सुविचारी ॥ वंदो ॥ ९ ॥ सुगणासमजी सीस नमावे ॥ निगुणाने मनहासी ॥ एसा मुनिवर जोकोइसेवे ॥ सो होसी सीववासी ॥ वंदू ॥ १० ॥ इतिसाधुगुंण स्तवनसंपूर्ण' ॥ कलश ॥ इम पंचनाम नवकार जगमे ॥ सार इणसम कोनही ॥ जेसमरे न्नावे सुषपावे ॥ विघन सब न्हासेसही ॥ १ ॥ उगणीसे शेतीसःविजेदशमी ॥ तिलोकरिष स्तवनाकरी ॥ न्नव न्नव सरणोहोज्यो मुजने॥ अधिक दिन दि-

न हिरि सिरी॥प्रभु अधिकादिन॥४॥हिरि सिरि॥इतिपंच प्रमेष्ठी स्तवन संपूर्णम्ः॥ सवंगा-
या ॥ ४१ ॥ अथ चोवीस तिर्थंकर स्तवनप्रारंभः श्रीरिषभ जिन स्तवन प्रारंभः ॥
ढाल १ इण सरवरीयारीपाल उभीदोय नागरि मारालाल उभी दोयनागरिः ॥ एदेशीः
पामी सुगुरू पसाय जाएया सीवपूरधणी ॥ म्हाराज । जांण्पा ॥ श्री मरुदेवीनानंद ▪
नाभिकुल गुंणमणी ॥ म्हा० ॥ ना० ॥ त्रिभवननायक देवपायकनी विनती ॥ म्हा॥
या० ॥ मोहरिपु भयआण सरणग्रह्यो सुभमती म्हा० ॥ सर० ॥ १॥ तार तार मुजतार
वातकडुं मनतणी ॥ म्हा ० ॥ वा० ॥ जनम मरण जंजाल आवे घबरावणी ॥ म्हा०
आ० ॥ तार्‍याजीव अनंत संतसुगूणाघणा ॥ म्हा० ॥ सं० ॥ उधरीया अपराधि महा-
अवगुणतणा ॥ माहा० मा० ॥ २ ॥ तुंम वृधदिन दयाल कृपाल दयामणो ॥ माहा०
कुं० क्योन करो मुजसार विसार्‍यो किमवणो माहा० वि० ॥ जेतारो गुंणवंततो अच-
रजठे नही ॥ माहा० ॥ तो० ॥ जोमुज सरिपोदीन उधार्‍या जससही ॥ माहा० ज० ॥
॥ ३ ॥ आपदपमीया आज आयोसरणे वही ॥ माहा० ॥ आ० ॥ ओरण तारणहार
तेमाटे मेकही ॥ माहा० ॥ ते० मुजसरिखो कोइ दिन प्रभु तुजसारखो ॥ माहा०॥प्र०

लाधोनही जगमांय कियोमेपारखो ॥ माहा० कि० ॥४॥ तुंहिज तारसीनेटपेलापछै स-
ही ॥ माहा० । पे० । सेवककरे पुकार बाहिरसोभ्नानही ॥ माहा० बा० ॥ समृथछो
तुमेस्वाम जगत तारणभ्नणी ॥ माहा० ॥ ज० ॥ हिवे मुजवेलाकेम आंनी कानीघणी ॥
माहा० ॥ अ० ॥५॥ भ्नावेतार मतार महारो सुंजावसे ॥ माहा० ॥मा० ॥ पण तुमता
रकवृध किणीविध आवसे॥माहा० कि०॥कहिसो एछेअजांण आबेनही विनती ॥ माहा
आ० ॥ मावितविना कहो कुंण सिखावेते रीति माहा० ॥ सि० ॥ ६ ॥ सिखावो मुजसो
य कृपाकरीनाथजी ॥ माहा० ॥ कि० ॥ विन मनावां नहीं छोडुं तुमारोसाथजी ॥ माहा
तु० ॥ करुणाकरी मुजकाड्यो नरक निगोदसुं ॥ माहा० ॥ न० ॥ आव्यो आपहजुर
तारो हिवेमोदसु ॥माहा० ॥ता० ॥७॥ गज होदे निजमात मुगतमेलीखरी ॥ मा-
हा० ।मु० ॥भ्नर्तेश्वर आरिसा भ्नवनदीनी केवलसोरी॥माहा० दी।०॥ अठ्याणुनिज
पुत्र जूंजता वारीया ॥ माहा० ।जूं० बाहुबल गजमांन थकीतेउतारीया माहा० थ० ८
वितराग समभ्नावछोसमतासागरू माहा० छो०।माहगे थारोनहीआपतो तारो उजागरू॥
माहा० ॥ ता०॥ मात पितार्थीजेम बालक आम्रोकरे ॥ माहा० । बा० रिखव जिनंदसुं-

तेमतिलोकारिख उचरे ॥ माहा० । ति० ॥ ९॥ इतिश्री रिषभ जिन स्तवन संपूर्ण ॥
॥ १ ॥ श्रीअजित जिन स्तवन लिष्यते ॥ ढाल २ मेरीमेरी करता जन्मगयोरेः ॥ एदेशी
श्री श्री अजित अरज सुंणोमेरीः टालो दुसदायक आठवेरीः ॥ श्रीजीन.एआंकणीः ॥
जिहालागं तिहां संगजआवे ॥ निजगुण संगत दूरभगावे ॥ श्री० ॥ ग्यांनग्रऊ तव आ
लसआवे ॥ भणीयोसो ठेनमेविसरावे ॥ श्री० ॥ १ ॥ निंदआवे धर्मकारज मांही ॥
सुष दुष वेदनासुं भरपाइ ॥ श्री० ॥ देव गुरु सुध्दाय नआवे ॥ मिथ्या मोहणी अधिके
भमावे ॥ श्री० ॥ २ ॥ आयुष बंधण छिन छिन छिजे ॥ अटल अवगेंहणाकेम लही-
जे ॥ श्री० ॥ किहाईक उंच पदआपे ॥ किहाइक निचनांम करथापे ॥ श्री० ॥ ३ ॥
किहाएक सुजसोभाग वधावे ॥ किहाएक अपजसनाम फेलावे ॥ श्री० ॥ अमुर्तिक
पदकीकरे हाणी ॥ विपता इमसुझने अधिकांणी ॥ श्री० ॥ ४ ॥ किहांइक उंचगोत्र
माहीमेले ॥ किहाइक नीचगोत्र विषेठेले ॥ श्री० ॥ अगरु अलघु रुपकरेदूरो ॥ काय-
र मोयकियो भरपुरो ॥ श्री० ॥ ५ ॥ दांनलाभ अंतरायदे भारी ॥ भोग विरजपरिहारी॥
श्री० ॥ सक्ति अनंतसो दीनीलुकाइ ॥ दुषदेवेमुझ चउगतीमाइ ॥ श्री० ॥ ६ ॥ जित-

सत्रु विजयादेके नंदा ॥ तुमसरणे आयो गुंणछंदा ॥श्री० ॥ सत्रुसकलसो करीयो नीकं
दा ॥ तिलोकरिख भवभव तुमवंदा ॥ श्री० ॥ ७ ॥ इति अजित जिन स्तवन संपूर्णः ॥
॥ ३ ॥ श्रीसंभव जिन स्तवनः ॥ ढाल ३ निहालदेरा गितरीदेशीः ॥ सेवकसरणे आ-
वीयोजी काइ ॥ जाणीपर्म कपाल ॥ अरजसुणो तुमे साहिबाजी २ काइ ॥ तुमवुध
दीनदयाल ॥ १ ॥ संभव जिनसुणो विनतिजी २ काई ॥ लुल लुल वारं वार ॥ निजसं
पतदो माहरीजी २ कांइ ॥ अवरनकोइ पुकार ॥ संभ ॥ २ ॥ मोह पलीपति पापियो-
जीकाइ ॥ चतुरंग च्यार कषाय ॥ तेरेठग महाकाठीयाजी २ कांइ ॥ मिथ्यामंत्रि सवा-
य ॥ सभ० ॥ ३ ॥ ग्यांनदरण चरणतणोजीकाई ॥ लुंट्योमाल अनंत ॥ रंककीयो मु
झनेतिणेजी २ कांइ ॥ साक्षी आपसिद्धंत ॥ संभ० ॥ ४ ॥ तुंमपासे मांगुनहीजी क
इ ॥ शंशारिक धनधांन ॥ दलबल पिणमांगुनहीजी २ कांइ ॥ स्वर्गअने सिवथान ॥
संभः ॥ ५ ॥ तुम त्रिभूवन नायक सहीजी कांई ॥ ऊंपायकने समान ॥ लायकछे तुमने
सहीजी २ कांइ ॥ माल देवावोथे आन ॥ संभ० ॥ ६ ॥ नृप जितारथना नंदणाजीका
इ ॥ सेनादेवी अंगजात ॥ तिलोकरिप प्रणमे सदाजी २ कांइ ॥ मानो प्रभु अवदात ।

संत्र० ॥ ७ ॥ ४ अथ अभीनंदणजीन स्तवन लिपंतेः ॥ ढाल ४ ॥ कुविण्ण मारगमाथे धिगाधिग एदेशी ॥ अभिनंदण वंदणनित करियेः ॥ धरिये आतमध्यांनहो ॥ मरिये मिथ्यादेव सकलथी ॥ जे वसपमीया तोफांनहो ॥ अभि० ॥ १ ॥ संप चक्र धनुप करधारी । माताविषय कपायहो ॥ नितरहे रातारामा रमणमे ॥ तससरणे सुंथायहो ॥ अभि० ॥ २ ॥ कोइक मुंड कमडलधारी ॥ नीज धी सुंइ घरवासहे ॥ मृगछाला मोलामोजीजुत ॥ तेकिमदे शिववासहो ॥ अभि० ॥ ३ ॥ हस्त कपोल व्यालभुपण जुत । रूमाल गलमायहो ॥ गिरजा जोगमगन निसवासर ॥ तेकीम आवेदायहो॥ अभि॥ ४ कोइक महिप अजाजपमागे ॥ कोइक मदरा पांनहो राग द्वेप मदमोह मेलीणा ॥ तेकीमदे नीरवाणहो ॥ अभि० ॥ ५ ॥ आपतिरेनही भवसागरथी । तेनहि तारणहारहो ॥ पाहण नाव तिरे किणविधकर ॥ सोचो हिरदे विचारहो ॥ अभि० ॥ ६ ॥ संवर राय सिधारथ नंदन ॥ पर्म अदोसी देवहो ॥ तिलोकरिप अलिगुंण रसलीणो ॥ प्रभुचर्णंबुज सेवहो ॥ अभि० ॥ ७ ॥ ५ ॥ श्रीसुमति जीन स्तवनलिप्यते ढाल ॥ ५ ॥ मिःसुरतचरणामेः ॥ एदेशीः ॥ सुमत जिनसेवा ॥ करुजी नितमेवा ॥ उ-

मावो कर्मखेवाजीः सुमत जिनसेवाः ॥ प्रभु तुमविन कालअनंतो ॥ गतच्यारुंमाहे भ्र-
मंतो ॥ कुमति घरतास वसंतोजी ॥ सुम ० ॥ १ ॥ खोटो पष अधिकोखांचौ ॥ ऊंमि-
थ्या मत माहीराच्यो ॥ नटजिम जगमाहीनाच्योजी ॥ सुम० ॥ २ ॥ ए कुमतिनारि गे
हेली ॥ महाकुरू कपटकीथेली ॥ तेजिम तिमकाढो ठेलीजी ॥ सुम० ॥ ३ ॥ सुमति
२जिनपासे ॥ आपो इमसुंणकरआसे ॥ सुमतिसुं कुमतिनासेजी ॥ सुम० ॥ ४ ॥ सु
मति हिवे स्वामीआपो ॥ मुज कुमति कदाग्रह उथापो नीजसेवक करकेथापोजी ॥
सुम० ॥ ५ ॥ तुम भक्त वछल जिनराया ॥ प्रभु असरण सरण कहाया । जगतरण
वृध सवायाजी ॥ सुम० ॥ ६ ॥ श्री मेघरथ नृप कूलचंदा ॥ मंगलादेवी मातकेनंदा ॥
तिलोक रिखकहे मेटोफंदाजी ॥ सुम० ॥ ७ ॥ ६ ॥ श्रीपदम प्रभुजीको स्तवनलिषंतेः
ढाल ६ गी.रागसिंधू जातकमखोः ॥ पदमाजिन कदमकि आसअहो निसधरो ॥ जो-
निज सदनको वासपावो ॥ चाकर अर्जपरख्याल ठाकुरकरे ॥ एहनिश्चो मनमाहीलावो
पदम जिन कदमकी आसअहो निसकरोः ॥ १ ॥ धर्ममंत्रीश्वर भजे कृपाकरी ॥ ग्यांन

आले ॥ पद०। २ ॥ किरीया कवाण दयातणा बंधदे ॥ सतकी पूणचसो देतआवे ॥ त-
पका तिरसुं प्राणहरे सत्रुका ॥ समगत सेन्यापतिलारआवे ॥ पद० ॥ ३ ॥ धरमअरु
सकलध्यान ध्वज फरहरे ॥ पंच सजाय वाजित्रवजे ॥ क्रिम्पाको खरग अति जलल
जलहलकरे ॥ सत्रुको कटकसो देखलाजे ॥ पद० ॥ ४ ॥ महादूष्ट पापीष्टमोहोरायकु
निष्टकर ॥ कषाय चतुरंगदल बलहटावे ॥ रागअरु धेष वजीरठेरे नही ॥ विमल केवल
निजपर्वआवे ॥ प० ॥ ५ ॥ अचल गढ मुक्तिको किल्लो कायमकरी ॥ निरभे थानकं-
लहे अटलप्राणी सत्रुकोजोरचाले नही फीर कदा ॥ चरण सरण ग्रह्मो एमजाणी ॥
पद० ॥ ६ ॥ श्रीधर राय-सुसमा अंगजाततुजिन ॥ तुमविन कोनकरे सहायमेरी ॥ पर
तिष तिलोकरिष पायप्रणमीकहे ॥ मेटोस्वामी भव भ्रमणफेरी ॥ पद० ॥ ७ ॥ संपूर्ण.
॥ ७ ॥ अथसुपार्श्व नाथ जिन स्तवन लिखंते: ढाल७मी: भजनकररे'चामराकी पुतली
भजन कररे: ॥ एदेजी: ॥ प्रभु आसपुरोजी: स्वामी सुपास मुजआसपुरोजी ॥ आंक-
णी: ॥ ठेटा मोटा तणो ॥ अंतरोठे:जेह ॥ पिणगुरुया तता ॥ देवेनदीठेह ॥ प्रभु ०१ ॥
गाम कुगाम लहीदेखे जलधार ॥ सुरतरु जगमाही ॥ सरखो दातार ॥ प्रभु० ॥ २॥ शा-

सो अजवास ॥ प्रभु० ३ ॥ सज्ञ
शीकरे शितलता ॥ सूरजप्रकास ॥ रायरंकसमगीणे ॥ सरखोऽवास ॥ प्रभु० ३ ॥ सज्ञ
ने तुंमसरषाछो । तारणकाज ॥ मुजनेतारणजणी ॥ ढीलकेमराज ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥ मुख-
देखी टीलोकरे ॥ राग धेख जाव ॥ मानो सज्ञसरीपाते ॥ सज्ञदेवराव ॥ प्रभु० ॥ ५॥
विष्णुपिता नंदानंद ॥ धनजिनराय ॥ अजर अमरपद ॥ लह्यो सुषदाय ॥ प्रभु० ॥ ६॥
बाहग्रह्या केरीलाज ॥ राखो महाराज ॥ तिलोकरीख अर्जकरे ॥ सिद्धकरो काज ॥ प्रभु
० ७ ॥ ७ ॥ संपूर्णः ॥ ८ ॥ श्रीचंदाप्रभुजी स्तवनालिखंतेः ॥ ढाल ८मीः वेदरत्निसुं म-
नवस्योः ॥ एदेशीः चंदाप्रभुजीसुं बंदना ॥ पलपलवार हजारहोलाल ॥ देषोसुजनिज-
रेकरी ॥ एकसमे सुविचारहोलाल ॥ चंदा० ॥ १ ॥ चंदपुरीतुमेजनमीया॥चंदसो मुख
अरविंदहो लाल॥चंदवर्ण प्रभुताहरो॥चंद लछन सुषकारहोलाल॥चंदा चंदसमा गुंणता
हरा ॥ सम दम उपसम वंतहो ॥ तुजगुण चित अविलोकतां ॥ जिम अमृत सिचंत
होलाल ॥ चंदा० ॥ ३ ॥ लोभी नर धन पामीयां ॥ चंदने देखचकोरहो ॥ वछ्रोदेखे-
मायने ॥ घनगर्जींत जिममोरहोलाल ॥ चंदा० ॥ ४ ॥ तिम तुमसुं मूज प्रितमी॥लागी
सुधअविकारहो ॥ तुम गुंणसागर आगरु ॥ मनवंछीत दातारहोलाल ॥ चंदा० ॥ ५ ॥

मुज सरीषोअन्नागीयो ॥ मिल्यो तुमसारिषो नाथहो ॥ धन नसिवो साहेबामाहेरो ॥ चिंतामणी रंकहातहोलाल ॥ चंदा० ॥ ६ ॥ महासेण कूलध्वजसमा ॥ लखमणाना अं गजातहोलाल ॥ तिलोकरीखकहे नवनवे ॥ नक अचल होतातहोलाल ॥ चंदा० ॥ ॥ ७ ॥ संपूर्ण ॥ ए ॥ श्रीसुबुद्धि जिन स्तवनलिखंतेः ॥ ढाल९मीःसिद्धचक्र पदवं- दोरे नविकाः एदेशीः सुबुद्धि जिनंदने ध्यावोरे नविकाः अजर अमर पदपावोरे नवि- काःसुब० ॥ एआकणी ॥ करमहणी केवल पदपायां ॥ थाप्पातिरथ चउखंती ॥ सय मेव बोधते पुरषमे उतम ॥ सिंघपूमरिक गध हंतीरे ॥ १ ॥ नवि० लोक उतम नाथ- सो हितकारक ॥ दिपक रविजिम जांणो ॥ अनय चक्षुमारग सरणदाता ॥ जित- बवेध वषांणुरे ॥ भवि० ॥ २ ॥ धरमअने धर्मदेसना दायक ॥ नायक सारथीसोई ॥ धरम प्रधान धरमचक्री सम ॥ नवोदधि दीपाजुं जोइरे ॥ नवि० ३ ॥ सरणागतने रा- खणसमृथ ॥ ग्यान दरसण धीरसेरी ॥ निवरत्या छदमस्तपणाथी ॥ जिते जिनावे वे- रीरे नवि० ॥ ४ ॥ तिरे तिरावे समजे समजावे ॥ पापनेछोमे छोमावे ॥ पुरण ग्यान दरसण शिव अचल ॥ रोगरहीतसो कहावे ॥ नवि० । ५ ॥ अनंत अक्षेपद बाधा-

नहीजिनके ॥ वलीशंशारमे नावे ॥ सिधगतिनांम सासतो थानके पडता जिहां मनचा
वेरे ॥ त्रवि० ॥ ६ ॥ सुग्रीवतात रंभादेवी जाया ॥ धन धन अंतरजांमी ॥ तिलोकरि-
ख पायक तुमनायक ॥ वंदू नित सिरनांमीरे ॥ त्रवि० ॥ ७ ॥ संपूर्णः ॥ १० ॥ श्री
शितल जिन स्तवनालिष्यतेः ॥ ढाल १०मीं ॥ निरमल सुधसमगत जिणपाईः ज्याके
कूंमीरहे नहीकाईः ॥ एदेशी, ॥ शितलनाथ सदा सुखकारी आकणीःविषय कषायको
तापनिवारो ॥ कठिण पणो तेगालो ॥ धीरजकी धरतीकरलीजे । हिरदामे हलचाले ॥
शित० ॥ १ ॥ नयनिश्चे व्यवहार बेलसुं ॥ क्षिम्यापेति सूधारो ॥ नाइबांधो निजनांम
नीरंजण ॥ सुकृत विजसंवारो ॥ शित० ॥ २ रागधेषदोइ तुठउभावो ॥ क्रोधमान ख-
ड्ढावो ॥ लोभकपटदोइ षाभातुरकर ॥ भावना वाभ्रोपावो ॥ शित० ॥ ३ ॥ सोचसु-
वो अरुपांचकागली । पेतिकुं चुगजावे ॥ मिथ्यानिंदनीवार गोफणगुंण ॥ धिरजथी
उभजावे ॥ शित० ॥ ४ ॥ पुंन पाप तुस दूरकरीने ॥ निजरावाए वणाइ ॥ क्षपकले
ण गुंणस्थानचढीने ॥ केवल कणग्रहोभाइ ॥ शित० ॥ ५ ॥ मोक्षरुप रसोइनिपजे ॥घा
पेचेतनपुरो ॥ फिरनदीलागे क्षुधा तृपा ॥ एसीपेती करसुरो ॥ शित० ॥ ६ ॥ दीढसे-

ए राय नंदादेवकीका ॥ निकाप्रांणसुं खारा ॥ तिलोकरिषकहे साहेबसेती ॥ एपेति करोपारा ॥ शित० ॥ ७ ॥ संपूर्ण ॥ ११ ॥ श्रीयांस जिनस्तवन लिप्य तेः ॥ ढाल ॥ ११ ॥ मीः माहावीरजीनेश्वर आपविराज्याः अमरसहेरमेः ॥ एदेशीः ॥ श्रेया- स जिनेश्वर अरजसुंणोजी मोरी साहेबाः ॥ आकणी ॥ जिमतुंम श्रेपद अंससुंखकर ॥ श्रेपदनाम प्रसिद्ध ॥ तेतुम कृपाभावसुंजी काइ आपोएहज रिधहो ॥ श्रेयां० ॥ १ ॥ तुं- मकरुणारस सागर नागर ॥ गुंण रतनागर इस ॥ सुंतुंमनेखामी पडेसो काइ क्योनकरो वगसिसहो ॥ श्रेया० ॥ २ ॥ चाकर चुकपडेकोइ विरिया ॥ गिरूया ठाकुर जेह ॥ तेह निवाजे पलकमे जीकाइ ॥ गीरुया एमसनेहहो ॥ श्रेया ॥ ३ ॥ मात पीतासुं मुरष बा लक ॥ करे कोइक अपराध ॥ निजजाणीने तेहनिवाजे ॥ तुमगुंण अमर अगाधहो ॥ श्रेया० ॥ ४ ॥ ढुं निगुणो पापी निरबुधी ॥ कुड कपट भंडार ॥ जिमतिम करके पाव नकरके ॥ उतारो भवपारहो ॥ श्रेया ॥ ५ ॥ तुमविनांकोइ तारणहारो ॥ जगमेदीसे- नाय ॥ विनतारयां तुमने नहीछेडुं ॥ एनिश्चो मनमायहो ॥ श्रेयां ॥ ६ ॥ विष्णुपिता वि न्हुमेतारी ॥ धन धन नंदनजेह ॥ तिलोकरिखकहे मुझसीर टीको ॥ लागो नवल स-

२७

नेंहहो ॥ श्रेयां० ॥ ७ ॥ संपूर्णः ॥ १२॥ श्रीवास पुज्यजिन स्तवनालिष्यतेः ॥ ढाल १२
मीः मांनव जनम २ रतनतेने पायोरेः ॥ एदेशीः ॥ वासपुच २ जिनंदजीनेपुयोरेः निरव-
व प्रतिबुझोः ॥ एआंकणीः ॥ देहसो देवल विनेदेवछंदो ॥ देवनिरंजणवंदोरे ॥ नितभा-
वना भावो ॥ दयापुज्या रचावो ॥ कर्मभर्म उमावो वास० १॥ जिन स्वरुपसो हिरदेवि-
चारो ॥ ध्यानमुद्रा अविकारोरे ॥ भावना पिछाणी ॥ देवपूजीये प्रांणी ॥ ग्यांनरुपीयो
पांणी ॥वास०॥२॥इणविध प्रभुने पखालकरावो ॥ अंगलोयणा ध्यावचढावोरे ॥करुणा
दीवोकीजे ॥ जोतिसमगतलीजे ॥ ध्यान धुपधरीजे ॥ वास० ॥ ३ ॥ क्षिम्याके सरकरो
किरिया कटोरी ॥ पंचपद फूलमनडोरीरे ॥ किरति गुणमाला ॥ प्रेमसुंगंधरसाला ॥ क
रोभावसुं वाला ॥ वास० ॥ ४ ॥ सुगुण तंदूल नैवद्यसु उजासो ॥ आरति आणंदवि-
मासोरे ॥ संजा वंटाको नादो ॥ सुंणकर अहेलादो ॥ तजोचित उनमादो ॥वास०॥५॥
एसी पुजनकरी तिरीयाअनंता ॥ भाषीछे श्रीभगवंतारे ॥ प्रण्णध्याकर्णमाइ ॥ दयापुज्या
वताइ ॥ भविजन मनभाई ॥ वास० ॥ ६ ॥ वासुपुज्य अजपजया देवीनंदा ॥ तिलो
करिप तुमाराबंदारे ॥ चरणेचितलाया ॥ सरणागत आया ॥ तारोजी महाराया ॥वास०

॥ ७॥ सपूर्णं ॥ १३ श्री विमलजिन स्तवनलिपंते: ढाल १३ मीः सुंणोचंदाजीः श्री
मदिर परमातमपासे जावज्योः ॥ एदेंशी ॥ हो विमला जिनंद विमलानंदना दायक-
नितछेः भ्रमत महरणः तुसत्रिभुवनके माहीस्वामी आदित्यछेः ॥ आकडी ॥ अनित
सञ्जजगनी मायाछे ॥ काचा कुंभजेसी कायाछे ॥ अ० ॥ १ ॥ जे गाम नगर घर वसी
याछे ॥ हय गय रथ पायक कसीयाछे ॥ थीरनहीजे जगमे रसीयाछे ॥ अ० ॥२॥ जे-
ताणे बाणे बुणीयाछै ॥ प्रथवी पाणी कर चूणीयाछे ॥ रहेनहीजे पिंजणी धुणीयाछै ॥
अ० ॥ ३ ॥ जेह हथोमे करीधमीयाछै ॥ वली नग नगीना जमीयाछै ॥ विणसे सह
जे धनगडीयाछै ॥ अ० ॥ ४ ॥ जे खेतिकरने वायाछे ॥ क्यारे करी पाणी पायाछे ॥
ठेरे नही दरवे निपायाछे ॥ अ० ॥ ५ ॥ जे हरी हर इंदर रायाछे ॥ कालरीपुथी सञ्जथर
रायाछे ॥ भवीजन तुमसरणे आयाछे ॥ अ० ॥ ६ ॥ कृत ब्रह्मभुप स्यामाराणी ॥ जि-
णजाया महा उतमप्राणी ॥ तिलोकरीष ग्रह्योसरणो नित्यजाणी ॥ अ० ॥ ७ ॥ इति
संपुर्णः ॥ १४ ॥ श्री अनंत जिन स्तवनालिष्यतेः ॥ ढाल १४ ॥ मीःअनंत जिनसरणो
सुखदाइरे अनंत जिनसरणो ग्रहोभाई॥अनंत जीव प्रतिपाललाल जसमहिमा अधिकाई॥

एटेरः मात पीता तिरिया सूत बंधव॥दलवल ठकुराइ॥धनधान्य अरु ससतरवसतर॥सरणा
गतनाइ॥अन०॥१॥मुग्धपणासुं जिवपयंपे॥मुझने सुषदाइ॥कालरिपूको भय महामोटो
समझ नइकांई ॥ अन० ॥ २ ॥ बजरकोट मोट परकोटो ॥ कंगुरा सझवाइ ॥ कंगुरे
कंगुरे तोफ रषावे ॥ खरो पहेरोगाई ॥ ३ ॥ ताविच महेल बजरको द्रढता ॥ सात भुहरा
भाई ॥ कपाट द्रढजोहा पवननपोंचे ॥ बेठे तिणमेजाई ॥ अन० ॥ ४ ॥ सीरपरटोप
कवच अंगभिडे ॥ ससतर करसाई ॥ जीहापीण काल ढालदेछिनमे ॥ कवण रंक राइ
अन० ॥ ५ ॥ एसीजाण परमांण जिनागम ॥ मांनले मनभाई मरण रोगको दाव न
लागे ॥ अमरा पदपाई ॥ अन० ॥ ६ ॥ सींहसेन नृप कुलमे दिपक ॥ सुजसा जिन-
माई ॥ तिलोक रिषकहे धोक निरंतर ॥ सरणो मुझताई ॥ अन० ॥ ७ ॥ संपूर्णः ॥१५
श्रीधरम जिन स्तवनालिष्यतेः ॥ ढाल १५ मीः धनधांहीने धनसुंदरीजी कांईः पाल्यो
सीयल अषंडः एदेशीः धरम जिणंद सेव्याविनाजीकांई इमरुलीयो संसारः ॥ एटेरः ॥
धमर२करतो फिरयोजीकांइ ॥ धरम नजाणेभेद ॥ रूलियो चउगतिजीवडोकाइ ॥ पा-
यो पूर्णखेदजी ॥ धर० १ ॥ वार अनंति उपनोजीकांइ ॥ भोगव्या दूष अनंत ॥ के-

तोजांणे आतमाजीकाइ केजांणे ञगवंतजी ॥ घर०॥ २ ॥ एकमोरतमे ञवकरयाजी ॥
साढी पेसठ हजार ॥ ञतिस अधिकानीगोदमेजीकाइ ॥ काल अनंत विचारजी ॥
॥ घर० ३ ॥ तसथावरतिरजंचमेजीकाइ ॥ ठेदन ञेदनत्रास सहितिहा परवसपणेजी-
काइ ॥ सांचिकरमानीरासजी ॥ घर० ॥ ४ ॥ जोकदी नरञव पामीयोजी काइ ॥ सं-
पदापाइ हिए ॥ पापकरमसंचे कर्योजी ॥ मीथ्यामतमे लीणजी ॥ धर० ॥ ५ ॥
सुरञयोतो चाकरपणेजीकांइ ॥ राच्यो ख्याल विनोद ॥ मरणमे जुर्यो घणोजीकाइ ॥
भूलो सघलीमोदजी ॥ घर० ॥ ६ ॥ पुदगलनातासञ्ग्रह्याजी काइ ॥ ञानुसुत सु-
वृतानाजात ॥ तिलोकरिखनीए विनतीजीकाइ ॥ आपोधरम निजवातजी ॥ घर० ॥७॥
संपूर्णः ॥ १६ ॥ श्रीशंतिनाथ जिनस्तवन लिख्यतेः ॥ ढाल १६ ॥ मी०॥ गरबानीदे-
शीः ॥ कत तेरोकाल पपइयोआयो एदेशी ॥ संति जीनंदसुहावेरे मेरेदील संतिजि-
णंद सुहावे दूप दालिद्र पूलावेरे मेरेदील संति जिनंद सुहावेः एटेर ॥ मेघरथनृप भव
पाल्योपारेवो तिर्थंकर गोतजिहा उपावेरे ॥ सवारथ सिद्धगया संजमलेकर ॥ तेतिस सा
गरथीत ठावेरे ॥ मे० ॥ १ ॥ हथणापुर विश्वसेण कुले जाया ॥ अचरादेवीनो कुपेआ-

वेरे मे० ॥ मरि सबदूर नसाइ गरभमे ॥ शंतिसो नांम दरसावेरे ॥ मे० ॥ २ ॥ समद्रष्ठी
मंडलीक चक्रीपद ॥ साधु केवली जिनथावेरे ॥ मे० ॥ पट्पदवीपाया एकभवमे ॥ पुर
व पूनप्रन्नावेरे ॥ मे० ॥ ३ ॥ संतजिकोनांम तंतकरीजांणो आठुकरम न्नयढावेरे ॥ मे०
धनसपतकोइ कामनआवे ॥ देषतही विलजावेरे ॥ मे० ॥ ४ ॥ मात पिता
सब मतलब गरजी ॥ वीनस्वारथ ग़ेटकावेरे ॥ मे० ॥ तर वर दल फल फूल
विसोन्नित ॥ पंपि विचित्र लम्भआवेरे ॥ मे० ॥ ५ ॥ कोइक पान कुसमफल
अरथी ॥ कोइ विश्रांमचितचावेरे ॥ मे० ॥ जब जम्मजात आतनही कोइ ॥
रहिवासी सोइ लम्भजावेरे । मे० ॥ ६ ॥ पुंनसंजोगे संपतपायो ॥ मुरष मोह-
वढावेरे ॥ मे० ॥ तिलोकरिष सतजाण्या सतिसरणे ॥ न्नक्ति अचल चितचावेरे मेरे०।
॥ ८ ॥ संपूर्णं ॥ १७ ॥ श्रीकुथु जिन स्तवनालिष्यंतेः ॥ ढाल १७ मीः ॥ रेजिवा जि-
नधर्म किजीयेः धर्मना च्यारप्रकारः ॥ एदेशीः ॥ रेजिवा कुंथुजीन वंदीयेः निजानंदावि-
चारः ॥ परमानंद पदपाइये ॥ प्रभुनाम आधार ॥ रेजि० ॥ १ ॥ पंचवरण रसतुंनही॥
गंधदोय प्रकार ॥ आठफरसमे फरसनही ॥ नहिवेद वीकार ॥ रेजि० ॥ २ ॥ करमनही

कायानहि ॥ पुन पाप प्रचार ॥ बाल तरुण वृधतुंनही ॥ नीश्चे नयसु विचार ॥ रेजि०॥ ॥ ३ ॥ निरजण निराकारतुं ॥ सिद्धजिम अविकार ॥ तुं पुदगल वसपम्ररह्यो ॥ जिम-पिंजरे नाहार ॥ रेजि० ॥ ४ ॥ पिरमाही घृत रमरह्यो ॥ रस इपुमजार समजेनही अं-तरदीसा ॥ बलुजीम दिनकार ॥ रेजि० ॥ ५ ॥ जम्न चेतन संजोगसु दूषपायो अपार मारगणा गुंण स्थानकी ॥ पुदगल व्यवहार ॥ रेजि० ॥ ॥ ६ ॥ सुरराय सीरीदेवीना नंदन अवधार ॥ तिलोकरिख पदसासतो ॥ देवेप्रर्म दातार ॥ रेजि० ॥ ७ ॥ संपूर्णः ॥ ॥ १८ ॥ श्री अरिजिन स्तवनलिष्यंतेः ॥ ढाल १८ ॥ मीः ॥ जमीकंदमेरो जीवजाइ व पनो· ऐदेशीः ॥ परमपवित्रकरो अरनाथजीः दरवेभावे दयाल ॥ मावितविनहो प्रभु वालकतणी ॥ कुंणकरे सारसंभाल ॥ यर० ॥ १ ॥ हाम्नोपींजर चरमथीवीटीयो ॥ रु-ह सुक नसाजाल ॥ रसिश्लेषममल मुत्र भर्यो ॥ मंस चरभि तनवाल ॥ १२० ॥ २ ॥ नामजलेताहो घिनअलेघणी ॥ राचेतेह मजार ॥ वाहिरदेपीहोदुगंछाकरे॥ मुखथी थु-थुकार ॥ पर० ३ जीवन जाणेहो पुदगल प्रेरणापुचियो विषयकषाय एह अपावनला गो आकरो आदकही नहीजाय पर ॥ ४ ॥ निहार गीरादिक धातुसुद्धकरे ॥ रजकज्यु

॥ लागो तुंमतणीगेल ॥पर० ॥५॥
पटतणोमेल ॥ तिमकृपाकरनेहो मुजपावनकरो ॥ प्रभुहिवेताहरा करो
लिवना तरुनेहो चंदणनीजसमो ॥ मधुकरइलिनेतेम चरणझुल्याहो
मुजपोतेभोजेम पर६ सुदरसणअनेदेवीमायनानंदसुंणो अरदास॥तिलोकरिष कहेहो वंडुं
करजोमने॥पुरो पुरणआस ॥पर७॥७॥ संपुर्णः ॥ १९॥श्रीमल्लिजिन स्तवनालिष्यंतेः ढाल
१९मीः ॥करो नावपूजा नवप्राणीः॥एदेशीः ॥वंदोमल्लिजिनंदने प्राणीःहेरवंदो आश्रव-
महा दूषदांणीः॥ बंदोः ॥ए आंकमीः ॥ आश्रवथी महादूषपावे ॥ वारंवार चउगती
जावे ॥ राजी २ सुं बंधउपावे ॥ उदेआयाथकी घबरावे ॥ बंदो० ॥ १ ॥ श्रुतइंद्री वस
मृगथावे ॥जालमाहीपमी मृत्युपावे ॥ चक्षुइंद्री पतंगझंपावे ॥ दिपकसे प्रांणगमावे ॥
बंदो० २ घांणइंद्रीपंकज आलिजाणो ॥ रसना बसमिनकी हाणो ॥ गजनो फरसथकी
नासो ॥ मनवसेहो एमाहि सविनासो ॥ बंदो ॥ ३ एक २ ईंद्रीवसेप्राणी ॥ पावे दूष
अनरथ खाणी ॥ पाचूइंद्री अरु मन वसथावे ॥ तसहालकह्यो नहीजावे ॥वंदो० ॥४॥
इम मोहनघरकेमाई ॥ बहु नृपतिदिया समझाई ॥ तिनसे नर नारीसंगे ॥ लियोसं ॥१२०॥
जमश्री जिनरंगे ॥ बंदो ॥ ५ ॥ एकपहेरमे केवलपाया ॥ बहुभव जीवने

समझाया चालीस सहेस त्नया अणगार ॥ समणी पंचांवन हजारा ॥ वंदो०
॥ ६ ॥ परन्नावती कुषे थेआया ॥ पिता कुंम्ननृपतिजी कहाया ॥ तिलोकरिपकहे
पारनतारो ॥ त्नव २ मुझसर्णतुमारो ॥ वंदो॰ ॥ ७ ॥ संपूर्णः ॥ २० ॥ श्री
मुनिवृत जिन स्तवनलिष्यंतेः ॥ ढाल २ • मीः पासजिनेसररे स्वामीः ॥ एदेशीः ॥ श्री
मुनीसवृतरे सामी ॥ दोसंवर किरीया सीवगामी ॥ ॐ तुमचरणारे रसीयो ॥ मोहणी
जाल विषे अतिफसीयो ॥ श्रीमुनी० ॥ १ ॥ एतादिन जांण्यारेनाइ ॥ रहीमुझ करम
तणी अंतराई ॥ हिवे मुझलागारेप्यारा मोति सामलीन खांमसापारा ॥ श्रीमु० ॥ २॥
जगतकी ममतारेत्यागी ॥ हुवा सीवरमणीका अनुरागी ॥ केवलग्यानजरे पाया ॥
संवर मारग अधिकदिढाया ॥ श्रीमु॰ ॥ ३ ॥ दयासत्त दतजरेपालो ॥ सील अराधके
परीग्रहटालो ॥ विषय कपायजरे तजीया ॥ धरममे गाजपापमे लज्जीया ॥ श्रीमु॰ ॥४॥
पापसुं रहीयेरेदूरा ॥ तप जप करणीमाहीरहोसूरा ॥ जोतुम सीवसुपरेवालो ॥ तो संव
रकिरीयामे सुद्धचालो ॥ श्री॰ ॥ ५ ॥ इम तुमकेहणारेजाणी ॥ पालवाने पिणमनसा
नमाणी ॥ पिणमुझ करमजरेन्नारी ॥ नहीनीभ्नेसुद्ध आंण तुमारी ॥ श्रीमु॰ ॥ ६ ॥

सुमित्रनृपनारे कोका ॥ पद्मावति नंदण गुंणनिका ॥ जिमनिम करनेरेतारो ॥ तिलोक-
रिपने सूद्रष्टेनिहारो ॥ श्रीभुनी० ॥ ७ ॥ संपूर्णः ॥ २१ ॥ श्रीनमीनाथ जिन स्तवन-
लिष्यतेः ॥ ढाल २१ मीः ॥ मल्लिनाथ मनमोह्योरेः षटराजंदकेरोः ॥ एदेशीः ॥ नमीना-
थ सुपकारीरेः नीतधोक हमारीः नमीनाथः ॥ एटेरः ॥ करमबंद निजरणके कारण ॥
तजदी संसारकीयारीरे ॥ नी० ॥ संजमलेकर दूवादशवेदे ॥ तपकियो दूकरकारीरे ॥
नीत० ॥ १ ॥ अणसण अणोदरी भोष्याचरीया ॥ रसत्यागन सुविचारीरे ॥ नीत० ॥
कायकिलेस सलिनता जाणो ॥ बाह्य पटपर कारीरे ॥ नीत० ॥ २ ॥ प्रायछित विने
वैयावचभावे ॥ सझायध्यान ऊस्यारीरे ॥ नी० ॥ विउसगए षटकह्या अभिंतर ॥ करम-
का बंध नीवारीरे ॥ नीत० ॥ ३ ॥ ग्यानकेवल प्रगटभयो प्रभूके ॥ लोका लोक निहा-
रीरे ॥ दियोउपदेस भविक जन तारण ॥ निजरा परम हितकारीरे ॥ नीत० ॥ ४ ॥ अ
कांम निरजरा वारअनंति ॥ गरजनसरी लीगारीरे नी० ॥ सकाम निर्जरा स्वांमी क्रपा
कर॥ दिज्यो अनुग्रह विचारीरे ॥ नीत० ॥५॥ असरणस रण दयानीधिदाता॥जगजिव-
न उपगारीरे ॥ नी० ॥ तिनभवन तुमसो नहीदीसे॥ जग वछल साधारीरे ॥ नीत० ॥६

विजयराजा विप्रादेवी नंदन ॥ चरण सरण बलीहारीरे ॥ नी० ॥ तिलोकरिप प्राणमे क
रजोमी ॥ कहेकरो भवजल पारीरे ॥ नीत० ॥ ७ ॥ संपूर्णः ॥ २२ ॥ श्रीरिष्टनेमी जि
नस्तवन लिष्यते ॥ ढाल २२ मी ॥ सांतिचरणारीजाउं बलीहारी ॥ एदेशी रिष्ठनेमी
नमोनरनारी सकलजीवन हीतकारी. एटेरः ॥ समुद्रविजे सेवादेवीकानंदा अनंत श्राक
मधारी ॥ नासको स्वासथि सपवजायोतो ॥ धनुपको सब्दकरारी ॥ सुंणचित चमके-
मुरारी ॥ रिठ० ॥ १ ॥ ज्यूत्युकरके व्यावमनायो ॥ उग्रसेण नृपकी कुंमारी ॥ राजमति
महारूप अनुपम ॥ जानजुमी अतिभारी ॥ जुनेगढआये ऊंसीयारी ॥ रीठ० ॥ २ ॥
पसुकी पुकार सूंणसिरवणसे ॥ करुणाआई अपारी ॥ भूषण वताग्दीये सारथीकुतो ॥
गजफेरयो तिणवारी॥जानमे खलभलेभारी॥रीठ०॥३॥तेलचढी राजल तजदीनीआठभ
वातरनारी ॥ सेहेस पुरप संगे संजमलीनोतो ॥ जायचढ्या गीरनारी ॥ हण्या
सब कर्मकरारी ॥ रीठ० ॥ ४ ॥ केवलग्यान प्रगटभयो ततखीण लोकालोक
निहारी नाचतो पुरुपकमर करदीनोतो ॥ लोकसधाण उचारी ॥ कह्या सब
वरणव जाहारी ॥ रीठ० ॥ ५ ॥ पटद्रव्यकाय लेस्यागति जाती ॥ कर्मथी वेदवि-

कारी ॥ द्रवगुंण परजाय सुधासुध ॥ निश्चे अरु व्यवहारी ॥ रूपकह्यो विसतारी ॥ रीठ
॥ ६ ॥ समुद्राविजे सेवादेवीना अंगज ॥ बालजति ब्रह्मचारी ॥ तिलोकरिख कहे पार
उतारो ॥ चरणनकी बलिहारी ॥ सुरत मनमोहनगारी ॥ रीठ० ॥ ७ ॥ संपूर्णः ॥ २३॥
श्रीपारस्व नाथ जिन स्तवन लिख्यंतेः ॥ ढाल २३ मीः ॥ जातकेरवोः ॥ मुखदेख्योजी
मेंने पारसकोः मारो सफ_ भयो दिनआजरे सुख • ॥ एदेशीः ॥ अरजसुणो प्रभुपारस-
जी माहारो सफलकरी अवताररेः ॥ एटेर ॥ अश्वसेण वामांजीके नंदन ॥ जीवनप्राण
अधाररे ॥ अ० ॥ कमठ दूष्टको माननिवार्‍यो ॥ नागजुगल अवताररे ॥ अ० ॥ १ ॥
श्रीमुख पंचपर्मेष्टी सुंणायो ॥ दीनो सुरअवताररे ॥ अ० ॥ पंचमुष्टीकर लोच सोच त-
ज ॥ लिनो संजमभाररे ॥ अ० ॥ २ ॥ ध्यानधर्‍यो प्रभुकर्म निवारण ॥ कमठासुर ति
णवाररे ॥ परीसो देवण मेघनिपायो ॥ वरसत महा जलधाररे ॥ अ० ॥ ३ ॥ नासासु
धि जल चढआयो ॥ अचलरह्या करताररे ॥ धरणिंदर पदमावति आवे फणकरीगये-
हजाररे ॥ अ० ॥ ४ ॥ कमठासुर अपराध खमावे ॥ कहे धन२अवताररे ॥ केवललेइ
उपदेश सुंणायो । समगत शिवदाताररे ॥ अ० ॥ ५ ॥ विन समगत तप जप सब वि-

रथा ॥ जेवो लिपण गरे ॥ समगत विना रुल्यो काल अनंतो ॥ कहेता नआविपाररे ॥ ॥ अ॰ ॥ ६ ॥ एकवार समगत वट प्रगटि ॥ निश्चे२ मोक्ष दूवाररे ॥ तिलोकरिखकहे दो सुधसरधा ॥ क्रज्यो नवोदधि पाररे ॥ अरज॰ ॥ ७ ॥ सपूर्णः ॥ २४ ॥ श्रीवर्द्ध मान जिन स्तवन लिख्यते ॥ ढास २४ मीः हमीरीयानी देशीः तथा सुम ति सदा दिल में धरोः ॥ सासण पति वृधमानजी ॥ नगत वछल नगवत ॥ जिनेसर ॥ सिद्धारथ कुल जनमीया ॥ त्रसला सुत जसवत ॥ जिनेसर सासणपति वृधमांनजी ॥ १ ॥ तिस वरस घरमेरह्या ॥ लिनो संजमनार ॥ जिने॰ ॥ तपतप्या अतिआकरा ॥ सामीबारे वरस मजार ॥ जिने स॰ ॥ २ ॥ मासछेम्यारे वरसवली ॥ पचिस दिन तपधार ॥ जिने॰ एक कम साढा तिनसे ॥ पारणे तारचा दातार जिने॰ ॥ ३ ॥ नर तिरयंचने देवता ॥ परिसा दूकरकार ॥ जिने॰ ॥ तेखमीयाप्रभु सममने ॥ थिरगिरी जेमवयार ॥ जिने॰ ॥ सास॰ ॥ ४ ॥ हद क्षिम्याप्रभु थाकरी ॥ करम किया सवगार ॥ जिने॰ ॥ ग्यानकेवल तवेउपनो ॥ करवा परउपगार ॥ जिने॰ सास॰ ॥ ५ ॥ दीनो घरमदेशना ॥ ग्यानेते पंचप्रकार ॥ जिने॰ ॥ पंचभेद दरसण कह्यो ॥ तपस्या बारे उपचार ॥ जिने॰ ॥ सास

॥ ६ ॥ संजम सतरे प्रकारसुं ॥ एजिन सासणसार ॥ जिने० बतायो करुणाकरी ॥ ता
र्या बहु नर नार ॥ जिने० ॥ सास० ॥७ ॥ आपविराजो मोक्षमे ॥ तुमवाणीने अधार
॥ जिने० ॥ एकविस सहस वरसालगे ॥ तिरसी तीरथच्यार ॥ जिने० सास० ॥ ८ ॥
तिलोकरिख भव२ विखे ॥ चाहे चरणकीआस ॥ जिने० ॥ दीज्यो मुजने मयाकरी ॥
भक अभंग सीववास॥जिने०॥ सास०॥इति चोविसाजिन स्तवन संपूर्णः॥गाथा १७३॥
॥ कलसः ॥ इम रिद्ध वृद्धि सिद्धि दाता ॥ चोविसे तिर्थंकरु ॥ स्तवनकिना प्रेमलिना ॥
इछा पुरण सुरतरु ॥ उगणिसे सेतिसे अहमदनगरे ॥ पित्री चउदश आदीतजी ॥ महा
राजजेयवंता रिषजी प्रसादे ॥ तिलोकरिष दो जीतजी ॥ प्रभुतिलोकदो जीतजी ॥ १ ॥
अथ विसवहेरमानः जिन स्तवन लिष्यंतेः ॥ ढाल १ पहेलिः हरजसमेः ॥ तथा रिठने
मीनमो नरनारी ॥ एदेशीः ॥ सिरि मंदीर जयजसधारी. सुणो प्रभु अरजि हमारीः ए-
आंकणीः ॥ जंबु पूखलावइ विजेमे विराज्या ॥ पुंमरिकणी पुरीभारी ॥ श्रीयांस नृप कु
ल चंदजिनदतो ॥ सत्यकी तुममहेतारी ॥ तजी प्रभुरुषमणी नारी ॥ सिरि० ॥ १ ॥
पंचसे धनुषनी काया कचनजिम ॥ वृषभ लंछन तनधारी । जनम भयो सतरमा जीन

वारेतो ॥ विस मासमे दिक्षाधारी ॥ करम रिपु दूरनिवारी ॥ सिमं० ॥ २ ॥ केवलग्यान प्रगटभयो प्रभुके ॥ अमृत वांणउचारी ॥ दोउपदेश सदा सुखदायक ॥ हरषे भव्य नर नारी धारे तप संजमसारी ॥ सिमं० ॥ ३ ॥ तुमदरसणको रसीयो तसीयो ॥ वसीयो भ तंमजारी ॥ देयसाहीइ नहीकोइ लब्दीतो ॥ दूरदेशावर थारी ॥ पुगेकेसे आसद्दमारी ॥ सिमं ० ४ ॥ विषम पहाड़ जाड़ नदी नाला ॥ वन सघन भयकारी ॥ कुं आउ किणविध साहीबजी ॥ तुमकरुणाके भंमारी ॥ विनति ह्मारीलिजो सीकारी ॥ सिम० ॥ ५ इहानही केवली मनपरजवसो ॥ अवधिनाणी अणगारी ॥ कर्मसत्रु मुज महादूप देवे॥ धणीविना रडत पुवारी ॥ साहिबकरो वेगविचारी ॥ सिम० ॥ ६ ॥ क्षेत्रथीदूर भाव थकीनेडा ॥ भक्तवछल बृधधारी ॥ तिलोरिख इमजाणीहीयामे ॥ सर्णोलियो सुविचारी उतारोभवजलपारी ॥ सिमं ॥ ७ ॥ संपूर्ण. ॥ २ ॥ श्रीजुगामिंदर जिन स्तवन लिष्यते: ॥ ढाल १ जी: ॥ साधूजी सदाइ सुहामणा: एदेशी: ॥ युगमदिर मंदिरसमा: ॥ सेवकपंथी समानहो ॥ साहिब ॥ आयग्रह्यो तुम आसरो ॥ मिथ्यामति वनमानहो ॥ सा० यु० ॥ १ ॥ तिणअटवीमे ऊं गयो ॥ भमीयो चोरासी मायहो ॥ सा० ॥ दूख अ

भ्रमतां इणवन आसरे ॥ नंतामे भोगव्या ॥ कह्यो कत्रालग जायहो ॥ सा० यु० ॥ २ ॥
विरयांहे काल अनंतहो ॥सा०॥ ऊं अतिथाको आवियो ॥ तुम चरणांमे वसंतहो ॥सा
० गज लंछन क०
यु० ॥ ३ ॥ माता तारादेना नंदना ॥ सुद्रढ राय कुलचंदहो ॥ सा० गज लंछन क
ता ॥ भविजनना सुषकंदहो ॥ सा० यु० ॥ ४ ॥ कंतप्रिय मंगलातणा ॥ पुरो
आसहो॥सा० तिलोकरिषकरे विनती ॥ पकमो द्रढ विसवासहो ॥ सा० यु० ॥५
संपुर्णः ॥ ३ ॥ श्रीवाञ्ज जिन स्तवन लिष्यंतेः ॥ ढाल ३ जीः ॥ अनंत जिनसरणो सुषदाइ
रेः ॥ एदेशीः ॥ वाञ्जजिन वाहग्रहो महारीहो॰ वाञ्ज०।दूरगत दूरमत दूरनीवारो ॥ वि-
धे. ॥ एआकर्मी॥वळविजे सुसमा पुरीनगरी ॥ सुग्रीव नृपत्नारी ॥ विजया
स्यंदन ॥ मृगलंछन धारी ॥ वाञ्ज० ॥ १ ॥ तुममुञ्ज सिरसेहरा सीर छतर॥
॥ रविपरत्नाज्यां तमनहीठेरे ॥ हरिज्याह मृगजाहारी ॥ वाञ्ज० ॥ २ ॥
मोर सोर जीहा अहिनहीरेवे ॥ इमदीलसुं विचारी ॥ चरण सरणमे ग्रह्यो निरंतर ॥
॥री ।वाञ्ज० ॥३ ॥ महाभयांनक ए जगथानक ॥ भवोदधी महात्नारी ॥ तुम
जाजसमाणा ॥ करो त्नव जळपारी ॥ वाञ्ज० ॥ ४ ॥ मोहना राणीकंत

कृपानिध ॥ जगमे जयकारी ॥ तिलोकरिषकहे मुजनिस्तारो ॥ जाउमे बलीहारी ॥ वाहु० ॥ ५ संपूर्णः ॥ ४ ॥ श्रीसुबाहुजिनस्तवन लिख्यंते. ॥ ढाल ४थी सोवनसिंघासणरेवंतीः ॥ एदेशीः ॥ स्वामीसुबाहुप्रितमीः एटेरः ॥ लागीजुचंद चिकोररे ॥ चकवीनेमनजिमरवीवसे ॥ घनगरजारवमोररे ॥ स्वामी० ॥ १ ॥ मधुकरने मनेमालती ॥ बालकने मनमायरे॥पतिवरता पतनीपती॥कोकीलाअंब सुहायरे॥स्वामी० ॥२बप्रविजे अजोध्यापुरी ॥ निखरू नरेसर कुलचंदरे॥भूनंदामायनानंदना ॥ लंछनकपि सुषकदरे ॥ स्वामी० ॥ ३ ॥ किं पुषारांणीना साहेबा। ।लागोतुमसुं अतिप्रेमरे ॥ जब तुम गुंणमन संभरे ॥ हियमोथावे जीमहेमरे ॥ स्वामी० ॥ ४ ॥ रिष तिलोक मनअलिसमो ॥ चरण पंकज गुंणवासरे ॥ अनुभव रसग्रहुं भव भवे ॥ पुरो प्रभू एतीकआसरे ॥ स्वांमी० ॥ ५ ॥ संपूर्णः ॥ श्री सुजात जिन स्तवन लिष्यंतेः ॥ ढाल ५ मीः भजन कररे चांमडाकी पूतली भजनकररेः ॥ एदेशीः ॥ वातसुणोजी प्रभुवात सुणो. स्वामी सूजात मुझवातसुंणोः एटेरः ॥ भुषाने आधार आहार ॥ तिरस्याने निर ॥ रोगीने ओषधलाधे ॥ रहे मनथीर ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ पंषीने आकास आस ॥ नट वंसधार ॥ मारताने

अन्नसणं ॥ डुवताने पार ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ नेत्राहिण लाठीअरु ॥ लोन्नी धनसार ॥ ते-
मे तुमनांमतणो ॥ मुऊने आधार ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ पुरवघातकी खंम ॥ पुखलावइ जा
ण ॥ देवसेना माता तात ॥ देवसेण माण ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥ जेसेनाकंत न्नांनु ॥ लंछन
सोहंत ॥ तिलोकरिप साहायकरो ॥ अहो न्नगवंत ॥ प्रभु० ॥ ५ ॥ संपूर्णः ॥ ६ ॥
श्रीसयं प्रभु जिन स्तवनालिष्यंतेः ॥ ढाल ६ ठीः । रघूवंसीराम हिरदामाहीरीज्योरेः ॥
एदेशीः ॥ मेरोचितसयं प्रभुजी सुहावेरे दूजोकोइदायनआवेरे ॥ मेरे० ॥ एटेर कोइक ह
रि राधासुहावेरे ॥ कोइसिता राम मनावेरे ॥ कोइगोरा हर हरध्यावेरे ॥ मेरे० ॥ १ ॥
कोइक सरस्वति गणपतिरे ॥ रविशसी दग्ध सतिरे कोइक हनुमंत जेजती ॥ मेरे०॥२॥
कोइ न्नेरुं न्नवानी मनावेरे ॥ कोइमंम्री चंम्री गुणगावेरे ॥ कोइ इसु अल्लाने सरावे ॥ मेरे
॥ ३ ॥ जेविषय कषायमे राच्यारे ॥ तेदेवनहीमानु ऊं साच्यारे ॥ मित्रनृप मंगला सुत्त-
जाच्या मेरे० ॥ ४ ॥ शशि लंछन प्रियसेना स्वामीरे ॥ तिलोकरिष कहे शिरनामी
रे ॥ हिवतारो थे अंतरजांमी ॥ मेरे० ॥ ५ ॥ संपूर्णः ॥ ७ ॥ श्रीरिषन्ना नन जिन स्त
वन लिष्यतेः ॥ ढाल ७मीः ॥ घोम्रा देश कमोदना. एदेशी ॥ रिषन्नाननजिसुं विनतिः ॥

एटेर रिपञ्चानन जिसुं विनति ॥ ढेनोत्यवारंवारोरे ॥ किमनहीतारो मुझञ्चणी ञ्चकवछ लवृध्धारोरे ॥ रिप० ॥ १ ॥ निरागी नीरलेपछो ॥ सत्रु मित्र समञ्चावोरे ॥ निवाजो वञ्च लोकने ॥ मुझने किम अटकावोरे ॥ रिप० ॥ २ ॥ तुंमातातुहि पिता ॥ तुहि भ्रात स-मानोरे ॥ आनाकानी नहीकीजीये ॥ पुत्र समोकरी मानोरे ॥ रिप० ॥ ३ ॥ मुझ अपराध क्षमाकरो ॥ विरसेनादेवी जायारे किर्त्तिनृप कुलचदला ॥ लंछन मृगपति पायारे ॥ रिप०॥ ४॥ राणीजयावती नाहला ॥ रिपतिलोकने तारोरे ॥ वारो सकल दुषमाहरो॥विनतडी अवधारोरे॥रिप०॥५॥ सपूर्णः॥ ॥ श्री अनंत विर्ज जिनस्तवनः लिष्यते. ॥ ढाल ॥ मीः इणसरवरीयारीपाल उभिदोयनागरीः माराजालः उभीदोयनागरी॥एदेशी॥अनंतविरजमहाराज अनंतगुणआगरु॥महाराज॥अ०नागर नवल सूजाणके क्रिम्यासागरु ॥ महा० क्रि० ॥ करमकीया सवदूरके ॥ केवलपाइया ॥ महा० के० ॥ अनतबली अरिहंत भविक मनभाईया ॥ महा० भ० ।॥ १ ॥ अतिसे चोतिशधार ॥ पेतिश वाणीभली ॥ महा० ॥ पे० ॥ साभली प्रपदावारके आणेमनरली ॥ महा० आं० ॥ धारें समगतसुद्धकेइवृतआदरे ॥ महा० के० ॥ केइले संजभार भवोदधिसुंतरे ॥ महा

न्न० ॥ २ ॥ दिन १ अधिक आणंदरहे तुमआसरे ॥ महा०रे० ॥ देपी आपदिदार न-
वीक लोयणठरे ॥ महा० न्न० ॥ तिसीयेलु ऊंपूर हजुर दरसणतणो ॥ महा० ह० ॥
किममुज पुगआस वासदूरे घणो ॥ महा० द० ॥ ३ ॥ वसीया चितमजार जांणुं
पासहो ॥ महा० ॥ जा० ॥ जांणीसेवक न्नाव मांनो अरदासहो ॥ महा० मा० मं-
गलावति अंगजात मेघनृप नंदना ॥ महा० मे० ॥ गजलंछन गुणगेह पति जोगिंदना
॥ महा० प० ॥ ४ ॥ विजयवतिना कंतसुं आजि मुजतणी ॥ महा० सुं० ॥
तुमविनबीजोकोय नही जगमेधणी ॥ महा० न० ॥ तिलोकरिप निजसिख करीने मांन-
ज्यो ॥ महा० सि० ॥ सेवकनी अरदाश हिये अवधारज्यो ॥ महा० हि० ॥ ५ ॥ संपूर्ण
॥ ए ॥ श्री सुरप्रभु जिन स्तवनालिख्यते ॥ ढाल ए मीः दयाधरम दिलमाहे धारोरेः ॥
एदेशी ॥ सुरप्रभु मोहन गारोरेः म्हारे मनलागेछे प्यारोरे ॥ एटेरः ॥ पश्चिम धातकीखं-
म्मेजी ॥ विजे पुपलावइसार ॥ विजे नृपति कुल मंदरुजी ॥ विजयावतिना कुमार ॥
सुर० १ ॥ मुख पुरण सशि बिंबसोजी ॥ अटमी ईंदूसो न्नाल ॥ नयनांबुज वर पंखमी
जी ॥ नासातिल कुसम विशाल ॥ सुर० ॥ २ ॥ रसनांमृत कंदसमांनछेजी ॥ दशन

वलीकुलिय अनार ॥ अधरारुण विदुम ओपमाजी ॥ झसोदर सुविचार ॥ सुर० ॥ ३॥ अटसहसलछन धणोजी ॥ दिनकर जेम प्रताप ॥ नंदसेना राणीतजीजी ॥ संजमलि- नो छेआप ॥ सुर० ॥ ४॥ करमहणी केवल लहीजी ॥ तारोछो भवजीव ॥ तिलोकरि- ष कहेआपकोजी ॥ सरणोहोज्यो सदीव ॥ सुर० ॥ ५ ॥ संपूर्ण. ॥ १० ॥ श्रीविशाल जिन स्तवन लिख्यतेः ॥ ढाल १ ०मीः मेरी २ करता जनमगयोरेः ॥ एदेशीः ॥ विसाल जिनद विसालसदाईः विसाल संपतदो मुजने सवाईः ॥ एटेर नाग नरेस्वर भद्रादेवी जाया ॥ चरणमे लंछन भानुकहाया ॥ विसा० ॥ १ ॥ गढमढ मंदीर हाठ हवेली ॥ अतसमे हंसजावेहे मेली ॥ विस० ॥ मात पिता जुवनि सुतभाइ ॥ एपिण नित्यनही जगमाई ॥ विसा० ॥ २ ॥ धनधान्य अरु भुषणाकाया ॥ वादलछाय सपन वतमाया विस० एरिधकारमी महादुखदाई तुमथिरसंपदहे सुखदाईविसा३इमजाणी तुमसुंमनला गो ॥ जग रचनादेखी मनभागो ॥ विसा० ॥ अखंमोसु तुमदरसणचाव ॥ पाखनही मुज किणविध आउ ॥ विसा० ॥ ४ ॥ विमला कंत विमलमति दीजो ॥ वाहीरह्या सेवक सुधलीजो ॥ विसा० ॥ तिलोकरिष वंदे नितभावे ॥ अवीचल संपत आसपुरा-

न० ॥ २॥ दिन१ अधिक आणंदरहे तुमआसरे ॥ महा०रे० ॥ देषी आपदिदार न-
वीक लोयणठरे ॥ महा० न० ॥ तिसीयेलु ऊंपूर हजुर दरसणतणो ॥ महा० ह० ॥
किममुज पुगेआस वासदूरे घणो ॥ महा० द० ॥ ३ ॥ वसीया चितमजार जांणुतुं
पासहो ॥ महा० ॥ जा० ॥ जांणीसेवक नाव मांनो अरदासहो ॥ महा० मा० मं-
गलावति अंगजात मेघनृप नंदना ॥ महा० मे० ॥ गजलंछन गुणगेह पति जोगिंदना
॥ महा० प० ॥ ४ ॥ विजयवतिना कंतसुं अर्जि मुजतणी ॥ महा० सुं० ॥
तुमविनबीजोकोय नही जगमेधणी ॥ महा० न० ॥ तिलोकरिष निजसिख करीने मांन-
ज्यो ॥ महा० सि० ॥ सेवकनी अरदाश हिये अवधारज्यो ॥ महा० हि० ॥ ५॥ संपूर्ण
॥ ए ॥ श्री सुरप्रभु जिन स्तवनालिख्यतेः ॥ ढाल ए मीः दयाधरम दिलमाहे धारोरेः ॥
एदेशी ॥ सुरप्रभु मोहन गारोरेः म्हारे मनलागेछे प्यारोरे ॥ एटेरः ॥ पश्चिम धातकीखं-
म्मेजी ॥ विजे पुषलावइसार ॥ विजे नृपति कुल मंदरुजी ॥ विजयावतिना कुमार ॥
सुर० १ ॥ मुख पुरण शशि बिंबसोजी ॥ अष्टमी ईंदूसो नाल ॥ नयनांबुज वर पंखमी
जी ॥ नासातिल कुसम विशाल ॥ सुर० ॥ २ ॥ रसनांमृत कंदसमांनछेजी ॥ दशन

वलीकुलिय अनार ॥ अधरारुण विद्रुम ओपमाजी ॥ झसोदर सुविचार ॥ सुर० ॥ ३॥ अष्टसहसलछन धणीजी ॥ दिनकर जेम प्रताप ॥ नदसेना राणीतजोजी ॥ संजमलि- नो छेआप ॥ सुर० ॥ ४॥ करमहणी केवल लहीजी ॥ तारोगे भवजीव ॥ तिलोकरि- ष कहेआपकोजी ॥ सरणोहोज्यो सदीव ॥ सुर० ॥ ५ ॥ संपूर्ण. ॥ १० ॥ श्रीविशाल जिन स्तवन लिख्यंतेः ॥ ढाल १ ० मीः मेरी२ करता जनमगयोरेः ॥ एदेशीः ॥ विसाल जिनंद विसालसदाईः विसाल संपतदो मुजने सवाईः ॥ एटेरः नाग नरेस्वर भद्रादेवी जाया ॥ चरणमे लंछन भानुकहाया ॥ विसा० ॥ १ ॥ गढमढ मंदीर हाठ हवेली ॥ अंतसमे हंसजावेहे मेली ॥ विस० ॥ मात पिता जुवति सुतभाइ ॥ एपिण नित्यनही जगमाई ॥ विसा० ॥ २ ॥ धनधान्य अरु भुषणाकाया ॥ बादलछाय सपन वतमाया विस० एरिधकारमी महादुखदाई तुमथिरसपदहे सुखदाईविसा३ इमजाणी तुमसुंमनला गो ॥ जग रचनादेखी मनभागो ॥ विसा० ॥ अखमीसु तुमदरसणचाउ ॥ पावनही मुज किणबिध आउ ॥ विसा० ॥ ४ ॥ विमला कंत विमलमति दीजो ॥ चाहीरह्या सेवक सुध्दलीजो ॥ विसा० ॥ तिलोकरिष वंदे नितभावे ॥ अवीचल संपत आसपुरा-

वे ॥ विसा० ॥ ५ ॥ संपूर्णः ॥ ११ ॥ श्रीवज्रधर जिन स्तवन लिख्यंते ढाल ११मी. श्रीमुनि सुव्रत साहेबाः ॥ एदेशीः ॥ श्रीवज्रधर स्वामीसुं विनती ॥ तुम प्रभु सकल जीवन जगाधारके ॥ अधम उधारण वृदहे ॥ तुमविना नहीकोई तारणहारके श्री वज्रधर स्वामीसुं विनतीः ॥ १ ॥ तुमसरणाविना हुं गयो ॥ नरक निगोदमे वारअनंतके ॥ दूपअनंतमे भोगव्या ॥ परमाधामी तणी त्रास अनंतके ॥ श्री० ॥ २ ॥ परवसे पंचथावरविषे ॥ डुप लह्या तिनुविकलेंद्री मायके ॥ पंचसंनी असंनीपणे ॥ नरभवे निचकुले अवतारके ॥ श्री० ॥ ३ ॥ देवथयो अभोगीयो ॥ सुभ असुभ लह्या कर्मप्रसंगतो ॥ पद्मरथ सरस्वति नंदना ॥ शपलंछन कचनरंगके ॥ श्री० ॥ ४ ॥ विजियावति सिरसेहरो ॥ सा नलो स्वामी तुंमकरुणा भंडारके ॥ रिपतिलोक अरदासडी ॥ जीमतीमकरी भवपार उतारके॥श्री०॥५॥संपुर्ण॥१२॥श्रीचंद्रानन जिन स्तवन लिख्यंतेः॥ ढाल १२मी· विरसुंणोमोरो विनती· एदेशीः॥चंद्राननजीसुं वंदणा॥नितहोज्योहोमूजवार हजारके वाल्मिक नृप कुलचंदलो ॥प्रभुअंगजहो पद्मावती सारकेचंद्रा १राणीलीलावतीत्यागने आदरीयोहो स्वामी संजमभारके ॥ दरिया सद्गुंणनासही ॥प्रभुजित्याहो अष्टकर्म क-

रारके ॥ चंद्रा० ॥ २ ॥ वृपभ लंछन करीराजता ॥ वलि वाजताहो केवलगुण ग्यानके उपदेसदेइ भव्यतारता ॥ नित्यध्यावोहो प्रभुशुक्लध्यानके ॥ चंद्रा० ॥ ३ ॥ वितराग पदसासतो ॥ तुमेपायोहो सुणोदिन दयालके ॥ तेआपो अनुग्रहेकरी ॥ मुज टालोहो प्रभुकर्म जजालके ॥ चंद्रा० ॥ ४ ॥ तुम माता तुमही पिता ॥ तुम बंधवहो सरणागत देयके ॥ तिलोकरिष नित्यसासतो ॥ चितचावेहो चरणांबुज सेवके ॥ चंद्रा० ॥५॥ संपूर्णः ॥ १३ ॥ श्रीचंद्र बाहुजिन स्तवनलिष्यतेः ॥ढाल १३मीः मल्लिनाथ मनमोह्योरेः ॥ एदेशीः ॥ चंद्रबाहु बलीहारीरेः जगमें जसधारी ॥ एटेरः ॥ पुखरादिप पुरवदिश विजय ॥ पुपलावति विजेभारीरे ॥ जग० ॥ १ ॥ देवानंद नरेद कुलदिपक ॥ चंदनदे महेतारीरे ॥ ज० ॥ कमलको लछन तनसुपकारी ॥ त्यागी सुगंधा नारीरे ॥ कर्मपुंजकिकरदीयेछारी ॥ भयोग्यान केवल तिणवारीरे ॥ ज० ॥ अमृतवाणी उचारी जीनदजी ॥ तारोभविक नर नारीरे ॥ जग० ॥ ३ ॥ तुमनामे जय२ जगमाहे ॥ मिटे सकलभय भारीरे ॥ ज० ॥ लिपटे सर्व चंदनतरुमालि ॥ त्रासे सारंगरवभारी ॥ जग० ॥ ४ ॥ कर्म अहिजीव तरु लपटाणा ॥ जिन जपसब्द करारीरे ॥ ज० ॥ तिलोकरिष

इम पापनिवारण ॥ करज्यो करुणा विचारीरे ॥ जग० ॥ ५ ॥ संपूर्णः ॥ १४ ॥ श्री-
भुजंगाजिन स्तवन लिष्यंतेः ॥ ढाल ॥ १४ ॥ मीः कपुरहुवे अतिउजलोरेः ॥ एदेशीः ॥
भावथकी वंदणा करूजी ॥ रायमहाबलनंद ॥ महीमाकुपे हंसलोजी ॥ कमल लंछन
सुषकंद ॥ भुजंग० ॥ १ ॥ अवरदेव सहुपुचियाजी ॥ विषे कषायमेपुर ॥ तुमनिकलंक
निरागीयाजी ॥ दीसे अंतरभुर ॥ भुजं० ॥ २ ॥ किहांरवीने किहां आगीयोजी ॥ किहां
सरसूं किहांमेर ॥ आकषीर धेनुकीहाजी ॥ अहोनिसकेरो फेर ॥ भुजं० ॥ ३ ॥ किहांहीरो किहां
काकरोजी ॥ किहा वायसनेमराल ॥ किहांसागर कीहां छीलरुजी ॥ बरपतिओर कंगाल ॥
भुजं० ॥ ४ ॥ इमजांणी सरणोलियोजी ॥ गंधसेनाना कंत ॥ रिखतिलोकने तारज्योजी
भक वछल भगवंत ॥ भुजं० ॥ ५ ॥ संपूर्णः ॥ १५ ॥ श्रीइश्वरजिन स्तवनालिष्यंतेः ॥ ढा
ल १५ मीः आछे लालकीदेशीः ॥ श्रीइश्वरजगदीस ॥ वंदुमेनिसदीस ॥ जिनंदराय ॥
तुम समजगमेको नहीए ॥ १ ॥ मेअवगुंण भंडार ॥ पुतो पाप अठार ॥ जिनं ॥ कर्म
कादममे परभीयोए ॥ २ ॥ मावितविनाजेबाल ॥ कूंणकरे सारसंभाल ॥ जिनं ॥ मावि
तगे तुमे माहराए ॥ ३ ॥ गजसेन जसोदा नंदा चरणमे लंछनचंद ॥ जिनं ॥ भद्राव-

तिना नाहलाए ॥ ४ ॥ तिलोकरिप कहेआम ॥ पावन करज्यो स्वांम ॥ जिनं ॥ चरण सरण लीयो आसरोए ॥ ५ ॥ संपूर्ण. ॥ १६ ॥ श्रीनेम प्रभु जिन स्तवन लिप्यतेः ॥ ढाल १६ मीः कीधाहो करम नछुटीये ॥ एदेशीः ॥ श्रीनेमीश्वर साहेवा ॥ जव उपजंज णदेव लालरे॥पर्मवैद्यपर्मातमा॥चाउ निरंतर सेव लालरे ॥श्रीनेमीश्वर साहेवा ॥१॥जनम जरा जयआकरो ॥ मरणरोग मनसोच लालरे ॥ तिणेकरीहुं अतिपिडीयो ॥ कृपा करी दीजो मोच लालरे श्रीने० ॥ २ ॥ कालभुजंग महाविषेजरयो ॥ तुम गारुडीपर्म लालरे ॥ तुमसमरण महामन्त्रछे ॥ महारी तुमनेसर्म लालरे श्रीने० ॥ ३ ॥ विरसेण कुलमेतिलो ॥ सेनादे सुत सुपकार लालरे ॥ मोहनाराणी कंतथे ॥ रवी लंछन फलकार लालरे ॥ श्रीने० ॥ ४ ॥ तिलोक रिपकरे विनती ॥ लुल २ वारंम वार लालरे ॥ सोवाता एकवातडी ॥ जव जल पार उतार लालरे ॥ श्रीने० ॥ ५ ॥ संपुर्णः ॥ १७ ॥ श्री विरसेण जिन स्तवनालिष्यंतेः ॥ ढाल १७ मीः जिवरेतुं सीलतणो करसंगः ॥ एदेशीः॥ मात पिता सुत कामणीरे ॥ स्वारथीयोछे संसार ॥ सरणागत कोइनहीरे ॥ उंडो ग्यानविचार ॥ जीवरेतुं विरसेण जिनसेवः ॥ १ ॥ काल जोरावर लोकमेंरे ॥ छोडेनही

रंकराव ॥ सेवथकी सुषसंपजेरे ॥ डुजोनही कोईदाव ॥ जीव० ॥ २ ॥ पश्चिम पुष्करार्ध विषेरे ॥ नय नंजण नगवंत ॥ पुस्कलावइ पुंम्मरीगणीरे ॥ भूमिपाल सुतसंत जीव० ॥ ३ ॥ नानुसेना तनयेकह्याजी ॥ लंछन वृषन्न सुहाय ॥ राजसेनारांणीतजीरे॥ जीव० ॥ ४ ॥ तिलोकरिष परतिषपणेजी ॥ जांएयां त्रीभुवन-महिमाकहिनहीजाय ॥ जीव० ॥ ५ ॥ संपुर्णः ॥ १७ ॥ इस ॥ तारो तारो तातजीरे ॥ पुरोपुरो ह्मारी जगीस ॥ जीव० ॥ ५ ॥ संपुर्णः ॥ १७ ॥

श्रीमहाभद्र जीन स्तवन लिष्यंतेः ॥ ढाल १७ मीः ह्विवम्हे रापीजेहोः नवीयण मंगलीक सरणाच्यारः ॥ एदेशी महानदर जिनध्याइयेहो नवियण ॥ गुंणगावो नितनीत ॥ लहीये महानदरपणोहो नवीयण ॥ पावो रिपूसुं जित ॥ सुगुणा सेवियेहो भवीयणः महानदर जिनराज ॥ १ ॥ देवरायना नंदनाहो नवी० उमादे अंगजात ॥ सुरीकंताना कंतजीहो ॥ नवी० ॥ गजलंछन विख्यात ॥ सुगु० ॥ २ ॥ अरिकरी हरि अरु भुतनाहो नवी० ॥ विघन सङ्ग टलजाय ॥ रोग सोग आवेनहीहो ॥ नवी० पातिक दूर पुलाय सुग० ॥ ३ ॥ परवतहोवे पाघराहो ॥ नवी० ॥ सागरदेवे थाग ॥ अगनी सीतलता ह्मवेहो ॥ नवी० ॥ जोरन चाले नाग ॥ सुगु० ॥ ४ ॥ दूपढावे सुपसंपजेहो ॥ नवी

वरते मंगलाचार ॥ तिलोकरिपकहे नाथसुंहो ॥ भवी॰ दोअविचल जयकार ॥ सुगु ॥ ५ ॥ सपुर्ण. ॥ १९ ॥ श्रीदेवजस जिन स्तवन लिष्यंतेः ॥ ढाल ॥ १९ ॥ मी ॥ रेम्राइसेवो साधसयाणा.॥एदेशीः ॥श्रीदेवजस जसम्रारीरे म्राइ ॥ देव०॥ मनवचकाया करी सुधभावे ॥ नित२धोक हमारीरे म्राइ ॥ श्रीदेवजः एटेरः ॥ मंदिरलेषण सज्ञनराइ वणावे ॥ सकल सागर तणोवारी ॥मसीवणाय आनकागज पर॥लिपताआवे नपारीरे॥ श्री०॥१॥मंदिरगीरतो तोलकरे कोइ ॥वदाविलहेर अपारी ॥ तिणथी अनंतगुणछेप्रभुके रा ॥ सोचोज्ञानविचारीरे ॥ म्राइश्री० ॥ २ ॥ अनत ग्यान दरसण चारीतर ॥ तपविर-ज अधिकारी ॥ सुरगुरु छेद लहेनही जिनगुण ॥ कुलगीणति नरनारीरे ॥ म्राइ श्री०॥ ॥ ३ ॥ सर्वभूति कुलचद दिवाकर ॥ गंगादेवी महेतारी ॥ सशी लंछन पदमावति प-तिके ॥ किर्तनीरतर सारीरे ॥ म्राइश्री० ॥ ४ ॥ अनाथ नाथ अवंधुनाभ्राता ॥ सुंणज्यो अर्जहमारी ॥ तिलोकरिप जस आपानिरंतर तोजाणू रिजवारीरे ॥ म्राइश्री० ॥ ५ ॥ संपूर्ण॥२०॥श्री अजितविर्ज जिनस्तवनलिष्यंतेः ॥ढाल२० मी॰ श्रीचंद कुमारः ॥ ए-देशीः ॥ श्री अजित विरजः हरोविपतमेरी एहीअरज ॥ एटेरः ॥ तेरे काठीयाकरे धनकी

हरज ॥ तेरेतणगयिासोतो देवेजरज ॥ श्री ॥ कालविकराल व्याल आवेगरज ॥ सुण-
केमइहेमेरे अधकीतरज ॥ श्री० ॥ २॥ रोग सोग भय दूषदीज्यो वरज ॥ आसाताको
चटकोने साताखरज ॥ श्री० ३ ॥ जाणतहो स्वांमी मेरेदीलको मरज ॥ आठुकरम-
को थेटालो करज ॥ श्री० ॥४ ॥ राजपाल कुलकनका कुषे सरज ॥ रत्नमाला राणी
अरुजगमाया तज ॥ की० ॥ ५ ॥ गुंणदेखी आपकामे भयो अचरज ॥ स्वस्तिक लं-
छनसोहे चर्णरुपकज ॥ श्री० ॥ ६ ॥ तिलोकरिषकहे तुमतातमेऊ अज ॥ दिज्योमेरे-
हाथ सदाधर्मरुपध्वज ॥ श्री० ॥ ७ ॥ संपूर्णः ॥ कालशः ॥ इमविस जिन वृध्दमांन-
विचरे ॥ पंचमहाविदेह जाणीया ॥ एक१माहीच्यार सुखकर स्तवनाककें बषाणीया ॥
उगणीसेसेतिश' सुद्धआश्विनः बिजबुध स्तवनाकरी ॥ कृपाएवंतारिषजी गुरुकी ॥ ति-
लोकरिषदो सीवासिरी ॥ अथाहितोपदेश पदलिष्यंतेः ॥ अथश्री चोविशजिन राज
स्तुतिपदः ॥ नमो२रे भविक प्रभुचरणा ॥ मिटजावे सकलदूषमरणारे ॥ नमो० ॥ १ ॥
आदि अजित संभव हितकरणा । अभिनंदण सुमत सुद्धधरणारे ॥ नमो० नितपदम
सुपासजीउ चरणाः चंदाप्रभुजी लंछन चंद्रवरणारे ॥ नमो ० ॥ ३ ॥ सुबुध शितल

अताप उपद्दरणा ॥ श्रेयांस वासपूय लेवोसरणारे ॥ नमो० ॥ ४ ॥ होयविमल जपत न्मयटरणा ॥ अनंत धरमजीमेटे न्मवफिरणारे ॥ नमो० ॥ ५ ॥ संत कुथु आरिकिया न्मावनिवरणा माल्लि मुनीसुव्रत सीमरणारे नमो० ॥ ६ ॥ नमी नेमी पार्श्व करिपसु-कुरणा । महाविरजी चरणेसीस धरणारे ॥ नमो० ॥ ७ ॥ तिलोकरिपकहे दूपसेजोत्त-वरणा ॥ तो समरोप्रभु तारण तीरणारे ॥ नमो० ॥ ८ ॥ इति ॥ १ ॥ ॥ अथदेव स्तुतिपद० ॥ नमो२रे देवअरिहंता । प्रभु सिवरमणीके कंतारे ॥ नमो० ।१ घणघातिक करम सबहंता । सचजाणन्मये केवलवंतारे । नमो० ॥ २ ॥ जेअतिशे चोतिस सोहंता। सोतो तिनन्मवनमे महंतारे ॥ नमो० ॥ ३ ॥ एकजोजन वाणीवागरंता ॥ च्यारतिरथ-की थापनाकरंतारे ॥ नमो० ॥ ४ ॥ तिलोकरिष मनतनसे नमंता सेनादज्यो सदाइ न्मगवंतारे । नमो० ॥ ५ ॥ इतिः ॥ २ ॥ ॥ अथ गुरुस्तुति पदः ॥ सतगुरुजि जपो रे मेरेभया । जै न्मवजलपार करयारे ॥ स० ॥ १ ॥ गुरुकहिया नावखेवैया ॥ परनेतारे ओर आपतीरयारे ॥ स० ॥ २ ॥ गुंणसतावीसके जो वेरेया ॥ सत्य मधुर वांणीके व-चरेयारे ॥ स० ॥ ३ ॥ विपेकषायकी अगनी बुजैया ॥ वेतोग्यानको जलवरसयारे ॥

॥ स० ॥ ४ ॥ हिरण सिकारकुं जोगइया ॥ लेइ संजम संजति सीवगयारे ॥ स० ॥
॥ ५ ॥ परदेसी महापापी भया । गुणचालीस दिनमे स्वर्गलयारे । स० ॥ ६ ॥ गुरु-
जोगे अनंत इमथया ॥ सबसखामे न्यावचेतयारे ॥ स० ॥ ७ ॥ तिलोकरिष कहे गुरु-
गहीवेया ॥ सोतो अचल वासवसयारे ॥ स० ॥ ८ ॥ इति ॥ ३ ॥ अथ धर्मस्तुतिपद ॥
धर्मरुपीवणायलोनेया ॥मानो २ सिषमेरी न्इयारे ॥ ध० ॥ १ ॥ संतोसका पाल्या जमैया
क्षिम्याकीमे पीललगैयारे ॥ ध० ॥ २ ॥ आश्रवका डुवार बुरया ॥ करोचाटुविरागसु
हैयारे ध० ॥ ३ सतगुरुजीहे चतुरपेवैया । निजतिरे औरतिरेयारे ॥ ध० ॥ ४ ॥ भवोद
धिसु तरणकीजो चैया । तिलोकरिष कहे धर्मगहियारे ध० ॥ ५ ॥ इतिः ॥ ४ ॥ अथ
ग्यानगुणो पदेश ॥ करोग्यानदिपक उजवालो । जिणसुं मिटेत अग्यानको कालोरे ॥
॥ १ ॥ पेहलीउग आलसकुंटालो ॥ गेमो विकथारसको चालोरे ॥ क० ॥ २ ॥ करो
सुगुरुकीसेवा विशालो । सुत्रसाधिसुखोल्दे तालोरेः ॥ क० ॥ ३ ॥ कुमति कलेस चाति
कु थेबालो । जांणपणाविना किरियाबेयालोरे ॥ क० ॥ ४ ॥ तिलोकरिषकहे ग्यांन गु-
णीयालो । वेगोलहेगा मुगतको मालोरे ॥ क० ॥ ५ ॥ इतिः ॥ ५ ॥ अथ सम्यत्क उप-

देश ॥ सुध समगत वृत रस राचो ॥ जेनविना ओरफेन सबकाचोरे ॥ १ ॥ सचा दे-
व गुरु धर्मजाचो ॥ खोटामतलेइ मतिखाचोरे। । सु० ॥ २ ॥ नितप्रते जेनसास्त्रकु वां-
चे ॥ सुंण २ केलगावो तनआचेरे । सु० ॥ ३ ॥ इणसु सीवीजे कालकोमाचो ॥ घटेन्न
व अनत सर्द्धा साचोरे ॥ सु० ॥ ४ ॥ इणविना चउगतमे नाचो । नाहिछुट्यो कर्मांकों
ढाचोरे ॥ सु० ॥ ५ ॥ तिलोकारिपकहे समगत माचो ॥ कुमतिलता जमटाचोरे ॥ सु०
॥ ६ ॥ इतिः ॥ ६ ॥ अथ चारित्रपद ॥ पालो २ संजमकी किरिया ॥ जीणथीजीव
अनंता तिरीयारे ॥ पा० ॥पंचमहावृत भावे उचरीया रहोपाप करमसे टरियारे ॥ पा०
॥ २ ॥ पंच आश्रव दूवारकुं बुरीया । राग द्वेष महारिपु चुरीयारे ॥ पा० ॥ ३ ॥ जो
सजमकरणी थकीमरीया । सोतो च्यारगतिमाही फीरीया ॥ पा० ॥ ४ ॥ एसाजाणके
संजम आदरीया । अनंतगुणाका नयाहेसोतो दरीया ॥ पा० ॥ ५ ॥ तिलोकारिपकहे
परहितधरीया । पूनजोगेमीली एहवीरियारे ॥ पा० ॥ ६ ॥ इति ॥ ७ ॥ अथ तपोपदे-
श ॥ तुमतपस्याकरोरे नवीप्राणी सम दम उपसम चितआणी ॥ तु० ॥ १ ॥ कर्म
धान पिसणकुं एघांणी । महाअटवीके आगलगाणीरे ॥ तु० ॥ २ ॥ अहकार पर्व-

त दूध खाणी । तपस्या सोवज रसमांणीरे ॥ तु० ॥ ३ ॥ नव १ तापमीटावण थांणी । करे सक ल कलेसनी हांणीरे ॥ तु० ॥ ४ ॥ तिलोकरिपकहे तप सुखदाणी । जोकरेसो वरे सीवराणीरे ॥ तु० ॥ ५ ॥ इतिः ॥ ८ ॥ अथक्रोध निवारणः ॥ मेटो २ रे भविक जनलाली । जिणसे रहोगे सदाइ पुसीयाली । मे० ॥ १ ॥ पेली देवेनीज आतमा बाली पिछे दूजीनेदेवे परजालीरे । मे० ॥ २ ॥ यातो धर्मतरु छेदणपाली । जममोरस वसीहे जंजालीरे ॥ मे० ॥ ३ ॥ एसाजांणके देणानही गाली । क्षिम्याजाणो सदा हितवाली रे ॥ मे० ॥ ४ ॥ तिलोकरिपकहे क्षिम्यालो काली । तो सीवसुप लहोगा विसालीरे ॥ मे० ॥ ५ ॥ इतिः ॥ ९ ॥ अथ माननिवारणः ॥ मतकरोरे चतुर अभीमाना । अंतदावे परभवजाणारे । म० ॥ १ ॥ फुलफूल्यासो देपकुमलांणा । जो बांध्यासो विपराणारे ॥ ॥ २ ॥ थीरनहींईइ चंद्र रवी भाना । थीरनहीहे जगत राजानारे ॥ म० ॥ ३ ॥ अंतदावेतो एहि खपजाना करोक्रोम जतन अनुमानारे । म० ॥ ४ ॥ कालवेरीहे महादूप दांना इसनेकीयाहे जगतहेरानारे ॥ म० ॥ ५ ॥ एसे समजके दिल नरमांना ॥ नितगुणी जनके गुंणगांणारे ॥ म० ॥ ६ ॥ तिलोकरिपकहे सुणोस्पाना । विनेकीयासे पदनीरवा-

णारे॥ म० ॥७॥इतिः॥ १०॥ अथ माया पद ॥ छेडो श्र रेकपटकी कतरणी। या तो धर्मन्राकी छिनकरणीरेः छे० ॥ १ ॥ यातो नरक निगोदकी नीसरणी। यातो धुता लोन्नी घर घरणी ॥ यातो सीवपुर सुपकी हरणीरे॥ छे० ॥ ४ ॥ तिलोकरिपकहे कपटन करणी ॥ जोथाने सीव वधु वरणीरे ॥ छे० ॥ ५ ॥ इति. ॥ ११॥ अथ लोन्न हरण.॥ मतकरोरे चतुर मायामेरी ॥ यातोपुनथकी रहीछेरीरे ॥ म० ॥ १ ॥ जब वटजाय पूनकी ढेरी । तब रासीरहेगा नहीतेरीरे॥ म० ॥ २॥ यातो भइनहिहे कीणकेरी । न्नागविना मीलेनही हेरीरे ॥ म० ॥ ३ ॥ च्यारदीनकी चा दणीहे गहेरी॥अंतेतो रयण अंधेरीरे॥ म० ॥४॥ यातो जोज्यो आवे गहेरी तैसे तृश्ना-वधे वहुतेरीरे। म० ॥ ५ ॥ जाणो नरकनिगोदकी यासेरी ॥ येसीसमजलोतृश्नाफेरीरे॥ म० ॥ ६ ॥ तिलोकरिपकहे ग्यानकीया न्नेरी।इसकी संगतज्या सीवनेरीरे॥ म० ॥ ७॥ इतिः ॥ १२ ॥ उपदेशी ॥ भोरन्नइरे बटाउ जागो जागो।थाने जाणो देशावर आगोरे ॥ न्नो० ॥ १ ॥ चले संघ चतुरको सागो। तिणसुंरहे मतिपाछे आगोरे॥ न्नो० ॥ २ लेले परचि आगे नही थागो ॥ जिणसुं लागेनही दूप दागोरे॥ न्नो० ॥ ३ ॥ पंच ठ-

ग सुमतिधरज्यो रागो ॥ । वसपमीयांथी करदेसी नागोरे । भो० ॥ ४ ॥ तिलोकरिष
कहे मोह नींद त्यागो । ठेमो ऊवट पंथ सीवलागोरे ॥ भो० ॥ ५ ॥ इतिः ॥ १३ ॥

॥ अथ श्रावकधर्मः ॥ मानोरे सुगुरुका केना । जिणसे पावोगा अमरसुष चेनारे।
॥ मा० ॥ १ ॥ मीथ्या धर्मजांणो सवफेना । षोलदेषो अंतर नेनारे ॥ मां० ॥ २ ॥
करो छकाय जिवनकी जेना । वोलो मधुरता निरवद वेनारे । मां० ॥ ३ ॥ विनदीया
किसीका नहीलेना । परत्रियागीणो मायो वेनारे ॥ मा० ॥ ४ ॥ अति त्रश्राकरो मतिसे
ना ॥ चामी चूगली आलनहीदेनारे ॥ मां ॥ ५ ॥ संजमलेइने परिसा सवसेना । ति-
लोक रिषकहे प्रभुसरणे रेहनारे ॥ मां० ॥ ६ ॥ इतिः ॥ अथ पापफलो पदेशः ॥
चेतो २रे चतुर जगषोटा ॥ करो धर्मध्यान फलमोटारे ॥ चे० ॥ १ ॥ धरमविना त्रमे-
गा जीमदोटा ॥ सहेगा नर्कविषे जम सोटारे ॥ चे० ॥ २ ॥ नहिमीले पापिने पुरारो-
टा । पाणीपीवणने मिलेनही लोटारे ॥ चे० ॥ ३ ॥ भेलोकरे नर धनकेइ कोटां । तो-
हि तृश्नावंत मनमे टोटारे ॥ चे० ४ ॥ तिलोकरिषकहे लोधर्म ओटा ॥ तोमिटजाय-
गा जमचोटरे ॥ चे० ॥ ५ ॥ इतिः ॥ अथ कालआश्रीः ॥ काटो २ रे कालकोहे

फासी ॥ रहो २ जगतसे उदासीरे ॥ का० १ ॥ ईंद्र चंद्र असुर सुररासी । जो उपजेसो सकलविनासीरे ॥ का० ॥ २ ॥ कालरिपू तुजपर चमत्रासी । एसी ठेरनहीज्यां लुकजासीरे ॥ का० ॥ ३ ॥ तुंतो च्यारदिवसकोहे वासी ॥ कर्मबाधेसोइ गतपासीरे ॥ का० ॥ ४ ॥ जय मरणेका मनमेविमासी । करो धरमध्यान उलासीरे ॥ का० ॥ ५ ॥ तिलोकरिखकहे कालनहिपासी । जो मोहणी करम खपासीरे ॥ का० ॥ ६ ॥ इतिः ॥ ॥ १६ ॥ अथ उपदेशीः ॥ रहो १ रे धरम धनतसीया । जोथे सीवरमणीका रसीयारे ॥ र ॥ १ ॥ राखज्यो मन तनकुंकसीया । सुद्ध समगत वृतमे ठसीयारे ॥ र० ॥ २ ॥ राग द्वेष जगत जन फसीया ॥ भविजनसो दूरे नसीयारे ॥ र० ॥ ३ ॥ कामक्रोध ठगासुंजे फसीया । सोतो अचल दूषानसुं चसीयारे ॥ र० ॥ ४ ॥ तिलोकरिषकहे जो धर्मवसीया ॥ सोवे सीवसेजमे उलसीयारे । १०५ ॥ इतिः ॥ १७ ॥ अथ उपदेशीपदः ॥ चेतो२रे कुटंबके वेगारी ॥ जाणो मतलबकीजग यारीरे ॥ चे० ॥ १ ॥ मातपिता सुत बंधव नारी ॥ तुंजाणरह्या दिल महारीरे ॥ चे० ॥ २ ॥ कुटंबिहे कपटके भंमारी ॥ करे पुसामदीउपरसे धारीरे ॥ चे० ॥ ३ ॥ जो पंषीबेठे तरुवर माली । मन

माहिसू गरज विचारीरे ॥ चे० ॥ ४ ॥ तिलोकरिषकहे धरमलोधारी ॥ जो उतरयाचा-
हो भवपारीरे ॥ चे० ॥ ५ ॥ इतिः ॥ १८ ॥ अथ उपदेशीः ॥ मानो२रे अचल सु-
खगरजी ॥ मतहोवोथे करमका करजीरे ॥ मा० ॥ १ ॥ मत दूपाना कीसीकी मरजी ॥
होणहारटले नहींसो सरजीरे ॥ मा० ॥ २ ॥ कुसंगतदो तुमेवरजी ॥ पापत्यागो
सयानेचित लरजीरे ॥ ३ ॥ मतहोजू वेगारको दरजी ॥ वीषे कषायकुंदो तुम
वरजीरे। मा ॥ ४ ॥ तिलोकरिषकहे वन जिनवरजी। करो प्रभुसुं सिव अरजीरे ॥
मा० ॥ ५ ॥ इतिः ॥ १९ ॥ अथ उपदेशीः ॥ मानो २ रे सिशामण मेरी ॥ जोचाहो
मुगतकि सेरीरे ॥ मा० ॥ १ ॥ मात पिता कुटंब सबवेरी ॥ ज्यांसु ममताकरया दूषफेरी
रे ॥ मां० ॥ २ ॥ मायाकी सपना सम लहेरी ॥ मतकर ममतातुं बऊलेरीरे ॥ मां ॥ ३ ॥
काचा कुंभजेसी कायाकी देहेरी। सेवटतो राखकी ढेरीरे ॥ मा० ॥ ४ ॥ राग द्वेष सरप
हे जहेरी। उपसमकी जडीठेरीरे ॥ मा ॥ ५ ॥ तिलोक रिपकहे सीपहेरी ॥ पियांसु अ-
मृत सिव नेरीरे ॥ मा० ॥ ६ ॥ इतिः ॥ २० ॥ अथ जोबनपदः ॥ मतिअकडे जोबन
के मटके। तेरे सिरपर कालज झटकेरे ॥ म० ॥ १ ॥ नित अभक्ष अहारके गटके ॥

वारवार तोयग्यांनी गुरुहटकेरे ॥ म० ॥ २ ॥ ख्याल तमासामे निस दिनःनटके ॥ धर-
मके कामे दूरोलटकेरे ॥ म० ॥ ३ ॥ वेतो नरक कुंम्फेमाही लटके ॥ ज्याने पकम १
जम पटकेरे ॥ म० ॥ ४ ॥ तिलोकरिपकहे कर्मरज फटके ॥ सोतो पावेगा अचल
सुप सटकेरे ॥ म० ॥ ५ ॥ इति. ॥ २१ ॥ अथ पूनतोहिजः ॥ किउभूलोरे जोवनमे
अकमी ॥ नवमास लटक्यो सेरी सकमीरे ॥ क्या० ॥ १ ॥ बालपणामे रम्यो ख्यालपप
मी ॥ रह्यो जोवनवयमे जकमीरे ॥ क्या० ॥ २ ॥ आयोबुम्पापो सुकृतनही अपरी ॥ जो
रपम्यासुं पकमी लकमीरे ॥ क्या० ॥ ३ ॥ तिलोकरिषकहे धर्मलेवो पकमी ॥ तोपा-
वोगा मुगतफूल पपमीरे ॥ क्या० ॥ ४ ॥ इतिः ॥ २२ ॥ अथ सपनापदः ॥ सतगुरुजी
कहे जगसपना ॥ करोधर्म सोहिहे अपनारेः ॥ स० ॥ १ ॥ ग्यान ध्यान करतनही ध-
पना । पापकरतातो दिलकपनारे ॥ स० ॥ २ ॥ दानदेना सियल पाल तप तपना ॥
सुधभावना माहि चितथपनारे ॥ स० ॥ ३ ॥ सजन सनेहीहे कोइ अपना ॥ आखिर
तो जरुर तुझपपनारे ॥ स० ॥ ४ ॥ सुगुरू सेवाकरतनहि छिपना ॥ तिलोकरिखकहे
प्रभुजीकु जपनारे ॥ स० ॥ ५ ॥ इतिः ॥ २३ ॥ इतिपद सर्व सपूर्ण थया. ॥ अथ स-

मचे प्रमेष्ठी स्तवन लिष्यंतेः ॥ देशी मंगलकीः ॥ जेजेश्री अरिहंत देवा ॥ करेईंद्र सुरा
सुरसेवा ॥ जिनकेचोतिस अतिसेविराजे ॥ प्रभुपेतिस वाणीसुगाजे ॥ तूटक छंद ॥
वाणी सूंणायसु एकजोयण ॥ न्नवीकधर्म समाचरे। आदरे महावृत अणुवृत ॥ केइ
समगत उचरे । उपगारी एसानहीको जगमे । करूणासिंधु स्वामजी । परथम पदकुं
नित्यपल पल । होज्यो मुझ परणांमजी ॥ १ ॥ चालः ॥ जेजे सिद्ध सिवपूरकेवासी।
सदा अजर अमर अवन्यासी ॥ नीरन्ने नीरंजण नीराकारी ॥ अष्ठकर्म किया सबछारी ॥
तूटक ॥ सब छारकीया करमसत्रु ॥ जोग तिनु छेमके ॥ लोकाग्रस्वामीजायठेरया ।टाली
सघली खोडके ॥ अनंतगुंण अनंतसूपमे। विराजे अविचल सदा ॥२चाल॥जेजेआचा-
रज गणस्वामी॥अष्ट संपदा पुरणधा मी ॥ धिर विर गंन्नीर उदाराजेपालत पंचआचारा
॥ तूटक ॥ जेपंच आचारपोते ज्ञांन समगत चरणजी। तपविर्ज उद्यम धर्मकेरो ॥धरावे
जिन सर्णजी ॥ पाले महावृत पंच सुमति ॥ गुंण छत्रिससमाचारे । तेहनमता टलेवि-
पता ॥ सदासुष संपतकरे॥ जे सदां ॥ ३ ॥ चाल ॥ जेजे उवझाय सुनाणी ।बोले सत
अमृतवाणी ॥ मिथ्या अंधकार नीवारे ॥ संशार समुद्रसुं तारे ॥ तूटक ॥ तारे न्नवजल

रुपसागर ॥ कुगतपम्तां थीरकरे । जाण नय निक्षेपउपम ॥ न्याय निरवद्य उचरे । सुत्र अर्थ सुसंध वक्ता ॥ अंगो पाग पुरवन्नणे । पढावेसु द्द पात्रदेपी॥ नमोतेउवक पणे ॥ सदा नमुं उवकपणे ॥ ४ ॥ चाल ॥ जेजे साधसीरोमणी सारा । न्नवता पनीवारणहारा । सत रेभेदे संजमधारी । तपआदरेदूकरकारी ॥तूटक ॥ डकर २ आदरे तप । सम दम उपसम वंतजी ॥ सुमति गुपतिमति निरमला ॥ न्नविक मन मोहंतजी ॥ उपदेश निरवद्य सतदापे । विहार नवकलपी करे । तेह मुनिवरवंदीये नीत सकल संकट संहरे ॥ ५ ॥ चाल ॥ एह पचप्रमेष्टी ध्यावौ ॥ तो अजर अमर पदपावों । इणसम मंत्रनहीकोइ ॥ चवदा पुरबको सारये जोई ॥ तूटक ॥ चउदे पुरबसारजोइ ॥ असता नेश्चलधरे ॥ सर्व संकट विकट न्हासे । रिध सिद्ध सीव संपतवरे । अष्टोत्तर गुणमाल समरी ॥नमस्कार नवकारजी ॥ कहे रिपतिलोक होज्यो ॥ सदा जय२ कारजी ॥ ६ ॥ इतिपरमेष्टी स्तवन संपूर्णः ॥ अथचोविशिप्रारंन्नः ॥ देशी प्रन्नातिः ॥ श्रीअरिहंत गुंणगावोरे न्नविका चोविस जिन गुंणगावो ॥ एटेर ॥ रिखन्न आजित संन्नव अन्नीनंदण ॥ सुमतप्रभु जिनध्यावो ॥ श्रीसुपार्श्व चंदाप्रभु समरो ॥ नित२ सीश नमावोरे न्नविका ॥ श्री

अ० ॥ १ ॥ सुवद्द शिंतल श्रेयांस वासपूय ॥ विमल अनंत चितगावो ॥ अनंत धरम श्री संत जिनेश्वर ॥ शाति करण जगचावोरे नविकाः ॥ श्रीअ० ॥ २ ॥ कुंथु अर मल्लि मुनिसुवृतजी ॥ सुवृत करण उमावो ॥ नमी नेम पार्श्व महावीरजी ॥ सासणपति जीमनावोरे नविका ॥ श्रीअ० ॥ ३ ॥ ए चोविस जिन संजमधारी । दीयो करमकुघावो ॥ केवलदेईतिरथ थाप्पा ॥ नवजल तारण नावोरे नविका ॥ कीअ० ॥ ४ ॥ होय अजोगी मुक्त सिधाया ॥ फिरन रह्या जगआवो ॥ अजर अमर अवीनासि निरजण ॥ सकल जगतकारावोरे नविका ॥ श्रीअ० ॥ ५ ॥ नामलिया सब विघनविनासे जो सिमरो सुधनावो॰॥ सत्रुसो मंत्रीसम वरते ॥ जो सुमरण मनल्पावोरे ॥ नविका श्रीअ० ॥ ६ ॥ संवतः उगणसि सेतिशवर्ष ॥ विजेदशमी दिनगावो ॥ नित२ विजयहोय प्रभुनामे ॥ नवनवमे सुषपावोरे नविका ॥ श्रीअ० ॥ ७ ॥ तिलोकारिषकहे प्रभु तुमसर्णो ॥ नव२मे मुजथावो ॥ सीव संपत अरु दो तुम दरसण ॥ नित२ मंगल वधावोरे नविका ॥ श्रीअ० ॥ ८ ॥ इति संपूर्णः ॥ अथ विस वहिरमान स्तवनलिख्यंतेः ॥ सीरी सीरी मंदर पायनमु ॥ जुगमंदीर जयकार ॥ हो साहिब ॥ वाऊ

सुवाऊ सीवघणी ॥ सूजातप्रभु गूंणधार ॥ हो साहीबः वेहरमांन विसेनमु ॥ १ ॥ सयंप्रभु रीपन्ना नंदजी ॥ टाल्या फर्मरीपू दूरहो ॥ सा० ॥ अनंतवीजें सूर प्रभुसदा ॥ राखो आप हजुरहो ॥ सा० ॥ २ ॥ विशलधर जगदीपता ॥ वजर धर हीतकारहो ॥ ॥ सा० ॥ चद्रानन चंद्रवाऊ ॥ सेव्यामीटे कर्मपारहो ॥ सा० ॥ ३ ॥ भुजंग इश्वर नेमीश्वर गुंणी ॥ वरसेण किरपालहो ॥ सा० महाभद्र किरपाकरो ॥ अजित वरिज प्रतिपालहो ॥ सा० ॥ ४ ॥ च्यारतो जंबुद्वीपमे ॥ धातकिपंडमे आठहो ॥ सा० ॥ आठ पुष्करारधवीपे ॥ सदा धरमका ठाठहो ॥ सा० ॥ ५ ॥ आपवीराज्या वेगला ॥ वसीयोऊं भर्त मजारहो ॥ सा० ॥ भावथकी दूरोनही ॥ चदचिकोरज्युं वीचारहो ॥ ॥ सा० ॥ ६ ॥ तिलोकारिषकरे वीनती ॥ सोंवातां एकवातहो ॥ सा० ॥ तारो भवजल धेगसुं ॥ तुम जग जीवन तातहो ॥ सा० ॥ ७ ॥ इति संपूर्ण ॥

श्रीमहावीरायनमः॥ श्रीसरस्वत्यैनमः ॥ महावीरस्वामीको चोढालीयोलिख्यते ॥ दूहा ॥ सासणनायकसुरतरु वर्द्धमानसुपकंद प्रणमीकऊं तिणनीचरी सुणतापर्माणंद १ समगतआइजिहाथकी । भवसतांविसमूल पंचकल्याणकवरवुणं आगमवेणकबूल ॥

अ० ॥ १ ॥ सुबद्द शितल श्रेयांस वासपूज्य ॥ विमल अनंत चितगावो ॥ अनंत धरम
श्री संत जिनेश्वर ॥ शांति करण जगचावोरे ज्ञविकाः ॥ श्रीअ० ॥ २ ॥ कुंथु अर म
ल्लि मुनिसुव्रतजी ॥ सुव्रत करण जमावो ॥ नमी नेम पार्श्व महावीरजी ॥ सासणप-
ति जीमनावोरे ज्ञविका ॥ श्रीअ० ॥ ३ ॥ ए चोविस जिन संजमधारी । दीयो करमकु
वावो ॥ केवललेईतिरथ थाप्या ॥ ज्ञवजल तारण नावोरे ज्ञविका ॥ कीअ० ॥ ४ ॥
होय अजोगी मुक्त सिधाया ॥ फिरन रह्यो जगआवो ॥ अजर अमर अवीनासि निरज
ण ॥ सकल जगतकारावोरे ज्ञविका ॥ श्रीअ० ॥ ५ ॥ नांमलिया सब विघ्नविनासे
जो सिमरो सुधज्ञावोः॥ सत्रुसो मंत्रीसम वरते ॥ जो सुमरण मनल्पावोरे ॥ ज्ञविका
श्रीअ० ॥ ६ ॥ संवतः उगणसि सेतिशवर्षे ॥ विजेदशमी दिनगावो ॥ नित२ विज-
यहोय प्रभुनामे ॥ ज्ञवज्ञवमे सुषपावोरे ज्ञविका ॥ श्रीअ० ॥ ७ ॥ तिलोकारिषकहे
प्रभु तुमसर्णो ॥ ज्ञव२मे मुजथावो ॥ सीव संपत अरु दो तुम दरसण ॥ नित२ मंग-
ल वधावोरे ज्ञविका ॥ श्रीअ० ॥ ८ ॥ इति संपूर्णः ॥ अथ विस वहिरमांन स्तव-
नलिख्यंतेः ॥ सीरी सीरी मंदर पायनमु ॥ जुगमंदीर जयकार ॥ हो साहिब ॥ बाहु

सुयाङ्ग सीवधणी ॥ सूजातप्रभु गूंणधार ॥ हो साहीवः वेहरमांन विसेनमु ॥ १ ॥ सयंप्रभु रीपन्ना नंदजी ॥ टाल्या फर्मरीपू दूरहो ॥ सा० ॥ अनंतवीर्ज सूर प्रभुसदा ॥ राखो आप हजुरहो ॥ सा० ॥ २ ॥ विशलधर जगदीपता ॥ वजर धर हीतकारहो ॥ ॥ सा० ॥ चद्रानन चंद्रबाङ्ग ॥ सेव्यामीटे कर्मधारहो ॥ सा० ॥ ३ ॥ भुजंग इश्वर नेमीश्वर गुंणी ॥ वरसेण किरपालहो ॥ सा० महाभद्र किरपाकरो ॥ अजित वरिज प्रतिपालहो ॥ सा० ॥ ४ ॥ च्यारतो जंबुद्वीपमे ॥ धातकिपंन्नमे आठहो ॥ सा० ॥ आठ पुष्करारधवीपे ॥ सदा धरमका ठाठहो ॥ सा० ॥ ५ ॥ आपवीराज्या वेगला ॥ वसीयोङ्गं न्नर्त मजारहो ॥ सा० ॥ न्नावथकी दूरोनहो ॥ चंदचिकोरज्युं वीचारहो ॥ ॥ सा० ॥ ६ ॥ तिलोकारिपकरे वीनती ॥ सोंवाता एकवातहो ॥ सा० ॥ तारो न्नवजल वेगसुं ॥ तुम जग जीवन तातहो ॥ सा० ॥ ७ ॥ इतिः संपूर्ण ॥

श्रीमहावीरायनमः॥ श्रीसरस्वत्यैनमः ॥ महावीरस्वामीको चोढालीयोलिख्यते ॥ दूहा ॥ सासणनायकसुरतरु वर्द्धमानसुषकंद प्रणमीकङ्गं तिणनीचरी सुणतापर्माणंद १ समगतआशजिहाथकी । भवसतावीसमूल पंचकल्याणकवरवुणं आगमवेणकनूल ॥

॥ २ ॥ ढाल १ पेलीधर्मपावेलो कोइपुनवंतपावे एदेशी जेजेसांसणस्वामीदयालाः परम पतिउपगारीजी नयसारपरथमभवमाही तपसमसमगतधारीजी जे० ॥ १ ॥ जिहांथी-सुरभवथी तरचयकरने थयाभरतजीका नंदोजी मरीयंवामकहाणोतिणभव संजम मं-दसुखदोजी जि० ॥ २ ॥ तापसवृतपालीभवचोथे लिनोसुरअवतारोजी तिहांथी-तापसनीरजरभव वलेतापसवृतधारोजी जि० ॥ तिहाथीअंबर तापसकीरीया बलीग-यादेवविमाणेजी तिहाथीतापससुरपदपायो तापसनाकनेठाणेजी जि० ॥ ४ ॥ एसो-लाभवमोटाकरने रूलीयोबहुसंसारोजी विश्वभूतिवेकरेनियाणो तिहांथीसुरअवतारो जी जि० ॥ ५ ॥ उगणीसमेभवेहरीपदपाया नामतृपृष्टकहाणोजी सातमीप्रथवीनी कलो तिहाथी सिघतणोभवजाणोजी जि० ॥ ६ ॥ नर्कगया तिहाथी कर्मावस चक्र वरत पदपायाजी संजमपाल्यो कोम्बरसलग अंतेअण सणठायाजी जि० ॥ ७ ॥ तिहांथी सातमे सरग सिधाया चोवीसमाभव मांहीजी तिहांथी पचीसमाभवमाई ऊवानंदमहाराइजी जि० ॥ ८ ॥ संजमलेकर तप आदरीयो मास २ तपठायाजी इग सहेश्रनेलाषई ग्यारा दोसे अधिक दरसायाजी जि० ॥ ए ॥ बिसबोलसेवन कर बाध्यो

गोत तिर्थंकरतेमोजी तिहांथी दशमेसर्गसिद्धाया बिससागरथीचठामोजी जि०॥ १०॥
तिहांथीनवथीतक्ष्पकरीस्वामी मास अषाढ मझारोजी शुकल पषठटमऽ्य निसामे
फालगुणी उतरा वीचारोजी जि०॥१२॥रवत्री कुंमसीधारथराजा। त्रिसला देराणी सुजा
णोजी चवेद सपनादेइने उपना पुनतणो परमाणो जी०॥१३॥ चेतसुद्धतेरसअधरएणी
जनम्या अंतर जामीजी चोसठईद्रमिलमोछवकरेक मेलगयासीरनामीजी जे०॥१४॥
सिद्धारथनृपमोछवकीधो निजसज्जातजिमाइजी नामदीयोवृद्धमानकुमरजी दीन२ अ
धिकवडाईजी जे०॥१५॥तिसवरसग्रहवासमेवसीया पुत्रीएकजाणोजी मातपीतासुरलो
कगयाजी अभिग्रहतामपुराणोजी जे०॥१६॥ बरसीदानदीयोनितसाहेब भावसंजमका
आयाजी तिलोकरिपकहेपेलीढालमे भवसताविसदरसायाजी जे०॥ १७॥ दूहा ॥ मिगस
रबददशमीतिथि।छटतपस्याप्रभू धारएका।किसाहसपणे लिनोसंजमभार१ढाल२दूजि हमी
रीयाकिएदेशी॥धन२तृसलानंदजी सिद्धारथकुलचंद।जिनेसर।तपतप्याप्रभू आकरा तोम्या
कर्मनावृदजि० ॥ १ ॥ नवचोमासी तपकीयो येककरीछमास ॥ जि० ॥ अभिग्रहदूजी
छमासीमे नेराबोलबिमास ।जि० ॥ ध० ॥ २ ॥ एकसोपिचोतरदिवसमे चंदणबालेहा

थ जि० ॥ जोगमिल्योकोसंविमे पारणोकीयोजगनाथ जि० ॥ ३ ॥ मासखमणदूवाद-
शकीया पक्ववहोतरकीध जि० असणविवध प्रकारना सुतरमेसहूविधजी ० ध० ॥
॥ ४ ॥ अढाइमासी तिनमासी दोदोयमासी पटजाण जि० ममासी वली दोकरी
दोसेगुणतिसवेलामान जि० ध० ॥ ५ ॥ न्द्रमान्द्र सिवन्द्रतपे सोलादिनइम-
जोय जि० निखु पन्मिाअटमतणी कीनी ड्वादशसोय जि० ध०॥ ६ ॥ साडिग्पारा
वर्पने उपरे पचिसदिन तपधार जि० एककमसाम्न तिनसे। पारणे तीस्यादातार जि०
ध० ॥ ७ ॥ देशअनारज-विचरिया सह्यापरिसाकठोर जि० कुतालगाया मरामणा वध
बंधणकह्याचोर जि० ध० ॥ ८ ॥ सरवणे पिलापोन्गिा पगपरराधिपीर जि० मकदी
पोनंम कोसीये रह्याअचलगीर जि० ध० ॥ ९ ॥ अन्नवसंगमोदेवता आणीड्रष्टपरणा
म जि० छमासा लगेदूषदीयो रापिसमंतास्वाम जि० ध० ॥ १०॥ नरसुरतिर्यंचनासहू
सह्यापरिसासर्व जि०॥समदमउपसमन्नावसुरंचन आएपोगर्वजि० ध०॥ ११॥चोविहारत
पस्पासहू निद्रामोरतएक जि० तिणमाहिसुपनादशलह्या गोदूजआसणटेक जि० ध० १२ ध
नधिरजप्रभूजीतणो धनकरणीकरतूत जि० धनकुलजिहाप्रभूजनमिया धनजायाएहवापूत

जि०व०१३मायडी जायोएहवोउजोनहीसंशारक्यासुराअरिहंतजी ओपमासुत्रमजार जी०ध०१४ करमभरमचकचुरीया दूजी ढाल मजा रजी० तिलोक रिष कहे धन प्रभूप्र णमूवांरवारजी ध०१५दुहा॥सुकलदशमीवेशाखनी दिनउगतपरमाण विरजिनेस्वरपामी या निरमलकेवलनाण १॥ढाल ३ तिजी कर्मसमोनहीकोइ एहनीदेशी ॥जाणी लोकालोकनी रचना पट द्रव्यगुणपरजायो चोतीसअतिसापेतिशवाणी जगतारकजिनराया रे भविका श्रीजिनपरउपगारी तरचावकुनरनारी एआंकणि १ चोसठइंद्रआयातिण अवसर त्रिगडोरच्योतिणवारे फिटकसिंहासण उपरी विराजी अमृतवेण उचारेरे भ० २ मध्यपापापूरिमेतिण वेला। यज्ञरचाणोठे भारी बहु पण्डितनो थयो समागम जावे सुरगगनविहारीरे भ० ३ महिमादेषी मानविशेषे पंचसयापरवारे इंद्रभूतिचलआयाप्रभूपे संसय गर्वनिवारीरे भ० ॥ ४ ॥ संमयलेगणधर पदलीनो अग्नभूति चलआवे तेपण ससय दूरभयासु सजमसुं चितलावे भ० ॥ ५ ॥ इम इग्यारागुणधररचनाचुमालीस से संख्याजाणो ऐकण दिनमेलिनी ज्यादिक्ष्या गुणरतनागरखाणोरे भ० ॥ ६ ॥ तिन सेचवदापूरवधारक तेरेसेरिखउहीनाणी पाचसे मनपरजवमुनीजाणो बोलेजथातथबा-

णी रे भ० ॥ ७ ॥ सातसेवैक्रियलब्धीनाधारक चारसेचरचावादी आठसे अनुत्तरवि
माणेबिराज्या सातसे रिपसिव साधिरे भ० ॥ ८ ॥ चउदासहलरिष संपदा सारी
जेष्ट गोतमगुणधारी चंदणबालादिक सहश्रछतिसी थइ समणी सुविचारीरे भ०
॥ ९ ॥ एकलाख गुणसठसहेश्रसरावक आणंदादिकव्रतधारी अठारासहेश्रतिन-
लाष श्राविका सूलसादिक अधिकारीरे भ० १० विचस्यागामनगर पूरपाटण ता-
स्यावहुनरनारी परथमचोमासो अष्टीग्राममे दूजो पृष्टचंपामझारीरे भ० ॥ ११ ॥
तिजो चंपाचतूरसावथी विशाला वाणीयाकह्याबारा चउदाचोमासा राजगृहीमे मथु-
रामे षट सारारे भ० ॥ १२ ॥ भदलपुरिमे दोयदिपाया आठतिश इमजाणो एक-
आलंविका एकसावथी एकअनारजथाणोरे भ० ॥ १३ ॥ तास्यावहु भवियणनर-
नारी बिचरता श्रीजिनराया अनुकर्मआया पावापूरीमे हस्तपालजिहांरायारे भ०
॥ १४ ॥ करजोमी प्रभूसुंकरे अरजी रथसालानेमझारो अबके चोमासोइहा
करोप्रभूजी विनतिय अवधारोरे भ० ॥ १५ ॥ क्षेत्रफरसनाजाणी दयानिद्दि किनोचर्म
चोमासो धरम दिवाकरधर्म दिपायो पूरिभविजन आसोरे भ० ॥ १६ ॥ तिलोकरिषकहे

तिजीढाले धन२अंतर जामी।गुण रतनागरपमउजागरवंछनितसीरनामीरे न० ॥ १७

दूहा । चोथोमासवर सातनो पक्षसातमोठाण तेरस आधिरातसुं अणसण धास्योजाण
१ देसअठारेनाभूपति छटतपपोपदकीध सोलप्रहर लगदेशना सामीनिरंतर दीध २
सुत्र विपाकज उचस्यो उत्राध्येन छतिश नवाजिवाहित कारणे पूरियेह जगीस ३ गोत
ममोहणी टालवा जोइअवसरसार परलपगारिपरमगुरू सीवसुपनादातार ४
कार्तिकवद अमावस्या कहेगोतमसुस्वाम देवसमण विप्रबोधवा जावोतिणनेठाम ५
तेतकरी तिहा संचस्या पाछेदीनदयाल जाय विराज्यामोक्षमे नवफेरा दियाटाल ६

ढाल ४चोथी ॥ खिम्यावंतजोयनगवंतनोरे ग्यान ॥ एहनीदेशी ॥ श्रीजिनसीवपुरसंचरयाजी थयोजगमे अंधकार गोतमस्वांमिजाणीयोजी आरत आइअपार ॥जिनेश्वर हिवेमूझकवण आधार॥एटेक॥१॥षसकी पग्याधरणी तदांजी सुद्धनरही लगार धिग२माहणी कर्मनेजी देषोकर्म बिकार जि० ॥ २ ॥ एकमोरतने आतरेजी आइचेतनाताम मोहवसे करे जुरणाजी छेमीगया किमस्वाम जि० ॥ ३ ॥ अंतेवासीहू आपकोजी रातो जिमतन छाय छेहे समोकियो अंतरोजी येतूंमजुगातिनाय जि० ॥ ४ ॥ हूपछोनहीं

ज्ञालतोजी जातामोक्ष मझार जागापिण नहीं रोकतोजी किमआयोतुंमरवार जि० ५ बालज्यो आमोनमांमतोजी भागनमांगतो ग्यान अणषन करतो आपसुंजी लागोतुंमसुध्यान जि० ॥ ६ ॥ कारमोरागहोतोनही जी तूंमसुं माहेरोनाथ तूमसम माहरे ७ सरीजी होतिनही कोइआथ जि० ॥ ७ ॥ एकपषो जेप्रितमीजी पारपमे नहीतेह आजजाणीमेपर तिपजी इणमे नहीं संदेह जि० ॥ ८ ॥ गोयम २ नामलेजी कूणबोलावसीमोय कूणकने लेसुआगन्याजी चितामूझनेसोय जि० ॥ ९ ॥ जोमुझमनसंकाहोतीजी पूछतो सहूततकाल भर्मसहूतुंमेटालताजी परतक्षदिनदयाल जि० ॥ १०॥ तूमदरसणआविलोकताजी रोम २ उलसंत हिवेदर सणकिहां आपनाजी भयभंजण भगवंत जि० ॥ ११ ॥ तूंमनाणी अमृत समोजी साकर दूधसवाय हिवेकिणनी सुणसुंगीराजी जगतारक जिनराय जि० ॥ १२ ॥ बलीमनमाही चिंतवेजी धिग २ मोहणीकर्म धन २ श्रीजिनरायनेजो साध्यो आत्तमधर्म जि० ॥ १३ ॥ तुंज कर्म परभावथीजी रुलियोचउगतिमांय एकाकितिहूं कालमेजोएजिनसासणराय जि० ॥ १४ ॥ वितरागप्रभूनी दीसाजी संकानहीलीगार तूकिमभूलोभर्ममेजी

सम दम उपसमधार जि० ॥ १५ ॥ ध्यानसुकल तिहाधाइयोजी दीनाकर्म खपाय के वलग्यानपरगटथयोजी आरतरहीनहो काय जि० ॥ १६ ॥ केवलमोछवसुरपतिकी योजी निर्वाणपिणतिणठाम चारतिरथमिलथापीयाजी। पाटे सुधर्मा स्वांम जि० ॥ १७ ॥ सिद्धथयाजबुजीसामी रातेपरणीयानार । कोम्ननंवाणुंत्यागनेजी दिनउगा वृतधार जि७ ॥ १८ ॥ तिनपाट थयाकेवलीजी श्रीजिनआगमवेण जेधारेभवप्रा-णीयाजी उघमेअंतर नेण जि० ॥ १९ ॥ दिपायोजिनधर्मनेजी पूरववर्षहजार हिवे तो सूत्रबेवारछेजी हिवणापर्म आधार एटेर० २० इणपर्माणेचालसीजी ढालसी आत मदो १ तोभवप्राणीजीवम्हाजी अनुक्रमें जासीमोप जि० ॥ २१ ॥ संवतउगणीसे जाणीएजी सेतिशवर्ष मझार दिपमाला दिनेयकथ्योजी तिलोकरिषसुविचार जि० ॥ २२ ॥ अहमदानगर देसदक्षणेजी सुखे रहियाचोमास भणसेगुणसे भावसुं जी लहिसे सीवसुपवास जि० ॥ २३ ॥ कलश समगत पायाभवघटाया सता-विस थूलजाणीया ॥ तेहवरणवभवीकहेते चारढाल बखाणीया ॥सासणनायकसुपदा यक प्रणमूवारंवारए ॥ तिलोकरिषकहे नाथअरजी करज्यो भवनिस्तारए ॥ प्रभूदिजो

जेजे कारए १ ॥ इतिश्री वर्द्धमान जिनेश्वरचोढालीयो संपूर्णम् ॥ अथ मेतारजमुनिनो चोढालियो लिख्यते ॥दूहा॥श्रीजिनसमरुं न्नावसुं सतगुरुलागुपाय कथाअनुसारेगावसुं मेतारजमुनिराय १ पूरवन्नवदोमित्रथा ब्राह्मणकेरीजात । देशनासुणरीखराजकी संजम लियोसंघात २संजमपाले न्नावसुं तपस्याकरेकरूर एकादिनमनमेचिंतवे पूरवपापअंकुर जेनधर्म सीरीकारछे संकानहीलिगार स्नाननही इणमार्गमे एतोकठिण आचार ४ कूलम ददूगंछन्नावथी निचकूल वधणकीन आलवणा विनसोचवी सुरगति दोनूलीन ५ ति-हादोइमीतर देवता बोले आपसमांय जो पहेलीनरन्नवलदे घाली जेधर्ममाय ६ संजम-लेवाणो तिणन्नणी करी कोइदायउपाय इमसंकेतकिधोउन्नो सूरन्नव आपसमाय ७ कूलमद जिणकिनोङ्कतो तपहेलीचव्योतेथ मातंगकुलमेअवतस्चो उदेकर्मकेहेत ८ सेथपुंन परतापथी पायोसंपतसार किणविधतिणसंजमलियो ते सुणजो अधिकार ए ढाल १ पेली सोवन सिंघासणरेवति एदेशी ॥ सहेर राजग्रही दीपतो राजकरेश्रेणिकराय-रे सेठयुलक्ष्मी घरदीपतो लक्ष्मीवंत कहायरे स० ॥ १ ॥ श्रीमतिनार सुलक्षणी रूपगु णे अधिकायरे अपगूणकर्म प्रन्नावथी मृत्य वंझणीतेथाएरे स० ॥ २ ॥ एकदागन्नरह्यो

तेहने चिंतवे तेमनमांयरे जीवेनही बालक माहरे धनरपबालकनायरे स० ॥ ३ ॥ जिम संततीरहेकुल विषे तिमकरूकोइ उपायरे एतले आविमांतणी गर्भवंतीसादेपायरे स० ॥ ४ ॥ तिणनेयेकातलेइकरी दीयो वणोसनमानरे सपतिळे मुझ घरघणी जीवेनही मूझनासंतानरे सं० ॥ ५ ॥ जोतुझ होवे नंदन कदा गुप्तपणे घर मोयरे मेलजे तुनिसनेसमे ठिकपणे नहीकोयरे स० ॥ ६ ॥ दवं देसुतुझसामठो होसी सुषीनूझपूतरे प्रेमहूं रापसुं अतिघणो रेसीमूझ घरतणो सूतरे स० ॥ ७ ॥ राजीथइ तिणेमानीयो जनमियोनंदजिण वाररे प्रछनपणे तिणेमोकल्पो ठिकनही पूरनरनाररे स० ॥ ८ ॥ जनममोछवनही कीयो दिवस थया जब बाररे दियो दिशोटणजातमे वरतिया मंगलचाररे स० ॥ ९ ॥ नाममेतारज थापीयो प्रतिपालणाकरे पंचधायरे पूरवपून परभाव थी रूपगुणेअधिकायरे स० ॥ १० ॥ कूलमदकियोतिणकर्मथी महेतर घरअवताररे विजशशिपेरे दिनदिने वधे तसजसाबिसताररे स० ॥ ११ ॥ बोत्र कलामे पंम्ति थयो आवियोजोवन मायरे तिलोकारिप कहे पेलिढालमे पूंनथी सुखसवायरे स० ॥ १२ ॥ दूहा ॥ योवन वय जाणीकरी कन्यापरणाइ सात पंचइंद्री सुषभोगवे आणंद मेदीनरात ॥ १ ॥

हिवे तिण अवसरनेविषे पूर्व किनोकरार ते सूरआइ उपदिशे छे तूं संजम धार ॥ २ ॥
तलालिनते भोगवे माने नही लगार किनिसगाइ वलितिणे ते सुणज्यो अधिकार॥३॥
ढाल २ जी॥इणसरवारियारी पालजी दोयरावलीमारालाल एहनी देशी ॥आठमकिन्या-
तेहपरणवाउपद्या मारालाल परणवा० किनिसआइ जानी जानी भेलाथयामा० ला०
केसरयाजामो पेर मुगटसीरपरधर्यो माथे बाध्यो मोम्ह विदनोवेस कर्यो सा० वि०
॥ १ ॥ सीरपरसीरपेचजमाव: तुरोझगमगे सदी मा० तु० किलंगी तिण उपरजाण
अधिक भलकीरही मा०अ२ ॥ २ ॥ झगमगे कुम्हल कान हारझगझगकरे मा० हा०
बाजूबंधभूजदंड पोणचीकडाकरसीरे मा० पो० ॥३॥मुद्रीअंगुलीके माय झलके हीरा-
तणी मा० ॥ झ० कमरकंदोरोजम्हाउ सुवर्णकी खिलणी मा० सू० ॥ ४ ॥ अतरअं-
गलगाय तिलकभाले कर्यो मा० ति ॥ कियो उतरासण तेणसूरथकी सोनही मर्यो
मा० सा० वेठो हयअसवार लाम्होवणपो सोसदी मा० ला० गावे मंगलनार अधिक
उम्रावही मा० ॥ ६ ॥ धपमपमादलनादके सादसुहामणो मा० सा० धंडिदा २ ढोल
तिडकिम्तांसातणो मा० ति० ॥ ७ ॥ चाल्या अधिक उम्राव व्यावकरवाभणी मा०

न्या० आया मध्य वजारवणी सोनागणीमा० व० ॥८॥तिणसमे सोसुरकीध बातकोतकत
णी मा० वा० मातंगमनदीयो फेर हेम्अवसर आणी मा० हे० ॥९॥लिनो हाथमेलठ धठधी
गेघणो मा० ध० आयो जानके माय घरी कूउंठपणो मा० ॥१०॥मानेनहीकलुसंकवेणएकी
जणोमा० व० आयेसोबिंद हजूर कामनहीदूरतणो मा० का० ॥११॥सघलाहीरहियादेख
बोलेसुणोनंदनामाऊबुंसगोबापजाणोमतफंदनामा० जा० १२सातकन्याव्याही वणिकपर
णावएक माहेरी मा० प० पकमी अश्व लगाम कोइ नही बाहेरी मा० को० ॥१३॥वदलायो
चितलोक घोकोसयने पम्यो मा० घो० साचिदिशेए बातजोगडसडोघड्यो मा० जो०
॥ १४ ॥ लोक गयासबठाम बिंदरह्यो एकलो मा० वि० अधिकाखिसाणो होय देखे सो
भूइतलोमा० दे० ॥ १५ ॥ तिणसमे सोसूरवेण कहे सरवणविपे मा० क० लेहिवेसं
जमतामकेहसोभूमीदीपे मा० क० ॥१६ ॥ हिवेपाछेहोय सुजस परणुकन्या वणीकनी
मा० प० नवमीपरणुं भूप धूयाश्रेणिकनी मा० धु० ॥१७॥ वारावर्ष गृहवासरहू तदनंदन
तरे मा० र० लेसुपछे संजमभार वचनये नहो फार मा० व ॥ १८ ॥ इमसूणी
सूरवेण सेणमनफेरीयो मा० से० जुगीमातंगनीबात बिंदवली हेरीयो मा० व०

॥ १९ ॥ हूइ सझाइ सर्व तिहांवली व्यावनी मा० ति० आयासोही वजार वातथइ न्या
वनी मा० वा० ॥ २० ॥ महेतर आयोसोचाल जानमांही दोडने मा० जा० उणम-
दरापीध वोले करजोम्नै मा० बो० ॥ २१ ॥ एनहीं माहरोनंद पोटोमे वोलीयो मा०
पो० माफकरो अपराध कह्योवेतोलीयो मा० क० ॥ २२ ॥ न्नमंटल्योसहूलोक कन्या
परणी सही मा० क० तिलोकरिपकहे दूजीढालदुगंध्याारापीघणी मा० दू० ॥ २३ ॥
दुहा ॥ राजसुतापरणावणी सूरसोचिते तास दिनीबकरी रूयमी उगलेरतनजास १
रतनरासझगमगकरे देषे बहूनरनार पुरमेपसरी वारता।मेतारजपूंनसार २॥ ढाल ३ तिजी
वेदर भिसूंमनवस्पो एदेशी॥रायसुणी इमवारता मनमेविस्मे थायहोलाल नकरीलावो वे
गसुं जेजकरोमति कायहो रा०॥१॥ सुभटसुणी चलआविया यूगंधरने गेहहोलाल मा-
गेबकरीसेठथी उगले रतनजजेहहो लाल रा० २ सेटवदेसुभटाभणी मेनही मालकतास
होलाल मेतारजने पूछने। लेजावोथे उलासहो रा० ॥३ ॥ कुमारकनेजाचितिका सोचो
लेतिण वारहोलाल बकरी जीवनप्राणछे रतन पूंजदातारहो रा० ४ सूभटगया फिरराय
पे दाष्यासहूसमा चारहोला० सुणक्रोधातुरवोलीयो जेजनकरो लिगार होलाल रा० ॥५

हलकारचासुन्नटान्नणी धसमसकरता जायहोलाल गलीलायागेम्नने पूगेतिणसुंनायहो
लाल रा० ॥ ६ ॥ रायकचेरी लावीया क्लिणअतरने मायहोलाल बकरी गेरीतिणसमे
डुर्गंधरही फेलायहोलाल रा० ॥ ७ ॥ सभासहू व्याकुलथइ वठचाल्यासहूलोकहोलाल
पूछे भूपकारण किसो वातथइ तेफोकहो रा० ॥ ८ ॥ सुन्नटकहे जुटी नही एही रत्न-
दातार हो लाल पूछे कारण कूमर सूवु सुन्नटगयानेिणवार हो लाल रा० ॥ ९ ॥ पूछे-
कारण कूमरयी किणकारण दूरगंधहो लाल वगले नही किमरत्नते दापो
तेह प्रबंधहोलाल रा० ॥ १० ॥ सोकहे मुजराजीकरे रत्नउगले श्रिकारहोलाल
नही तो एछेरे बूरी संकानही लगार होलाल रा० ॥ ११ ॥ रायकहेजेगलीका
देवेरत्नश्रेमोयहोलाल मूपमागी वस्तुतिका । देसुहुपूसी होय होलाल रा० ॥
॥ १२ ॥ सोकहे कंन्या तूमतणी दोमुझनेपरणायहोलाल रत्नउगलसीयेन्नली हा-
मिन्नरी तवराय होलाल रा० ॥ १३ ॥ गूणमजरी कन्या न्नली किधो व्यावउछाहहो-
लाल तिलोकरिष कहे तिजी ढालमे कूमरनो पूरयो उमाह होलाल रा० ॥ १४ ॥
॥दूहा॥ तवकन्यापर एन्निक्षो नंवनिधि पांति जिम तेह न्नोगवेसुषसंसारना दिनदिन चढ

तेनेह ॥ ३ ॥ बारावर्ष इम वितीया सोसुरआयो चाल कहेले हीवतूं वेगसुं संजम चि-
तउजमाल २नही तो उपसंकट घणो इणमे फेरनसार स्यालपरे श्री त्रिपेलिधो संजम
भार॥३॥मनमे तांम विचारियोधिग २कामविकारपायोहिणतालोकमे महेतरघर अवतार ४
हिवकरणी दूकरकरूं कर्मकरू सबछार मासमासतप धारीया निरंतर चोविहार ५ढाल
चोथी जंमिकंदमेरेजीवजाइ लपनो एदेशी ॥ नितनित प्रणमुंरेमेतारजमूनी तारणतर-
ण जिहाज धर्मवेरागीरेरागी धर्मना साधे आतम काज नि० ॥ १ ॥ थीवरापासेरेसी
क्षाथरिमने नवपूरवकोरेग्यान गामनगर पूरपाटण विचरे ध्यावे निरमल ध्यान नि०॥२
कोइसमे आयारे राजगृहीवली पारणो आयोताम प्रभूआग्यालेइगोचरी पांगुर्या त्रि-
क्षानिरवद्यकांम नि० ॥ ३ ॥ मारगजातारे सुवर्ण कारके ओलषिया रिषराय एजमाइरे
थाश्रेणीकतणा गोचरी कारणजाय नि० ॥ ४ ॥ आवोपधारोरेहमघर साधूजी कृपा-
करो मूनिराय वेरोसुझतो अहार ठेमाहरे बोलेतेएमठेमाय नि० ॥ ५ ॥ एमसुणमूनिवर
तिहां वेरणगया उभारहीयारे बार सोनिघरमेरे आयो वेगसूं वेरावणभणी अहार नि
॥ ५ ॥ सोवनजवथारे रायश्रेणीकना कूरकट आयेरे चाल सोजवचुगनेरेगयो तेसी-

घर्सु ।मुनीवर रहीयारेभाल नि० ॥७॥ बाहिरआयोरे अहारवेरायने जवनही दीठारेनेण कहोकिणलीधारेकूणआयो इमकहेरोसेभरयोवेण नि० ॥ ८ ॥ मूनिवर सोचेरे देषी-यानाकहूं झूठजलागेरेमोय कूर्कट चूगीयारे एमवचारता हिंस्यापातकहोय नि० ॥ ९॥ देष्यो अदेरव्योरेकोइनबोलणो निश्चोकियो अणगार मूनजपकर्मोरे आणअराधवा ध नसोकुरणा भमार नि० ॥१०॥ मूनजजाणीरे सूवर्णकारवो आइग्रिसअपार इणनाभेदमे थइतोसई पूछेवारंमवार नि० ॥११॥मारेचपेटारेकहे वली चोरतू किमनही बोलेरेसाच मूनिवर क्षिम्यारे धारीतनमने बोलेनहीमूषवाच नि० ॥१२॥तिमतिमअधिकोरोसेक्रोधे भरयो।सोच्चेय अतिधिठ कूव्याविनारिपियदेवेनही मूरख चोलमजीठनि० ॥१३॥ मूनिकर पकर्मीरे लेगयो वामामे सीरपर आलारे चर्म खेचिने वाध्यारे तावडे राखीया बेदना व-पनी पर्म नि० ॥ १४ ॥ लोचन ठटकी वाहेर निकल्या तड तड तूटीरे नाम मूनिवर थीरमनदृढ करीं राखीयो जेमसूदर सण पहाड नि० ॥ १५ ॥ केवल पाइरे मूगत सि-धाविया अजर अमर अविकार देववजावेरे डुंडुभीगगनमे बोले जयजयकारनि० ॥ ॥ १६ ॥ तिणसमें मोरलीयककठीयारमे नीरवी धमकसूताम खिटजकीधीरे कूर्कट

न्नयवसे जवपमीया तिणठाम नि० ॥ १७ ॥ सोनी देखीरे थरथर धूजीयो किधो मो-
टो अकाज मेमुढ न्नावेरे निरअपराधिया घातकरी रीखराज नि० ॥ १८ ॥ राजा श्रे-
णिक भेदये जाणसे करसे कूटंब संहार इमजाणीरे सहूश्रीवीरपे लिधो संजमन्नार
नि०॥ १९ ॥ तपजप करणीरे किधीसहूजणा पायासुर अवतार अनुक्रमे जासीरे क-
र्म खपायने पोहूते मोक्ष मझार नि० ॥ २० ॥ नवकोटी धन नव कन्यातजो नवविध
ब्रह्मचर्य धार नवपूरब धन वसंवर करी पायान्नव जलपार नि० ॥ २१ ॥ एहवामु-
निवर क्षिम्यासागरू तसगुणगाया उमाय तिलोक रिषदाखेरे चोथी ढालए सुणता-
पातिकजाय नि० ॥ २२ ॥ संवत उगणीसेरे गुणचालीसमे असाढवदपन्नवावषाण
दक्षणदेशेरे पुंनासहेरमे नानाकीपेठमेजाण नि० ॥ २३ ॥ जोम्नज मांहिरे वि-
प्रितजो कथ्यो मिछामी दूकम्मोय न्नणसेगुणसेरेविविधसुधन्नावसु तसघरमंगल
होय नि० ॥ २४ ॥ इतिश्रीमितारजमूनीको चौढालीयो संपूर्ण मूलगाथा ॥ ८९ ॥
॥अथ आणंदजी श्रावककोचोढालीयोलिख्यते ॥दुहा ॥ प्रणमुपरमातमप्रभू सासणप
तिवर्द्धमान तासजेदशश्रावकन्नला आणंदआणंद धाम १नामगामसुन्नकांम जिणाकिनाव्

तअंगीकार सप्तमे अंगेवरणव्या तेसुणज्यो विसतार २ढाल १ पेली देशी न्यालदेमे॥ति
णकालेतिणअवसरे जीकाइवाणियागाममझार रायजित शत्रुजाणीएजीकाई परजा-
न्नणी हितकार ॥ १ ॥ सुणो अधिकार सुहामणोजी ॥ २ ॥ काई सुत्रतणो अनुसार
समगत वृतहोवे निरमलोजी काइ होवे जुन्नवनिसतार सु० ॥ २ ॥ तिणपुर आनंद
नामथी जीकाइ गाथापति धनवान, वारे क्रोम सोनैयानोजीकाई कह्यो तसधन
परमाण सू० ॥ ३ ॥ दशसहश्रगाया तणोजीकाइ एक गोकलइमचार धेनू वर्ग व-
खाणियाजीकाइसेवानंदातसनार सु० ॥ ४ ॥ पंचाविपे सुप न्नोगवेजी, काइ माने वज्ञ
जनवाए इमकर तावक्रजदेगयाजी कोइक अवसर माए सु० ॥ ५ ॥ दूतिपलासना-
मे न्नलोजीकाइ चेतमनो हरजाण ।समोसऱ्या ज्ञग गुरु तिहाजी २ जगनायक जगन्ना-
ण सु०, ॥ ६ ॥ भूप शुणी वंदण गयोजी काइ आनंद श्रावक ताम पाय विहारे सं
चऱ्याजी २काई न्नेव्या त्रिभुवन स्वाम सु० ॥७॥ प्रभुजी दीउपदेशनाजी काइयोशंशार
असार तन धन जोवन कारमोजी २काइ कारमो सहूपर वार सु०॥ ८ ॥ येजीव आयो
एकलोजीकाई परभव एकलोजाए धर्म रत्न संग्रेकरोजी २काई जोसीवसूषतणी चाए

सु०॥९॥इत्यादिक उपदेश नाजी काइ परथम ढाल मझार तिलोकरिखकहे आगलेजी
सु०॥१०॥दूहा॥हिवआणंद सुणदेशना बोलेवेणविचारासत
१कांइ सुणजो थेअधिकार सु०॥१०॥दूहा॥हिवआणंद सुणदेशना बोलेवेणविचारासत
कहेणो प्रभूताहरी योशंशारअसार १ धनजे राजराजेश्वरू लेवेसंजमभार मुझसगतिएहे
नही आदरसुं व्रतवार २ प्रभूकहे जिमसुषतिमकरो जेजनकरो लिगार हिवेव्रतकरणी
संभ्रलो सूत्रतणे अणुसार ३॥ढाल २ दूजि यारससेलमी आदजीणंदकीयोदारणो एदे-
शी॥परथम वृतमेधारीयो जीकाइ त्रसप्राणी जगमायजाणी पीछी निरअपराधि सो सब
हणवानायहो ॥जगतारक पासे श्रावक आणंदव्रत आदरे १ दूजोवृत थूलमृषा वाद को
भूकन्यापसूकाजे जुठन वोलूं ओलूनथापण नहीलूं भूलोम्याजहो ज० २ तिजोथू
लअदतनीवारू षातपणी गाटगोम पमकूंचीदेइकरू चोरी त्याग विरूधजे खोम ज० ३
चोथोथूलमेहूण वृतमेसेवानंदानिजनार त्यागसकलते वर्जनेसोकाई ममतादीनीमारहे
ज०॥४॥वृतपंचमो इछापरमाणे चारकोम भूमाय चारकोम घरविपरो राष्यो।एतो हिव्या
जरूहायहो ज०५ गोकलच्यार धेनुकाराष्या खेतुबहुजाण पाचसेहल कीसंप्या धरणीगा
मागामी सहश्र परमाणहो६ जी० चारमोटी चारछोटीझाझां राष्याचाहण आठउपयोगी

घृतकी विधियहूजिम सुतरपाटहो ॥७॥ ज० स्नानकीया पछेअंगलूवणनो रातो बसतरजा
ण दातणकारण आलोजेठी मद अवर वीर आमलोफल गणहो ॥ ८ ॥ सतपाक ह-
जार ओपदको तेल मरदनने काज सुगंध सहितगोधुमकी पीठी येउटणासाजहो ज० ॥
॥ ९ ॥ आठलोठी परमांण घमो एक स्नान करणनो नीर खोमझूगल कपास कोनी-
पनो राख्यो ओमणचीरहो ज० ॥ १० ॥ अगर कूंकमबावना चंदण विलेपण मरजा
द । धोलोकमलमालति कूसम सुंघणो नही तसवादहो ॥ ज० ॥ ११ ॥ कुंमल अने-
नाम कृतमुद्रा राख्या आभ्रण दोय अगर सेलारस धुपादिकसो राखे इछाजो होय
१२ ज० घृततेलतल्या तंडुलपलवा दूधकीरावमी जाण पेज विधि परमाण कह्योए
उपरतकापचखाणहो ज० ॥ १३ ॥ घृत पूरितघेवरमनगमता खाम खाजाआगार क-
मलसाल तंडुलउपरंतसब छंदणको परिहारहो ज० ॥ १४ ॥ मूंगउम्द मसूरए तिनू
उपरंतत्यागी दाल नितको निपजो घृतसरदऋतुते प्रातसम्पाको कालहो ज० ॥ १५ ॥
तिण वेलाको घृतजीणराख्यो उपरंतकाकीया त्याग अगथीयो स्वस्तिकरायमोमी ओ-
रनही खाणो सागहो ॥ १६ ॥ ज० अमलरसजूत पालक सालणो अवरतणो सबत्या

ग मूंगदालकी वर्मीकचोली उपरंतनही अनुरागहो ॥ १७ ॥ ज० टाकाकोनिरसो पि-
णोराण्यो झेल्योजेह अकाश कंकोलजाएफललोग एलाएची कपूरयपंच मूषवासहो
॥ १८ ॥ ज० चारअनरथादंरूकासोगन इमअठमवृत धारहो सकतिमुजबसंख्या चारु
हरिहरदेव परिहारहो ज० ॥ १९ ॥ ग्यानकाचउदेपंचसमगतका पिच्योतर वृतवार पां-
चसलेषणाएसटालू नंन्याणूअति चारहो ज० ॥ २० ॥ पार्श्व संतानियागोसालकमे
जिमते मिलीया जाए तिमअन्यतिर्थि गृहियासाधूतिणनेहूं वंदुनाएहो ज० ॥ २१ ॥ वत
लाउनहीपहिलाउपति धर्म बूधिसूविचार चारअहारनही देउतिणने ठंभिआगारहो ज०
॥ २२ ॥ समणनिग्रंथनेदेउ सूझतो चउदे प्रकारनो दान इमवृतधारी प्रभुने वंदी आया
तेनिजथानहो ज० ॥ २३ ॥ निज पतनिसूकहे प्रभुपासे मेधारयाव्रत बार तूंपणजाइक
रो प्रभुवंदण सफलकरो अवतारहो ज० ॥ २४ ॥ कंतवचनसुणी रथमेवेठी वंद्या श्री
जगदीस तिणपिणश्रावगवृतजधारयो पूरिमनजगीसहो ज० ॥ २५ ॥ ठपोसाकरेमा-
समे नवततवकाजांण तिलोकरिषकहे ढालउसरी श्रावक करणी वषाणहो ज० ॥२५॥
दूहा ॥ बारे व्रतपालेभला चवदानेमविचार तिनमनोरथ चिंतवे धारे सरणाचार १ नि-

श्रलसमगत दिढ धार्मे एक विशगुणकाधारचउदेवर्षइम 'वितिया कर्ता घरमउ दार २ पनरमोवर्ष वर्तता एक दिन श्राविरात जागरणाकरे धर्मकी 'वेसुणज्यो विक्षात ॥ ३ ॥ ढाल ३ तीजी श्राजन्नलो दिनउगोजी श्रीमंदिर स्वामीजीनेवंदसा एदेशी ॥ श्राणंदजी विचारीहो सूषकारी किरीयाधर्मनी भवजल तारणहार वाणिया गांम पुरमाइहो प्रभुताइ वीमाहेरी काइ वज्ञ नरने श्राधार मूझपर ममता सवाइ समरथाइ नाइमाहेरी काई दूझरसंज्ञमन्नार श्रा० ॥ १ ॥ जबथावे 'दिनउगाइ हो निपजाइ चारी श्रहारने काइ बूलाइ निजपर वार सेण सजन जिमाइहोसमलाइ कामजं घरतणो काई धारणी पर्मामाइग्यार श्रा० ॥ २ ॥ थइ दिनकर उगाई हो कराई सझ विध चिंतवीकाई जेष्ट पुत्रघरन्नार सोपि सिधाइ श्रायाहो काइ कोलाग नाम संनि वेस काइ वाणीयापुरने बार श्रा० कोलाग ३ संनीवेशने माइहो जिहा मित्र घणा कूलघर घणा रहे पोपदसाला मझार तिणसाला प्रतिलेखीहो काइ देखी पठेण भूमिका वली कीनो संथार श्रा० ॥ ४ ॥ केवली न्नाप्यो धर्मजहो ते पाले पाले पर्म श्राणदसूं काई परथम पडिमा मझार समगत निरमलपालेहो काइ वंदे नही कोई श्रन्यन्नणी

कांइ ब्रंनी परिहार आ० ॥ ५ ॥ दूजी पडीमामाई हो अधकाइ बारावतमे काइ पाले निरअतिचार तिजि सुधसमाइकहो चितलाइ पाले सुध पणे कांई बतिस दोप-निवार आ० ॥ ६ ॥ चोथी पडिमा माइहो चउदशने आठम पूर्णिमाकाई अमावस्या तिथधार मासमास षट पोसाहो धारे ते सूध्धनिश्चल पणे कांई बर्जित दोष अढार आ० ॥ ७ ॥ पंचमी पडिमा पाले हो ते टाले स्नान सोन्नावली कांई दिवसे अव्रह्म-निवार। जे न्नाणे न्नोजन आवे हो नही खावे आपमंगायने करे काउसगपोसा मज्ञा-र आ० ॥ ८ ॥ ब्रुठी पडिमालेबेहो नही सेवेते कुसीलने कांइ नारी कथापरिहार सा-तमी प्रतिमा जाणों हो फासूकखाणोमोकलो काइनही करे सचित अहार आ० ॥ ॥ ९ ॥ आठमीमे आरंन्न ब्रंडेहो ते मंन्न प्रिति ब्रकायसूं काई तवीशाके न्नांगे विचार नवमीमे इमन्नाखेहो नही राखे दासने कांई पोते कांम विचार आ० ॥ १० ॥ दशमी दूकरकारी हो निज अरथे न्नाजन जे कर्यो कांई ते वरजे निरधार सिरपूरमूंड करावे हो पयंपे न्नाषा दोन्नली कांइ सत्यअने विवहार आ० ॥ ११ ॥ इग्यारमिपडिमालेवे हो नही सेवे आसरवदूवारने कांई वरते जिम अणगार मस्तक लोचकरावे हो फरमो-

व हूं साधूनहो कांइजेषमुनिनोधार आ० ॥ १२ ॥ पेली मासएकांतरहो कांई दूजी पडिमा दोमासनी कांई छठछठ तपस्याधार तिजि तिनमासे तेला हो चोथी ते चारज मासनी काइ चोले चोलेकर अहार आ० ॥ १३ ॥ एक एकमास बधावोहो वढावो तप इमएमहो कांई इम पम्मिमाइग्यार करता सूको भूखो हो लुखो अंग पमीयो तदा कांई तनथयो पिंजराकार आ० ॥ १४ ॥ श्रावकसो विचारे हो नहीं सारे माहेरी देहमी कांई सगति नहीं लगार आलविनिंदि आतमहो निसतथया सूरा पणे कांई भणमी जगकरतार आ० ॥ १५ ॥ पाप अघारा त्यागे होकांई बलीजागे मोहणी निदसे काइ थागे सवर दूवार धर्मि ध्यान चितधावे हो काइ त्यागे चारी अहारने जावजीवसु विचार आ० ॥ १ ॥ इमनिश्चल मनथापीहो तिणकापिममताजालने कांइ धार्यो अणसणसार तिलोकरिपकहे साचिहो नहीकाची जाची त्रावमे कांई सफ लकीयो अवतार आ० ॥ १७ ॥ दूहा ॥ तिणअवसरआणंदजी विसूद्धलेश्यासूत्रध्यान ज्ञानावर्णि खयोपसमे उपनो अवधिग्यांन १ पूरवलवण समूद्रमे पचसे योजन जाणएतो हिदक्षण पश्चिमे उतर हिमवंत प्रमाण २ जाणेदेपे उपरे परथमसर्ग विचार निचो

काइ छे छंमो परिहार आ० ॥ ५ ॥ दूजी पमीमामाई हो अधकाइ बाराव्रतमे काइ पालेनिरअतिचार तिजि सूधसमाइकहो चितलाइ पाले सुध पणे कांई बतिस दोष-निवारआ० ॥ ६ ॥ चोथी पमिमा माइहो चउदशने आठम पूर्णिमाकाई अमावस्या तिथधार मासमास षट पोसाहो धारे ते सूधनिश्चल पणे कांई वर्जित दोष अढार आ० ॥ ७ ॥ पंचमी पमिमा पाले हो ते टाले स्नान सोन्भावली काई दिवसे अब्रह्म-निवार। जे भाणे भोजन आवे हो नही खावे आपमंगायने करे काउसगपोसा मझार आ० ॥ ८ ॥ छठी पडिमालेवेहो नही सेवेते कुसीलने कांइ नारी कथापरिहार सा-तमी प्रतिमा जाणो हो फासूकखाणोमोकलो काइनही करे सचित अहार आ० ॥ ॥ ९ ॥ आठमीमे आरंभ छंडेहो ते मंझे प्रिति छकायसूं काई तेवशिके भागे विचार नवमीमे इमभाखेहो नही राखे दासने कांई पोते काम विचार आ० ॥ १० ॥ दशमी दूकरकारी हो निज अरथे भाजन जे कर्चो काई ते वरजे निरधार सिरपूरमूंड करावे हो पर्यपे भाषा दोभली कांइ सत्यअने विवहार आ० ॥ ११ ॥ इग्यारामिपमिमालेवे हो नही सेवे आसरवदूवारने कांई वरते जिम अणगार मस्तक लोचकरावे हो फरमो-

व हूं साधूनही काइनेपमूनिनोधार आ० ॥ १२ ॥ पेली मासएकांतरहो कांई दूजी पडिमा दोमासनी काई छठछठ तपस्याधार तिजि तिनमासे तेला हो चोथी ते चारज मासनी काइ चोले चोलेकर अहार आ० ॥ १३ ॥ एक एकमास बधावोहो वढावो तप इमएमही काई इम पम्मिमाइग्यार करता सूको भूखो हो लूखो अंग पमीयो तदा काई तनथयो पिंजराकार आ० ॥ १४ ॥ श्रावकसो विचारे हो नही सारे माहेरी देहमी काई सगति नही लगर आलविनिंदि आतमहो निसत्रथया सूरा पणे काई प्रणमी जगकरतार आ० ॥ १५ ॥ पाप अठारा त्यागे होकांई बलीजागे मोहणी निदसे काइ थागे संबर दूवार धर्मि ध्यान चितधावे हो काइ त्यागे चारी अहारने जावजीवसु विचार आ० ॥ १ ॥ इमनिश्चल मनथापीहो तिणकापिममताजालने कांइ धास्यो अणसणसार तिलोकरिपकहे साचिहो नहीकाची जाची भावमे काई सफलकीयो अवतार आ० ॥ १७ ॥ दूहा ॥ तिणअवसरआणंदजी विसूधलेश्यासून्नध्यान ज्ञानावर्णि खयोपसमे ऊपनो अवधिग्यान १ पूरवलवण समूद्रमे पंचसे योजन जाणएतो हिदक्षण पश्चिमे उतर हिमवंत प्रमाण २ जाणेदेपे ऊपरे परथमसर्ग विचार निचो

जांणेरतनप्रज्ञा थितचोरासी हजार ३ ढाल ४थी कीधारे करमन तूटीये एदेशी ॥ न्याय मारग जिनराजनो भवदुपभंजणहार लालरे रिपूगंजणद्रगअंजणो सीवपदनो दातार लाo न्या० ॥ १ ॥ तिणकाले तिणअवसरे समोसऱ्याजगदीसला०गोतमछठतप पारणो प्रभूने नमायोसीसला०न्या०॥२॥ कहेमूझ छटतपपारणो जो तुंमआग्याथायला० वाणियागामनगर विषे गोचरी जाएचलायलालo न्याo ॥३॥ अहासूहं प्रभुजीकह्यो गोतमजी तिणवारलालरे आग्यालेइसंचऱ्या जो वताइरजा विहार०ना०॥ ४ ॥ गोचरी करता सांभल्यो आणंदअणसणलाधला०चिंतवेहूंदेखुज ईइमनिश्चो मनकीधलाoन्या०। ५॥पोपधशाला तिहां आविया देपी आणंदसोयला०रोम२ हरपितथया वोलेअवसरजोयला० न्या० ६ सक्तिनहीं प्रभुमाहारी आवणरी तूमपासला०उरहापधारोनाथजी मानो मूझअरदासलाo ॥ ७ चरणपेसीसनमाएने प्रणम्या तिनजवारला पूछे उपजेके नही अवधि गृहवासमझारला० न्या० ॥ ८ ॥ गोतमसुणहामीभणी तवसो कहेसुविचारला. मूझ पिण अवधि ऊपनो कह्यो ळ्ळ दिस विसतारला न्या० ॥ ए ॥ इम निसुणी गोयम वदे लहि ऊपजे गृहवासला. मिणयतो दिर्घन उपजे एनिश्चे बात विमास

ला. ॥ १० ॥ एस्थानक तुमे आलवो लोतप प्रायश्चित अंगिकारला तब आणंद बल-
ता कहे प्रभुसंन्नळो मूझसमाचारला न्या ॥ ११ ॥ सतळता जयान्नावते कहेता नहो
दोस लगारला ॥ ए स्थानक तुमे आलवो सूण संकापमी तिणवारला. न्या ॥ १२ ॥
आइछे प्रभु सूंतदा आणंद कह्यो जे विचारला नाथकहे ते साचिकहे थेलो प्रायश्चित
तपसारला न्या ॥ १३ ॥ जाएखमावो तिणप्रते इम संन्नली गोतमवाए ला प्रायश्चित
लीनो प्रभुकने खमावाने गया उमायला न्या० ॥ १४ ॥ विस वर्ष श्रावकपणो धारे
पमिमा इग्यारला एकमास अणसण कह्यो सो धर्मा कल्प मजारला ॥ न्या० ॥ १५ ॥
सौ धर्म वतश विमाणथी कूणइशाणनेमाएला अरुण विमाणमे उपना च्यारपलोपम
आयला न्या० ॥ १६ ॥ सुखन्नोगवी तिहाथकी चवी माविदे षेत्र मजारला सजमले
करणी करी कर्म करी सहूगरला न्या० ॥ १७ ॥ केवल ग्यानलेइ करी जावसी मुग
तिने माएला अजर अमर सुखसासता लेसीसुप सवाएला न्या० ॥ १८ ॥ संवत उगणी से
गुण चालीसका पोनरुण्णवुधवार ला तीजतिथीदिनरूयमो दक्षण देश विचारलान्या० ॥
१९ ॥ सेरसतारो प्रसिद्धछे पेठ न्नवानी वखाणला जोड्यो चोढाल्यो चूपसूं सातमो अंग

प्रमाणला न्या०॥ ७ ०॥ अधिको ओछोजोड्याहोवे तो मिछामि दुक्कडं मोयला०तिलोक
रिषकहे सूणधारसी तससिवसंपत होय लालरान्या०॥इतिश्री॥संपूर्णम्॥गाथा सर्व ॥४॥
द० ॥ ॐनमः सिद्धं ॥ संग्रहछतीसीसाम्भलप्राणी आगमबोलविचारजी साचाजा
•वजीवसरदे तेपामेभवपारजी १ सं० लाषपेतालीसलाबोपऊलो समयपेतर
तारजी तेमाहे जेसारपदार्थ तेहनो सुणोविचारजी २सं० कोमएकनेलाषवेतालीस
उपरतीसहजारजी दोयसे गुंणपचास जोयणझाझेरी प्रदक्षणे विस्तारजी ॥ ३ ॥ सं०
षवनदस अंतर नदीतीस असी विजेभषाराचालीसजी भद्दसालदसनेमेरूपांच पुर्वप
ीसजी ४ सं० जघनपद जिन विसातिर्थंकर अढीद्वीपमझारजी उतकृष्टा
नामेहोवेनिस्तारजी ॥ ५ ॥ स० जघनपदे केवली दोयकोमी उत
जी अढीद्वीपमे सासता विचरे वंउवेकर जोमजी ॥ ६ ॥ जघन्यउत-
कृष्टा मुनीवरजाणो प्रथगकोमीहजारजी गामनगरमे धर्मदीपावे तारेवऊनरनार
॥ स० वीसजघन्यपदहोवे चक्रीवलवासुदेवजी उतकृष्टादोढसोजांणो
जेनदेवजी ॥ ८ ॥ स० चक्रवरतवासुदेवकालकरीने थायेकेतलेकालजी

जघन्यतो सागर एकझाझेरो उतकष्टोअनंताकालजी ॥ ए ॥ सं० चक्रवर्तपदवी
जीवदोयवारेपामे वासुदेवतीनवारजी चवदेपुरवआहारीक नीलवी जीवपामे चउ
वारजी ॥ १० ॥ सं० जघन निधानहोवे एकसोनेअसी अढीद्वीपमझारजी तेरेसे
पंचासउत्तकष्टाजाणो प्रगट निधांनएकवारजी ॥ ११ ॥ सं० जघनरतनहोयवेसेनेअसी
अढीधीपमझारजी एकवीससें उतकष्टाजाणो दाष्यासुत्रमझारजी ॥१२॥ सं० पेत्रएक-
सोने एकमनुष्यनो पमएक हजारजी वीसपंमवले आधिकाजाणो अढीद्वीपमझारजी १३
सं० लापचोपनने सहसचाळीस अढीद्वीपनादेसजी तीयालीसे पेतालीस आरजजाणो
वाकी अनारज देसजी ॥ १४ ॥ स० लाप इक्यासीजीनवरदाष्या वलेसाठहजारजी
पाटणसंष्याएतलीजांनो अढीद्वीपमझारजी ॥ १५ ॥ सं० १ कोडएकनेलाप वावीसे
वलीचालीसहजारजी नगरीनीसंष्याइतलीजाणो अढीधीपमझारजी ॥ १६ ॥ स०
पमबएकने अमवत्रेसट उपरकोमजवासजी अढी धीपनागामनीसंष्या एतली कही
जगदीसजी ॥ १७ ॥ स० ॥ सोनारूपानापरवत सासता तेरेसे उगुणपचासजी कुप-
नकूंटएकसोनेसीतर लवणगीरीवले आठजी ॥ १८ ॥ सं० षमबएकने अमवत्रेसठ

नदीया लाषबऊं तरजांणो वले असी हजारजी च्यारसेपंचासवले अधीकीजांणो
अढी द्वीपमझारजी ॥ १९ ॥ सं० कूटनेवीसपेतीसेंजाणो अढीधीपमझारजी विजय
वली एकसोनेसाठे तिहां धर्मसदाजयकारजी ॥ २० ॥ सं० कोडछतीसपनरे लषजा-
णो वलीतिनहजारजी छसे कमलतीसद्रहना अढीद्वीमझारजी ॥ २१ ॥ सं० कोमसा
ठने पचीसलषजाणो उपर षटहजारजी कमलपंचासभुइद्रहना अढीधी पमझारजी
॥ २२ ॥ स० कोमछिनुने लाषचालीस उपरनवहजारजी छसंकवसर्व असीद्रहनाअढी
धीपमझारजी ॥ २३ ॥ सं० कोमबारेनेपंचलषजाणो वलीएकहजारजी दोयसेवृषजंबू
आदिदेइ अढीधीपमझारजी॥ २४॥सं० पाचसे दसमागदादितिर्थ अढीद्वीपमझारजी
च्यारसेपचासकुम्नदीयाना सुत्रमे वीस्तारजी ॥२५॥ सं० तीनसेचालीसविद्याधरश्रेणी
नगरसहस्त्रअढारजी सातसेनगरवली अधीकाजाणो अढीद्वीपमझारजी॥ २६॥सं० तीन
सेचालीसअभिउगसेणी तिहादेव विलसेसुषअपारजी तीनसे चालीसतमसगुफादिक
अढीद्वीपमझारजी ॥२७॥स० वेसेचोसठचंद्रमा सुर्य अढीद्वीपमझारजी नक्षत्रछतीसेछेनुं
जाणुं सुत्रालीजो संभालजी॥२८॥ स० सहस इग्यारछसेनसोले ग्रहकह्यामहावीरजी अ

ढीघेपे चरजोतकीचक्र वारेथी वळीविस्तारजी ॥ २९ ॥ सं० लाषअध्यासीने सहस-
चालीस सातसेकोमाकोमजी अढीद्वीपमेताराजाणो एतली आकनी जोमजी ॥ ३० ॥
सं० कोमइक्यावनलापइक्यासी वले अमसठहजारजी सवाचालीसगाथा अथकीजां-
णो एकपदनों विस्तारजी ॥ ३१ ॥ सं० एकआकासप्रदेसने उपर जीवनाप्रदेस अनं-
तजी सर्वजीवथी असंषेजगुणोछै ग्यागीनो ग्यानअनंतजी ॥ ३२ ॥ सं०, अमवएकने
कोमीवेसे उपरचाली सलापजी एकजोयण नाहाथप्रमाणे चोरसाजिनवर भापजी ३३
सं० अढीउधार सागरनासमया इतलाद्वीपसमुद्रजी दसठदारसागरनासमया एतलापो
लइबानजी ॥ ३४ ॥ सं० बावीसपचासएकोतरचार अठवीस सितावनचवदे दोएजी
असीदेवंगनानाएकभवमाही सक्रइंद्रनेहोयजी॥३५॥ सं०, आगमनाएबोलअनोपम जे
सरदे नरनारजी सीवनगरीना सुपतेपामे नही संदेह लिगारजी ॥ ३६ ॥ सं० इतीसंपूर्णं
पुज्यो जिनवाणी मातासीतला सितला चितकरो भावेजी संसारदावानल उपसमे
भवजनसुणी उलसावेजी पुं० ॥ १ ॥ चतुराइ चुलोथापने करम ईंधणकरो भावेजी
तप अगणी सधूकने किरीया कमाइ चमावोजी पुं० ॥ २ ॥ करुणारस घृत पुरजोनि-

र ममताकरोमेदोजी क्षिम्यारुप खाजाकरो गुणकागुंजा जमेदोजी पुं० ॥ ३ ॥ परमारथ पुमीकरो पुंनपापड धीचाजाणोजी संतोसरुपीकरो लापसी समतासकर वधाणोजी पुं० ॥ ४ ॥ धरम मोदना मोदककरो जेणाजलेबीवणावोजी प्रतित रुपी पेमाकरो प्रेमका घेवर आणोजी पुं० ॥५ दयाको दुध ओटावजो दानको दहि जमावोजी सुबुध्ररुपी वरफीमली अयोगका ओलावधाणोजी पुं० ॥ ६ ॥ धमाकरो विग्यानका गुलगुला गुपति रसालोजी भावनारुप भूजाकरो हेतु दृष्टांत मुसालोजी पुं० ॥ ७॥ सेवारूपी सेवांसीरे तत्वका तेवन ठावोजी भजन पकोमी चरपरी सुकथा कचोरी सरावोजी पुं० ॥ ८॥ चोकसी चोखा आणने रूचरुप राइकरीजोजी घाट राब राइकरो हिरदा हांमीमेधरीजोजी पुं० ॥९॥ स्नानकरो उपसम जलेपापकोमेल पखालोजी सीलसीणगार सजोसदा कषाय अगनके टालोजी पु० ॥ १० ॥ सुगुरु केण कलसोवींपे ग्यानकोजल भरलेवोजी मदी गृहो अनुमोदना सुतिकी सुपारी ठेवोजी पुं० ॥ ॥ १२ ॥ थीर परणाम थालीकरो विवेककी वाटकी जाणोजी विनय पिंगाणी वणावजो सतरुपकुकुंघोलाणोजी पुंजो० ॥ १३ ॥ अखे गुण आखाचमाइये प्रितिकापान

विचारोजी किर्तिफूल सुन्नवासना ध्यानकी धुप उदारोजी पुं० ॥ १ ४ ॥ सुकललेसा रुइधरो नेमको नैवेद्य लिजेजी आश्रव रजपरी टालवा संवरगरणो ढांकी जोजी पुं॥१ ॥ पर्मेष्टीका गुणगावणा गावजोगीत रसालोजी पुजाकरो इमसासती करम दूषहोय-विनासोजी पुं० ॥१५॥ धरमपुत्र चोखोरहे रिधसिद्ध बऊथावेजी सीवरमणीवरे सासती दूपकदेनही आवेजी पुं० ॥ १६ ॥ उगणीसे सेतिस शितला दिने किनियेहसझायोजी तिलोकरिष अनुन्नवपणे न्नवि जनकेमनन्नायोजी पुं० ॥ १७ ॥ इतिसंपूर्णम् ॥

अथठाकर न्नले वीराजोजी ॥ प्रभुजी न्नलेवीराजोजी ॥ प्रमातम म्हाराज मूगतमेन्नले विराजोजी समीन्नेमसुसातराजकम स्वारथ सिद्धविमाण तीणसुं बाराजोजन ऊंची ॥ चीत्राळत्र संठाण ॥ १ ॥ प्र ॥ लाखपेतालीस लेबी चोडी ॥ सुन्नकीठे साष आठजोजनदल सीद्धसीलाको ॥ ळेडे मापीकी पाष ॥ २ ॥ प्र० ॥ गायडुध ओर हारमोतीको संष घोडाकीलाल ॥ उरजन सोनामांही मनोहर ॥ फीटीक रतन सुवीसाल ॥ ॥ ३ ॥ प्र ॥ सुहाली घठारी मठारीदीपे ॥ नीरमल ओरनीरदाग ॥ एकजोजन उपरलोगाउ ॥ जीणकोळठो न्नाग ॥ ४ ॥ प्र ॥ तीनसे तेतीसे धनुष कहीजे ॥ बतीस अं-

गुलमाय॥ सीध अनंता रह्यावीराजी। पंनरा भेदकहाय॥५॥प्र॥ येकमाहीठे सीद्धअ
नंताअनंतमाहीठेयेक॥ अनंतसुष अटलअवगेहेणा मीलरह्या जोतमेजोत॥६॥प्र
केवलदरसण ज्ञानअनंतो॥ सक्त अनंतीस्वाम॥ अजर अमर अवीकार निरंजण॥
अवीनासी सीवधाम॥७॥प्र॥ जनम मरण भएदुष उचाटण॥ रोग सोग नही
भोग मात पीता गरु सीप नजाहा॥ मन वचन तनजोग॥८॥प्र॥ पूरपाटण नही
वसती उजाम॥ चाकर ठाकरनाय करम किरियावेपारनदीसे नही उजवालोगाय ए
अनोपमसुखमे सदाविराजो। तारण तरण जीयाज॥ अलष नीरंजण भवडुषभंजण॥
रीब नवाज॥१०॥प्र॥ उगणीस अम्तीस चेतसुकल॥ बारस आबोरी
लोकरिषकहे अधम उधारण॥कीजो भवदधीपार॥प्र०॥११॥इती संपूर्ण॥
टकरी मायारेमेली निठ २ करसरजी पावपलकमे परभवपोहंतो पडीरही
सङुपरची सुकृतकरलेरेमूंजा थारी पडीरहेला पूंजी॥१॥ कूडकपट करीने चतुराइ
जमाइ पीढी भोलादोला काल झकोला प्रातनिकली सीढी॥ सो॥ २॥ अधकोलेवे
देवे बोलेमधुरी वाणी अेमामारे घडीवडावेकर २ अंतरकाणी सुकत॥ ३॥ कर-

१२६२१

मादान अकारज करने धनमेलोनहीपूटे कलजूगकाल रावले लेइजावे वधकीया नविहुटे ॥ ४ ॥ निषरोपाय पहेरेपण निपरो सुपन्नर निदनसोवे नरसपरो दीठोपण इणसु नूत्तोपण ईणनेरोवे ॥ ५ ॥ पीपल पान कान कूंजरसोमान्न अणीजल जांणू इणसुं मोह करेसो मूरष अंतरग्यान पीछाणू ॥ ६ ॥ कमलापतिकी कमलानारी यातोगणका नारी रापणकाज अकाजकरे नर कर२घातदगाकी ॥ ७ ॥ कोडथकी कोंपल नहीथाको आठमो चक्रीदेषी लागीलाय कदेनहीधापे जोमीलेकोम्र अनेकी ॥ सो ८ । देतोदान पात्र सुदेषी मूम्रोकरदे कालो उलटोउप आणेहीरदामे आदो लोम्नकोचालो ॥ सो ॥ ९ ॥ राजामहेताने माडवीयाहरी हलधर सावलीया मायानारी कामणगारीकूण २ मिनपा उलीया ॥ सो ॥ १० । सेपे काल कुचामण नगरे ॥ चेतमहीने आया ॥ रतनचंदकहेमु जीमीनपसु सेठी पकमीमाया ॥ सो० ॥ ११ ॥ इतीसपूर्ण ॥ लोम्नी गरु तारेनही तरेसो तारणहारतूतीरीयो चावे चतुर नीरलोम्नी गरुधार ॥ १ ॥ ॥ ॥

॥ एर्द० ॥ लावणी ॥ तिनमनोरथ करेनितजे ॥ भवियण नरनारी ॥ जिनोकूं मुक्तिहे प्यारीजी ॥ जेनधरमके तजके राचो ॥ रागद्वेषमाही ॥ जाण्यो जिनधर्म भलो नाही-

जी ॥ क्रोध मान कपट लोभसे राचरह्योप्राणी ॥ धारीनही भगवंतकी वाणीजी ॥ ग-
योनारकीमाहे जीवजहा ॥ दूष अनंतपायो ॥ घणो जहाजमने घबरायोजी ॥ पंम २
करदीया देहका ॥ ससतरसे घायो ॥ कालजो ताम २ पायोजी ॥ लह्यो पसु अवतार
॥ तरस थावरमे महाभारी ॥ जनममरणका दूषभारीजी ॥ पायो नर सुरलोक जीवज
हा पुंनदीसाहारी ॥ कहाभयो उंचगति धारीजी ॥ आरंभ परिग्रहका फलखोटा ॥
कबकरु परिहारी मनोरथए परथमधारीजी ॥ ति० ॥ १ ॥ डजोमनोरथ धरेविवेकी ॥
कबग्रहु मुनीवरति ॥ जिणीसे आतमनिज तरतिजी ॥ तिनगरभ अराधिकता पद
कदलेसु दिक्षा ॥ करु छकायनकी रक्षाजी ॥ रागद्वेषसु कदीनिवरतु ॥ दंमगरभ छंमि ॥
प्रितिएक करणीसु मंमिजी ॥ क्रोध मान माया ओरतृष्णा ॥ एचारीछेमी ॥ आत
मावाकदेवुंमोमीजी ॥ सातभए सबटले माहेरा ॥ आठुमद छुटे ॥ कदे अंतराय करम
टूटेजी ॥ दूजोमनोरथ एसीरित ॥ चितवारी ॥ २ होत तबनिर्जरा भारीजी ॥ ति० ॥२
करे तिसरे महा मनोरथ ॥ सूणलेणाभाई ॥ कमिफिरहे नहीकांइजी ॥ तपसाकर त
नवनकुं सुकाई ॥ संलेखणा चाई ॥ अहारतजुं जावजीव तांईजी ॥ रतनकरंड समान

आतमा ॥ सारकरूनाई ॥ सितादिकदेवु नमिटाईजी ॥ इहलोक परलोकतणीऊं ॥ वंछाकरु नाई ॥ मरणकीटालु आसताईजी ॥ कामभोगकी तृष्णाछेदी ॥ अराधिक थाई ॥ जावुकद मोक्षमहेल माहीजी ॥ तिलोकरिखकहे ढाणे तिसरे ॥ विधिजहा विस्तारी ॥ धारे जेईधनहे नरनारीजी ॥ तिन मनोरथ करे नितजे ॥ भवियण नरनारी ॥ जिनोकूं मुक्तिहे स्यारीजी ॥ ३ ॥ इतिसंपुर्ण ॥ ॥ ॥

॥ ॐनमःसिद्धं ॥ अथघोसो॥समरुगुणधर संघपती जेनसुधजती सारदासती चाज्ञन्नकी अनंतसक्तीजी ॥ अथघन ॥ असलदोमती पुनकोरती वृद्धिकरोअती करोकरमकती देवोसिद्धगती चाज्ञन्नकी अनंतसक्तीजी॥घन॥धरमकीवणी कचेरी भारी सिंघासणधी रजरुपधारी बेटे प्रभुजी सपरज्ञसीयारी सभ्नामेजुडेतीरथचारी अदालत्तकरे सतजाहारी षोटेकी नहीहे कछुयारी दगाजीवचेतनकाहेवंका न्यावतुंमसुणलोनीरसंकाजी ॥अथ लावणी॥मेरिधनदोलत जमीन अचलदीलवाणी १ तुमकरो अदालतमेरी जगतपतीराणी ॥ षुदचेतनमुदेइ वाणाहेजहारी आठकरम मुदाल कपटभ्नमारी धीरजकाईष्टापसोधकरलाया १सकायध्यानमज मुनसचवणवाया अरजी आनगुजारी षांम्यात-

लवाणा ॥१॥ तुः ॥१॥ मेजाता सीवपंथ करमदीयाघेरा १ धोकादेमीले संगलुटा सचमेरा लक्षचोरासीके विचमोकु अटकाया २ फीर राग द्वेष द्रढबंदमोकु बंधवाया मेपायादुष दनहीजाणी॥ तुः ॥१॥ येटंटाहे वेपार वोतहेजुना मेरहाभोलपकेमाय माफक यमीलेनहीं वकीलसचेका नुना १ येजगमावडा वोतदीनदीनडुना।मेतो आयाव वम्हे करमदाणा ॥ तुः ॥ ३ ॥ अवपुलीकतु तकदीर पुंनपरभावे १ जाणामे ऊस व हारुनहीन्यावे सतावीस गुणधार वकीलकानुना १ जाणे अरजकी मरज वोतमजमुना मेकीया जाकेमीलाप वोतहरपाणा १॥ तु ॥ ४ ॥ ऊनदेपसासनका न्यायमेदवताया १ जुलम मसोदावनवाया तुमवीनकरे कुणन्याय अरजीमेलाया १ सुमभावा वुलवाया सील असेसर चौधरी उसकुवुलवाणा १ ॥ तु ॥ ५ ॥ उसवपत ऊकम फरमाया १॥ प्रभुग्यान चपमासी मेज मुदाला बुलवाया ॥ सोबोले हमसंग कलुनहींदावा २ चेतन ऊगडे जुठ पलकमेठावा । पंचप्रमाद गुवासंग आणा ॥ तुः॥ ६ ॥ हमघर आयायेहलपत चलाई १ पायाह करजा माई ॥ २ ॥ राच्या भोगवीलास मनवचकाया २ घाटानफानहीं जानाक

रजा चठाया ॥ जयहम मंगणगतवेघवराणा २॥ तुः ॥७॥ हालजर पडेगवाइ हालसु
णाया तवचेतनदे उत्तर सुणोजी महाराया इमानदार सचे मेरेगवाइ २ जाणतसवजीहा
न झूठकनुनाई ॥ बुम्हादीनीमेरी वतनअपुट घननाणा ॥ तुः ॥ ८ ॥ कमरफेरेवीदारबोतउ
पदाना २॥ लुटमचाइयोतकीयाहेराना लक्षचोरासीमाहे बोतभमाया ॥ बोतकरायासवाग
कीया मुझकाया ॥ लुटेहरीहरइंद्रचंद्र नरराया २ ॥ ए ॥ लुटेरीहेकेई वीदानवमे पंमीत-
कुं ॥ मलेनरकके धींचबोतसे नतिकुं कहापुनकानाम पापकरवाया २ करकरहीसाका-
मधरमवतलाया ॥ बोतफेलायाजालजीससेललचाणा २॥ तु ॥ १० ॥ येसोकराइनसा
फ चेतनदरसावे २ अबकरमोकी अफीलहोणे नहीपावे जनममरणदुपरोगसोगमीटजा
वे २ ग्यानदरसणमुनसफीकरकीसमझावे॥चेतनकाकरजा अदाभयाफरमाणा २। ११ अस
लकरजाजोदेनाहोताकरमोका ॥ चेतनसे दलिवादो मीटेसवधोका तपकानाणारोकदलि
वायाजहारी ॥सुधसंजमजमानतकरीहतबसारी॥भयाकरजासेअदासदासुपथाणा २॥तुः॥
१२। अदलन्यावकीया नाथहटायातसकरचेतनकुमीलीफारक २ तीरह्यादीलहसकर उग
णीसे अमतीस सालघोरुनदीलसकर कीवीलावणी येहसमझ दिलउसकर॥ तीलोकिर-

पजीकहे ॥ सारसमझो कलुस्याहाणा २ ॥ १३ ॥ तु० ईती संपूर्ण ॥ अ॥ एदं० ॥
॥ महावीरस्वामीजीकोसुकर्मेलीप्यंते ॥ श्री तसलादेराणीको मेरेनंदन ॥ ठगन
मगनलाल ॥ पेलोमेरे अंगन ॥ मुखमल मीसरुकी खटदीलमी ॥ १ ॥ रेसमलाल क-
सीदल पगडी ॥ तासखुले टोपी तेवम्ता ॥ पीतामरअतलसकाकुम्ता ॥ रमक ज-
मक पायघुघरवाजे ॥ सोवनमला कंठेदलसाजे ॥ काना कुंम्ल मरग मतवाला ॥ हा-
तसाकलांकटसुतरसाला ॥ हीरत फीरत हसकर मुपबोले ॥ माताजी मुजलेलोगोदी
गोदलीयाजवा आलसी ॥ पोडोमाहारा पुत्रपलंग परपसीया ॥ चणकर वाणीबोलेनीको
जाज्ञो भोजन मागेकीको ॥ जबलग भोजन जवा गुजाई ॥ जीमोमेरे पुत्रमेवापाक
मीठाइ ॥ सोवन थालरुपाको तवंयो ॥ बेसे कुवर परुसेमाइ ॥ अवक्याकज मनकी च-
तुराइ ॥ जीमे कुवर परूसेमाइ ॥ पेलीथाल ॥ १ ॥ गरगुदीकचनारभलेरी ॥ टींडुरेण
दलकाचरीया काजीमरीया ॥ चमचणा मुगमोठे वगारया ॥ मेथी वटजी हलद वेसवा
स्या मसुर कुलथा चीरकरेला ॥ सागर परवालो लेभलेरी ॥ गोलवमा राइतो पतोमी ॥
मीरच मरमरी खाम्पतोमी ॥ सुरण अदरक पीडरताला ॥ बोरवरपडा । सकीराणु ॥

पीवर वादर मीरचे अथाणो ॥ रायडुडी घरनार चकाणु ॥ करकंस अंजण फुल न्नलेरा
अम्ग गुवार भुवार फोफरी ॥ कोला मुला फोग सागरी ॥ मुगता डुरगल फल फंज-
ण ॥ नंनणारया चोररसोम्हे इमरत पापम्ह पान पकोडी ॥ न्नाजी सरसी न्नलीचणाकी ॥
मेथी रायरजान धणाकी ॥ अववो वथवो अनमो न्नाजी। सुवा पालको पोचराजी ॥
तोरी वेगण न्नीम्ही परखरी ॥ चंदलोइने सादर गादर ॥ लालस्यो डुणक्यो ॥ अमो-
ल आमली खरबुजा त्रेबुज मतीरा ॥ मीठादीठा अरस जंबीरा ॥ कुरणाकेरा पीम्हख-
जुरा ॥ आबारेण दाम्हिम दाष बीजोरापीसता गुदसेलडी सलुणी ॥ कमलगटा आ-
परोम्हचारोली ॥ सेव सीताफलनेबम्होरा षाटा मीठालखन्नलीबु ॥ नदी रसी-
गोडा जाबु ॥ सीताफल सनमान फोपरी ॥ तेवड दंतावाल काकम्ही ॥ लोचाथुरथ
रव्हरदीठा ॥ रकत अंकोरा करमदा काला ॥ वम्हमीठाले खांम्ह रसाला ॥ मेवाआण
घरचा वीद २ का ॥ रूचकर जीमो माहावीरजी ॥ अदकाघणीजेवेरका ॥ भुषामेरेनं-
दणा अंगली पकड पकड ॥ धीरे २ चलणा ॥ ऊइरसोइ दीधीवधाइ ॥ जीमोमेरे पु-
त्रन्नलीवदाइ ॥ सोनेकोथाल रुपाकोतीवेइया ॥ बेसे कुवर परोसेमाइ॥ अबक्याके

॥ डुजी ॥ थाल ॥ २॥ मालपुवामुरकी-
मनकी चतुराइ ॥ जिमे कुवर परूसे माइ ॥ डुजी ॥ थाल ॥ २॥ मालपुवामुरकी-
मंभी पाम्सकेरी ॥ डुदपेमामे सकरभेली ॥ दइथडा चीरोजी गलफीया ॥ घणाजी गी-
दोमा ॥ कसमस दाणा मोती चुरअकबर काखाणा ॥ मसगदमेदा इमरतकुंजा ॥ चा
दसइतनगणी ॥ घणापतासा मीठाषारेक मीठापाक ॥ मीठागुलाब वेवर इमरतसाक
श्रीफल पुंगीमेवापाक मीठाइ ॥ अदरक अलायची ॥ डुदगुठका डुदनीवारो कुरगठ-
का फीणा फीणी मगद सुवाली ॥ षाजासे पुरीमलकाणी ॥ लाडु उम्द मुगकाफकि
लकम्सइ केसरीयानीका ॥ हातघडा घमामेथाका ॥ बरफीवडा वषाण्यादोठा ॥ रडी
रेवभी नपसीसोटा ॥ इंदरसाइ लुची सकरपारा ॥ सागाव्यागुड घांणीन्यारी ॥ तील-
पापडी ॥ तीयाडीलाफी फुली लाडुलावो कपसी ॥ गोलपापडी मेदाकी उजली ॥ न्नर
दोणीजे डुद अवटावो ॥ मायषांम वुरोलटकावो गुलाबसकरी ॥ ऊइरसोइ दीदीवदाइ
॥ जीमोमेरेपुत्र मेवा पाक मीठाइसुनेकीथाल रुपाको तीवायो ॥ बेसेकुवर परूसेमाइ
॥ अबक्याकऊं मनकी चतुराइ ॥ जीमे कुवर परूसेमाइ ॥ अब क्याकऊ मनकी
चतुराइ ॥ तीजी ॥ थाल ॥ ३ ॥ मुगमडोरादालतुवरनी ॥ थारपरूसे मायकुवरनी

रायभोगने सीलीरोटी ॥ रामसइकनो कनक कनोती जनम्याचावल ॥ ठेक्याठेला रामखीचडी ॥ सेक्यापापड पानपकोमि ॥ गचधुंगारी अमलवाणो ॥ कोरसुदारचो ॥ पाचभांतरो कीयोपाटो ॥ चीणभर चुण चणाकोआटो ॥ सुंटमीरचको कीयोरेलको जीनेजीमता आवे सवम्को ॥ ठवठव पीर सकरवाणो ॥ षाम्बीया ॥ मुगताफल फं- जण ॥ पतली पोलीरवो अंगाषर ॥ सतपुडी रोटीमे सकर ॥ गंदेसुगंदा खटेने पारा ॥ पठरस भोजन जीमे वीरकहे मेतारीगंगादीक भरलावोझारी ॥ सवरस भोजन क- रोवषाणी ॥ गंगादीक भरपीयो पाणी ॥ पकापान काथाभरचुनो ॥ योत मुसालाको भरङनो ॥ चंवल सुपारी जायफल हयडे ॥ सुट सुपारी दाल चीणी मुलकमुलकसी- तिसलादे नंदा पुनमचंदा ॥एकसो छतीस भोजनकी सुकमी संपुरणं ॥ इति संपुरणं ॥

॥ अथ नमो २ रे भवीक प्रभुचरणा ॥ मीटजावे सकल ऊपमरणारे ॥१॥ न ॥ आ- दे अजीत संभव हीतकरणा ॥ अभीनंदण सुमत सुधधरणारे ॥ न॥ २ ॥ नीत पदम सुपासजीनचरणा ॥ चंदाप्रभुजी लंछन चंद्रवरणारे ॥ ३ ॥ न ॥ सुबध सीतल अ ताप ऊपहरणा श्रेयांसवासपुज लेवोसरणारे ॥ न ॥ ४ ॥ होयवीमल जपत भयटरणा

अनंत धरमजी मेटे ज्नवफीरणारे ॥ न ॥ ५ ॥ संत कुंथ अरीकिया न्यावनीरणारे मली मुनीसुव्रत सुमरणारे ॥ न ॥ ६ ॥ नमी नेमी पार्श्वंकरी पसुकुरणा ॥ महावीरजी चरणो सीसधरणारे ॥ न ॥ ७ ॥ तीलोकरीषकहे डुखसेजो उबरणातो समरो प्रभुतारण तरणारे ॥ नमो ॥ ८ ॥ इति ॥ अथ देवस्तुतीपद ॥ दं० ॥ धरमरूपी वणायलोनैया ॥ मानो २ सीपमेरीन्नैयारे ॥ ध ॥ १ ॥ संतोसका पाटया जमैया ॥ क्षिःन्याकीमे पीललगैयारे ॥ ध ॥ २ ॥ आश्रवका डुवारवुरैया ॥ करो चाटुवेराग सुहैयारे ॥ ध ॥ ३ ॥ सतगुरूजीहे चतुरषेवैया ॥ नीजतीरे ओरतीरैयारे ॥ ध ॥ ४ ॥ ज्नवोदधीसु तरणीकीजोचैया तीलोकरीपकहे घरमगहीयारे ॥ ध ॥ ५ ॥ इति ॥ अथ ज्ञानगुणोपद ॥ दं० ॥ करोज्ञान दीपक उजवालो ॥ जीणसुमीटत आज्ञानको कारोरे ॥ क ॥ १ ॥ पलीउग आलसकेटालो ॥ ठेमोवीकथा रसकोचालोरे ॥ क ॥ २ ॥ करो सुगुरूकी सेवावीसालो ॥ सुत्रसंधी सु षोलदेसी तालोरे ॥ क ॥ ३ ॥ कुमतीकलेस बती कंथेबालो । जाणपणावीना कीरीया बेयालोरे ॥ क ॥ ४ ॥ तीलोक रीखकहे ज्ञानगुणीयालो ॥ वेगीलदेगा मुगतको मालोरे ॥ इतिसंपूर्ण ॥ ॥ ॥

ॐनमः सिद्ध ॥ देसी ॥ सुरतचरणांमे ॥ श्री श्रीमंदरस्वामी ॥ थारोध्यानधरुं सिरनामी
जुगमिंदर अंतरजामी रा ॥ जिनंद जसधारीरे ॥ सरणसुषकारी ॥ चरणबलीहारीरा ॥
आकणी ॥जि॥स॥ जि ॥ १ ॥ बाहुसुबाहुजीसेवा ॥ मेचाहु नितमेवा ॥धन२ देवादी
देवारा ॥ जि ॥ २ ॥ सुजात सयंप्रभुधाउ ॥ श्रीरीखभानंदजी गाउ ॥ अनतविरज
सीसनमाउ रा ॥ जि ॥ ३ ॥ सुरप्रभुजीहे सीवदाता ॥ वीसालधरजी विख्याता ॥ दो-
नव२मे सुखसाता रा ॥ जि ॥ ४ ॥ वालेसर बजरधरजी ॥ सुणोचंद्रानंदन अरजी ॥
माहारा जनम मरणदोवरजीरा ॥ जि ॥ ५ ॥ चंद्र बाहु भुजंगदयाला ॥ छकाया प्रति-
पाला ॥ रोकदीना आसबरनाला रा ॥ जि ॥६॥ ईस्वरनेमीस्वरराया ॥ विरसेणसदा सु-
खदाया ॥ महाभद्रजी कर्महटायारा जि ॥ ७ ॥ देवजसजीहे जसवंता ॥ अनंतविरज
सीवकंता ॥ डुषजावे ध्यानधरतारा ॥ जि ॥ ८ ॥ विचरो म्हाविदेहेके मांई ॥ प्रभुपा-
चसे धनुषउचाई ॥ महेमा जगमाहे सवाईरा ॥ जि ॥ ९ ॥ प्रभु कंचन वरणीकाया।
सबभवजनकेमनभाया॥ तिलोकरिखजी नितसिसनमायारा ॥ जी ॥१०॥ इती संपूर्णः
एर्द ० ॥ षमी बोलीमे पद ॥ मान बंदे मानमेरी ॥ मतकर गुमानवे ॥ एटेक ॥ काया-

सो अथीरयार ॥ जे सो संज्ञा नानवे ॥ माया सोनठे प्यारे ॥ जे सो धनुयवानवे ॥ १ ॥
मा ॥ आठषो अथीरथोमो ॥ अंजली जलजानवे ॥ हमेस बिंन रछीजे ॥ यतिको तोफां-
नवे ॥ मा ॥ २ ॥ जोबन नदी पुरजे सो ॥ तये क्यो अकर्मानवे ॥ नदीके कीनारे रुषां
अंत नखमानवे ॥ मा ॥ ३ ॥ ओरका नुकसान करे ॥ तो कुं नुकसानरे ॥ ओरकुंमारे
बुरीतो ॥ तो कुबुराजानबे ॥ मा ॥ ४ ॥ पाणी पीलायपाणी मीले ॥ रोटी देतोनानवे ॥
दील डुखाए दील डुखेगा ॥ अेहेसानथी अहसानवे ॥ मा ॥ ५ ॥ नेकीका । दरजाने
कमीले वदी सेबदी मानवे ॥ चेन दियचेन होगा ॥ हेरांनथी हेरानवे ॥ ६ ॥ तिलो-
करिष सीख देत ॥ दया दिलमे आनवे ॥ दया धरम सारधार ॥ पावेगा निरवानवे ॥
॥ मा ॥ ७ ॥ इती संपूर्ण ॥ ८ ॥ मेदीवाली वंद चाकरतेरा ॥ प्रभुजी पटोलीखाइ दो-
नी मेरो ॥ दुवात मंगाइ दोकलममंगाइ ॥दुकागद मंगाइ दठकोरो ॥ अमरापुर जागेरी-
लीषदो ॥ मसत मगन होय मेरो ॥ १ ॥ मे ॥ ज्ञांनध्यांन करमेल चुणाइ डरा पुड्वा-
जे पेरो ॥ सुमत सीपाइकी चोकी रखाइदो ॥ चोरने पावे कोइ गेलो ॥ २ ॥ मे ॥ पा-
चहती आरजो करवाड ॥ मन कुरापुधारो ॥ ज्ञानखमगलेइ ॥ पारउतारु ॥ जवलग

मुजरो मेरो ॥ ३ ॥ मे ॥ दीलविचे दरीयावपेयअसो गेरो ॥ नावने पावे तीनी वेरो ॥ नानकदासरी याइ अरजहे ॥ संग उतारोनीमेरो ॥ ४ ॥ मे ॥ इती संपूर्ण ॥ एकहात सुतारी वाजे नही ॥ नही मानोतोवजाय देषो एकतर पसुप्रीतरहे नही ॥ नही मानो तोलगाय देषो ॥ वीगर बुलाया आदरनही ॥ नही मानो तो जाय देषो ॥ जीम्यांपछे सवाद नही ॥ नही मानो तोपाय देषो॥चारुवातसचीहे नमानोतो अजमाय देषो इती ॥

॥ अध्यातम दसरावाकी लावणी॥वीजेदशमीदिन वीजेकरोतुम॥ज्ञानदष्टकरनरनारि येसादशरावा करलो उमगशे मीथ्यामोह रावणमारी॥ येसंसारसागरके आदर करम रुप अवथवपाणी ज्ञरमरुपपके ज्ञवरइसमे ॥ डुवजातजहा जगप्राणी ॥ तीनदंभ त्रीकुट दीपहे लालचलंका वंकवणी ॥ महामोहोरल अवानामयक ॥ राक्षशराजा उसमेधणी फलेसकेकासिरणीहे उसकी ॥ अकलदार समजोजहारी ॥ यसा० ॥ १ ॥ मीथ्यामोहणी उसकाफरजन ॥ दसमीथ्या दसआन नहे ॥ वीसआश्रवकी भुजाहे उसके कपटवीबा को पाननहे कुबुधनाम चंदरनषावेनहे ॥ कठीणकरोधपरकेन्याही ॥ दोषण दुपण तीनसक्ष वरसखो यदोनुइ उसकेभाई ॥ संजल संबुक चंदरनषासुता ॥ कलुय

सो अथीरयार ॥ जे सो
मा ॥ आउपो अ
नवे ॥ मा ॥

सुरज हंसपमंगकुं॥ साधनकी दीलमे आई॥
पायोंउसट तारणमाई ॥उसवपतमे रायराजगरहे ॥ दश
भावना राणीकोसल्या ॥ घरमरामपुतर जाया समगत सुमी-
मणकीमहेतारी॥य ०।३॥सुमतीसीतासेवरमरामका॥बोतवातसेव्या
कमसे॥तीनुहिसंजमेवनमेगया ॥सतलपमणवोनमगपकम्कर ॥
रघाया ॥ कबुध चंदरनपाकही पतीस पर उनण ग्रसलाधाया ॥
नामने उणतीनुकु लीयामारी ॥ य ॥ ४ ॥ मीथ्यामोह रावणकेपा
वमाइ ॥ कीरेबोत तवलालचवसयाही चलआया लंकासाइ ॥
दसुणाके ॥ सुमती सीताकीकरी चोरी ॥ रामलक्षमण जवजाना नेदये॥
॥ झुटसाहा सकतउष्टी ॥ उसकी सतलक्षमणनेकरी पुवारी ॥ ए ॥
व जव नयापक्षपर ॥ बोतभुप उसकीसंगे ॥ जामवानने मनला-
ुमतअंगे ॥ पवरलायावो सुमतसीताकी ॥ बोतजोरावर दुनीयामे
प नावकी संन्या ॥ लेकेगये लंकाठामे ॥ मीथ्यारावण सुणीवात येकीवी

आपकी ऊसीयारी ॥ य० ॥ ६ ॥ चारकषायराक्षसदलभारी ॥ कुध्यानधजाके फरावे अपकीरतीका वाजेनगारा वीकथाका करूपागावे ॥ कुसीलरथमे वेगडुसीयारी ॥ सातवीसन सस्तरधारे॥रागद्वेषलमराव जोरावर ॥ सद्देज सुभटसे नहीहारे ॥ नयने जासजा यधोसदे ॥ रामआये चढतीणवारी ॥ य ॥ ७ ॥ सतलक्ष्मणतव धीरज धनुपले वेटेशीलरथके माइ ॥ अरु बरुजब मीलेआणकर ॥ मीथ्यारावणकुं रीसआई अग्यान चक्रमला लछमणपर ॥ जोरचलानाही लीगारे ॥ ग्यानचक्र जबमेलाहरीने ॥ येकदममे रावणमारे ॥ रामलक्ष्मणकी जीतभईतव ॥ जगमेभयाजेजे भारी ॥ य ॥ ८ ॥ सुमती सीताकु लेकरआये ॥ मुक्तअजुध्या राजकरे ॥ जनम मरणदुपसकल मीटजहा रामराजासो जगमे परे ॥ समत उगणीसे साल ३८ का पेठ आचोरीके माइ॥ बीजेदशमीदीन कीवी लावणी ॥ समजा दारके दीलभाइ ॥ तीलोकरीषजी कहेसत रामायनधरम परब करो सुखकारी ॥ य ॥ ९ ॥इवी संपूर्ण ॥ ॥ ॥

सवईया ॥३१ ॥ सचेत प्रथवीपंभ ॥ पारेवासोकरे तन ॥ जंबूदीपमे नमावे ॥ जीवयतो णीऐं ॥ जलबिंदु मधुकर ॥ तेउसरसवसम ॥ वाउएक जाबूकमे ॥ षस २ गणीऐं ॥

कआयो ऊसीयारी ॥ य०२ ॥ ज्ञानरुप सुरज हंसषमंगकुं॥ साधनकी दीलमे आई॥
मातापिताका ऊकमनमानो रह्मावोऊसट तारणमाई ॥ऊसवषतमे रायराजगरहे ॥ दश
लष्यण दशरथ रायासमरभावना राणीकोसल्पा ॥ धरमरामपुतर जाया समगत सुमी-
तराराणीदुसरीसतलष्मणकीमहेतारी॥य०।३॥सुमतीसीतासेधरमरामका॥बोतबातसेव्या
वन्नयाएकरोजवोपीताऊकमसे॥तीनुहिसंजमेवनमेगया ॥सतलषमणबोपमगपकमकर॥
संजल संबुकका सीरघाया ॥ कवुध चंदरनषाकही पतीस पर ऊपण नसलाधाया ॥
सतलषमणतबचढे सामने उणतीनुकु लीयामारी ॥ य ॥ ४ ॥ मीथ्यामोह रावणकेपा
सवो समती सीताकी बमाइ ॥ कीरबोत तबलालचवसवाही चलआया लंकासाइ ॥
ठलवयाकानादसुणाके ॥ सुमती सीताकीकरी चोरी ॥ रामलक्षमण जबजाना नेदये॥
सोचेअबलानी दोरी ॥ झुटसाहा सकतऊष्टी ॥ उसकी सतलक्ष्मणनेकरी षुवारी ॥ ए ॥
॥ ५ ॥ संतोस सुग्रीव जब नयापक्षपर ॥ बोतभुप उसकीसंगे ॥ जामबानने मनला-
दीक॥ समननाम हणुमतअंगे ॥षवरलायावो सुमतसीताकी ॥ बोतजोरावर दुनीयामे
दानसील तप नावकी संन्या ॥ लेकेगये लंकाठामे ॥ मीथ्यारावण सुणीवात येकीवी

आपकी ऊसीयारी ॥ य० ॥ ६ ॥ चारकषायराक्सदलभारी ॥ कुध्यानधजाके फरावे अपकीरतीका वाजेनगारा वीकथाका कम्पागावे ॥ कुसीलरथमे वेठाहुसीयारी ॥ सातवीसन सस्तरधारे॥रागद्वेषठमराव जोगवर ॥ सद्देज सुभटसे नदीहारे ॥ नयने जासऊायधोसदे ॥ रामआये चढतीणवारी ॥ य ॥ ७ ॥ सतलद्मणतब धीरज धनुपले वेटेशीलरथके माइ ॥ अरु वरुजव मीलेआणकर ॥ मीथ्यारावणकुं रीसआई अग्यान चक्रमला लछमणपर ॥ जोरचलानाही लीगारे ॥ ग्यानचक्र जबमेलाह्दिने ॥ येकदममे रावणमारे ॥ रामलक्ष्मणकी जीतभईतव ॥ जगमेभयाजेजे भारी ॥ य ॥ ८ ॥ सुमती सीताकु लेकरआये ॥ मुक्तअजुध्या राजकरे ॥ जनम मरणडुपसकल मीटेजहा रामराजासो जगमे परे ॥ समत ऊगणीसे साल ३ ८ का पेठ आवोरीके माइ॥ वीजेदशमीदीन कीवी लावणी ॥ समऊ दारके दीलभाइ ॥ तीलोकरीषजी कद्देसत रामायनधरम परव करो सुखकारी ॥ य ॥ ९ ॥इती संपूर्ण ॥ ॥ ॥

सवईया ॥३ १ ॥ सचेत प्रथवीपंम ॥ पारेवासोकरे तन ॥ जंबूदीपमे नमावे ॥ जीवयतो एाीऐं ॥ जलविड मधुकर ॥ तेजसरसवसम ॥ वाउएक जबूकमे ॥ पस २ गणीऐं ॥

सवैया प्रतेक वनसपती ॥ असंख्यात गुणाकर ॥ साधारणसुइ अग्र अनंत प्रमांणियें ॥ त्रस-
देह भिन भिन ॥ केतहे तिलोक चिंन ॥ निज प्राण समजाण ॥ अनुकंपा आणिऐं ॥
॥ १ ॥ बारे सहश्र आठसे चोविस एक मोरतमे ॥ जनम मरण प्रथ्वीपाणी तेउवा-
यमे ॥ साम्पिसठ सउ तिस करेनिगोदीया ॥ बतिस हजार सो प्रतेकहरी कायमे ॥
वेंद्रीमांहि असी सात्तेंद्री मांहिमर्णहोए ॥ चोंद्रीमे चालीस संख्या । कही सुत्ररायमे॥
असनी चोविससंनी एक भव होए हद ॥ केतहे तिलोकरिष ॥ धंमसोन जायमे ॥२॥
असाढभाद्रव मास कार्तिक पुनम चेत॥असजाइचारयह॥उरमेविचारीया॥श्रावण आ-
सोजवद ॥ अगण वेशाखधुर ॥ पढवा चारूहोवेद ॥ आठयसंभारीयो ॥ प्रातका-
ल मध्यदिन ॥ संज्ञा ओर मध्यरात ॥ असजाइ चार नित्त ॥ दोदोघमी टारीये एवं
बारे असजाइ ॥ कही चोथा ठाणा माही ॥ ज्ञानआराध कजन ॥ सुत्रपाठवारीयो ॥३ ॥
आकासकी दश असजाई फरमाई प्रभु ॥ उल्कापात दिशी दाह ॥ गाजबिज जांणी
ए ॥ कम्के गगन वालबीज चंद्र जक्रचेन ॥ धुवर स्याम स्वेत ॥ रजघातपह चाणिए॥
दशउदारिकफूनि ॥ हाड मास रूद्रसी ॥ भृष्ठासम साण चंद्र ॥ रविग्रहण गंणिए ॥

राजमृत्यु वियेसवी मिलके वतिशएह ॥ केतहे तिलोकरीष ॥ प्रभूवेण मानीए ॥ ४ ॥ जगमे सरजीवनअमी पंचनवकारमंतरवा र१जपियेजी पिणनभूलाइये सोवतउठत मुप जावत प्रदेश माहि ॥ रणमे भुजंग सिघ वेपन मराईये ॥ संकट नपडे कोए । भुतव्यंतरनहीछले ॥ जलेनअगन भवोदधि तरजाईए ॥ ताकुकहाउर सुरलोकहेविनोदीलाल ॥ जोवेनवकारमंतरमनवचधाईए ॥ १ ॥ हिंसाके करइयामुखझुठकेबोलईया ॥ परधनकेहरईया करूणानजाकेअंगहे ॥ रयणकेषवइया मधुपानकेपिवईया ॥कुमीसापकेभरैया ॥ कठोरअतिहीयाहे ॥ नरककेजवईया॥ परनारकेरमइया॥ कंदमुलकेभपइया ॥ जानेओरपापकीयाहे ॥ तहीतरजातएकछिनएकमेविनोदिलाल ॥ जोवेनवकारमंतरमनवचधाइऐं ॥ २ ॥ कोइकेवलदेवताको ॥ भूतप्रेतइष्टनको ॥ कोइकेवलचक्रिमंडिदेवपेतरपालको ॥ कोइकेवलगायवेको ॥ कोइकेवजायवेको ॥ कोइकेउधारको ॥ कोइकेवललरवेको ॥ कोइकेवलमरवेको ॥ कोइकेवलमारवेको ॥ वाघहथीयारको ॥ कहेतविनोदिलाल ॥ जपोनवकारमाल ॥ मेरेतोअनंतवलमंत्रनवकारको ॥ ३ ॥ कोइकेतोधनहेजीरूपैयानेमहोरघणी ॥ कोइकेतोदपीयेजीकंचनभंमारहे ॥ कोइ-

केरतनमाल ॥ कोइहिरामोतिलाल ॥ कोइकेवसतुसार ॥ दरवअपारहे कहतविनोदीला-
ल॥जपोनवकारमाल ॥ मेरेतोअपुटधनमंत्रनवकारहे ॥ ४॥ अरिहंतजीकेजपेअष्टकर्मको
विनासहोत॥सिधजिकेजपेसेतिसीध्दपदपाइये॥आचारजजपेसेतिआतमासरूपसुझे॥
उपाध्यायजपेसेतिउचपदपाइये॥साधुजिकेजपेसीवमारगवतायदेत॥ईहलोकपरलोकअ
तिसुषपाइए॥कहेतविनोदिलाल॥जपोनवकारमाल॥जाकेजापजप्यासेती॥सदासुषपाइये
॥ ५ ॥ दोहा॥असुभकरमकेहरणकुं ॥ मिंत्रवडोनवकार ॥ वाणिदुवादशअंगमे ॥
सोधलीयोततसार ॥ १ ॥ श्री ॥ छे ॥ श्रीअरिहंतभगवंत बारेगुणवंत ॥ सिरीसिध्द
राजमुलअष्टगुण धारीहे ॥ आचारजसोतोगुणछतिस विराजमान ॥ पचीसगुणउप
झाय ॥ ज्ञानकेभंडारीहे ॥ साधुसाधे आतमासो । सताविस गुणजुक्त ॥ सबमिलएक
सतआठविस्तारीहे ॥ कहेत तिलोकरिष ॥ मनवचकायकरी ॥ सदाहितगतेसुर वंद-
नाहमारीहे ॥ १ ॥ ज्ञानबधे ग्यानी जोग अनुभोप्रकासभए ॥ समगतवढेएक निश्चल
ताधारेते ॥ संजमबढत सोतो ॥ आश्रवतजतजेतो ॥ तपस्यावधत तनममत निवारेते॥ ।१७०।
कलेशवढतटेक ॥ करतनपावेगम ॥ अहंकारवढे परहिणताके भारेते ॥ आपके ओग-

एपर गुणढाकेठलबढे ॥ केतहे तिलोकलोभ ॥ त्रसनाव धारेते ॥ २ ॥ क्रोधघटजाएए-
क पिम्याकेपक्गयहे ॥ मानघटजातभाव विनेगुणधारेते कपट घटतसोतो सरलसभा
वकीय ॥ लोभघटजात एक। त्रसना निवारेते ॥ हासवट जात मुपमुनकरलेततद ।
भयघटजातएक धिरजता धारेते ॥ केतहेतिलोकरिष ॥ ज्ञानसोप्रमाद किया किमत
घटतएक हिमतते हारेते ॥ ३ ॥ ठगेमतिपंथीजन । शंसार अटवीवन ॥ कायारूपनग-
रीमे ॥ रहेकामचोरहे ॥ जीवहे वटाउयामे ॥ आयकरवासकीयो ॥ ठगणीहे पाचया
को मुलकमे सोरहे ॥ ज्ञानादिकगुणरूप ॥ रतन अमोलधर्म ॥ उंगेतोलेजाएलुट ।
मिथ्यातमघोरहे ॥ कहेततिलोक सतगुरूचोकीदारकहे॥ धारेवटाउ उंगेमतिहोए भोर-
हे ॥ ४ ॥ रीधवंतवेही जाके। समतासदाहीमन ममतानराषे सोतो ॥ कोईसेनलरते ॥
हरषत संतदेष ॥ रोम २ ऊत्रसत ॥ सोमद्रष्टवेण ॥ मुपसे उचरते ॥ सकतिप्राणदान
देत ॥ अहंकारतज ॥ आतरत रूदरठगेरू ॥ धरमाहिकरते केतहेतिलोक बली हारी ॥
वाकीवारवार ॥ धनबाकी मातकूंसो जायोयसानारते ॥ १५ ॥ ॥
॥ एर्द्0 अथ श्री वर्द्धमान स्वामीनो दसोटणलीष्यते ॥ श्रीवर्द्धमान जीनेसरकेरो ।

केरतनमाल ॥ कोइहिरामोतिलाल ॥ कोइकेवसतुसार ॥ दरवअपारहे कहतविनोदीला-
ल॥जपोनवकारमाल ॥ मेरेतोअपुटधनमंत्रनवकारहे ॥ ४॥ अरिहंतजीकेजपेअष्टकर्मको
विनासहोत।।सिधजिकेजपेसेतिसीध्पदपाइये॥आचारजजपेसेतिआतमासरूपसुझे ॥
उपाध्यायजपेसेतिउचपदपाइये॥साधुजिकेजपेसीवमारगवतायदेत ॥ईहलोकपरलोकअ
तिसुषपाइए॥कहेतविनोदिलाल॥जपोनवकारमाल॥जाकेजापजप्यासेती॥सदासुषपाइये
॥ ५ ॥ दोहा॥असुभकरमकेहरणकुं ॥ मिंत्रवडोनवकार ॥ वाणीदुवादशअंगमे ॥
सोधलीयोततसार ॥ १ ॥ श्री ॥ छे ॥ श्रीअरिहंतभगवंत बारेगुणवंत ॥ सिरीसिध
राजमुलअष्टगुण धारीहे ॥ आचारजसोतोगुणछतिस विराजमान ॥ पचीसगुणउप
झाय ॥ ज्ञानकेभंमारीहे ॥ साधुसाधे आतमासो । सताविस गुणजुक्त ॥ सबमिलएक
सतआठविस्तारीहे ॥ कहेत तिलोकरिप ॥ मनवचकायकरी ॥ सदांहिउगतेसुर बंद-
नाहमारीहे ॥ १ ॥ ज्ञानवधे ग्यानी जोग अनुभोप्रकासभए ॥ समगतवढेएक निश्चल
ताधारेते ॥ संजमबढत सोतो ॥ आश्रवतजतजेतो ॥ तपस्यावधत तनममत निचारेते॥
कलेशवढतटेक ॥ करतनपावेगम ॥ अहंकारवढे परहिएताके भारेते ॥ आपके अोग-

घपर गुणढाकेव्लवढे ॥ केतहे तिलोकलोन्न ॥ न्रसनावधारेते ॥ २ ॥ कोधघटजाएए-
क पिम्याकेपम्प्रगग्रहे ॥ मानघटजातन्नाव विनेगुणधारेते कपट घटतसोतो सरलसन्ना
वकीय ॥ लोन्नघटजात एक। न्रसना निवारेते ॥ हासवट जात मुपमुनकरलेततद ।
न्नयघटजातएक धिरजता धारेते ॥ केतहेतिलोकरिप ॥ ज्ञानसोप्रमाद किया किमत
घटतएक हिमतते हारेते ॥ ३ ॥ ठगेमातिपंथीजन । शंसार अटवीवन ॥ कायारूपनग-
रीमे ॥ रहेकामचोरहे ॥ जीवहे वटाउयामे ॥ आयकरवासकीयो ॥ ठगणीहे पाचया
को मुलकमे सोरहे ॥ ज्ञानादिकगुणरूप ॥ रतन अमोलधर्म ॥ ठगेतोलेजाएलुट ।
मिथ्यातमघोरहे ॥ कहेनतिलोक सतगुरूचोकीदारकहे॥ धारेवटाउ उगेमातिहोए न्नोर-
हे ॥ ४ ॥ रिधवंतवेही जाके। समतासदाहीमन ममतानराषे सोतो ॥ कोईसेनलरते ॥
हरपत संतदेप ॥ रोम १ ऊन्नसत ॥ सोमद्रष्टवेण ॥ मुपसे उचरते ॥ सकतिप्राणदान
देत ॥ अहंकारतज ॥ आतरत रूदरगेरू ॥ धरमाहिकरते केतहेतिलोक बली हारी ॥
वाकीवारवार ॥ धनवाकी मातकूंसो जायोयसानारते ॥ १५ ॥ ॥
॥ एर्द्दं० अथ श्री वर्द्धमान स्वामीनो दसोटणलीप्यते ॥ श्रीवर्द्धमान जीनेसरकेरो ।

कहुदीसोठणन्नावन्नलेरो सीध्दारथनृप कुलमे आया त्रसलादे राणीजी जाया ॥ १ ॥ चे-
तसुदी तेरसतीथजाया ॥ ७ प कुमारी मंगलगाया ॥ इंद्रमीलकर मोठवकीयो ॥ त्री-
रजीनेश्वर नामजदीयो ॥ २ ॥ दीन त्रगां नृपमोठवकीना। जाचकलोक अजाचककी-
ना तीजे दीन चंदसुरज देषावे ठटे वीनसो रातजगावे ॥ ३ ॥ इग्यारमेदीनेअसुची-
टाले बारमेदीन न्नोजन उजमाले॥ न्नोजनसाला अधीक वीसाल॥ चीत्रवीचित्री सुरं-
गरसाला ॥ ४ ॥ जरी जरतार चंदरवासोवे ॥ मुकाफल जुमक मनमोवे ॥ वनातकं
नात मुखमलकीचंगी॥ सोहेत सुंदर नव२ रंगी ॥ ५ ॥ बाजोट चोकी पाट मंगाया-
थाल सुवरण रुपाकीलाया रतनकटोरी वाटकीठल्या ॥ माहे न्नोजनबहुवीध घाल्या।
॥ ६ ॥आयाक्षत्री राजाताजा ॥ अतीआम्बर वाजागाजा । केइकहाथी केइकघोम्रा ।
पालखी आगल वादलदोम्रा ॥ ७ ॥ केइक दुदाला ज्ञाकज्ञमाला ॥ दीसेकेसन्नमरजी
मकाला ॥ जीमणनेआवे उजमाला ॥ केइक सुसरानेकेइसाला ॥ ८ ॥ केइक जमा-
इमाहा जोधाला ॥ नव ७ भुषण रुपरसाला ॥ केइकन्नाइ साम्रमासा मामा दोयता
व्याहीपासा ॥ ९ ॥ ठतीसकुलकानेत्याक्षत्री ॥बुलावाया देइमंगलपत्री ॥ जीम-

णने अणनेत्याआवे ॥ तेज्यातो कहोक्योनहीआवे ॥ १० । जीमणने अणनेत्पाजावे ॥ भोजनपारो कीणनेलागे ॥ ले बोटीने आगेभागे ॥ सरसाभोजन आदरसारो कुणनीरभागीकरे नकारो । ११ । जीमणआया अधीक उमाया ॥ पक्तीबंध बेठासबभाया गंगोदक कंचनकी झारी॥बेठाजीमणसब हुंसीयारी १२ जवलग भोजन होवे त्यारी ॥ मेवा परुसे सुंदरनारी॥पेलीकीसमसदाष मनका।केलाकतली देसकोकनका।१३।पींमषजुर गुवलीकरीत्यारी काजुकली बदामसुप्यारी ॥ चीरोजीअजी पीसताभलेरा ॥ अंगुर दाम्म पोपरागहेरा । १४ । चटकाकरके सकरमीलाइ ॥ भरभुग मेलेउमाइ ॥रुपापाट सोवनकीथाली ॥ पकवानकी मनवाराचाली । १५ ॥ लाडु सीहकेसरयानीकामोती चुर चोगणीकानीका ॥ चुव्या चुरमा लाडुदालका ॥मगद मनोहर रायसालका ॥ ॥ १६ ॥ वेसणओर बाटीकाजाणो॥ मुगदोलका सरस वषाणो॥ सकरचासणी उमदा दालका । जुवारमकीसो तातकालका । १७ । कसारकीटीया जुवारधाणीका ॥ बतीसास दाणासाणीका चावल ओर ओलाकाभारीराजगरा तीलीकाजहारी ।१८॥ सुंठ गुंदका ओर पीस्ताइ बदामचीरोजी सकर मीलाइ॥ इत्यादीक बावन प्रकाराकवलग ना-

कहुदीसोठणभावभलेरो सीध्धारथनृप कुलमे आया त्रसलादे राणीजी जाया ॥ १ ॥ चे-
तसुदी तेरसतीथजाया ॥ ७ प कुमारी मंगलगाया ॥ इंद्रमीलकर मोछवकीयो ॥ श्री-
रजीनेश्वर नामज़दीयो ॥ २ ॥ दीन ऊगां नृपमोछवकीना। जाचकलोक अजाचककी-
ना तीजे दीन चंदसुरज देषावे छटे वीनसो रातजगावे ॥ ३ ॥ इग्यारमेदीनेअसुची-
टाले बारमेदीन भोजन उजमाले॥ भोजनसाला अधीक वीसाल॥ चीत्रवीचित्री सुरं-
गरसाला ॥ ४ ॥ जरी जरतार चंदरवासोवे ॥ मुक्ताफल जुमक मनमोवे ॥ वनातकं
नात मुखमलकीचंगी ॥ सोहेत सुंदर नव२ रंगी ॥ ५ ॥ बाजोट चोकी पाट मंगाया-
थाल सुवरण रुपाकीलाया रतनकटोरी वाटकीछल्या ॥ माहे भोजनबहुवीध घाल्या।
॥ ६ ॥आयाक्षत्री राजाताजा ॥ अतीआम्बर वाजागाजा । केइकहाथी केइकघोडा ।
पालखी आगल वादलदोडा ॥ ७ ॥ केइक दुदाला भाकझमाला ॥ दीसेकेसभमरजी
मकाला ॥ जीमणनेआवे उजमाला ॥ केइक सुसरानेकेइसाला ॥ ८ ॥ केइक जमा-
इमाहा जोधाला ॥ नव ९ भुषण रुपरसाला ॥ केइकभाइ सान्मासा मामा दोयता
न्याहीपासा ॥ ९ ॥ छतीसकुलकानेत्याक्षत्री ॥बुलावाया देश्मंगलपत्री ॥ जीम-

णने अणनेत्याआवे ॥ तेज्यातो कहोक्योनहीआवे ॥ १० । जीमणने अणनेत्पाजा-
वे ॥ भोजनपारो कीणनेलागे ॥ ले लोटीने आगेभागे ॥ सरसाभोजन आदरसारो कु-
णनीरभागीकरे नकारो । ११ ।जीमणआया अधीक उमाया ॥ पक्तीबंध बेठासबभाया
गंगोदक कंचनकी झारी॥बेठाजीमणसव हुंसीयारी १२ जवलग भोजन होवे त्यारी ॥
मेवा परुसे सुंदरनारी॥पेलीकीसमसदाष मनका।केलाकतली देसकोकनका।१३।पींमप-
जुर गुठलीकरीत्यारी काजुकली बदामसुप्यारी ॥ चीरोजीअजी पीसताभलेरा ॥ अं-
गुर दाम्म षोपरागहेरा । १४ । चटकाकरके सकरमीलाइ ॥ भरश्मुठा मेलेउमाइ ॥रु-
पापाट सोवनकीथाली ॥ पकवानकी मनवाराचाली । १५ ॥ लाडु सीहिकेसरयानीका-
मोती चुर चोगणीकानीका ॥ चुव्या चुरमा लाडुदालका ॥मगद मनोहर रायसालका ॥
॥ १६ ॥ वेसणओर बाटीकाजाणो॥ मुगदोल्का सरस वषाणो॥ सकरचासणी उम्दा
दाल्का । जुवारमकीसो तातकालका । १७ । कसारकीटीया जुवारधाणीका ॥ वती-
सास दाणासाणीका चावल ओर ओलाकाभारीराजगरा तीलीकाजहारी ।१८॥ सुंठ गुं-
दका ओर पीस्ताइ बदामचीरोजी सकर मीलाइ॥ इत्यादीक बावन प्रकाराकवलग ना-

कहुदीसोठणन्नावन्नलेरो सीद्धारथनृप कुलमे आया त्रसलादे राणीजी जाया ॥ १ ॥ चे-
तसुदी तेरसतीथजाया ॥ ७ प कुमारी मंगलगाया ॥ इंद्रमीलकर मोठवकीयो ॥ गी-
रजीनेश्वर नामजदीयो ॥ २ ॥ दीन त्रगां नृपमोठवकीना। जाचकलोक अजाचककी-
ना तीजे दीन चंदसुरज देषावे ठठे वीनसो रातजगावे ॥ ३ ॥ इग्यारमेदीनेअसुची-
टाले वारमेदीन न्नोजन उजमाले॥ न्नोजनसाला अधीक वीसाल॥ चीत्रवीचित्री सुरं-
गरसाला ॥ ४ ॥ जरी जरतार चंदरवासोवे ॥ मुकाफल जुमक मनमोवे ॥ वनातकं-
नात मुखमलकीचंगी ॥ सोहेत सुंदर नव२ रंगी ॥ ५ ॥ वाजोट चोकी पाट मंगाया-
थाल सुवरण रुपाकीलाया रतनकटोरी वाटकीढल्या ॥ माहे न्नोजनवङ्ववीव घाल्या।
॥ ६ ॥आयाक्षत्री राजाताजा ॥ अतीआम्बर वाजागाजा । केइकहाथी केइकघोमा ।
पालखी आगल वादलदोमा ॥ ७ ॥ केइक दुदाला ऊाकऊमाला ॥ दीसेकेसन्नमरजी
मकाला ॥ जीमणनेआवे उजमाला ॥ केइक सुसरानेकेइसाला ॥ ८ ॥ केइक जमा-
इमाहा जोधाला ॥ नव १ भुपण रुपरसाला ॥ केइकन्नाइ साम्मासा मामा दोयता
न्याहीपासा ॥ ९ ॥ ठतीसकुलकानेत्याक्षत्री ॥ बुलावाया देइमंगलपत्री ॥ जीम-

णने अणनेत्याआवे ॥ तेड्यातो कद्दोक्योनहीआवे ॥ १० । जीमणने अणनेत्पाजा-
घे ॥ भोजनपारो कोणनेलागे ॥ ले धोटीने आगेभागे ॥ सरसाभोजन आदरसारो कु-
णनीरभागीकरे नकारो । ११ । जीमणआया अधीक उमाया ॥ पक्तीबंध बेठासबभाया
गंगोदक कंचनकी झारी॥बेठाजीमणसब हुसीयारी १२ जवलग भोजन होवे त्यारी ॥
मेवा परुसे सुंदरनारी॥पेलीकीसमसदाष मनका।केलाकतली देसकोकनका।१३।पीम्प-
८ मुवली करीत्यारी काजुकली बदामसुप्यारी ॥ चीरोजीअजी पीसताभलेरा ॥ अं-
जीर षोपरागेहेरा । १४ । चटकाकरके सकरमीलाइ ॥ भर२मुग मेलेउमाइ ॥रु-
ट लोचनकीथाली ॥ पकवानकी मनवाराचाली । १५ ॥ लाडु सीहकेसरचानीका-
री चुर चोगणीकानीका ॥ चुत्था चुरमा लाडुदालका ॥मगद मनोहर रायसालका ॥
१६ ॥ घेसणओर बाटीकाजाणो॥ मुगदोलका सरस वषाणो॥ सकरचासणी उम्दा
लका । जुवारमकीसो तातकालका । १७ । कसारकीटीया जुवारधाणीका ॥ वती-
सास दाणासाणीका चावल ओर ओलाकाभारीराजगरा तीलीकाजहारी । १८॥ सुंठ गुं-
ताइ बदामचीरोजी सकर मीलाइ॥ इत्यादीक बावन प्रकाराकवलग ना-

मकहुमेन्यारा ॥ १९ ॥ डुडपेम्रा कुदाका ताजा । घास कोमल षांडने षाजा ॥ चरयरा
गाठया सकरपारा दुथरावज्या मांही ज्मारा ॥ २० । वरफी केंसरीया पीसता-
इ ॥ कीनीमेवा अधीक मीलाइ ॥ सरसजलेबी गरमागरमी ढोम्रे नही कोइ सरमास-
रमी । २१ । कलाकंदमेवा झाझा ॥ होयपुसी देखी सबराजा ॥ असल चीरोजी सब
सीगोम्रा ॥ गवांम्रर२ मेलीगोम्रा ॥ २३ ॥ सुन्नफेणीओर चीरोजीदाणा ॥ सावसाइकी
अधीक रसाला ॥ अकबरा ओर अदरकम्राणा ॥ नुकतीदाणा मघदरसाणा । २४ ।
घेवर सरस षाम्रकाफीका । मुरकी पतासा पेठानीका ॥ दइथाडा ॥ ओर सोटने षु-
रमा ॥ घी सकर मेवाका चुरमा ॥ २५ ॥ दरावो दोठा पुरी कचोरी ॥ मालपुवा ओर-
रेवम्री सोरी ॥ सारो साबुनी मीठीसुवाली ॥ तेलकीपापम्री सकरघाली ॥ २६ ॥ मु-
गफलीका लोटम्रलेरा मोणदइने कीनागहेरा इदर इसा गुजागणीधामे ॥ लुची लापसी
चादसाइगमे । २७ ॥ गुडधाणी गुदपाकअमंका ॥ डधओटाइ मेल्याथका ॥ षारीसे-
व ओरवक्कादाल ॥ गुलगुलावडी भुजा सुवीसाल ॥ २८ ॥ कुडला पुडला अवरघ-
णाइ ॥ कहेता ढालअधीक वधजाइ ॥ दहीकी जावणीमेलीआइ ॥ पाटा मीठाको

मेजसदाइ । २९ । अवफल वात सावआवकी ॥ जांबु लींबु कतली जामकी ॥ सी-
ताफल जामफलपम्नुजा ॥ इरंम काकमी ओर तरबुजा। ३० ॥पीरणीचकोत अरुदे-
सीकेल ॥ जंबीर बीजोरा आपरोट मेला फुटकाचरीकाचराम्यारी । फणसरतालु त-
लनात्यारी ॥ ३१ ॥ कालो पोढाकी साकी गाठा काट गीलकर मेल्यासाग टीमरु ॥
करोदा पाकाअलेला ॥ सरस पुजुरा धामण्यामेला ॥ ३२ ॥कवीठ आवली पेमजीबोरा
॥ श्रीफल काचा मीठाघणेरा॥गुदाफुदारायणआदी ॥नानावीध फलवातजंपीमी॥३३ ॥
अवन्नोजनकी न्नइतइयारी कलुएकनाम सुणोनरनारी ॥ अतलसगादीबाजोठ सुरंगीथा-
लसुवरण हीरा जडीचगी ॥३४॥रतन कचोला नानी कटोरी॥मांजधोयपुचीकरीकोरीग-
लमेदाकी रोटीघोली मीठीरोटी पुरणपोली॥३५॥काटीकनक कीरोटीबोटी॥दुपमी सत-
पुमीसाठाकी मोटी ॥वाटी बाफल्या फलकागोला रेल मालचा दसमी ओला ॥३६॥
चरपरोपुरण रोटीपीरकी गुदकिरोटी वीनानीरकी ॥ पोतवाया कोरमाकी पुडी॥ मुग
मोठ हरवराकीसमी ॥ ३७ ॥ नुणमीरच न्नरगरम मुसाला ॥ पापरातलमा रोटी रसाला
फीका मीठा चोषा सुगंधी ॥ न्नातकेसरचा अधीक सुगंधी॥ ३८ ॥ रामषीचमी मेवा

कैसाधी ॥ मुगतुयर मीलसाकेईराधी ॥ दुधराबम्नथुलीढीली काठीथुली जावरीगोली
॥ ३९ ॥ घिरतगायको नवोतपाई घीलोम्नी मुषआम्नी नमाई ॥ लोलोकरता मुंम्नोथा-
के ॥ कुणजोरावर जोफीरहाके ॥ ४० ॥ सकरबुरो गालनेमीसरी ॥ काकबमेलणंरच
नवीसरी ॥ सेवषोचओर पीरवणाइ ॥ पीचम्नो घुघरीरावसवाइ ॥ ४१ ॥ पीचो पापम्न
मुगउम्नदका चणावटला तुयरवीध२का ॥ सेक्यातलीयापलामोटा थालीपीठ बाजरी-
कोरोटा ॥ ४२ ॥ मकोमाल कंगुणी जवजाणी ॥ रालोवेरेटी कुलंथ वषाणी ॥ जालरो-
तीवम्नो सामोजाणो ॥ कोदराबेरेटी रोढवपाणो ॥ ४३ करचतुराइम्नस्यामुसाला ॥ धान
चोवीलकी जीनसवणाइ ॥ रसोइदारकेईदसका । म्नोजनकलासो जाणरेसका ॥ ४४ ॥
मीरची पकोम्नी चरमरीम्नावे ॥ तेलेणपही वम्नावम्ना अरवीआवे ॥ दाल मुगओर मोठ
मसुरकी । उम्नद चणावटालातुयर वीदवीदकी ॥ ४५ ॥ पतेलीकाठी सीस वातलीया
मुसाला नानावीध म्नलीया ॥ कम्नीराच अमचुरकी जाणो ॥ आंबोला म्नाजीकीपण-
माणो ॥ ४६ ॥ बेलाम्नबकारेलमाचुरकी ॥आमटीअमरत्यो म्नाजीभुरकी. वडीकोलकी
ओरकोरमी ॥ नीपजाइ अतीचतुरगोरमी ॥ ४७ ॥ दाषबम्नी म्नाजीकोरायतो ॥ अम

लपाणी वगारचायतो ॥ तनीगच वगीरीम्नारी ॥ लुण मीरच राइ ठमकारी ॥ ४८ ॥
गुहीको सीपरण मेथीदाणा ॥ सकरसामल अमलवाणा ॥ पारावम्नी ठाठवम्नी म्नलोरी ॥
पेठावम्नी ओरचींणी बजतेरी ॥ ४९ ॥ पापम्नवमीषीचा वम्नीजाणो ॥ पतलापतोम्नकी
अघीकरसाणो ॥ पाठवम्नी पतोम्नकुडलाइ ॥ रसोठावो दक्षण माइ ॥ ५० ॥ अमृत्योर
सको ठमकाम्यो मुरवो आवाको सुधाम्यो करपटानीला चणाकरेला टीम्नोरी ओरका
चाकोला ॥ ५१ ॥ नीलावेर केरपडबुजा फुटकाकडी फोगतरबुजा कालींगडा ओरागि-
लकीतरोई बगाकाचरी गुहीयातोइ ॥ ५२ ॥ म्नीडाझोम्ना कोट कीकोम्ना पेलरा टीड-
सी करमदाओडा कोराचकी ओरतुबडा सरजणाकाचरा ओरझुमडा ॥ ५३ ॥ वालोल
फली चवलाकी म्नारी गवारफली सागरी ठमकारी कमलगटा वेगणरतालु स-
करकंद मुलापोंम्नालु॥५४॥सुवावाथलो पाटीम्नाजी मेथीचणावथुवाकीताजी अमलमुला
ओरओरचंदलोई पाल्कोटीमडेपोचोजोइ ॥ ५५ ॥ अवाडी करधो अजमाकी लालम्यो
लुण्यो पुवाम्नसमाकी घोड्यो घोंलपो कलीजाणो चीपाडीछीक चुकाकोमाणो ॥ ५६।
फादीसेया ओरपरजणकी सरुपम्नवा ओरसीधवणकी चीलरीराइ राइजगराकी करंज-

कीसाधी ॥ मुगतुयर मीलसाकेईराधी ॥ दुधरावमथुलीढीली काठीथुली जावरीगीली
॥ ३९ ॥ विरतगायको नवोतपाईं घीलोमी मुषत्रामी नमाई ॥ लोलोकरता मुंमोथा-
के ॥ कुणजोरावर जोफीरहाके ॥ ४० ॥ सकरवुरो गालनेमीसरी ॥ काकवमेलणंरंच
नवीसरी ॥ सेवर्षीचत्रोर षीरवणाइ ॥ पीचमो घुघरीरावसवाइ ॥ ४१ ॥ पीचो पापम
[illegible] ॥ सेक्यातलीयापलामोटा थालीपीठ बाजरी-
[illegible] ॥ जालरो-

[illegible]

हलवे२पुटेपुटे ॥ गोम्हेहाथदेइने उठे ॥ ६७ ॥ पेठनराणा तंगमतंगा ॥ सज्ञअघाणा गे
म्र२मंगा ॥ सघलाहलवे२चाले ॥ उतावलाफीर कोइनेहाले ॥ ६८ ॥ बोलेधीरे २ चा-
लोभोजनजीमतीम बेठेथालो ॥ एसीरीते चलकरआया ॥ जाजमगादी तकीया वीछाया
॥ ६ ए ॥ तीनअहारको कीयोवधाणो ॥ मुखसोधन मुपवास सुहाणो ॥ जावंत्री ओ
र लवंग सुपारी ॥ दालचणी एलायचीप्पारी ॥ ७० ॥ कालमिरिच सुधसवाधी ॥ क-
वाचचीणी पीपलहरेव्यावी ॥ कपुरसुवा सीतकथो चुनो ॥ नागरवेलीको दलदुनो ॥ ७१ ॥
बीमो वालक देवेआइ ॥ लेवे सघलाचीत हरषाइ ॥ लीमीपीपरसरसो अजमो ॥ चु
रणसवादी अहारहजमो ॥ ७२ ॥ पहेराइ फूलनकीमाला ॥ देवेपचरंगी जरीदुसाला
केइने दुपटा वरजोमी ॥ केइनेचीरा पागपछेडी ॥ ७३ ॥ पंचपोसागपेरावेचगी ॥ जा-
मो अंगरषी वरपंचरंगी ॥ दीवीमंदील वालावंदी ॥ देपत तनमनहोवे आणंदी ॥ ७४ ॥
केइके कंठी हारजदीना ॥ केइने कुंडल अधीकनवीना ॥ वाजुवंध अंगुठीचंगी ॥ सीरे२
पेचदीवी मनरंगी ॥ ७५ ॥ हाथी घोमो रथ पालषी । केइनेदीना गामनालकी जथाजोग
सवने सनमाने ॥ दुवादसमे दीनमोछवठाने ॥ ७६ ॥ सीधारथनृप सज्ञमेवोले ॥ कुवर-

मो ओरहे सरवारी ॥ ५७ ॥ चणागेलवा हींगकीनाजी जीमेलोका जमाजमराजी कु-
वी सुवी ओरघणेरी काहालग नामकऊंमहेरी ॥ ५८ लोजीआंव आवलीकेरी गरममु-
साले धुंगारीगहेरी चटणी कोथमीरकीजाणो कवीठकी आंबकी अधीकरसाणो ॥५९॥
श्रीफली तली लुणमीरचकी हवरी मोडमासरसु चीचकी गरममसालाकी केइचटणी
नातरकी वटणी भटणी ॥ ६० ॥ अथाणो बली आंव वपाणो लीवुमीरची आदोजा-
णो वसोता ओर नीमीतरोइ गलिकीबालोलकलीकोजोइ ॥ ६१ ॥ चवलावटलामे
थी दाणाको करमदा षारककरे चणाको गवारफली सुरजणाकीजाणो नांतचोरासी
अधीकरसाणो ॥ ६२ ॥ पुमीयान्नर १ आगेमेले जीमणवालालेताइठेले बालक बुढातरु-
णारोगी वणीरसोइ सो सवजोगी ॥ ६३ ॥ नामनआवे पुराजीणसु थोडीकरचनाकही
मेतीणसुं जीमेसवला ऊंसे ऊंसे किचतमातर कोइनरोसे ॥ ६४ ॥ हमनपरुसी कोइ
नवोले रह्योनहीकोइ नालेनोले जीमता२धाप्यापुरा एक कवो लेवणने नहीसुरा ॥६५
सघलावोले नाजी नाजी कोइ नवोले मेलोहाजी परुसणवाला अधीकमनावे जीमण
वाला करमाथावे ॥ ६६ ॥ मेलेसुन सुगंधीकपाणी ॥ हातघोया सवहटअधकाणी ॥

हलवे२पुटपुट ॥ गाम्हाथदइन [illegible] ॥ ६७ ॥ पठभराणा [illegible] ॥ [illegible]
म्र२मंगा ॥ सघलाहलवे२चाले ॥ उतावलाफीर कोइनेहाले ॥६८ ॥ बोलेधीरे २ चा-
लोभोजनजीमतीम बेठेथालो ॥ एसीरीते चलकरआया ॥ जाजमगादी तकीया वीछाया
॥ ६९ ॥ तीनअहारको कीयोवषाणो ॥ मुखसोधन मुपवास सुहाणो ॥ जावंत्री ओ
र लवंग सुपारी ॥ दालचणी एलायचीप्यारी ॥ ७० ॥ कालीमिरिच सुधसवाधी ॥ क-
बाचचीणी पीपलहरेव्यावी ॥ कपुरसुवा सीतकथो चुनो ॥ नागरवेलीको दलदुनो॥७१॥
बीमो बालक देवेआइ ॥ लेवे सवळाचीत हरषाइ ॥ लीमीपीपरसरसो अजमो ॥ चु
रणसवादी अहारहजमो ॥ ७२ ॥ पहेराइ फूलनकीमाला ॥ देवेपचरंगी जरीदुसाला
केइने दुपटा वरजोमी ॥ केइनेचीरा पागपछेडी ॥ ७३ ॥ पंचपोसागपेरावेचंगी ॥ जा-
मो अंगरषी वरपंचरगी ॥ दीवीमंदील वालावंदी ॥ देपत तनमनहोवे आणंदी ॥ ७४॥
केइके कठी हारजदीना ॥ केइने कुंडल अधीकनवीना ॥ वाजुवंध अंगुठीचंगी ॥ सीरे२
पेचदीवी मनरंगी ॥ ७५ ॥ हाथी घोमो रथ पालषी । केइनेदीना गामनालकी जथाजोग
सवने सनमाने ॥ दुवादसमे दीनमोछवठाने ॥ ७६ ॥ सीधारथनृप सज्जमेवोले ॥ कुवर-

नामथापणनेपोजे ॥ जीणदीन राणीकुषे आयातीणदीनथी दलवल सवाया ॥ ७७ ॥
दीन२बुधीकारण मांनो ॥ वृधमान कुवरइमठानो ॥ सञ्जसुंणी हरषाणागोती नामजथा
गुंणकुंडलमोती ॥ ७८ ॥ घर२मंगलमालवंधावे गोरडीया मीलमंगलगावे ॥ तीरकीड ती
रकीम तासावाजे ॥ धिधींधीधी नोवतगाजे ॥ ७९ ॥ घुधु धपमय मादलरंगी कुणकु-
ण२करे सारंगी झालरवाजे झणझणझणझण ॥ घुघरी घमकेखण २ षणपण ॥ ८० ॥
तुतुनोकरे तुन२तुनतुन ॥ करेतालोकर ठुनठुनझंनझंन ॥ घणणण घंटानाद उचारे नरसी
गो धुधुधुंधुकारे ॥ ८१ ॥ घनिकट २ वजेनगारा ॥ इत्यादीकगुण पचासप्रकाररा ॥ ना
चेपातर सन्नामजारी दीयोदीसोठण हरषअपारी ॥ ८२ ॥ तीलोकरीषकहे प्रभु पुनञा
री ॥ नामलीयाहरषे नरनारी । जो कोइ दीसोठणकेगावे पावेनहीतो मनहरषावे ॥ ८३
श्रीजीनराजकी कथावीस्तारे करे अनुमोदन प्रेमअपारे ॥ तोपणनीजर पुनहेन्नारी ॥
इमजाणी सुणजो नरनारी ॥ ८४ ॥ संवत ॥ १९ ॥ सेसेतीससाले । अमंदनगर दक्षण
वरसाले ॥ न्नाद्रवकसन चवदसजाणो । वारसुक्र सीवजोग वषाणो ॥ ८५ ॥ श्रीवृधमा
न दीसोठणकेरी ॥ कीनीकवीता एहन्नलेरी ॥ श्रीजीनपुन प्रसंसाजाणो सुणकर आरंन्न

नहीवधाणो ॥ ८६ ॥ एसा भोजनवार अनंती । कीनापणत्रसनान बुझंति ॥ इणमे संकारंचनमानो केवलज्ञानीकी एहवाणो ॥ ८७ ॥ इमजाणी तप जप आदरजो ॥ चीतमे समताभावकरजो अनुभव ग्यानदसारस ओसो सदातरपतरहे सो पदपासो ॥ ॥ ८८ ॥ अबको ओछे जोमीयोकोई ॥ मीठमी डुकर्म तसहोइ ॥ सुत्रवचन परमाण सदाइ॥पालेसोधन २ जगमाइ ॥ ८९ ॥ इतीदसोठणमहावीर सामीजीको संपुर्ण ॥ ॐनमः सिद्धं ॥ जेजेजेजेबोलो जिनवरकी ॥ जोआसाअमर सीवघरकी ॥ जे० ॥ १ ॥ जेसीकांति शशी दिनकरकी प्रभाआधिक प्रभुके शरीरकी ॥ जे० ॥२ ॥ जेसी सुसबोही अगर तगरकी ॥ जिणसे सुगंधसास मनोहरकीजे० ३जेसीमिठी मलीहे सकरकी। वाणी अनंतगुणी मधुरकी । जे० ॥४॥ देहीईंदर सुर अनुत्तरकी ॥ सोभा अनुप जिनदजीका नुरकी ॥ जे० ॥ ५ ॥ जेसीचाल मराल गजवरकी ॥ तिणसुगमणगति सुंदरकीजे० ॥ ६ ॥ चिंताआणीहे भवसागरकी ॥ सवंछरिदान इणउजागरकी ॥ जे०। ॥ ७ ॥ घातकरवा करमरुपी अरकी। क्रियाधारीसंजम संवरकी । जे० ॥ ८ ॥ केवलग्यानदिसा जबफरकी ॥ समोसरणरचना अमरकी ॥ जे० ॥९॥ करुणा आणीहे

जीव अपरकी ॥ उपदेशनायदिया पडरकी ॥ जे० ॥ १०॥ काया माया अथीरहे सुरकी ॥ कोनागिनति ओठिथीत नरकी । जे० ॥ ११ ॥ परथम थापनाकरि गणधरकी ॥ पछेचार तिरथगुणीवरकी ॥ जे० ॥ १२ ॥ सेलकरे गावेमोक्ष नगरकी ॥ पदवि सिध्अमर अजरकी ॥ जे० ॥ १३ ॥ एवंतारिषजीमहाराजमहेरको ॥ बताई किर्ति-सुध तिर्थंकरकी । जे० ॥ १४ ॥ तिलोकरिखकहे धनउण नरको सेवा भक्ति करे दिल हरकी ॥ जेजे० ॥ १५ ॥ इतिसंपूर्णम् ॥ ॥ ॥

यसोखेलजो हरियसोखेलजोरे फागसदासुखपावो यसोखेलजो धरमकोवाग फूलीसमगत सरधा विरतिकोयल नादकरे भविकायसो० ॥१ ॥ कूमतिहोलकाने दिजोरे मंगालने करमको धुलउमावो भ य० ॥ २॥ समता सरोवरमेस्नानकरो सुगणा । पापको मेलपखालोभ० ॥ ३ ॥ धिरजको धोतियो थेपेरोघणा प्रेमसु जयणा कोजामो थेपेरो भ०। य० ॥ ४ ॥ पमांरथ पागडी उपोगको उपरणो सीलकोसिरपेच थेबाधोभवि० य० ॥ ॥ ५ ॥ क्षिम्यारुप ढोगो मेलोमाटो बाधो बांधोसांचको तपरुप तुररो झुकावो भ० ॥ ॥ ६ ॥ करुणाका कुंडल चोकसीका चोकम भक्तिकी भमरकमी पेरो भ० ॥ ७ ॥

दशाविध धरमको हारहीयपेरजो दानमान कमाहाथेंपेरो भ० ॥ ८ ॥ चियावचविटी दसअंगलीमे पेरलो किरीयाको कंदोरो थेपेरो भ० ॥ ९ ॥ सजायको ढपलेवो जाजलो भजनकी प्रभुगुण क्षाल पूबगावो भ० ॥ १० ॥ धरमकुटंब संग सुमत सो हागण हिलमिलगेंर पुब खेलो भ० ॥ ११ ॥ भावकीभांगथे घोट घोट पिवजो संतोसकी सकर मेंलावों भ० ॥ १२ ॥ जिनवाणी पाणीवेराग रंग घोलने उपदेशकी पिचरकी भरमारो भ० ॥ १३ ॥ विनयाविवेकका थेवाजारे बजावजो नेमकानिसाणथे फररावो त० घ० ॥ १४ ॥ संवरकी सुखमीने गोठकरो ग्यानकी गेरकाढोचारातिरथ भ० ॥ १५ ॥ येसोफाग रमोसालथे दयाकी दूकानमाभ्वेठो भ० ॥ १६ ॥ भारीकरमा जाकेदायनही आवसी हलुकरमी हरषावे भ० य० ॥ १७ ॥ नही मानसोतो आगेपसतावसो सतगुरुग्यान वतावे भ० ब० ॥ १८ ॥ उगणीसे सेतिस फागणविदमे विजबुधवार दिनआयो भ० ॥ १९ ॥ तिलोकरिखकहे मिरजगाममे धरमको फागसरायो भ० य० ॥ २० ॥ इति धरमफाग उपदेशीसंपूर्ण ॥ ॥ ॥
॥ एर्द० ॥ अथ धनाजीकी लावणी ॥ काकंदी नगरीभत्री सरे जितसत्रु तीहाराए

वाग वीचमो वावीयासरे सुंदरसोन्नाथायदेषतम्मामनमोवीयासरे नेणाजाएलोन्नाए तुंसुणमोरजिरणी अज्ञादेवोनी संजमआदरु ॥ तुसु ॥ १ ॥ न्नगवंतआया वागमे सरे घणामुनीपरवार षवरऊइ सवसेरमेसरे वंदणचल्या नरनार । धनोजीपण आवीया सरे करबेठानमसकाररे ॥ तु ॥ २ ॥ न्नगवंतदे उपदेसनासरे सरबजीवाहीतकार वाणीसुणी वेरागीयासरे जाण्योअथीर संसार हातजोम्ने इमकहेसेरलेसुं संजम न्नाररे ॥ तु ॥ ३ ॥ जीमसुखहोवे तीमकरोरे भगवंतदे फुरमाए घरआइ पुत्रकहेसरे अज्ञादो मोरीमाय वचनसुणी पुत्रतणासरे मातागइ मुरछाय ॥ तु ॥ ४ ॥ चेतनथइ माताकहेसरे सुणपुत्र मोरीबात एकाएकी नानज्योसरे ठमीनिमतीजाए नेणऊरे ऊुरणा ऊुरेसरेरोवतबोलीमाए ॥ तु ॥ ५ ॥ कोमलकेससुहामणासरे जाणुंकरणोलोच पाए अरवाणोचालणोसरे य्योमनेघणोअलोच सीतकालमे सीतघणोसरे ओमनेघणो अ लोचरे ॥ तु ॥ ६ ॥ बावीस परीसाजीतणासरे करणोउग्रविहार घर २ करणीगोचरी सरे लेणोनीरदोषण आहार दोषवयालीस टालणासरे सेणोउप अपाररे ॥ तु० ॥ ७ ॥ क्रोडवतीसीसोनइयासरे न्नरीयाठे न्नंमार सुंदर रुप सुहामणोसरे सोवेवतीसनार हात

जोम्हने इमकहे सरे मतमेलोनीराधाररे थेसुणोप्रीतमजी संजममतलीजो म्हांनिछो-
म्हने थे सुणो कवरजी संजममतलीजोमाहानेछोडने थ ।मेलामे ठनीकामण्यासरे ठनी-
करे पुकार थे मतछोडोसाए वासरे - मेछोअवलानार संजमछेअतीदोयलोसरे चलणो-
पाडाधाररे थे ॥ ए ॥ घरआइ धनोकहेसरे आज्ञादो मोरीमाय जनमेसो जीवनहीस-
रे इमजाख्यो भगवान आज्ञादो मोरीमातजी सरे पीणलापीणीजाए हेतुं सुणमोरी
जरणी अज्ञादेवोतोसंजम आदरो ॥ थे ॥१० ॥ अज्ञादीदी मातजीसरे करमोटे मंडां-
ए जाएसुण्या जीनवरने सरे तारो गरीब जगवान पुत्र वलजघणासरे सुप्याथारे हातहो
थेसुणो जीनवरजी आज्ञादीदीछे माहारा पुतने ॥ थे ॥ ११ ॥ मालामोती पोलीयासरे
पोल्या सबसीणगार पंचमुष्टी लोचणकीयोसरे माताझेल्यो पोलामुझार धनाजी सं-
जम आदर्यो सरे छेम्न्या सङ्कपरवाररे थे ॥ १२ ॥ बेले२ पारणो सरे जावजीवलग-
ठाय अंतरोपाडेनही सरे आमललुणो आहार नवमहीनातपतप्यासरे कर गया
रेवापार होथे सुणो जीनवरजी दीण्या दीदीछे माहारापुतने थे सुणो जीनवरजी दी-
ण्यादीदीछे माहारा लालने ॥ थे ॥ १३ ॥ गीतारथ गरुजलासरे रतन चंद माहाराज

जवरलालजी इमभ्रणेसरे जाने करुंप्रणाम हीरालालजी इमभ्रणे सरे धन१वीजा साद होथे ॥१६॥ समत ओगणीसे बतीसकासरे गडचीतोभ्के माए बुदवारसवेसाककीसरे वारभ्रलो दीतवार ढाल जोमी धनातणी सरे सुत्रके अनुसारसुजी ॥ थे॥ इतीसंपूरणं ॥

॥ नेमजी ॥ नीठुरथयो साहब सांवलीयो ॥ भिनमेंदीछीटिकाईजी ॥ नि ॥ मनकी वातरही घटअंतर ॥ पूछसकी नहीकाईजी ॥ निः ॥ १ जगत सिरोमण । जादवकेपत ॥ कृष्णसरीषा भ्राइजी ॥ तिणकी लाजरहीकहो केसी ॥ जादवजांन लजाईजी निः ॥२ जोकोइ पूंनङ्वे मूजअंतर ॥ तोउंसाष भ्राईजी ॥ पिणजगमेकहो न्यायकरेकूण जोङ वेराय अन्याइजी ॥ निः ॥ ३ ॥ जोविरकतरस भ्राव विसेषे ॥ तोक्युंजान वणाइजी पसुवनके सिरदोस दइगए ॥ यालागी कपटाईजी ॥ नि. ॥ ४ ॥ तूमनेसिपदीजे कहो कहेसि ॥ कहताङवे लघूताईजी ॥ सबसजनकी सीरहीपूची ओदषी चतूराइजी ॥ नि ॥ ५ ॥ नेम विनातो नेम जिहांलग ॥ प्राणरहे घटमाहीजी ॥ सजनभ्रावकारि तूमसे- तीकङ्ु वचन ङं षाईजी ॥ निः ॥६॥ एरस मोरसवेणगयो ॥ तोकीये इधकाईजी ॥ रतनचंदजीकहे धनसतीवंती॥ जगतगिण्यो सङंभ्राईजी ॥निः॥७॥ईती संपूर्ण ॥थेसुण

जोनि आरजीयाएमके जेसीतेसीनेमुंड जोमती थानेवर जाये सुतरे मायके वलीवरजाये मोटाजती ॥ थे० ॥ १ ॥ येकलीहे छोडण नही छोकके जोन मारग नहीजाणती राघण पीसणो येतु भरती पेटके परघरमाणीये लावती ॥ थे० ॥ २ ॥ एकलीपेदारी दरणी देखके हामा कुंडा धोवती वाइलेनीयेतु संजमभारके पछे दिनकाडेला रोवती ॥ थे ॥ ३ ॥ सुगलीने परायो सीगके जगकरे घणी रातरो सलचामी हेकरे धणअसमानके पछेफोमेला लोटपातरो ॥ थे ॥ ४ ॥ चेलीहोवेतोचापेमारापावके वलीवाजे टोलोमाहरो तवगुराणीये बोलीयेमके काइपोवो जमारोथायरो ॥ थे ॥ ५ ॥ गुराणीयथे चेलपामुंमके आगमअरथ नजाणीयो जारापरा करमए प्रण्यानही कोयके वीनपुजी वेपारी वाणीयो ॥ थे ॥ ६ ॥ नदीरायदगडटोलेके जराकदीनहोवे पापटो जारे उपरपेटकीन हो टंकके कासुघमे सीलावटो ॥ थे ॥ ७ ॥ सीपणीयथे सामठीकीधके थोडाकपमासु पुरोनापमे सामीठीया रयपोचेनाहेके गुरणीने पंमे सीदावणो थे ॥ ८ ॥ पमेएसीतकाल असमानके दाहा पमेयेठरीयो गुरणीरेये संगरहीठे सीदायेके जाणेकागगिमोरोमारीयो ॥ थे० ९ ॥ कलेसकरताये उपजे असमादके लोकनींयाकरे देपने काढघालो ये-

जेनधरममे हाणके मतीलजावो भेपने ॥ थे ॥ १० ॥ नानाय लपणरोमाणस नीचके मुढेभदे चालेआपणे साधव्याजे भोलेमत मुंभके अवेसुष कासुहोवे ॥ ये ॥ ११॥ सेणी यअवसरनी जांणके चतुरचुके नही जरावेणने मोटाकुलनीय लोपेनहीलीहके लाजघणीये जारानेणमे ॥ थे ॥ १२ ॥ थानेये सीषदीधीएहेत जाणके कलेसथे आणजोमती थानेकयो एथारेसीपके काजके समतासु सुंणजोसती ॥ थे ॥ १३ ॥ इती संपुर्ण ॥ ॐनम.सिद्धं ॥ त्रिभवनसाहिवअर्जसुणीजे ॥ दर्सणदीज्यो राजादर्सणदीजो महेरकरीज्यो ओलग सुणज्यौराज ॥ माहारि विनतामि अवधारो सायव ॥ श्रीमिंदर जीनराज ॥ १ ॥ आपणे माहाविदे पेत्रमै ॥ भरण भरतमभार योमेलो कीमहोसी साहव ॥ योही सवल वीचार ॥ मा० ॥ १ ॥ भरतवीचाले पर्वत मोटो ॥ नांम अछे वेताभ ॥ पचिस जोजनरो ऊंचोप्रभुजी ॥ पचास जोजन वीसतार ॥ मा० ॥ ३ ॥ गंगा सिंधु दोनुंनदीया ॥ आडीछे करतार ॥ सहस अठाइस वीजीनंदीया ॥ एछे वेऊंनों परवार ॥ मा० ॥ ४ ॥ तिण आगल वलेपरवत आमो ॥ चुलहेमवले नांम ॥ एकसहसवले वावन जोजन ॥ वारकला अभिराम ॥ मा० ॥ ५ ॥ पेत्र हेमवय आडोछे प्र-

भु ॥ जुगलियाकेरो वास ॥ एकवीस वले पांचसे जोजन ॥ पांचकला सुविलास ॥
मा० ॥६॥रोहिताने रोहितंसा नदीया ॥ अछेमाहा असराल छपनसहस वळीजोनंदी-
या ॥ किम आवुं करतार ॥ मा० ॥ ७ ॥ महाहेमवय पर्वत आडो ॥ मोटो अति वि-
तसार ॥ च्यार सहसदोयसे दस जोजन ॥ दसकला अधिकार ॥ मा० ॥ ८ ॥ आठस
हस सतचार अनेवले एकविस जोजन तास ॥ एककलावले अधिक प्रमाणे पेत्रछेहरी-
तास॥मा०॥९॥हरिकंताने हरीसीयानामेनंदीयाछेप्रतख ॥ विजी नंदीयाछे आर्मीप्रभु ॥
सेसबारे ऐकलाख॥१०॥ प्रवत ।नंदीयाछेवले आमी॥ जोजनवळ बीसतार ॥ सहस सता
अठ वयालीस ॥ दोयकला मुनीराय ॥ मा० ॥ ११ ॥ पेत्रप्रभु जुगलीया केरो ॥ दे-
वकरू वलेनाम ॥ तोपिण पर्वत नीखम्प्रमाणे ॥ मोटोछेसुणोसाम ॥ मा० ॥ सीत
नामछे नदीयावमी ॥ सर्वमाही सीरदार ॥ पाचलाखवले विजीनंदीया अनेवले वतीस
हजार ॥ मा० ॥ १३॥ कंचनगीरी वीरखा धरपर्वत किमउलंगीया जाय ॥ न्नय सिघव-
न मार्गविखमी ॥ लागेकीमउपाय ॥ मा० ॥ १४॥ लाखजोजनमे तें परवत नामेसुंदर
सण सार गजदंतावलेमारग विषमीलागेकेम उपाय॥ मा० ॥१५॥नगरी पर्वत बोलाव्रि

चमै नंदीया उघट पाट किण विध आवु सुगणा साहब ॥ मार्ग विषमी वाट ॥ मा०
॥ १६ ॥ कहोमुझ दिपण हेमभरतमे ॥ पोखराबति जीनराय ॥ ओमेलो कीमहोसी
॥ १७ ॥ डरबहारी अवधारो साहब ॥ याहोसाहीब ॥ तार्णतीरण जिहाज ॥ मा० ॥ १८ ॥ निमोरी अरदास॥मन वंछत सुख संपत दायक ॥ पुरोमांहारी आस ॥ मा०
॥ पुसादिनमाहरेथे अलबेसर । वसीयाहिरदे मंझार ॥ भवडुख भंजन थे देवनीरंजन
॥ १९ ॥ परतरहक गुरूसुख साही रूपचंद गुणराय ॥ अणंकलस भंभार । मा०
॥ २० ॥ समतअठारे वर्सइक्यागरचंदकहे श्रीजीनवरजी ॥ तारोगरीब नवाज ॥ मा०
॥ संपूर्णशे ॥ पोससुद सुभमास ॥ विजवुध सुदभार अनोपम ॥ श्रीजीन वचन विलास

॥ ॐनमः सिद्ध ॥ २४ दंम्क उपर २३ पदव्यानो तवनालिष्यते ॥ वीरामहारा गज थकी उतरो ॥ एदेशी ॥ गोतमगण धरसमरीये समरो सुखदातारो चोवीसदंम्क उपरे कडुं पदव्यानो वीसतारोजी ॥ १॥भावधरी भवीयणसुंणो। आकडी।समादृष्टि श्रावकसुनो वले केवली जीनवर जाणोजी चक्री हलधर केसवा मम्लीक पतराजाणों । २ भासिन्यापतिरे गाथापति वम्द्दि पीरोदित जाणोरे स्त्रिने हय गय जाणज्यो रतन पचिंद्री

होयेजी ॥३॥भा॰ चक्र छत्र चवरदंभ असीमणी कागणीसातोजी सातुं नरकनों नीक-
ल्यो सातपदव्यानहिलहेवीप्यातोजी ॥४॥ भा॰ पहलीनरकनोनीकल्यो पदव्या सोलेपा
वेजी बीजीरो पनरेलहै चक्र वृतनही थावेजी ॥५॥ भा॰तीजीरो तेरेलहे टलगया वासु
देवोजी चोथीरो बारेलहैनहिहोवे देवातदेवोजी ॥६॥भा॰ पंचमीरोइग्यारे लहै केवलज्ञा
नी नहिपावेजी छठीरो दसहोलहै साधुजी नहिथावेजी॥७॥भा॰ सातमीनरकनों नीक-
ल्यो तीर जंचमाहि आवेजी हाथीघोमा जाणज्यो पदव्यादोही पावेजी ॥ ८ ॥ भा॰ ॥
भवनपति वितरजोतापि पदवीपावे इकवीसोजी तीरथंकर वासुदेवनी बेनाहिकहि जगदि
सोजी ॥ ९ ॥ भा॰ पृथवीपाणीने वनसपति तिरजंचमनुष वषाणोंजी कालकरीने
रीधलहै संख्याउगणीसबखाणोंजी ॥ १० ॥ भा॰ तीर्थंकर चक्रवृत तणी टलीया
बलवासुदेवोजी तेवीसपदव्यामांहली च्यारपदव्यानहीलेवेंजी ॥ ११ ॥ भा॰ तेउ
वाउनो नीकल्यो पदव्या नवबपाणोजी एकेंद्रीनी सातुंसहि लहेहाथी घोडो जाणोजी
॥ १२ ॥ भा॰ बेद्री तेंद्रीचोद्री जीवमा पदव्या अगारेपावेजी च्यारबोलल्ये पाछला साधु
मुनीराज नहिथावेजी ॥ १३ ॥ भा॰ पहला छजादेवलोकरा पदव्यां तेविसपावेजी ती

जासुं आठमांलगे सातऐकेंद्रीनहिथावेजी ॥ १४ ॥ भा० च्यारदेवलोक नवग्रीवेगनां पदव्यांपावे दसच्यारोजी हाथीघोड़ा टलगया सात इकेंद्री नहि होयेजी ॥ १५ ॥ भा पंच अणोतर वीमाणनां पदव्यां आठज पावेजी ठल्याचवद रतनचक्रना । वासुदेव न हिथावेजी ॥ १६ ॥ भा० अवतेवीसपदव्यां जीनकही भवजीवाने भागोजी भणे गुणे सुणे सांभले अणघट वैरागोजी ॥ १७ भा० इतिसंपूर्ण ॥ १ ॥ ॥

॥ मरठीभासामे लावणी लिष्यते ॥ नरजल मामदि येउन प्राण्या डुष्ट वासनां धरूं नको सरव सुकासी गुंतुंन सेनीमोक्ष मार्ग चुकुं नको जिनदेवाचे नाम समरणी घमी प्र इसरूं नको ॥ कुदेव कुगुरूस्वामी ॥ मिथ्या सास्त्रआयक्ष नको ॥ देव अरिहंत गुरू-नीग्रंथ ॥ डुशएदेव भजुंनको ॥ दशविध धम्ममोक्ष वरम ॥ भव सागरथी ठकुंनको ॥ तुटक तु० ॥ त्रीकाल दरसन सोडुंनको ॥ रात्रिभोजनकरूंनको ॥ जीवजंतर वरडुंन-को ॥ १ ॥ नरजल० डुष्ट० सर्व० मोक्ष० ॥ वैद्य भीक्यारी आलेदारी भ्पालाना हि मणुंनको ॥ सक्तिसारूदेउंन भक्ति ॥ त्याला रिकामाजाउंनको ॥ आइबाप बायको घरि ॥ मुमायासी गुंतुनको ॥ क्षिनु भिगुयेसंसारे ॥ नरकैडुख्ये पाऊंनको ॥ पुत्रस्वार्थ

पाडुणसेनी मनात हरकूंधरूं नको ॥ धर्म्मनेम येइल कामा ॥ असाता कुनाचि करूं नको ॥ उडान वरी दोलत ज्ञारि ॥ त्याचा ज्ञरोसा करूंनको ॥ पाहाता ॥ १ ॥ प्राण जाइल धर्म्मे आलस होउंनको ॥ तुटक ॥ साधु बचन मोडुंनको ॥ वैर कुनावर करूं नको २ नर० डुठ० सर० मोक्षे० ॥ सर्वजिवावर समान ज्ञाव ॥ डुसरा ज्ञाव धरूनको सतगुरसंग होउंन दंग ॥ डुरजनसंग धरूंनको ॥ नरसरिरी पाप अघोरी ॥ देहि सुक सी गुंतुंनको ॥ होय असातन साधन काया ॥ कालरि मुखिजाउंनको ॥ करताथेत न चिंता रतन ॥ आले हाति टाकुंनको ॥ सोवन थाली भहंन धुली ॥ गारि रतन येचुं नको ॥ पुर्वसुकृतहोयल प्राप्त काष्टभारा बांधुंनको ॥ कल्प तरू उपटन सेनी ॥ कनक वावरा पेरू नको तुटक अनर्थ धर्म्मकरूनको धर्म्म अम्या जाउंनको ॥ ३ नर० दुष्ट० सर० मोक्ष० दुध पाढरा आयसे सुकृत त्याला ताकमणुंनको ॥ डुधसमान जाणन सेनी ॥ रूइ चिक पिउंनको ॥ मद अष्ट महा डुष्ट ॥ त्याला देउंनको ॥ मुलमितर सो- डुंनसेनी मद मांस ज्ञकुंनको ॥ अष्टमी पुन्यमतीथी ॥ ये अपराध करूंनको ॥ संत जो नेसी सरणजाऊ ॥ संसारसमुद्रबुडुनको तुटक अनरथात पडुंनको ॥ अचट कर्म करूं

जासुं आठमांलगे सातऐकैंद्रीनाहिथावेजी ॥ १४ ॥ आ० च्यारदेवलोक नवग्रीवेगनां
पदव्यांपावे दसच्यारोजी हाथीघोड़ा टलगया सात इकैंद्री नहि होयोजी ॥ १५ ॥ आ
[illegible] पदव्यां आठज पावेजी टल्याचवद रतनचक्रना । वासुदेव न
[illegible] अवजीवाने आगोजी भणे गुणे

नहे रातोपेटे न्नावे नष सुरतमे छावे वोर तातोगात रोदयादीन रोसही सोमनहे दीर-
घहे दातपाय थोरातवडतपाय यसोजाको चींनसोई संपनीको तनहे ॥ हसतनी ॥ ४ ॥
मोटीदेहे मोटेहोटे भूरेवारगोरी अप थोरीलाज पेटन्नरी पातहे अघाइके ढेढेयाए पाए-
नकी अंगूरी हेटे ढीसव वेगनोसी कूरुपणी वोलेघहे रायके कामजलकीहे गंध मदके
गयदकेसी सुरतनकीयो जाएजासोसुख पाईके चलेमंद गतीगहे वाधेजाके नएरहे ह-
स्तनीके लंछनए दीयहे देशाएके ॥ डुहा ॥ प्रथम अक्षरवीन जगजीवामे मधअक्ष-
वीन जगनेपाडे अंत अक्षर वीनसुषएक्रने मीठो सोसामीने नएणेदीठो ॥ काजल ॥
रप्रथम अक्षरवीन मीटो लागेअंतअक्षर वीनपंखीसागे मजअक्षरवीन सुपनथाए ते-
आवतो वडसुपसाधे ॥ कागद १ मझ अक्षर वीनजलमे वसंतो आदअक्षर वीन घर-
सोहंतो अंत अक्षरवीन सझपे वाली तूमने जो वातेमे आली ॥आपडी ॥ अत अ-
क्षरवीन वहेसंन्यासी मझाक्षरवीन कंन्यासी आदअक्षरवीनलीपतावाला सीसो सोयेते
सुकमाला ॥ रापडी ॥ १ ॥ गरमांसे वहेपेदाहोय धूपलगे लहराय संपीकहे काहो साहेवा
यो नलगेमरजाए ॥ मृदंग ॥ ५ ॥ पाववीना कमीयाचेडे कवीनराघ्यो खाए । मास्तावीन

वोलेनही वीनमारचा मरजाए ॥ मृदंग ॥ ६ ॥ त्रीशएक मूपदोय चलेवाउम श्वेठे
नहीपंखीको जातजायके गूफामेबेठे जीवजंत मतजाण पन्नत्नठ नहेजाको नहीवकरी
नहीतंठयक्त अधीन्हेवाको वाके वचनसुरपीणधरे कूमरीकहे एगुढाको अरथकोइ चा-
तूरकरे ॥ लेषणी ॥ ७ ॥ एकनारी वाहा ओषदीषाय जीसपरथूके वोमरजाय जोकोइ
उसका साथीहोय अंधोनही पणकांणो जोय॥ ढुलाढुली बंडुक॥८॥ दोवालक नीरजीव
जीनोके न्हीमेहेतारी नही जीनोके पिता जीनोको म्हेतारी कूवारी बोत गठसेन्याव
सपीमील मंगल गावे कूमरभणी कूमरीकहे एअरथ वीरला लहे ॥ ढुला ॥ ए॥ एक
रुषमे अचरजदेखा मालघणी देखाय एकही पता वाकेउपर हातडु एकमलाय ॥
ब्री ॥ १ ॥ इतीसंपूर्ण ॥ ॥ ॥ ॥
॥ एर्द० ॥ नी याको ॥ परम धरमको मरम नजाणे ॥ वातवणावे साणी ॥ बेकहे-
गधा टेकनछोडे ॥ येसापापीप्राणी ॥ जीणने आगे नरकनीसाणी ॥ १ ॥ नीचेसुतोआ-
गलगावे उपरछटके पाणी कलह करण होय अगवाणी ॥ ये ॥ २ ॥ जी ॥ लोक देखां
जयणापाले ॥ नहीदेपे जादाणी ॥ दमर्मीसाठे मारेअनंता ॥ ये ॥ ३ ॥ जी मुपसुतोकहे

झुठगमेनहीं ॥ पोलेसाचीगाणी ॥ दमडीसाठे सासा सागन ॥ ये ॥ ४ ॥ जी ॥
॥ सुकम्पापन्नरे सायदीपोटी ॥ थापणरापे ताणी ॥ मरमप्रकासे संकनरापे ॥ ये ॥
॥ ५ ॥ जी ॥ अेम्नामारेधम्नी उडावे ॥ करकर अंतरकाणी ॥ मुकसुकेवे बाजवीलेवा ॥
॥ ये ॥ ६ ॥ जी ॥ परनारीसु प्रीतलगावे ॥ नीजनारी डुपदाणी ॥ घनकी तृश्ना दीन२
अधकी ॥ ये ॥ ७ ॥ जी ॥ सुधाकहताउलटीलेवे ॥ क्रोधकरे कटगाणी ॥ नीरलज
झुने देवेगाली ॥ ये ॥ ८ ॥ जी ॥ तनधन जनको टोटोवरमे ॥ ओरसकल वृधजाणी
रहेटेम्नो सदास्वान पुंठजो॥ ये ॥ए॥जी ॥ मुखसुबोले म्नालो म्नोलो॥ महाकपटकी पा-
णी ॥ वात २ मेगा सगसीला ॥ ये ॥ १० ॥ जी ॥ कहे न्नला मुझने नहीकोई ॥ वे
पार अनारजठाणी ॥ कोमीसाठे पेजारचलावे ॥ ये ॥ ११ ॥ जी ॥ कोइसु होवेवेर-
म्नापमन ॥ आललगावे जाणी परम्नवको मररचनराखे ॥ ये ॥ १२ ॥ जी ॥ उलटी-
कीतो सुलटबितावे ॥ सुलटी वलटवपांणी ॥ चुगलीकरे सुगलोम्नंगी ॥ ये ॥ १३ ॥
जी ॥ पोतेतो ओगणको सागर ॥ परकाउगणठांणी॥ करेकननाककटाइ॥ये॥१४॥ जी॥
पगबलतीतो देवेनाहीडुगरे आगवताणी अकलसाथे ढठकजराखे ॥ ये ॥ १५ ॥ जी ॥

लुल २ लुल २ करे वंदणा देवे आहारने पाणी ॥ पुठपछाडीकरेनींदा ॥ ये ॥ १६ ॥
जीजीजीजीकारोदेवे ॥ हसकर बोलेवाणी पुठपछाडी करेनींदा ॥ ये ॥ १७ ॥ जी ॥
परकीनुकसानीमे मनराजी ॥ करेहसी अंचकाणी ॥ देवेनही परकोदीवालो ॥ ये ॥
॥ १८ ॥ जी ॥ दीनउगासु नींदा २ सोवेजांलग जाणी ॥ वीकथावातमे कालगमावे ॥
॥ १९ ॥ जी ॥ आणेआरत धरम ध्यानमे ॥ पापेचीत हरपाणी ॥ नरीसनामे मीस-
रवोले ॥ ये ॥ २० ॥ जी ॥ दया धरमको घणोदरीपी ॥ मीथ्यामे अगवानी ॥ धरमीदे-
षी भुसेकुतासो ॥ ये ॥ २१ ॥ ज्ञानकाफटका करमका झटका ॥ हलुकरमी सुपदाणी
सुणकेटाले पापकरमके ॥ येसा धरमीप्राणी जीनकुआगे मुगतनीसाणी ॥ ये ॥ २२॥
जी ॥ सरलनाव समता मनआणो नव२मे सुषदाणी तिलोकरिषकहे चेतोसुगणा
मानोश्री जिनवाणी जोणसुं आगे मुगत निसाणी ॥ २३ ॥ इतिसंपूर्णम् ॥ ॥

॥ अथसीतासतीकोतवनलीपते ॥ धनसीतासती सतधारी । जगतमेहे जसनारी ॥
एटेक ॥ जनकजन्क वीहेदेही मेहेतारी ॥ जुगल पणेअवतारी ॥ दसरथ सुत श्रीराम
चंद्रसु व्यावकीयो सुवीचारी ॥ वातएह जगमाही जाहारी ॥ धन ॥ १ ॥ दसरथमन वे

रागजाणकर ॥ केकैआए उचारी ॥ सुतनंदनकु राजदीजीए ॥ वचन भंमार मझारी ॥
वीनतीमानोहमारी ॥ धन ॥ १ ॥ तातकरणकेउतारणकारणो ॥ मनमाही सुलटवी
चारी ॥ रामलछमण सीतासतीसंगे संचरचा वनमझारी ॥ आयादंमा कारजेवारी ॥
धन ॥ २ ॥ लछमणहाथे सीसछेदाणो ॥ संवक जंहागयोमारी रणजुजतापर दुष-
ण भसलो ॥ मारचागयातीणवारी ॥ सरुपलेषाजाए उचारी ॥ ध ॥ ४ ॥ सीतारुप अ
नुपम सुंदर ॥ अपछराके उणीहारी ॥ जीणेसर्गयो जानकीलंका वागमे ॥ सतिधीरज
ताधारी ॥ त्यागदीया अहारजोचारी ॥ धन ॥ ५ ॥ राणीमंदोदरभाइवीभीषण ॥ सम-
झायो बोतपरकारी ॥ मानीनही कोइकी दसकंदर ॥ पापदीसा अधकारी ॥ टलेकेसे
जोहोणहारी ॥ ६ ॥ रामचंददल बादल लेकर ॥ भगोसयामेकरारी ॥ दसकंदरको
सीसउडायो ॥ जीतभइ तीणवारी ॥ रामदल हर्षअपारी ॥ धन ॥ ७ ॥ आयाअजुध्या
पुरमेचलाइ ॥ सोका कपटवीचारी ॥ कलक अछतोदीयो सतीपर ॥ मेली वनमझारी
नृपवज्ज जंघरखवारी ॥ ध ॥ ८ ॥ मदनाकुस लवणांकुसनामे नंदजायागुणधारी ॥
धीजकीयो सीतासती परगट ॥ अगनी फीटीभयोभारी ॥ देवबोले जयकारी ॥ धन॥ए॥

संजमलेइ सतीसर्गवारमे ॥ इंद्रपणे अवतारी ॥ महाविदेमेसु मुक्तिसीधासी ॥ आटक
र्म करीगरी ॥ होसीनीरंजण नीराकारी ॥ धन ॥ १० ॥ उगणीस अम्तीसे असाढसु-
ध ज्ञारस ॥ डुगर गणकेवारी ॥ सीतावनमे वीसरामलेइने ॥ जोम्हकरी सवीचारी ॥
तीलोकरीप कहे हीतकारी ॥ धन ॥ ॥ ११ ॥ केइमजाणी सतसीलआराधे ॥ इणनवमे
जसन्नारी ॥ परभवमे सुपसंपत अधकी ॥ उतरोगान्नवपारी ॥ इसमे नही संकालगारी ॥ ॥ ॥
॥धन ॥ १३ ॥ इति संपुर्ण ॥
॥ दं० ॥ राखीतिवारकरो धर्मराखी मीथ्या डुरमतिदो डुरनाखी ॥ १॥ सतरूपी वंधव सु-
खकारि सुसर्वबिनअधिक गुंणधारीरा॥ २॥न्नावकी मोररगहीर ज्ञाणो मनगुपतिकोलो
मोतिकोदाणो रा३ न्नावको ज्ञोम्हलेस्या सुन्नरंगी धर्मरिधी रापी सुन्नचंगी रा॥४॥त्या-
गकि गाठसोकरमांही बाधो समताकीसेवा भलीविधराधो रा ॥५॥ करूणाकसार भली-
विधराखो समताको श्रीफल देवणो आखो स०॥६॥तपकोनाणो रोकमोदीजे करीया
की कचूकीको खणदीजे रा ॥ ७ ॥ समगत कुंकुम ग्यानको पांणी घोलो विवेकसूं वि
नयकी पांणी रा ॥ ८ ॥ तत्वको तिलक चोकसगुंण चोखा मनावो तेवारये सुपअनो-

खारा ॥ ए ॥ तिलोकरिषजीकहे अध्यातम राखी अनुभव ग्यानदीसा अभिलाखा
रा ॥ १० ॥ इति संपुर्ण ॥ ॥ ॥ ॥
येसीधन तेरसकरलीजो जोचाहोथे भवनीसताररे ए ॥ १ ॥ कातककहेथें कांतकरहीया
धनतेरस सुवीचारभलारे ग्यानीधनतेरस सुविचाररे ए० ॥ २ ॥ अहिंसा सतदतब्रह्म
अममत पंचमहाव्रतसाररे ए० ॥३॥ इरजाभाषा एषणाआदिकसुमतीछे पंचप्रकार भ०
ए ॥ ० ॥ ४ ॥ मन वचनकाया तिनगुपति ए तेरससुपकार भ० ए० ॥ ५ ॥ खंतिमुंति
अजव मदव तिजे अगेकहा ऊवार भ० ऐ ॥६॥ एचउदूवार षुलासीवमंदीर सुपलछ-
मी हेतइग्यार भ० ए० ॥ ७ ॥ पापकियासुं लछमीजावे संकानहीहे लगार भ० ए० ॥
॥ ८ ॥ तिलोक रीषकहे एधनथीरहे परचतां आवेनहीपार भ० ए० ॥ ९ ॥ इति धन
तेरस सज्झायसंपूर्ण ॥ श्रावकधर्मकरोसुषदाई एदेशी ॥ रूपचउदश नितनीतकीजे
निजरूप प्रगट करीजेरे इंद्रीमन मुंमणकरलीजे जपतप स्नान करीजेरें ए०
॥ १ ॥ पापकी मेलपषालणकीजे सुमन साबुलगाजेरै धिरज धोती सुव्रतवागो संवरपा
ग सीरधजेरे ए० ॥ २ ॥ दयाउपटोकीरीयाकोअंतर धर्मध्यान सोलाभेदोरे ए सो-

आटक संजमलेइ सतीसर्गवारमे ॥ इंद्रपणे अवतारी ॥ महाविदेमेसु मुक्तिसीधासी ॥ आटक
संजमलेइ सतीसर्गवारमे ॥ इंद्रपणे अवतारी ॥ धन ॥ १० ॥ नगणीस अमतीसे असाढसु-
र्म करीगरी ॥ होसीनीरंजण नीराकारी ॥ धन ॥ १० ॥ नगणीस अमतीसे असाढसु-
ध ग्यारस ॥ डुगर गणकेवारी ॥ सीतावनमे वीसरामलेइने ॥ जोमकरी सवीचारी ॥
तीलोकरीप कहे हीतकारी ॥ धन ॥ ॥ ११ ॥ केइमजाणी सतसीलअराधे ॥ इणभवमे
जसभारी ॥ परभवमे सुषसंपत अधकी ॥ उतरोगाभवपारी ॥ इसमे नही संकालगारी ॥ ॥ ॥
॥धन ॥ १३ ॥ इति संपुर्ण ॥
॥ दं० ॥ राखीतिवारकरो धर्मराखी मीथ्या डुरमतिदो डुरनाखी ॥१॥ सतरूपी वंधव सु-
खकारि सुसर्द्धाबिनअधिक गुंणधारीरा॥२॥भावकी मोरखहीर ज्ञाणो मनगुपतिकोलो
मोतिकोदाणो रा३ भावको मोमतलेस्या सुभरंगी धर्मरिधी राषी सुभचंगी रा॥४॥त्या-
गकि गांठसोकरमाही बांधो समताकीसेवा भलीविधराधो रा ॥५॥ करूणाकसार भली-
विधराखो समताको श्रीफल देवणो आखो स०॥६॥तपकोनाणो रोकमोदीजे किरीया
की कंचूकीको खणदीजे रा ॥ ७ ॥ समगत कुंकुम ग्यांनको पांणी घोलो विवेकसूं वि
नयकी पांणी रा ॥ ८ ॥ तत्वको तिलक चोकसगुंण चोखा मनावो तेवारये सुपअनो-

खारा ॥ ए ॥ तिलोकरिषजीकहे अध्यातम राखी अनुभव ग्यांनदीसा अभिलाषा
रा ॥ १० ॥ इति संपुर्ण ॥ ॥ ॥ ॥
येसीधन तेरसकरलीजो जोचाहोथे भवनीसताररे ए ॥ १ ॥ कातककहेथें कांतकरहीया
धनतेरस सुवीचारभलारे ग्यानीधनतेरस सुविचाररे ए० ॥ २ ॥ अहिंसा सतदतब्रह्म
अममत पंचमहावृतसाररे ए० ॥३॥ इरजाभाषा एषणाआदिकसुमतीछे पंचप्रकार भ०
ए ॥ ० ॥ ४ ॥ मन वचनकाया तिनगुपति ए तेरससुपकार भ० ए० ॥ ५ ॥ खंतिमुति
अजव मदव तिजे अगेकह्या ड्वार भ० ऐ ॥६॥ एचउदूवार पुलासीवमंदीर सुषलछ-
मी हेतइग्यार भ० ए० ॥ ७ ॥ पापकियासुं लछमीजावे संकानहींहे लगार भ० ए० ॥
॥ ८ ॥ तिलोक रीषकहे एधनथीरहे परचता आवेनहीपार भ० ए० ॥ ८ ॥ इति धन
तेरस सज्ञायसंपूर्ण ॥ श्रावकधर्मकरोसुपदाई एदेशी ॥ रूपचउदश नितनीतकीजे
निजरूप प्रगट करीजेरे इंद्रीमन मुंभणकरलीजे जपतप स्नान करीजेरें ए०
॥ १ ॥ पापकी मेलपषालणकीजे सुमन साबुलगाजैरे धिरज धोती सुवृतवागो संवरपा
ग सीरछाजेरे ए० ॥ २ ॥ दयाडुपटोकीरीयाकोअंतर धर्मध्यान सोलाभेदोरे ए सो-

ला सीणगार सजणकी चितमे राषो उमेदोरे ॥ ३ ॥ सतवचन तंबोल सुहावे तत्वको तीलककरीजेरे ग्यानको दीपक धर्मकीबाती कर्मकोतेल पुरिजेरे ए० ॥ ४ ॥ उगणीसे अठतीस रूपचन्दश दिनए सझाय वणाइरे तिलोकरीषकहे रूपजोचाहो ताइमकरजो भाईबाइरे ए० ॥ ५ ॥ इति रूपचन्दश सझायसंपूर्ण ॥ ॥ ॥

अथ॥वीतरागवाणी कहीसरे परजीवाहीतकारआश्रवनाला रोकीयासकोइ धारोसंबरसारे करलो धर्मीयारी सुकृतधनलीजो मरजोकालसुं ॥१॥छीन२माही छीजे आउखो ज्युं अजलीकोनीर ओसबुंध पाणीपरपोटो आउपोतेम अथीररे २ क० जोवन जाता जेजन लागे ज्युनंदीको पुर नंदी तटको तरवरजाणो कोइदीन जाये जरूररे ॥ ३ ॥ क० बालक वुढा तरूणा रोगी सुरवीर नरनार हरी हर इंद्र नरेंद्र सुरा सुर कालनछोडे लारहो ॥ ४ ॥ क० वैधरत बीतीपात जोगणी षोटा जोग दीसासुल वेला कवेला नदेषे छिनमेकरेगे भुलहो ॥ ५ ॥ क पाता पीतां सुता जागतां करतां बातविचार पाव पलकको नही भरोसा जवरजस्त संसारहो ॥ ६॥ क० झाडपहाड उजाड गाम पुर नदीषाल नीवाण षवरनपडे नहीकोण ठोडके उपर काल्ले जावे ताणरे ॥७॥ क जल अगनी

ओरजहेर भुजंगम सिघ रीछ पसु व्याल षबरपडेनही कीणउपर द्रव्यसु षचले जासी कालरे ॥ ८ ॥ क० जायासो जरूरजासी फुल्यासो कुमलाए वंध्यासोतो बीषरजाएगा वेमनही इणमायहो ॥ ९ ॥ क० जोपीणजावेसो नही आवे करता. कोडउपाय पायो आउपोरतन अमोलक षोवेक्यो फोकटमांय हो ॥ १० ॥ क० जबलग इंद्रीन पम्हेही णी तनमे नआवेरोग जरान आवे जबलगप्राणी तबलग धरमको जोगहो ॥ ११॥ क० दसकोदरसणी वीसवीसासो तीसको तरसाजोए चालीसको चाको पचासको पाको साठेथकेलो होए ॥ १२ ॥ क सीतरसमीयो असी अमीयो नेउमेनागा जाण सो मे त्रागो चेतो चतुरनर दीन २ आउपोहाणहो ॥ १३ ॥ मातपीतातीरीया सुत बंधव सजनसनेही परवार तन धन जोबन सर्व अथिरहै चेतोक्यो नगमारहो ॥ १४ ॥ क० ग्यान ध्यान तप जपको उद्यम करजो सुगणलोक परभवपरची साची जीवने लीजो नाणोरोकरे क ॥ १५ ॥ ए संसार असार बावले ममतामोह नीवार कालको मरजो मेट-णो तुझने भरले धर्मभंमारहो क ॥ १६ ॥ उगणीसे अठतीस जेठअंधारी तीज तीथी ससीवार तीलोकरीषजी कहे देवाटाकलीमे धर्मसु जे जे कारहोक ॥ १७ ॥ इती संपु-

णँ ॥ एससार सराहकोरे वसनाक्यो अपनाकरी मानारे जो आवेसो सर्व मुसाफीर ऋो
र ऋयेउठ जाणारे ए १ चारपहेरका मोहवतकरके ठेवट सबगेटकानारे मोहनींद्रावस
काहेकुसोते आगुहे धरमकानारे ए २ ग्यान दरसण चारित्र तपस्या एधनहे सुखदानारे
अवके नीठ २ करपायो मोषनगरकु सीधानारे ए ३ कामक्रोध मदमोह लुटेरा ठगणी
करहेरानारे गफलतमे धनहरत आनके वहोतपमेगा पस्तानारे ए ॥ ४ ॥ अनंतकाल
ारी उसउसे प्रीतलगा नारे उसमणप्रीती अंतफजीती समझतक्यो नही-
। ५ ॥ मीथ्यारयणी गयरहीहे ग्यांनदीपक लगवानारे सतगुरु चोकीदार
यार सयाणारे ए ॥ ६ ॥ ठगणीसे अमतीस नीरजआग्यारस ठेहरचा
ानारे तीलोकरीषजी कहे जोनहीचेतो तोए घोडामए मेदानारे ए ॥ ७ ॥ इती
॥ अथ दयाधर्म मंडण हिस्यामत संमण चर्चारुप स्वाध्याय लिख्यत्ते ॥ उहा सम-
समगत सबकहे ॥ मिथ्याकहेनकोए ॥ जांवट समगत पाइये ॥ तेवट विरला
य ॥ १ ॥ आग्यानिरवद्य जिनतणी ॥ देपोग्यान विचार ॥ कारण आग्या ओलखे ॥
खर्चमालकेलार ॥ २ ॥ माल विनाथापनाकरी ॥ खरच बमावे कोय सोदुकांन चाले

नही॥ हियेविमासीजोय ॥ ३ ॥ खरचनफांमे अटकले ॥ तेतोमूढगवार ॥ कुगुरूना-
परतापथी ॥ जायजमारोहार ॥ ४ ॥ नाटकचेटक ख्यालमे ॥ प्रभूनही माने धर्म ॥
त्यागनमें संवरकह्यौ ॥ एजिन आगममर्म ॥ ५ ॥तेहेनी ओलख कारणे ॥ किनी एहस-
झाए ॥ हलुकरमी सोहरपसी ॥ मिथ्यातिमुरझाय ॥ ३ ॥ दयाधरमहिरदेरूचे ॥ समग-
तलख्यणमूल ॥ परम अरथसाद्धनकरो ॥ ग्यानी वचनकबूल ॥ ७ ॥ चर्चा प्रश्नोत्तर
मीलमासझाए लिख्यत्ते ॥ मानव जनमरत नतेने पायोरे सतगुरु समझायो ॥ एदेशी॥
सिद्धकरण श्रीसिद्ध जीध्याउ ॥ वली साधूने सीसनमाउरे ॥ कर्जुसमगतसेली ॥ मि-
थ्यामतिठेली ॥ लहीएसीववेली ॥ श्री जिनधर्म२नेसाधोरे ॥ समग रतनअराधो श्री-
जिनधर्म ए आकणी ॥ देव अदोसोसीरी अरिहंता ॥ ग्यानदरसण वंतारे ॥ चोतिश
अतिसा ॥ त्रिजुलोकनाइसा ॥ जित्याकर्म अरिसा ॥ श्री० ॥ २ ॥ गुरुनिगरंथ करुण
भंडारी ॥ आरंभ परिग्रहवारीरे ॥ सतावीस गुणवंता ॥ धर्मदेव सोहंता ॥ भवियणा
तारंता ॥ श्री० ॥ ३ ॥ धर्म आग्यानिरवद प्रभुकेरी ॥ यातो सर्व सीद्धात मेहेरीरे ॥
हलुकर्मिपेछाणो ॥ संकारचन आणे ॥ सत्यन्याय प्रमाणे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ अतिशाल

क्षणाग्याननपावे ॥ नही कब्बुन्नर्म मिटावेरे ॥ जीणसुकाजनसिझे ॥ युही हिंस्याको
किजे ॥ अनुन्नवरसपिजे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ स्नान तिलकफलफूल चमावे ॥ वलीताल
मृदंगवजावेरे ॥ करेनाटकरंगे ॥अति आणउबंगे वेरागकेन्नंगे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ सूरिया
न्नदेवता नाटककीनो प्रभू आदरनहीदीनोरे नहीजाण्यो न्नलेरो ॥ कारण आश्रवकेरो ॥
हिरदेइमहेरे ॥ श्री० ॥ ७ ॥ कहेद्रोपदादेपो कीनी हे पुग ॥ पणपरमारथ इहाडबरे॥
परणे तवेवारो॥ ऊवा पंचन्नरतारो ॥ नियाणो विचारो ॥ श्री० ॥ ८ ॥ सुरियान्नेप्रतमा
पुजनकीनी ॥ सोतो परंपरा चिनीरे ॥ अवृति रितन्यारी ॥ करणी न्निनश्रावकारी सो-
धो ग्यान वीचारी ॥ श्री० ॥ ए ॥ जंघा चारज प्रतमा वंदे जाई ॥ कहे दिप नंदीसरे
माइरे ॥ दयाधर्मघटावा ॥ हिंस्याधर्म दिढवा ॥ कहे यसापुरावा ॥ श्री० ॥ १० ॥
मानुषोतरपरप्रतमानदापी जहावंदणा रिप न्नापीरे॥अंजण गीरीनही जावे ॥जहाप्रतमा
वतावेसोतोग्यानसरावे॥श्री ॥११॥ कहे आणमतिग्रह्या चेतन वंदे॥आणंद श्रावक स्वय
ढंदेरे॥इहां न्यायवीचारोनहि देचव अहारे ॥ जिणसुं करे नहीं उचारो ॥ श्री० ॥१२॥ ।१८८।
ब्राह्मी लिपिनगवतिधुरे वंदी ॥ एवंम्मिविचारो संधीरे ॥ निपपाचौलिपिमाइ ॥

वग्यानमे आईरुता आदकहाई श्री० ॥ १३ ॥ कहे प्रतमांकीकरे न्यावच. साधू
जाने सुद्धअरथ नही लाधूरे विन्नकिवदलाणो ग्यान अर्थ जोगणी ॥ इमसधपेछाणी
श्री ॥ १४ ॥ कहे वली कम्मा पुजी जिन प्रतमा एवात जचे नही चितमारे ॥ पुथाअं-
गन्नीदीसे न्नेदलान अविसेसे देषो ग्यानरवीसे ॥ श्री ॥ १५ ॥ कयवली कम्माखानना
घरमे ॥ पुष्करणी सरवरमेरे ॥ देषोद्रोपदी ठामे ॥ न्नद्रागइपुथाकोम ॥ श्री० ॥
॥ १६ ॥ प्रश्नोतर ॥ १ मे ॥ अंणुजोगडुवारजी सूत्रमझारो ॥ निखेपाचउविस्तारोरे ॥
कीजे सझदर्वकेरा ॥ एतो न्नेद गहेरा जाणपणकाजेकेरा ॥ १७ ॥ प्र० मानवा ॥ देव
गुरु धर्म निखेपाचारी ॥ जाने मानीजेएकसारीरे ॥ विनोसरषो विचारो ॥ एसो नही
विसतारो ॥ होतती हमेन्नारो ॥ श्री० ॥ १८ ॥ सतआसरी ॥ चार निखेपासतकारि-
दाषे ॥ कहे ठाणायंगसाषेरे ॥ अन्नेतर्कहेन्यारी ॥ बोलएन्यायउचारी ॥ रितिनही सर-
धारी ॥ श्री० ॥ १९ ॥ प्रश्नसरणा आश्री ॥ कहे सरणो चाल्यो प्रतमानो ॥ पाटतिन
पदीचानोरे ॥ अरिहंतकेवलधारी ॥ छदमस्थजेवारी ॥ न्नावित अणगारी ॥ श्री० ॥ २० ॥
चेतसब्देजिनप्रतमांहि जोथावे ॥ तोइहाकिमचल आवेरे प्रतमाथी निजठामे ॥ सणोंक्यो

नदाडामे ॥ समझोयह मुदामे ॥श्री० ॥२१॥ प्र० चेतसब्दे॥ चेतसब्दे प्रतमा हिवता-
वे ॥ व्याकर्णने सरावेरे ॥ चितप्रसनताथावे ॥ एहधाउ बतावे ॥ अर्थके इसमावे ॥ श्री०
॥ २२ ॥ सिधायतन ॥ कहे जिहां जिनप्रतमा तणो वासो ॥ सिद्धायंतननामठेता-
सोरे ॥ सिद्धसिला बारे नामे ॥ आयंतण नही तामे ॥ कह्योसासते धामे ॥ श्री० ॥
॥ २३ ॥ प्र० पुजाभेद ॥ दर्व पुद्यानो नाम दयाइम बोले ॥ पमियो दिसेजे भोलेरे॥
इमयज्ञलहीजे ॥ दयाते पुजाकहीजे ॥ कुपक्षनलीजे ॥ श्री० ॥ २४ ॥ प्र १५ थया ॥
सिद्धात ॥ कहे तुमे बतिस सूतर मानो ॥ अमे पेतालीसजानोरे ॥ तेरेनिको महानी ॥
मिलीयो कुणग्यानी ॥ कहो न्यावसुठानी ॥ श्री० ॥ २५ ॥ उतर ॥ तवश्री ग्यानी गुरु
फरमावे ॥ नंदीकी साषेठरावेरे ॥ आठकानाम नमाई ॥ पंच नाम कहाई ॥ जामे पा-
ठ फेराई ॥ श्री० ॥२६॥ प्र० १७ ॥ कहेछे चित्र ॥ चित्रकीनारीथी काम विकारो ॥ प्र-
तिमाथी वैरागवीचारोरे ॥ रागमोहउदारो ॥ एतो भावछे न्यारो ॥ कह्यो अनुयोग दूवारो
॥श्री०॥ २७॥उत्तर॥वेरागयथाप्रवृति करणसु।कर्माकीथीतजरणसुरे॥दर्वेस्वयंबूद्धकहावे
प्रतेक बुद्धकोइथावे ॥ बुद्धबोही सरावे ॥ श्री० ॥२८॥ चोर आंबो वृक्षबादल गाय॥

मूतबेल संध्याफुलायारेईत्यादिकथीवेरागीजे ॥वंदणा किमकीजेजथाजोगजाणीजेश्री०
प्र० ॥ २९॥ १७मो॥न्नाव आसरी कालोडोरी न्नमेंसापजमानी मारतापातिकठानीरे
इमभ्रतमाथी न्नाई धर्मकेमनथाई पुछेकोइआई ॥श्री०॥३०॥उत्त॥अणमति नांबिब ॥
फोज्ञाथीपायो पुयाथी धर्म न थायोरे बेटो घरम जोधारे नही चापनेलारे गुरुन्याय उ
चारे ॥ श्री०३१ ॥ प्र० ॥ १८॥ मो आग्या॥कहे साधुउतरे नदीमे जाणी बहेति आ-
रज्या काडे ताणीरे इमजाणो पुजनमे दिर्घ सोचेनमनमे अंतर निस दिनमे ॥श्री०
३२॥उत्त॥समणी काढेउत्तरेतथा नदी एतो काम पम्छे कदीरे नहीआ राषे उमावो पुजी
मेहरपावो परतपहीकुन्यावो ॥ श्री०॥३३॥प्र० ॥कर्तारित॥कहेद्रवपुया श्रावक करन
न्नावपूजा मुनी वरनीरे ततो पाटवतावो पठे चोज लगावो योहीमतीजीपोमावो ॥
श्री० ॥२४॥प्र० ॥ २१ मो ॥ असादन॥थापनानि असातना नही करीए करतांपाप
आवरीए पुजा धर्म क्यों न थावे एसी तर्क लगावे कुगुरु न्नरमावे ॥ श्री ॥ ३५ उत्त ॥
सुसीला त्रियापति देवदतनामे तेही नामे पुरुष बज्ज गामरे समनें नहीसेवे पणनाम न
लेवे पतिनो बिनोछेवे ॥ श्री० ॥ ३६ ॥ थापना आपणा देवसमंधी कराअसादनावंदोरे

टाला पुजन अरजन नही कांतस वंदन जाणा लोंकीक लेदन ॥ श्री० ॥ ३०॥ ३३॥
मो हिंसाथी धर्म॥ सुबुधि पाणीनेपलाटया पुतलीमे मल्लिजिनकथागायारे षटनृप सम-
झाया जीतसत्रु बुझाया हिंसामे धर्म थाया ॥ श्री० ॥ ३८ ॥ उत्र ॥ समदृष्टी समरि
तिपेखाणे तेकरत्तधमे धरमनी जाणेरे महाउपगार जाणी गृही वंदोए ठाणी लेवो न्याएवे
वाणी ॥ श्री० ॥ प्र० ॥२३॥ मो० ॥ मोछव ॥ जनममहोछवेईदर आवे जित विवहार
मनावेरे कोईसुर धरमजाणे कोइपुंनहीमाने सुत्रपाट गुंथाणे ॥ श्री० ॥ ४० ॥ उत्र ॥
छेत्हनो विचारोगहेरो सोतो देवसदणा लहरोरे कोईनडीक देवोसोचेमन एहवो सर्वा
प्रभूकी नठेवो ॥ श्री० ॥४१॥ प्र० ॥२४॥ मो दक्षामोछव ॥ दक्षामहोछव॥ अधिकदि-
टावे हिंस्यापछेधर्मथावेरे सोतो देखो जमाली थयो समगतठाली मोछवनयो विसा
ली ॥ श्री० ॥ ४२ ॥ उत्र ॥ विन महोछव देखो संजेतिराया नेमी राजरषि ठायारे इ
त्यादिक अनंता वरिहे सिवकंता समझो बुद्धिवंता ॥ श्री० ॥४३॥ प्र० ॥ २५॥ मो ७
क्षेत्रे धन ॥ सातक्षेत्रे श्रावक धनखरचे वार २ इमचर्चेरे देषो तिरथचारी परधन इछा
वारी सूत्रलिपाणा अबारी ॥ श्री० ॥ ४४ ॥ मो विशेष उत्र ॥परदेशी समझा धर्मने

माई दानसालामंमाइरे मंदिरनवणाया नही संघचलाया श्रावक न जिमाया ॥ श्री० ॥ ४५ ॥ श्रेणीक राजाये धरमजो पायो अभय पमोवजायोरे किविकृष्ण दलाली बहु प्राणी दक्षाली अंतगडली संभाली ॥ श्री० ॥४६॥ प्र० ॥ १६ ॥ मो भर्तबिंब ॥ कहे भर्तेश्वर बिंबभराया गोतमजी वंदणसीद्धायारे नही सूत्रने माई ठेणाथीत नाई भगो तिमे मनाई ॥ श्री० ॥ ४७ ॥ प्र० ॥ १७ ॥ मो मेलवा ॥ अभय कुमर आद्र कुमरने पासे मेली प्रतमा इम भासेरे मूल सूत्र मेनाई मेलीतो नवडाई असादना ठेराई ॥श्री० ४८ ॥ ॥ प्र० ॥ १८ ॥ मो रावण कहे भक्तिकीना रावणराया गोततिर्थंकर बंधायारे चोथीनकें सिद्धाया नही होय जिनराया ॥ श्री० ॥४९॥ प्र० ॥ २९ ॥ मो सतरजा॥ कहे सतरजो सासतोजी पणसोचे नही सुविसेसीरे कह्यो भगवती माइ बैताम्र सबाइ परवत रहेनाई ॥ श्री० ॥ ५० ॥ प्र० ॥ ३० ॥ मो भगवतिमे सोमल कहे आई कुण जात्रातुम माइरे प्रभूतपस्याबताई नियम संजमताई जात्रा सुपदाई ॥ श्री० ॥५१॥ महानसिथे वेरसामीना चेला जात्रा गया हठीलारे गुरुदोष बताया नही मानी सोवाया अनंता भवबंधाया ॥ श्री० ॥ ५२ ॥ तिर्थंकर प्रतमाबदे ॥कहे प्रतमा सघने प्रभूवंदे वो

लते स्वयछंदेरे आचारंग मझारी सिद्धवंदणा धारी अवरापरहारी ॥ श्री० ॥ ५३ ॥
प्र०॥३१॥ मो सचेत फूलसमो सरण॥ कहे समोसर्णमे फूल वरसावे सचेत पणे दि
ढावेरे देषान्याय विचारी सचेत नीवारी जावे नरनारी ॥ श्री० ॥ ५४ ॥ प्र० ॥ ३२ ॥
मो तिरथ मानवा आसरि॥कहे जिहां जिनमुनि मुगत सिद्धाया सोहि तिरथ ठहरायारे
सोतो देषो विचारी कह्यातिरथ चारी पंचमो परिहारी ॥ श्री० ॥ ५५ ॥ जिनमते तिर्थ
॥न्नगवतिमे सोमल कहे आई कुणजात्रा तुममाइरे विरजीतपस्या बताई नियम संजम
माई जात्रासुषदाइ ॥ श्री०॥५६॥प्र० ॥ ३३ ॥ इंद्र कृतथुन्न ॥ कहे जिनवरने निरवा-
णठामे थुंन्नकरे रणणामेरे प्रभुपुंन सतासेवा महेमाकरेदेवा यामे धर्म नगहेवा श्री० ॥
॥५७॥थुन्नकामंदर प्रतमवणाणो प्रथम आश्रवमे जाणोरे दशमे अंगेदेषो परिगृहामां
हीलेषो आश्रव पंचमे देषो ॥ श्री ॥ ५८ ॥ प्र० ॥ ३४ ॥ हिंस्यामे धर्म सर्द्धा मेलेतो
के मुनिहाले चाले तेकेइसंवरझालेरे ठाणागुणठाणामाई आरंन्नकिरिया बताई परमा-
दकहाई ॥ श्री० ५९ ॥ प्र० ॥ उन्ना अजोगता कह्यो संवरसारो जोगसो आश्रवदूवा-
रोरे सुन्नसो पुंनरासी असुन्नतापापरासी जोवोहिरदेविमासी ॥श्री०॥६०॥प्र०॥ ३५ ॥

पुनःधर्मसर्द्धा ॥ वली कहे हाले चाले मुनीराया हिंस्यामे धर्म लखायारे ॥ तेतोषरचने जोवे गिणे आश्रवहोवे ईरियावहीआ लोवे ॥ श्री०॥६१॥हिंस्यामे धर्म दयामै धर्मों तोकिहा वंधे कर्मोरे सोचो भवप्राणी घटमे दया आणी मानोश्री जिनवाणी ॥ श्री० ॥ ॥६२॥ आग्यादोए प्रकारे वताई प्रवृति निवृति कहाईरे ॥ प्रवृतिमेखचैंथाईनिवृति मेनही काई गुरून्याव वताई ॥ श्री०॥६३॥पंचमहाव्रतगुप्ति निवार्ति सुमति सोपरवरतीरे कारणसरीरसुकरणी एहनीरक्षायो वरणी पर्चलागेउचरणी ॥ श्री०॥६४॥प्र० ॥ २६ ॥ मे भाव संधिपुजामे अदोष॥कोइ कहे पुजामे रंचनेपायो भावभलाहमथापोरे थायेलाभघणेरो मिटसी भवफेरो न्यावसोचेनगहेरो ॥श्री० ॥६५॥ उत्र॥ग्यानविनानही भावभलेरो भावसोग्यानकीलहेरोरे ग्यानथीदयाथावे सवपापहटावे अमरापुरजाये॥श्री०॥६६॥सुर्त ईद्रीपोषीजेगाएवजाय घणईद्रीधुपधुपाएरे नयन नाटकजानी स्नानफर्शजमानी ॥ चोरी नही मनगानी॥श्री०॥६७॥श्रुत्तग्यानचखदे राज देषे प्रतिमावाकी किणलेपेरे फलफूलनपाणी लुटेपरप्राणी वली धर्म जजाणी ॥ श्री० ॥ ६८ ॥ प्रभु वंदवागयाश्रावकसारा सचेत कीया परिहारारे नही फूलचमाया नही नाटकगाया नहीधुपधु-

षाया नही स्नानकराया ॥ श्री० ॥६ए॥ समो सरणमे गयानरनारी पंचअभिगमधा
रीरे वंदणाकरी जाई तिनसेवाबताई हिंस्याकरिनाई ॥श्री०॥७०॥ असवारी श्री करि-
असवारी आरंभभारी गयानृप वंदणाधारीरे सोतो धर्ममे घाले लागाकुगुरुचाले जाने-
किण विधपाले ॥श्री० ॥७१॥ उत्र।तेसो पदानिजपदवीकेरी ग्यानदोसा लोहेरीरे प्रभू
अग्यानेवारे तेरे आश्रवदूवारे इमग्यानीउचारे ॥ श्री० ७२ प्र० ॥ ३८ ॥ स्नानमे ध-
र्म॥स्नानमंजणकरे अंगसुश्रुषा ॥ जामे धर्म सदै मतिलुवारे भरचो वस्त्रलोइमे फिरधोवे
सोहीमे किमसुधहोवे तेमे॥श्री० ॥७३॥उत्र॥उदाहर्ण॥चोषा सन्यासणी थीमलीसामी
दीयो द्रष्टांतएनामीरे सुदरसण सुचिचरचा दाष्योमुनीथावरचाछोमो पाखंमपरचा॥श्री०॥
७४संसारथी हत्यामरआणी धर्मथाने आवे प्राणीरे तीहापण हिंसाकरीए दयाकीहाआ
दरीए हिंसाकिहापरहरीए॥श्री०॥ ७५॥पुनः उदाहर्ण ॥ स्नानकरणमेधरमजलागे श्राव-
क स्नान किमत्यागेरे आणंदादिकपममाधारी दियो स्नान सोटारी सचेत परिहारी॥ श्री
॥७६॥देषणसे भाव॥प्र०॥३ए॥वली कहे ध्यान मुद्राहम देषी आवे भाव विसेषीरे सो
तोहे तुंममाई वेगो आसणलगाई देरलागेनकाई॥श्री०॥७७प्र०४०॥चारनिषेपा॥ चार

निषेपावंदणीककेवे चारूं सरीषाछेवेरे।भावअपणालगावे॥इमचोजवतावे।मनने समझावे
॥ श्री० ॥७८॥उत्र ॥ रिषभ सितलनेंमीनरनामे॥ नांमनिखेपोतामेरे जिणमे भावलगाई
चितमे हरषाई ॥ थेनमो किमनाइ श्री ० ॥ ७९ ॥ सकरभावे लुणप्रषेगी करेमोद
कसुविसेषीर ॥ जिमेसकरभावे ॥ मुपपारोइथावे ॥ कांइहोएकोरेभावे ॥ श्री ०॥ ८० ॥
गृहीवासे होवेजिनराया ॥ ताकेनहींमुनिरायारे ॥ तिनग्यानविराजे ॥ लक्षणसङ्गाजे ॥
केइनर्मसोभाजेश्री० ॥८१॥ श्रीजिनसोपावेभवतिरो॥ रहेसोहीसरीरोरे॥ साधूश्रावक
तेहने ॥ प्रणमेनहीजेहने॥ देषोअंतरानएने ॥ श्री० ॥ ८२॥ उदाहर्ण॥दर्वतिर्थं करकृष्णा
मुरारी ॥ नेमप्रभूब्रचारीरे ॥ तिहांथातिर्थचारी ॥ नम्यानहीएलगारी ॥ अंतगडजीमजारी
श्री० ॥ ८३ ॥ ठाणायंगेश्रेणीकराया ॥ विरप्रभूजीदरसायारे ॥ नम्यानहीनरनारी ॥ न-
हीदीपोधनकारो ॥ उंमेग्यानविचारो ॥ श्री०॥८४ ॥ पुनः॥ मलिजिनजबथागृहवासे ॥
अरणकजीनम्यानहीजांसेरे ॥ केइनृपनम्यानाई ॥ देषोग्यानलगाई ॥ जिनमारगन्याई ॥
श्री० ॥ ८५॥ समवायंगेचोविसीवृतमानो ॥नांमनापाठगुंथाणोरे॥ चंदेसब्दघणाआया
आवतिमेनहीलाया ॥ समझोइममाया ॥ श्री० ॥ ८६ ॥ भावसहीतवंदणीककहीजे ॥

जिनमतेन्यावलहीजेरे आणीसुधभावो ॥ जानेसीसनमावो ॥ भव २ सुषपावो ॥ श्री० ॥
॥ ८७ ॥ ना ४ निखेपासतसहो॥नामजेजिनमावितरउचारो ॥ थापनातनआकारोरे ॥ द्र
व्यलक्षणछाजे ॥ अतिशासुविराजे ॥ दवेंदेहसराजे ॥ श्री० ॥ ८८ ॥ भावेकेवलग्यान-
सोकेवा ॥ इंद्रचोसठकरेसेवारे । घणघातिकहणीया ॥ भावेसोजिनगणीयां ॥ सुत्रपाटे-
योभणीया ॥ श्री० ॥ ८९ ॥ भावसहीतजेदेवअराधे ॥ सोसीवमारगसाधेरे ॥ एहन्या-
वनिसंका ॥ नहीहेकछुवंका ॥ सवाजितकामंका ॥ श्री० ॥९० ॥ अहारपाणीवसतर
धनमाई ॥ निपेपाचउथांइरे ॥ भावसुधद्रवचावे ॥ तिनकेनदीढावे ॥ कारजअरूजावे
श्री०॥ ९१ ॥ धर्मठामेथापनाकेदीभावे ॥एमुजनेहसी आवेरे ॥ सोचोकोईन्याई एहक
रणकाई । बुधजनदरसाई ॥ श्री० ॥९ २ ॥साधपणोपाल्योनहीजावे ॥ अहारवीसतरा
दीकचावेरे ॥ एहआसरोमोटो ॥ धकेसकुपरोपोटो ॥ लिनोइमओटो ॥ श्री० ॥ ९३ ॥
मोललेईनेभेषपेरावे ॥ करेमिभंतेउचरावेरे । जाहिपानपवावे ॥ वासषेपनषावे ॥ नवो
नामथपावेश्री०॥९४॥प्र०४१मो श्रावकसूत्रभणनोनिखेद॥कहेश्रावकजोवाचेसिद्धांतो
तेभमेभवअनंतोरे॥नंदीमेदेषोरोहा॥श्रावकसुयपरीगहा।सूत्रकोसूझगहा॥श्री०॥९५॥

उतर ॥ कहेसुरियाजेसुत्तरवांचो ॥ श्रावकनोपांचोरे ॥ सोतोसर्वेअवरतीश्रावकदेसवरतो
तेहनेकांईनीरती ॥ श्री० ॥ ९६ ॥ पोतेमहाव्रतएकनदीसे। करेभोजनवलीनिसेरे ॥ जंत्र
मंत्रप्रजुंजे। पापसुनहीधुजे ॥ निजदोसनसुजे॥श्री० ॥९७॥ पोतेतोओगणनांदरिया॥
पालेनहीकांईकिरियारे ॥सीरपटारषावे ॥ धनव्याजवमावे॥वलीवागलगावे ॥ श्री०॥९८॥
गोतमसामीनेगादीयबेठा ॥ मुनिगुणमेल्याहेठारे॥ लम्बामाहीसेठो ॥ पावामाहीजेठो॥
थापनासर्पपेटो ॥ श्री०॥ ९९ ॥ श्रावकनागुणथीपणदुरा ॥ सुत्रवांचणनेसुरारे ॥ कहे-
पंचमोआरो ॥पंचमाहाव्रतधारो॥नहीभेअणगारो ॥श्री०॥ १००॥ साधुआरती॥सतक-
विसमे भगवतीमाइ पुछेगोतमप्रभुताइरे ॥ केतोसासणथांरो ॥ कह्योएकविसहजारो ॥
रेसीतिरथचारो ॥ श्री० ॥१०१॥ पुरवएकसदेश्रलगेदाषे ॥ नवमोउदेशासापेरे ॥ पणसु
ढनमाने ॥ आपणोमततागे । आपसासवजाणे ॥ श्री०॥ १०२ ॥जीवदयासवसुत्रेदी
ढाई ॥ हिंस्यानेनिरसाइरे ॥हाथेदीपकसाही ।पम्कुपकेमाई॥तेहनोकरेकाई ।श्री॥१०३॥
आंपफोडीनेदेपणोचाहे ॥ पगकाढीनेधावेरे॥ मुषम्भिचिनेषावे॥ कंठवाढीनेगावे ॥ उल
टोषमगसावे । श्रीः ॥ १०४ ॥ भूपानेभोजनतरसानेपाणी ॥ रोगीनेओषधजाणीरे ॥

पंथीनेआकासो ॥ भूलानेपंथघासो ॥ भविदयाविमासो ॥ श्री०॥ १०५ ॥ चोपदने पु-
टाकोअधारो ॥ मारतानेसर्ण आधारोरे ॥ भावसागरजाता ॥ भविनेदयामाता ॥ भव २
सूषदाता ॥ श्री० ॥ १०६ ॥ जिनचक्रवृतीहरीहलधरजाणो ॥ लब्धीअठाविसमानोरे॥
होवेदयाप्रभावे ॥ दसमेअंगेदिढावे ॥ श्रीजिनफरमावे ॥ श्री० ॥ १०७ ॥ दयापालीग-
यामोक्षअनंता ॥ भाष्योश्रीभगवंतारे ॥ हिंस्याकरेधर्मकामे । समगतनहीपामें ॥ आचा
रंगनेठामे॥श्री०॥१०८॥सुरजथीअंधकारजथावे॥चंद्रथीअगनझुरावेरे॥अग्नीमेसितलाई
जलदेसिलातराई अराधेदेवताईहिंस्यामेधर्मनाईश्री० १०९ व्याकर्णविनाउपदेशदेनोन
हीप्र०४२व्याकर्णभणीयाविनउपदेशो॥देणोनहीलवलेसोरे॥गाढीइमताणे॥अवसरनही
जाणे ॥ बुधिआराप्रमाणे ॥ श्री० ॥११०॥ उतर ॥ पंचमआराअंतेधर्मथाणो ॥ दशमी
कालकनजाणोरे॥महानसीथमेदेषो॥आवषोकपपेपो॥समझोहियलेपो॥श्री० ॥१११ ॥
उपदेसदीयाविनाधर्मनचाले दुषमपंचमकालेरे ॥ परवचनअराधि ॥ अनंतासिवसाधी॥
गेडोहटउपाधी॥श्री०॥११२॥प्र०॥४३॥नवोमतकल्पो कोईकहे साधुनिकल्याहमथी ।
आगेरितिसझसमर्थारेसोहरिभद्रसामीरे ॥ पंचमोध्येनकैसो ॥ महानसीथेउपदेसो

श्री० ११३उत्र॥पंचावनसाम्पापांचहजारो॥सुरीमंत्रतणाधारोरे॥ सुरिनांमधराई ॥ जासी
नर्कमाईमहानसीथेचेताईश्री॥०११४॥छकासाधुसाधवीसातसाता आठआठश्रावकपा
तारेश्रावकानवनोका॥जासीनर्कमेथोका ॥ हिंस्या धर्मधोषाका॥ श्री०॥ ११५ ॥ किया-
तिर्थंकरगोतदरचाला ॥ कमलाचार्यदयाबालारे ॥ पछेउछरंगजमाया ॥ दरबालाउन्माया॥
सातमीनर्कोसिद्धाया नवअनंतवधाया ॥ श्री०॥ ११६ । वनिताह्वारामतिचंपावयाणी ॥
कह्याजक्कदेहराजाणीरे ॥दियानामचताई । जिनमंदरनाई ॥ होएतोनवमाई । श्री०॥११७
समदृष्टी श्रावकठेटथीदाप्या॥ मिथ्याद्रष्टीपणन्हाप्यारे ॥ केइकनरन्नोला ॥मतिमाहीग-
चोला ॥ करमाकाजकोला ॥श्री०॥ ११८॥ कोइकाकुलमेजिनअवतरिया॥ गोतिमि
लीमंदरकरीयारे ॥ तोसुंअधकाई ॥ परंपराकुलठाई॥ पणधर्मनकाई । श्री०॥ ११९ ॥
धर्मअर्थेजिनमंदरकीनो ॥ एसोकोइसुत्रेमतिचिनोरे ॥ होएतोह्मनेवतावो ॥ सु
त्रपाठपुरावो । कलुसंकनलावो ॥ श्री०॥ १२० ॥ विवाद सहीततरका॥प्र० ॥ ४४ ॥ मो
कोइकहे चारसेवर्षपेली ॥ जिणसासणतिरथसेलीरे ॥ किणविधसोरहाइ ॥ पेलासा-
धूनाई । दोरितवताई ॥ श्री० ॥ १२१ ॥ न्तसमग्रह्वर्षदोयहजारो ॥ कह्योकल्पसूत्रमझा

पंथीनेआकासो ॥ भूलानेपंथपासो ॥ भविदयाविमासो ॥ श्री०॥ १०५ ॥ चोपदने खु-
टांकोअधारो ॥ मारतानेसर्ण आधारोरे ॥ नावसागरजाता ॥ भविनेदयामाता ॥ भव श्
सूपदाता ॥ श्री० ॥ १०६ ॥ जिनचक्रवृतीहरीहलधरजाणो ॥ लब्धीअठाविसमानोरे॥
होवेदयाप्रभावे ॥ दसमेअंगेदिढावे ॥ श्रीजिनफरमावे ॥ श्री० ॥ १०७ ॥ दयापालीग-
यामोक्षअनंता ॥ भाष्योश्रीभगवंतारे ॥ हिंस्याकरेधर्मकामे । समगतनहीपामे ॥ आचा
रंगनेठामे॥श्री०॥१०८॥सुरजथीअंधकारजथावे॥चंद्रथीअगनझुरावेरे॥अग्नीमेसितलाई
जलदेसिलातराई अराधेदेवताईहिंस्यामेधर्मनाईश्री० १०९ व्याकर्णविनाउपदेशदेनोन
हीप्र०४२व्याकर्णभणीयाविनउपदेशो॥देणोनहीलवलेसोरे॥गाढीइमताणे॥अवसरनही
जाणे ॥ बुधिआराप्रमाणे ॥ श्री० ॥११०॥ उतर ॥ पंचमआराअंतेधर्मथाणो ॥ दशमी
कालकनजाणोरे॥महानसीथमेदेषो॥आवषोकपपेषो॥समझोहियलेषो॥श्री० ॥१११॥
उपदेसदीयाविनाधर्मनचाले दुषमपंचमकालेरे ॥ परवचनअराधि ॥ अनंतासिवसाधी॥
गेडोहठउपाधी॥श्री०॥११२॥प्र०॥४३॥नवोमतकल्पो कोईकहे साधुनिकल्याहमथी ।
आगेरितिसझसमर्थारेसोदरिभद्रसामीरे ॥ पंचमोध्येनकैसो ॥ महानसीथेउपदेसो

श्री० ११३उत्र॥पंचावनसामापांचहजारो॥सुरीमंत्रतणाधारोरे॥ सुरिनांमधराई ॥ जासी नर्कमाईमहानसीथेचेताईश्री॥०११४॥छक्कासाधुसाधवीसातसाता आठआठश्रावकपा तारेश्रावकानवनोका॥जासीनर्कमेथोका ॥ हिंस्या धर्मधोपाका॥ श्री०॥ ११५ ॥ किया- तिर्थंकरगोतदरवाला ॥ कमलाचार्यदयावालारे ॥ पछेउछरंगजमाया ॥ दरवालाउन्माया॥ सातमीनर्केसिधाया नवअनंतवधाया ॥ श्री०॥ ११६ । वनिताहारामतिचंपावषाणी ॥ कह्याजक्षदेहराजाणीरे ॥दियानामधताई । जिनमंदरनाई ॥ होएतोनबमाई । श्री०॥११७ समदृष्टी श्रावकठेटथीदाष्या॥ मिथ्याद्रष्टीपणभाष्यारे ॥ केइकनरभोला ॥ मतिमाहीग- बोला ॥ करमाकाजकोला ॥ श्री०॥ ११८॥ कोइकाकुलमेजिनअवतरिया ॥ गोतिमि दीमंदरकरीयारे ॥ तोसुंअधकाई ॥ परंपराकुलठाई ॥ पणधर्मनकाई । श्री०॥ ११९ ॥ धर्मअर्थेजिनमंदरकीनो ॥ एसोकोइसुत्रेमतिचिनोरे ॥ होएतोहमनेवतावो ॥ सु त्रपाठपुरावो । कछुसंकनलावो ॥ श्री०॥ १२० ॥ विवाद सहीततरक॥प० ॥ ४४ ॥ मो कोइकहे चारसेवर्षपेली ॥ जिणसासणतिरथसेलीरे ॥ किणविधसोरहाइ ॥ पेलासा- धूनाई । दोरितवताई ॥ श्री० ॥ १२१ ॥ भस्मग्रहवर्षदोयहजारो ॥ कह्योकल्पसूत्रमझा

रोरे ॥ उदेपुजानीहानो॥ तुंमेसतकरीमानो अवकीकोमताणोश्री०॥१२२॥ न्समग्रहेना
दोसथीजाणो ॥ हिंस्याधरमदीपाणोरे ॥ साधूरव्यातिणमाही ॥ सरधासूद्धलाई ॥ निज-
आत्मावचाई ॥ श्री०, ॥ १२३ ॥ थीतउतरीपंद्रेसेतिससालो ॥ दयाधरमउजवालोरे ॥
कियोहेमुनीराया ॥ द्रवलींगीढटकाया ॥न्वजनमनन्भाया ॥ श्री०॥ १२४ ॥ कु उत्र ॥
कोईकहेहिवेउदेपुजासवाई ॥ आगेथीहिणताईरे ॥ न्समग्रहेनेप्रन्भावे ॥ एसीचोजलगा
वेहिवेग्यानीबतावे ॥ श्री० ॥ १२५ ॥ सुउत्र॥वस्तपालतेजपालनरेसा ॥ विमलसाग-
धान्नेसासारे ॥ थारामतेथयामोटा ॥ षर्चोधनकेइकोटा ॥ अवेतोदिसेतोटा ॥ श्री० ॥
॥ १२६ ॥ निंवाकरेसाधुप्रतमाकी ॥ प्र० ॥ ४५ ॥ मो प्रतमांकीनिंयामतिजाणो ॥
आश्रवनिंयामानोरे ॥प्रतमासुंनहीरोसो ॥ हिंसकथीनहीजोसो ॥ सिद्धांतन्नरोसो श्री०
॥ १२७ ॥ सूउतर ॥ जथागुणकहीतांदोसनधारो ॥ कहीयोदेआद्रकूमारोरे ॥ न्यायमे
रोसलावे॥षातादांतघसावे॥कांइसोचनआवे॥श्री०॥१२८॥न्मर्मन्नंजणएहकुमताचेपटो
समगति थावेसेठोरेहलुकर्मीहषावे ॥ मिथ्यामतिमुरझावे बिवादबमावे ॥ श्री० ॥
॥१२९॥प्र०४६॥ सुउतर॥ देव अदोसीगुरुनिरलोन्नी॥ धर्म दयामेथोन्नीरे ॥ गयामुग

त अनंता॥जासी गुणवंता॥भाष्यो भगवंता ॥ श्री० ॥१३०॥ प्र० ॥४७॥ कुतत्व॥ देव सदोसी गुरुगुणानी हिंस्यामे धरमजमानीरे अनंता गयानर्कमाई जासी ओरघणाइ सब सुत्रे चेताई ॥ श्री ॥ १३१ ॥ कारण ॥ विवादकरणनही किनी सझायो ॥ नही कहुमानकोपायोरे ॥ रूचेतो भवी मानो ॥ नही तो तुमेजानो हमने नही ताणो ॥ श्री० ॥१३२ ॥ पुयकानजीरीषजी समुदायो ॥ एवंतारीषजी महारायोरे ॥ गुरुग्यानगीना ॥ सुधबोधजदीना ॥ जिनमारगचिना ॥ श्री० ॥ १३३ ॥ तिलोकरिषजीकिही सूत्र अधारे ॥ निश्चेतो प्रभुजी सीकारेरे ॥ अजाणोमे जो कांइ ॥ विप्रितजोडाई ॥ मिछामीदुक्कर्म मोताई ॥ श्री०॥१३४॥ संवत उगणीसे बतिससालो ॥ येकथीचर्चामालोरे भणेगुणे भाइबाई उपयोगलगाई ॥ वेगोलहे सीवताई ॥ श्री० ॥ १३५॥ अथ ॥ कलस ॥ समकित निरमल भावउज्जल दयाधर्म अराधिये ॥ भगवंतआग्यासदा निरवद ॥ अधकिरसाधीए ॥ विवादवर्जो धर्म गर्जोपापेलजो सारए ॥ खंभोकर्म मेटो भर्म वर्तें जेजेकारए ॥ भविलहो येभवपारए ॥ १३६ ॥ इति भर्म भंजण कुमति चपेटो प्रश्नोत्तर जुगतचर्चा मालासझाय संपूर्णम ॥ ॥ ॥

श्रीरस्तु ॥ अथ भोलपछतिसीलिख्यते ॥ संतादेषो दुनीया भोली एदेशीमे ॥
भविका देषोन्याय विचारि ॥ सुगुणादेषो० ॥ भोली दुनीयाभूली भर्ममे ॥ जायजृ
मारो हारी ॥ एटेक ॥ वितरागको मारग तारक ॥ जीवदयाअगवाणी ॥ हिंस्या धरममे
अधिकाराचे ॥ करे जीवाकोहानी ॥ भ० ॥ १ ॥ दयादानविने मुलधर्मसो ॥ तिनूंलिवा-
त उगावे ॥ भगवंत चुकाकहे अग्यानी ॥ भव ४ मे दुषपावे ॥ भ० ॥ २ ॥ सामायक
पोसाके माही विकथामाडेकुमी ॥ धरमकथामे चितनरापे ॥ रह्यो पापमे वुडी ॥ भ० ॥
॥ ३ ॥ ध्यानसीषतांगलोज डुखे ॥ लम्तावुंवडी पाडे ॥ तवनसज्झायकेतासरमावे स्या-
लगावे अतिगाडे ॥ भ० ॥ ४ ॥ धरमदलाली पगल्यादुखे ॥ पापदलालीदोडे ॥ धरमी
नेतो दुखेलावे ॥ पापीनेराषे गोडे ॥ भ० ॥ ५ ॥ तावतेजारी आवे तनमे ॥ सातदीवस
नही पावे धर्म निमंते एकउपवासके ॥ करतामनसुकमावे ॥ भ० ॥ ६ ॥ व्यावमोछव-
मे षचैंसइकमा ॥ धनमे आगलगावे ॥ जीवदयामे षर्चणकाजे ॥ दमनीमे नटजावे
॥ भ० ॥ ७ ॥॥ धर्म काममे कायरअधिको पापकरणने सुरो ॥ लेलोटोने षावणदोमे ॥
परउपगारथीडुरो ॥ भ०, ॥ ८ ॥ सजन कुटंवी मिलीयाहरषे ॥ संतदेषटलजावे मु-

नीवर.वंदतां सरमज आवे ॥ नीचने सीसनमावे ॥ न० ॥ ९ ॥ पर्व पर्युसण धर्म ध्या
नदीन ॥ खेले चोपमपासा ॥ पापीकितो करे कमाई ॥ धरमीकाकरेहासा ॥ न० ॥ १० ॥
रामनांम नटरयालकरे जठे ॥ सगली रातजगावे ॥ ग्यानध्यानकी होयजहाचर्चा ॥
जूक२ झोलाखावे ॥ न० ॥ ११ ॥ होय लडाइचर्चा विकथा ॥ विनतेज्योचलजावे ॥
धरमकाजे बोलावे कोइ मुपसे पटनट जावे ॥ न० ॥ १२ ॥ पोते तो ओगणको सा-
गर ॥ परनिंद्यामे राजी ॥ लोक बुराइ सुनहीमरपे ॥ आलदेत परगाजी ॥ न० १३ ॥
अक्रोधि अमानी अमाइ ॥ अलोभीजिनराया जिनको समरणकरेनगेली॥ नेरूनवानी
माया ॥न०॥१४॥लोकचमावे फूलफलादीक देवदेवेरापोमी ॥ तोपणविवेक अंध नही
समझे फिर२ जावेदोमी ॥ न० ॥ १५ ॥ वाजेजेनी बामण वाण्या मानताकरे फकीरी।
वेविनपाणी परवसमरीया ॥ सोकाइ देगा अमीरी ॥ न० ॥ १६ ॥ नेरूनवानी काल
काचमी ॥ वोकमा भेसा चमावे ॥ आपमारने आपहीपावे ॥ देवी नामवतावे ॥ न० ॥
॥ १७ ॥ वेटाबेटीकाजे पापी ॥ वकरानैसामारे परकुं उपदेकरके मुरप ॥ आपणी
साता बिचारे ॥ न०॥ १८॥ करेगणगोर गोरपेरावगेणा गोरकी मंगलगाती पुजाकरपणी

॥ संतादेषो दुनीया भोली एदेशांमे ॥
श्रीरस्तु ॥ अथ भोलपछतिसीलिख्यते ॥ भोली दुनीयाभूली भर्ममे ॥ जोयज्ञ
भविका देषोन्याय विचारि ॥ सुगुणादेषो० ॥ भोली दुनीयाभूली भर्ममे ॥ जीवदयाअगवाणी ॥ हिंस्या धरममे
मारो हारी ॥ एटेक ॥ वितरागको मारग तारक ॥ जीवदयाअगवाणी ॥ हिंस्या धरममे
अधिकाराचे ॥ करे जीवाकीहानी ॥ भ० ॥ १ ॥ दयादानविने मुलधर्मसो ॥ तिनूंदिवा-
त उठावे ॥ भगवंत चुकाकहे अग्यानी ॥ भव २ मे दुषपावे ॥ भ० ॥ २ ॥ सामायक
पोसाके माही विकथामांडेकुमी ॥ धरमकथामे चितनरावे ॥ रह्यो पापमे बुडी ॥ भ० ॥
॥ ३ ॥ ग्यानसीषतागलोज डुखे ॥ लम्तावुंबडी पाडे ॥ तवनसज्झायकेतांसरमावे ख्या-
लगावे अतिगाडे ॥ भ० ॥ ४ ॥ धरमदलाली पगल्यादुखे ॥ पापदलालीदोडे ॥ धरमी
नेतो दुरबेठावे ॥ पापीनेराषे गोडे ॥ भ० ॥ ५ ॥ तावतेजारी आवे तनमे ॥ सातदीवस
नही पावे धर्म निमंते एकउपवासके ॥ करतामनसुकमावे ॥ भ० ॥ ६ ॥ व्यावमोछव-
मे षर्चेसइकमा ॥ धनमे आगलगावे ॥ जीवदयामे पर्चणकाजे ॥ दममीमे नटजावे
॥ भ० ॥ ७ ॥ ॥ धर्म काममे कायरअविको पापकरणने सुरो ॥ लेलोटोने षावणदोडे ॥
परउपगारथीडरो ॥ भ०, ॥ ८ ॥ सजन कुटंबी मिलीयाहरषे ॥ संतदेषटलजावे मु-

नीचर,वंदता सरमज आवे ॥ नीचने सीसनमावे ॥ ज० ॥ ९ ॥ पर्व पर्युसण धर्म ध्या
नदीन ॥ खेले चोपमपासा ॥ पापीकितो करे बमाई ॥ धरमीकाकरेहासा ॥ ज० ॥ १०
रामजांम नटरयालकरे जहे ॥ सगली रातजगावे ॥ ग्यानध्यानकी होयजहा चर्चा ॥
जूकर झोलाखावे ॥ ज० ॥ ११ ॥ होय लडाइचर्चा विकथा ॥ विनतेज्योचत्रजावे ॥
धरमकाज बोलावे कोइ मुपसे पटनट जामे ॥ ज० ॥ १२ ॥ पोते तो ओगणको सा-
गर ॥ परनिंधामे राजी ॥ लोक बुराइ सुनहीमरपे ॥ आलदेत परगाजी ॥ ज० १३ ॥
अक्रोधि अमानी अमाइ ॥ अलोभीजिनराया जिनको समरणकरेनगेली॥ जेरूजवानी
जाया ॥ज०॥१४॥लोकचमावे फूलफलादीक देवदेवेरापोमी ॥ तोपणविवेक अंध नही
समझे फिर२ जावेदोमी ॥ ज० ॥ १५ ॥ वाजेजेनी बामण वाण्या मानताकरे फकीरी॥
वेविनपाणी परवसमरीया ॥ सोकाइ देगा अमीरी ॥ ज० ॥ १६ ॥ जेरूजवानी काल
काचंमी ॥ बोकमा भेसा चमावे ॥ आपमारने आपहीपावे ॥ देवी नामवतावे ॥ ज० ॥
॥ १७ ॥ बेटाबेटीकाजे पापी ॥ बकराजैसामारे परकुं डुपदेकरके मुरप ॥ आपणी
साता विचारे ॥ ज०॥ १८॥ करेगणगोर गोरपेरावुगेणा गोरकी मंगलगाती पुजाकरपणी

मेपटकी बेटाबेटी चाती ॥ ज० ॥ १९ ॥ देवकी गइहारे नीरषणकाज ॥ वळपुजेनमी सकरके ॥ सोतेवारमनावे ओली बालकचंगधरके ॥ ज० ॥ २० ॥ घणामनष अरू रावण मरीयो वाजो नाम दशेरो सोदिनहरषमनावे अधिको बांवे पापघणेरो ॥ ॥ २१ ॥ विरजीनेश्वर मुगत विराज्या ॥ दिवसदिवाली जाणो दयाधरमतो पाले नही और करेजीवाकि हांणो ॥ भ० ॥ २२ ॥ विनचारणी जइहोलका ॥ जाम्हजइजगमा ही ॥ कुमोते मारीगइपापण ॥ सोतेवारथपाई ॥ भ०॥ २३ ॥ धुलउमावेकीचमचावे ॥ वणे होलीका पंमा ॥ बोले पोटा निरलजजइने सजेनरककाऊंमा ॥ भ० ॥२४॥ पांच-से साधुको होमजकरतो ॥ ब्राह्मणना मनमुची विष्णुकुमर बावनारूप धरके ॥ दियो पगांतलेकुची ॥ २५॥ हेमाचल नृपआइतेहने मारताकुं दीयोरापी ॥ मंगत तेवारथा-पकरओला ॥ हाथमे बाधे रापी ॥ ज० ॥ २६ ॥ घरकामनषमरे जीण दीवसे ॥ सोग-कहे मुषसेती ॥ सराद ठेराइमालजपावे ॥ उलटीरीत एचेती ॥ ज० ॥ २७ ॥ मछ अ-वतार धरयो कहे प्रभूजी मछपावण नही छोडे वरहा अवतारकहे बलो धार्यो ॥ वर-हामारणदोडे॥ ज० ॥ २८ ॥गउमाताके लाठीमारे ॥ तुलछीमातातोडे जुवारमाताकही

पीसनेपांवे ॥ मनकीवाताजोडे ॥ न० ॥ २९ ॥ प्रथत्रीपाणी वेळवाळ ॥ दीशवनपिपलपु जे ॥ गायगधेमाकन्यापुजे ॥ अंतरग्याननसुजे॥ न० ॥ ३० ॥ इत्यादिककीपुजनथापे ॥ करेनन्यायपरिषा ॥ घणातुष्टेजोतुऊपरएता ॥ करसेआपसरीषा ॥ न० ॥ ३१ ॥ देहअ पावपरतपसारी ॥ ऊपरपालपपाले ॥ न्हायाधोयाधर्महोवेतो ॥ मछलाजलमेचाले न० ॥ ३२ ॥ श्रीजिनमारगऊजलपरतक्ष ॥ तिणनेमेलोचतावे ॥ हिंस्याधर्ममलीनसदाही ॥ जीणनेअधिकसरावे ॥ न० ॥ ३३ ॥ गावेवजावेतानजतोम्हे ॥ जेहनोमहेमासपरी ॥ होएवदासीजगमायासु ॥ तिणनीकरे मसकरी ॥ न० ॥ ३४ ॥ मोहकरमके उदेकरीने नोलपकरउसपावे ॥ नोलपगतिशीसुणकरस्याणा ॥ श्रीजिनमारगआवे ॥ न० ३५ ॥ इत्यादिकनोलपतातजके धरमध्यानकरोपासा ॥ तिलोकरिषकहेशुकतकीधा होएमुगतमेवासा ॥ न० ॥ ३६ ॥ संवतऊगणीसे ठतीसफागुण विजदशमी शनीवारे साइखेडामेएहनिपाई करवापरउपगारे ॥ न० ॥ ३७ ॥ इतिनोलपगतिसी संपुणर्म ॥ ॥

॥ इतिज्ञानप्रदीपकसमाप्तः ॥